कृत स्वयं-शिक्षक

खण्ड १

डॉ० प्रेम सुमन जैन
सह-आचार्य एव अध्यक्ष
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
उदयपुर विश्वविद्यालय

प्रा कृत भारती, जयपुर
१९ ९

प्रकाशक
देवेन्द्रराज मेहता
सचिव, प्राकृत भारती, जयपुर

□

प्राकृत स्वयं-शिक्षक (खण्ड १)
डॉ० प्रेम सुमन जैन

□

प्रथम आवृत्ति १९७९

□

मूल्य

□

□

प्राप्तिस्थान
राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान
गोलेछा हवेली, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जयपुर (राज०)

□

मुद्रक
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जौहरी बाजार, जयपुर–3

PRĀKRIT SVAYAM ŚIKṢAKA/Grammar
by
Prem Suman Jain/Jaipur/1979

प्रकाशकीय

प्राकृत भापा एव साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रन्थो का प्रकाशन एव प्राकृत भापा का प्रचार तथा प्रसार प्राकृत भारती के प्रमुख उद्देश्य हैं। इसी दिशा मे प्राकृत स्वय-शिक्षक खण्ड १ का इस सस्थान की तरफ से प्रकाशन करते मे अत्यधिक प्रसन्नता है। डॉ प्रेम सुमन जैन प्राकृत के प्रमुख विद्वान् हैं। इस क्षेत्र मे उनके विस्तृत ज्ञान एव अनुभव का लाभ प्राकृत के पाठको को उपलब्ध होगा। उन्होने प्राकृत के सीखने-सिखाने मे एक वैज्ञानिक एव नवीनतम शैली का प्रयोग इस पुस्तक मे किया है। साधारणतया प्राकृत, सस्कृत की मदद से सीखी-सिखाई जाती रही है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि सामान्य हिन्दी जानने वाला पाठक भी बिना किसी कठिनाई के प्राकृत स्वय सीख सकता है। नई प्रणाली के उपरान्त भी लेखक ने प्राकृत व्याकरण की परम्परा को पृष्ठभूमि मे बनाये रखा है। इस तरह सस्थान का उद्देश्य एव पाठको की उपयोगिता के सदर्भ मे यह एक बहुत ही समसामयिक प्रकाशन कहा जा सकता है। सस्थान इस पुस्तक के लेखक के प्रति विशेष आभार प्रकट करता है कि प्राकृत के क्षेत्र मे एक बहुत बडी कमी को उन्होने यह पुस्तक लिखकर पूरा किया है।

प्राकृत भारती ने राजस्थान का जैन साहित्य एव कल्पसूत्र (प्राकृत मूल, हिन्दी व अग्रेजी मे अनुवाद, ३६ रगीन चित्रो सहित) ये दो ग्रन्थ प्रकाशित कर दिये हैं। प्राकृत स्वय-शिक्षक खण्ड १ के अतिरिक्त निम्न ३ और पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित और विमोचित हो रही हैं –

१ **स्मरणकला**—(इसमे श्री धीरज भाई टौकरसी शाह ने शतावधान की प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।)

२ **आगमतीर्थ**—(इसमे आगम साहित्य से उद्धरण और उनका हिन्दी मे काव्यानुवाद डा हरिराम आचार्य ने प्रस्तुत किया है।)

३ **आगमदिग्दर्शन**—(इसमे डॉ० मुनि नगराजजी महाराज द्वारा सामान्य पाठको को आगम साहित्य की विषयवस्तु की जानकारी प्रस्तुत की गयी है।)

उपर्युक्त पुस्तको के अतिरिक्त निम्नाकित पुस्तकें प्राकृत भारती के अन्तर्गत प्रकाशनाधीन हैं —

४ **इसिभासियाइं**—(यह पुस्तक प्राकृत मूल व हिन्दी तथा अग्रेजी अनुवाद सहित महोपाध्याय विनयसागर व श्री कलानाथ शास्त्री द्वारा प्रस्तुत की जा रही है, जिसमे हिन्दू, बौद्ध और जैन ऋषियो के सारगर्भित उद्बोधन हैं।)

५ **नीतिवाक्यामृत**—(डा एस के गुप्ता व डा वी आर मेहता द्वारा आचार्य सोमदेव के राजनीति के सिद्धान्तो का हिन्दी व अग्रेजी मे अनुवाद।)

६. **देवतामूर्ति प्रकरण**—(प भगवानदासजी व आर सी अग्रवाल द्वारा जैन मूर्तिकला विषयक ग्रन्थ का मूलसहित हिन्दी व अग्रेजी मे अनुवाद।)

७ **त्रिलोकसार**—(आचार्य नेमिचन्द्र के गणित विषयक ग्रन्थ का मूल प्राकृत, हिन्दी व अग्रेजी मे प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द जैन द्वारा अनुवाद।)

८ **जैन साहित्य मे वैज्ञानिक विषय**—(अकगणित, ब्रह्माण्ड-विद्या, सिस्टम थियरी, सेट थियरी व थियरी आफ अल्टीमेट पार्टीकल्स पर प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द जैन द्वारा लिखित पाच ग्रन्थ।)

९ **अर्धकथानक**—(प्रोफेसर मुकुन्द लाट द्वारा श्री बनारसीदास की आत्मकथा का मूल व अग्रेजी मे अनुवाद)।

प्रस्तुत पुस्तक के मुखपृष्ठ की कला-सज्जा के लिए श्री पारस भसाली का आभार।

२५ सितम्बर, ७९

देवेन्द्रराज मेहता
सचिव

प्रस्तावना

विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रमो एव अनुसन्धान के क्षेत्र मे विगत कुछ वर्षों मे प्राकृत भाषा एव साहित्य को विशेष महत्व प्राप्त होने लगा है। परिणाम-स्वरूप राजस्थान के विश्वविद्यालयो मे भी विभिन्न स्तरो पर प्राकृत के पठन-पाठन का शुभारम्भ हुआ है। उदयपुर विश्वविद्यालय के जैनविद्या एव प्राकृत विभाग मे इस समय बी ए एम ए डिप्लोमा एव सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमो मे प्राकृत भाषा का शिक्षण हो रहा है। प्रसन्नता की बात है कि महाराष्ट्र एव गुजरात के माध्यमिक शिक्षा बोर्डो की तरह राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर ने भी सैकण्डरी परीक्षा मे 1980 से प्राकृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप मे स्वीकार किया है। इससे राजस्थान मे प्राकृत के पठन-पाठन को बहुत बल मिलेगा।

प्राकृत के शिक्षण की ये सब व्यवस्थाए तभी कारगर हो सकती है जब सरल-सुबोध शैली मे प्राकृत भाषा का कोई व्याकरण उपलब्ध हो तथा आधुनिक अभ्यास पद्धतियो से युक्त प्राकृत की पाठ्य-पुस्तके प्रकाशित हो। इस दिशा मे प्राकृत के विद्वानो का प्रयत्न अभी नगण्य ही कहा जायेगा। प्राकृत व्याकरण की जो पुस्तके वर्तमान मे उपलब्ध हैं वे परम्परागत होने से सस्कृत भाषा को मूल मे रखकर प्राकृत सीखने-सिखाने का प्रयत्न करती हैं। इससे प्राकृत का कभी स्वतन्त्र भाषा के रूप मे अध्ययन नही किया गया। प्राकृत स्वय समृद्ध होते हुए भी नगण्य बनी रही। प्राय यह मिथ्या धारणा प्रचलित हो गयी कि सस्कृत मे निपुणता प्राप्त किये बिना प्राकृत नही सीखी जा सकती। सस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्र श ये सब भाषाए एक दूसरे के ज्ञान मे पूरक अवश्य है, किन्तु इनका शिक्षण और मनन स्वतन्त्ररूप से भी किया जा सकता है। तभी उनकी समृद्धि का उचित मूल्याकन हो सकता है। किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि प्राकृत-शिक्षण का सरलतम एव सारगर्भित मार्ग प्रशस्त हो। प्राकृत के विद्वान् शोध-अनुसधान के कार्यों के अतिरिक्त प्राकृत भाषा एव उसकी पाठ्य-पुस्तको के निर्माण मे भी थोडा श्रम और समय लगायें।

प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार को दृष्टि मे रखते हुए विगत वर्षो मे हमने कतिपय सोपान पार किये है। १९७३ मे आदर्श साहित्य सघ चूरू से हमारी **प्राकृत-चयनिका** प्रकाशित हुई। १९७४ मे **प्राकृत काव्य-सौरभ** एव **अपभ्रंश काव्यधारा** प्रकाश मे आयी। इनमे पाठ्यक्रम के अन्य उद्देश्य तो पूरे हुए, किन्तु वह सन्तोष नही हुआ, जो प्राकृत भाषा

के शिक्षण के लिए आवश्यक था। १९७८ मे 'तीर्थङ्कर' मासिक मे प्राकृत सीखें के पाठ धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए (अब पुस्तिका रूप मे प्रकाशित)। उसका यह परिणाम हुआ कि प्राकृत के कई प्रेमियो ने मुझे प्राकृत भाषा की ओर अधिक सरल-सुबोध पुस्तक लिखने की प्रेरणा दी। उदयपुर के मेरे विद्वान् मित्र डॉ० कमलचन्द सोगानी मुझसे घन्टो इस सम्बन्ध मे चर्चा करते रहते कि प्राकृत सिखाने की कोई नयी शैली निकालो। उनके साथ विभिन्न भाषाओ के व्याकरणो की कई पुस्तके देखी गयी। किन्तु प्राकृत भाषा के अनुरूप एक नयी शैली ही तय करनी पडी, जिसमे सीखने वाले पर कम से कम रटने आदि का भार पडे। वह अभ्यास से ही बहुत कुछ सीख जाये। उस नवीन शैली का साकार रूप है—प्रस्तुत पुस्तक—प्राकृत स्वय-शिक्षक (खण्ड १)।

प्राकृत स्वय-शिक्षक खण्ड १ मे यह मानकर प्राकृत का अभ्यास कराया गया है कि सीखने वाले को प्राकृत बिल्कुल नही आती। सस्कृत से वह परिचित नही है। अत उसे प्राकृत के सामान्य नियमो का ही विभिन्न प्रयोगो और चार्टों द्वारा अभ्यास कराया गया है। सर्वनाम, क्रिया, सज्ञा आदि के नियम पाठो के अन्त मे दिये गये है ताकि सीखने वाले के अभ्यास मे बाधा न पहुँचे। प्राकृत वैयाकरणो के मूलसूत्र नियमो मे नही दिये गये हैं क्योकि प्राकृत के प्रारम्भिक विद्यार्थी का शिक्षण उनके बिना भी हो सकता है।

इस पुस्तक मे इस बात का ध्यान भी रखा गया है कि पाठक जिन प्राकृत शब्दो, क्रियाओ, अव्ययो एव सर्वनामो से परिचित हो चुका है उन्ही का वह अभ्यास करे। उसने शब्दकोश या क्रियाकोश से जो नयी जानकारी प्राप्त की है, उसका अभ्यास वह आगे के पाठ द्वारा करता है। इसी तरह आगे के पाठो मे उसे पीछे सीखे गये पाठो का भी अभ्यास करने को कहा गया है। इस तरह उसका अर्जित ज्ञान ताजा बना रहता है। पूरी पुस्तक के अभ्यास कर लेने पर पाठक लगभग ६०० प्राकृत शब्दो, २०० क्रियाओ, ५० अव्ययो, १०० विशेषण शब्दो, ५० तद्धित शब्दो तथा प्रमुख सर्वनामो के प्रयोग का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

प्राकृत मे शब्दरूपो एव क्रियारूपो मे विकल्पो का प्रयोग बहुत होता है। प्राकृत जनभाषा होने से यह स्वाभाविक भी है। इस पुस्तक मे पाठक को प्राय शब्द या क्रिया के एक ही रूप का ज्ञान कराया गया है ताकि वह प्राकृत भाषा के मूल स्वरूप को पहिचान जाय। विकल्प रूपो का अध्ययन वह बाद में भी कर सकता है। इस अध्ययन की रूपरेखा भी प्रस्तुत पुस्तक में दे दी गयी है। पुस्तक के अन्त मे प्राकृत के गद्य-पद्य पाठो का सकलन दिया गया है। इस सकलन में जो वैकल्पिक रूप प्रयुक्त हुए है उन्हे एक साथ सकलन के पूर्व दे दिया गया है और उनके सामने पाठक ने जिन प्राकृत रूपो की जानकारी प्राप्त की है वे दे दिये गये हैं। इस चार्ट से पाठक आसानी से समझ लेता है कि **कमलानि** के स्थान पर **कमलाइ**, **गच्छइ** के स्थान पर **गच्छेइ**, **जाणिऊण** के लिए **णच्चा** आदि के प्रयोग भी प्राकृत मे होते है। सकलन पाठ बी ए एव डिप्लोमा के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर दिये गये हैं तथा उनके शब्दार्थ देकर पाठो को समझने में सरलता प्रदान की गयी है। इस तरह इस पुस्तक में थोडे में और सरल ढग से प्राकृत भाषा को हृदयगम कराने का विनम्र

प्रयत्न किया गया है। वस्तुत प्राकृत का पूरा ज्ञान तो उसके साहित्य के अनुशीलन और मनन से ही आ सकता है।

प्राकृत स्वय-शिक्षक खण्ड २ में प्राकृत के वैकल्पिक और आर्ष प्रयोगो का विस्तार से वर्णन होगा। अर्धमागधी, मागधी, शौरसेनी आदि प्रमुख प्राकृतो का यह हिन्दी में प्रामाणिक व्याकरण होगा। इसके अभ्यास से प्राकृत आगम एव व्याख्या साहित्य का अध्ययन सुगम हो सकेगा। प्राकृत-शिक्षण के प्रयत्न का तीसरा सोपान है— हिन्दी प्राकृत व्याकरण। इस व्याकरण मे पहली वार प्राकृत के प्राचीन व्याकरणो की सामग्री को व्यवस्थित एव सुबोध शैली मे प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें प्राकृत वैयाकरणो के सूत्र भी सन्दर्भ में दिये जायेंगे एव प्राकृत के वर्तमान ग्रन्थो से उदाहरण एव प्रयोग आदि देने का प्रयत्न रहेगा। ये दोनो पुस्तके यथाशीघ्र प्राकृत के जिज्ञासु पाठको के समक्ष पहुचाने का प्रयास है।

आभार

प्राकृत स्वय-शिक्षक के इन तीनो खण्डो के स्वरूप एव रूपरेखा आदि को निखारने मे जिन विद्वानो का परामर्श एव प्रोत्साहन मिला है उनमे प्रमुख है—आदरणीय डॉ० कमलचन्द सोगानी (उदयपुर), डॉ० जगदीशचन्द्र जैन (बम्बई), प० दलसुख भाई मालवणिया (अहमदाबाद), डॉ० आर सी द्विवेदी (जयपुर), डॉ० गोकुलचन्द्र जैन (बनारस) एव डॉ० नेमीचन्द जैन (इन्दौर)। इन सबके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ और कृतज्ञ हूँ उन समस्त प्राचीन एव अर्वाचीन प्राकृत भाषा के लेखको का, जिनके ग्रन्थो के अनुशीलन से प्राकृत-व्याकरण सम्बन्धी मेरी कई गुत्थियाँ सुलझी है तथा पाठ-सकलन मे जिनसे मदद मिली है। प्राकृत भाषा के मर्मज्ञ मुनिजनो के आशीष का ही यह फल है कि प्राकृत के पठन-पाठन की दिशा मे कुछ प्रयत्न हो पा रहा है। उनके प्राकृत अनुराग को सादर प्रणाम है।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था आदि मे प्राकृत भारती के सक्रिय सचिव श्रीमान् देवेन्द्रराज मेहता, सयुक्त सचिव महोपाध्याय विनय सागर एव फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स जयपुर के प्रबन्धको का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

अन्त मे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज जैन के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से मुझे अध्ययन-अनुशीलन के लिए पर्याप्त समय प्राप्त हो जाता है।

अग्रिम आभार उन जिज्ञासु पाठको एव विद्वानो के प्रति भी है जो इस पुस्तक को गहरायी से पढकर मुझे अपनी प्रतिक्रिया, सम्मति आदि से अवगत करायेंगे तथा इसके सशोधन-परिवर्द्धन मे वे समभागी होगे।

'समय'
२६, सुन्दरवास (उत्तरी)
उदयपुर
१ अगस्त, १९७९

प्रेम सुमन जैन

अनुक्रम

□□

प्राकृत स्वयं-शिक्षक

खण्ड १

पाठ १

उदाहरण वाक्य : अहं=मैं

अह नमामि=मैं नमन करता हूँ।	अह पढामि=मैं पढता/पढती हूँ।
अह जाणामि=मैं जानता/जानती हूँ।	अह चिंतामि=मैं चिंतन करता हूँ।
अह इच्छामि=मैं इच्छा करता हूँ।	अह सुणामि=मैं सुनता/सुनती हूँ।
अह पासामि=मै देखता/देखती हूँ।	अह भुंजामि=मै भोजन करता हूँ।
अह पिवामि=मैं पीता/पीती हूँ।	अह चलामि=मै चलता/चलती हूँ।
अह गच्छामि=मैं जाता/जाती हूँ।	अह भमामि=मै घूमता/घूमती हूँ।
अह धावामि=मै दौडता/दौडती हूँ।	अह णच्चामि=मैं नाचता/नाचती हूँ।
अह खेलामि=मैं खेलता/खेलती हूँ।	अह जयामि=मैं जीतता/जीतती हूँ।
अह हसामि=मै हसता/हँसती हूँ।	अह सेवामि=मै सेवा करता हूँ।
अह सयामि=मै सोता/सोती हू।	अह लिहामि=मैं लिखता/लिखती हूँ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं दौडता हूँ। मै जानती हूँ। मैं नमन करता हूँ। मै सुनती हूँ।
मैं पीता हूँ। मै घूमती हूँ। मैं हँसती हूँ। मै इच्छा करता हूँ।
मै नाचती हूँ। मै जीतता हूँ।

प्रयोग वाक्य :

अत्थ=यहाँ	अह अत्थ पढामि	=	मैं यहाँ पढता/पढती हूँ।
तत्थ=वहाँ	अह तत्थ खेलामि	=	मै वहाँ खेलता/खेलती हूँ।
सइ=एक बार	अह सइ भुंजामि	=	मैं एक बार भोजन करता हूँ।
मुहु=बार-बार	अह मुहु चिंतामि	=	मै बार-बार चिंतन करता हूँ।
सया=सदा	अह सया सेवामि	=	मै सदा सेवा करती हूँ।
दाणि=इस समय	अह दाणि सयामि	=	मैं इस समय सोता/सोती हूँ।
सणिअ=धीरे	अह सणिअ चलामि	=	मैं धीरे चलता/चलती हूँ।
झत्ति=शीघ्र	अह झत्ति गच्छामि	=	मैं शीघ्र जाता/जाती हूँ।
अग्गओ=आगे	अह अग्गओ पासामि	=	मैं आगे देखता/देखती हूँ।
ण=नही	अह ण लिहामि	=	मैं नही लिखता/लिखती हूँ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

मैं एक बार पढता हूँ। मैं वहाँ भोजन करती हूँ।
मैं इस समय खेलता हूँ। मैं यहाँ रहती हूँ। मैं आगे देखता हूँ।

पाठ २

उदाहरण वाक्य : अम्हे=हम दोनो, हम लोग

अम्हे नमामो=हम नमन करते है ।
अम्हे जाणामो=हम जानते, जानती है ।
अम्हे इच्छामो=हम इच्छा करते है ।
अम्हे पासामो=हम देखते/देखती है ।
अम्हे पिवामो=हम पीते/पीती है ।
अम्हे गच्छामो=हम जाते/जाती है ।
अम्हे धावामो=हम दौडते/दौडती है ।
अम्हे खेलामो=हम खेलते/खेलती है ।
अम्हे हसामो=हम हसते/हसती है ।
अम्हे सयामो=हम सोते/सोती हैं ।
अम्हे पढामो=हम पढते पटती है ।
अम्हे चिंतामो=हम चिंतन करते है ।
अम्हे सुणामो=हम सुनते सुनती है ।
अम्हे भुंजामो=हम भोजन करते है ।
अम्हे चलामो=हम चलते/चलती है ।
अम्हे भमामो=हम घूमते घूमती है ।
अम्हे णच्चामो=हम नाचते/नाचती है ।
अम्हे जयामो=हम जीतते/जीतती है ।
अम्हे सेवामो=हम सेवा करती हैं ।
अम्हे लिहामो=हम लिखते/लिखती है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हम दौडते है । हम जानती है । हम नमन करते हैं ।
हम सुनती है । हम पीते है । हम घूमती है । हम हँसते है ।
हम इच्छा करते है । हम नाचती हैं । हम जीतते है ।

प्रयोग-वाक्य :

अम्हे अत्थ पढामो	=	हम यहाँ पढते है ।
अम्हे तत्थ खेलामो	=	हम वहाँ खेलते है ।
अम्हे सइ भुंजामो	=	हम एक वार भोजन करती है ।
अम्हे मुहु चिंतामो	=	हम वार-वार चिंतन करते है ।
अम्हे सया सेवामो	=	हम सदा सेवा करते है ।
अम्हे दाणि सयामो	=	हम इस समय सोती है ।
अम्हे सणिअ चलामो	=	हम धीरे चलते है ।
अम्हे झत्ति गच्छामो	=	हम शीघ्र जाते है ।
अम्हे अग्गओ पासामो	=	हम आगे देखते हैं ।
अम्हे ण लिहामो	=	हम नही लिखते है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

हम वार-वार चिंतन करती है । हम सदा सेवा करती हैं ।
हम इस समय सोते है । हम धीरे चलते है । हम आगे देखते है ।

पाठ ३

उदाहरण वाक्य : तुम्हं=तुम

तुम नमसि=तुम नमन करते हो ।
तुम जाणसि=तुम जानते/जानती हो ।
तुम इच्छसि=तुम इच्छा करते/करती हो ।
तुम पाससि=तुम देखते/देखती हो ।
तुम पिवसि=तुम पीते/पीती हो ।
तुम गच्छसि=तुम जाते/जाती हो ।
तुम धावसि=तुम दौडते/दौडती हो ।
तुम खेलसि=तुम खेलते/खेलती हो ।
तुम हसरि=तुम हसते/हसती हो ।
तुम सयसि=तुम सोते/सोती हो ।
तुम पढसि=तुम पढते/पढती हो ।
तुम चिंतसि=तुम चिंतन करते हो ।
तुम सुणसि=तुम सुनते/सुनती हो ।
तुम भुंजसि=तुम भोजन करते हो ।
तुम चलसि=तुम चलते/चलती हो ।
तुम भमसि=तुम घूमते/घूमती हो ।
तुम णच्चसि=तुम नाचते/नाचती हो ।
तुम जयसि=तुम जीतते/जीतती हो ।
तुम सेवसि=तुम सेवा करती हो ।
तुम लिहसि=तुम लिखते/लिखती हो ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

तुम दौडते हो । तुम जानती हो । तुम नमन करते हो । तुम सुनती हो ।
तुम पीते हो । तुम घूमती हो । तुम हँसती हो । तुम इच्छा करते हो ।
तुम नाचती हो । तुम जीतते हो ।

प्रयोग वाक्य :

तुम अत्थ पढसि	=	तुम यहाँ पढते हो ।
तुम तत्थ खेलसि	=	तुम वहाँ खेलते हो ।
तुम सइ भुंजसि	=	तुम एक बार भोजन करते हो ।
तुम मुहु चिंतसि	=	तुम बार-बार चिंतन करते हो ।
तुम सया सेवसि	=	तुम सदा सेवा करती हो ।
तुम दाणि सयसि	=	तुम इस समय सोते हो ।
तुम सणिअ चलसि	=	तुम धीरे चलती हो ।
तुम झत्ति गच्छसि	=	तुम शीघ्र जाते हो ।
तुम अग्गओ पाससि	=	तुम आगे देखते हो ।
तुम ण लिहसि	=	तुम नही लिखते हो ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम एक बार पढते हो । तुम वहाँ भोजन करती हो ।
तुम इस समय खेलते हो । तुम यहाँ रहते हो । तुम आगे देखते हो ।

पाठ ४

उदाहरण वाक्य तुम्हे = तुम दोनो/तुम सब

तुम्हे नमित्था = तुम दोनो नमन करते हो।	तुम्हे पढित्था = तुम सब पढते, पढती हो।
तुम्हे जाणित्था = तुम सब जाते हो।	तुम्हे चिंतित्था = तुम दोनो चिंतन करते हो।
तुम्हे इच्छित्था = तुम सब इच्छा करते हो।	तुम्हे सुणित्था = तुम सब सुनते/सुनती हो।
तुम्हे पासित्था = तुम सब देखते हो।	तुम्हे भुंजित्था = तुम सब भोजन करते हो।
तुम्हे पिवित्था = तुम दोनो पीते हो।	तुम्हे चलित्था = तुम सब चलते/चलती हो।
तुम्हे गच्छित्था = तुम जाते/जाती हो।	तुम्हे भमित्था = तुम घूमते/घूमती हो।
तुम्हे धावित्था = तुम सब दौडते हो।	तुम्हे णच्चित्था = तुम सब नाचते हो।
तुम्हे खेलित्था = तुम सब खेलती हो।	तुम्हे जयित्था = तुम दोनो जीतते हो।
तुम्हे हसित्था = तुम सब हँसते हो।	तुम्हे सेवित्था = तुम सेवा करते हो।
तुम्हे सयित्था = तुम सोते/सोती हो।	तुम्हे लिहित्था = तुम सब लिखते हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

तुम सब दौडते हो। तुम सब जानती हो। तुम सब नमन करते हो।
तुम दोनो सुनती हो। तुम दोनो पीते हो। तुम सब घूमते हो। तुम सब हँसती हो।
तुम सब इच्छा करते हो। तुम सब नाचते हो। तुम सब जीतते हो।

प्रयोग वाक्य

तुम्हे अत्थ पढित्था	=	तुम सब यहाँ पढते हो।
तुम्हे तत्थ खेलित्था	=	तुम सब वहाँ खेलते हो।
तुम्हे सइ भुंजित्था	=	तुम दोनो एक बार भोजन करती हो।
तुम्हे मुहु चिंतित्था	=	तुम सब बार-बार चिंतन करते हो।
तुम्हे सया सेवित्था	=	तुम सब सदा सेवा करती हो।
तुम्हे दाणि सयित्था	=	तुम दोनो इस समय सोती हो।
तुम्हे सणिअ चलित्था	=	तुम सब धीरे चलते हो।
तुम्हे झत्ति गच्छित्था	=	तुम दोनो शीघ्र जाती हो।
तुम्हे अग्गओ पासित्था	=	तुम सब आगे देखते हो।
तुम्हे ण लिहित्था	=	तुम सब नही लिखते हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो ·

तुम सब बार-बार चिंतन करती हो। तुम दोनो सदा सेवा करती हो।
तुम सब इस समय सोते हो। तुम दोनो धीरे चलते हो। तुम सब आगे देखते हो।

पाठ ५

उदाहरण वाक्य : **सो**=वह (पुल्लिंग)

सो नमइ=वह नमन करता है।
सो जाणइ=वह जानता है।
सो इच्छइ=वह इच्छा करता है।
सो पासइ=वह देखता है।
सो पिवइ=वह पीता है।
सो गच्छइ=वह जाता है।
सो धावइ=वह दौडता है।
सो खेलइ=वह खेलता है।
सो हसइ=वह हँसता है।
सो सयइ=वह सोता है।
सो पढइ=वह पढता है।
सो चिंतइ=वह चिंतन करता है।
सो सुणइ=वह सुनता है।
सो भुंजइ=वह भोजन करता है।
सो चलइ=वह चलता है।
सो भमइ=वह घूमता है।
सो णच्चइ=वह नाचता है।
सो जयइ=वह जीतता है।
सो सेवइ=वह सेवा करता है।
सो लिहइ=वह लिखता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह दौडता है। वह जानता है। वह नमन करता है। वह सुनता है। वह पीता है। वह घूमता है। वह हँसता है। वह इच्छा करता है। वह नाचता है। वह जीतता है।

प्रयोग वाक्य

सो अत्थ पढइ = वह यहाँ पढता है।
सो तत्थ खेलइ = वह वहाँ खेलता है।
सो सइ भुंजइ = वह एक बार भोजन करता है।
सो मुहु चिंतइ = वह बार-बार चिंतन करता है।
सो सया सेवइ = वह सदा सेवा करता है।
सो दाणि सयइ = वह इस समय सोता है।
सो सणिअ चलइ = वह धीरे चलता है।
सो झत्ति गच्छइ = वह शीघ्र जाता है।
सो अग्गओ पासइ = वह आगे देखता है।
सो ण लिहइ = वह नही लिखता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह एक बार पढता है। वह वहाँ भोजन करता है।
वह इस समय खेलता है। वह यहाँ रहता है। वह आगे देखता है।

पाठ ६

ते = वे दोनो/वे सव (पुल्लिंग)

उदाहरण वाक्य :

ते नमन्ति = वे दोनो/सब नमन करते है।
ते जाणन्ति = वे जानते हैं।
ते इच्छन्ति = वे इच्छा करते है।
ते पासन्ति = वे सव देखते है।
ते पिवन्ति = वे दोनो पीते है।
ते गच्छन्ति = वे जाते है।
ते धावन्ति = वे सव दौडते है।
ते खेलन्ति = वे दोनो खेलते है।
ते हसन्ति = वे सव हँसते है।
ते सयन्ति = वे सव सोते है।

ते पढन्ति = वे दोनो/सव पढते है।
ते चितन्ति = वे चिंतन करते है।
ते सुणन्ति = वे सुनते है।
ते भुंजन्ति = वे भोजन करते है।
ते चलन्ति = वे सव चलते है।
ते भमन्ति = वे सव घूमते है।
ते णच्चन्ति = वे सव नाचते है।
ते जयन्ति = वे दोनो जीतते है।
ते सेवन्ति = वे सेवा करते है।
ते लिहन्ति = वे सव लिखते है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वे सव दौडते है। वे सव जानते है। वे दोनो नमन करते है।
वे सब सुनते है। वे पीते है। वे सब घूमते हैं। वे दोनो हँसते है।
वे इच्छा करते है। वे सव जीतते है।

प्रयोग वाक्य .

ते अत्थ पढन्ति	=	वे सव यहाँ पढते है।
ते तत्थ खेलन्ति	=	वे सव वहाँ खेलते है।
ते सइ भुंजन्ति	=	वे दोनो एक वार भोजन करते है।
ते मुहु चितन्ति	=	वे सव वार-वार चिंतन करते है।
ते सया सेवन्ति	=	वे सदा सेवा करते है।
ते दाणि सयन्ति	=	वे सव इस समय सोते है।
ते सणिअं चलन्ति	=	वे दोनो धीरे चलते है।
ते झत्ति गच्छन्ति	=	वे सव शीघ्र जाते है।
ते अग्गओ पासन्ति	=	वे सव आगे देखते है।
ते ण लिहन्ति	=	वे दोनो नही लिखते हे।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वे सव बार-बार चिंतन करते है। वे दोनो सदा सेवा करते है।
वे सव इस समय सोते है। वे दोनो धीरे चलते है। वे सव आगे देखते हे।

पाठ ७

उदाहरण वाक्य · सा=वह (स्त्री०)

सा नमइ=वह नमन करती है।
सा जाणइ=वह जानती है।
सा इच्छइ=वह इच्छा करती है।
सा पासइ=वह देखती है।
सा पिवइ=वह पीती है।
सा गच्छइ=वह जाती है।
सा धावइ=वह दौडती है।
सा खेलइ=वह खेलती है।
सा हसइ=वह हँसती है।
सा सयइ=वह सोती है।
सा पढइ=वह पढती है।
सा चिंतइ=वह चिंतन करती है।
सा सुणइ=वह सुनती है।
सा भुंजइ=वह भोजन करती है।
सा चलइ=वह चलती है।
सा भमइ=वह घूमती है।
सा णच्चइ=वह नाचती है।
सा जयइ=वह जीतती है।
सा सेवइ=वह सेवा करती है।
सा लिहइ=वह लिखती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह दौडती है। वह जानती है। वह नमन करती है। वह सुनती है।
वह पीती है। वह घूमती है। वह हँसती है। वह इच्छा करती है।
वह नाचती है। वह जीतती है।

प्रयोग वाक्य

सा अत्थ पढइ	=	वह यहाँ पढती है।
सा तत्थ खेलइ	=	वह वहाँ खेलती है।
सा सइ भुंजइ	=	वह एक बार भोजन करती है।
सा मुहु चिंतइ	=	वह बार-बार चिंतन करती है।
सा सया सेवइ	=	वह सदा सेवा करती है।
सा दाणि सयइ	=	वह इस समय सोती है।
सा सणिअ चलइ	=	वह धीरे चलती है।
सा झत्ति गच्छइ	=	वह शीघ्र जाती है।
सा अग्गओ पासइ	=	वह आगे देखती है।
सा ण लिहइ	=	वह नही लिखती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो .

वह एक बार पढती है। वह वहाँ भोजन करती है।
वह इस समय खेलती है। वह यहाँ दौडती है। वह आगे देखती है।

पाठ ८

उदाहरण वाक्य

ताओ=वे दोनो वे सब (स्त्री०)

ताओ नमन्ति=वे दोनो नमन करती हैं।
ताओ जाणन्ति=वे सब जानती है।
ताओ इच्छन्ति=वे इच्छा करती है।
ताओ पासन्ति=वे सब देखती हैं।
ताओ पिवन्ति=वे दोनो पीती है।
ताओ गच्छन्ति=वे सब जाती है।
ताओ धावन्ति=वे दोनो दौडती है।
ताओ खेलन्ति=वे सब खेलती हैं।
ताओ हसन्ति=वे हँसती हैं।
ताओ सयन्ति=वे सब सोती हैं।
ताओ पढन्ति=वे सब पढती हैं।
ताओ चिंतन्ति=वे चिंतन करती हैं।
ताओ सुणन्ति=वे सब सुनती हैं।
ताओ भुजन्ति=वे भोजन करती है।
ताओ चलन्ति=वे सब चलती है।
ताओ भमन्ति=वे घूमती है।
ताओ णच्चन्ति=वे सब नाचती है।
ताओ जयन्ति=वे दोनो जीतती है।
ताओ सेवन्ति=वे सेवा करती है।
ताओ लिहन्ति=वे लिखती हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वे सब दौडती है। वे सब जानती है। वे दोनो नमन करती है।
वे सब सुनती हैं। वे दोनो पीती हैं। वे सब घूमती है। वे हँसती है।
वे इच्छा करती है। वे सब नाचती है। वे सब जीतती है।

प्रयोग वाक्य

ताओ अत्थ पढन्ति = वे सब यहां पढती हैं।
ताओ तत्थ खेलन्ति = वे सब वहाँ खेलती हैं।
ताओ सइ भुजन्ति = वे दोनो एक बार भोजन करती हैं।
ताओ मुहु चिंतन्ति = वे बार-बार चिंतन करती हैं।
ताओ सया सेवन्ति = वे सब सदा सेवा करती हैं।
ताओ दाणि सयन्ति = वे इस समय सोती हैं।
ताओ सणिअ चलन्ति = वे दोनो धीरे चलती हैं।
ताओ झत्ति गच्छन्ति = वे सब शीघ्र जाती हैं।
ताओ अग्गओ पासन्ति = वे सब आगे देखती है।
ताओ ण लिहन्ति = वे नही लिखती हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वे सब बार-बार चिंतन करती है। वे दोनो सदा सेवा करती हैं।
वे सब इस समय सोती है। वे धीरे चलती हैं। वे दोनो वहाँ खेलती हैं।

पाठ ९

(पु)	इमो=यह	इमे=ये	को=कौन,	के=कौन
(स्त्री)	इमा=यह	इमाओ=ये	का=कौन,	काओ=कौन

उदाहरण वाक्य

एकवचन	बहुवचन
इमो नमइ=यह नमन करता है।	इमे नमन्ति=ये नमन करते है।
इमो गच्छइ=यह जाता है।	इमे गच्छन्ति=ये जाते हे।
इमो पढइ=यह पढता है।	इमे पढन्ति=ये पढते है।
इमा णच्चइ=यह नाचती है।	इमाओ णच्चन्ति=ये नाचती हैं।
इमा धावइ=यह दौडती है।	इमाओ धावन्ति=ये दौडती है।
इमा खेलइ=यह खेलती हे।	इमाओ खेलन्ति=ये खेलती है।
को हसइ=कौन हँसता है ?	के हसन्ति=कौन हँसते है ?
को जाणइ=कौन जानता हे ?	के जाणन्ति=कौन जानते है ?
को सीखइ=कौन सीखता हे ?	के सीखन्ति=कौन सीखते है ?
का णच्चइ=कौन नाचती है ?	काओ णच्चन्ति=कौन नाचती है ?
का सेवइ=कौन सेवा करती है ?	काओ सेवन्ति=कौन सेवा करती है ?
का पढइ=कौन पढती है ?	काओ पढन्ति=कौन पढती है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो :

कौन देखता है ? यह पीता है। ये सोते है। कौन लिखता हे। यह घूमती हे। कौन चलता हे ? ये भोजन करती है। यह सुनता है। कौन जानती है ? ये जीतते हैं। यह नमन करता है। कौन इच्छा करता है ? यह दौडता है।

प्रयोग वाक्य :

इमो अत्थ पढइ	=	यह यहाँ पढता है।
को तत्थ भुंजइ	=	कौन वहाँ भोजन करता है ?
इमे अत्थ खेलन्ति	=	ये यहाँ खेलते हैं।
इमाओ सणिय चलन्ति	=	ये धीरे चलती है।
के ण लिहन्ति	=	कौन नही लिखते है ?
इमा तत्थ गच्छइ	=	यह वहाँ जाती है।
काओ अग्गओ पासति	=	कौन आगे देखती हैं ?
का ण चिंतइ	=	कौन नही सोचती है ?

पाठ १०

नियम : सर्वनाम (पु०, स्त्री०) प्रथमा विभक्ति

सर्वनाम[1] **(पु., स्त्री) :**

नि० १ प्राकृत मे अम्ह (मैं) एव तुम्ह (तुम) सर्वनाम के रूप पुल्लिग एव स्त्रीलिग मे एक समान बनते है। प्रथमा विभक्ति मे इनके रूप इस प्रकार याद करले —

एकवचन	अह	तुम
बहुवचन :	अम्हे	तुम्हे

सर्वनाम (पु.) :

नि० २. : 'त' (वह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन मे सो तथा बहुवचन मे ते रूप बन जाता है।

नि० ३ 'इम' (यह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन मे 'ओ' तथा बहुवचन मे 'ए' प्रत्यय लगकर ये रूप बनते है—इमो, इमे।

नि० ४ : 'क' (कौन) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति ए व मे 'ओ' तथा ब व मे 'ए' प्रत्यय लगकर ये रूप बनते है—को, के।

सर्वनाम (स्त्री.) :

नि० ५ 'ता' (वह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति ए व मे 'सा' रूप तथा ब व मे 'ओ' प्रत्यय लगकर ताओ रूप बनता है।

नि० ६ 'इमा' (यह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति ए व तथा ब व. मे ये रूप बनते है—इमा, इमाओ।

नि० ७ 'का' (कौन) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति ए व तथा ब व मे ये रूप बनते है—का, काओ।

निर्देश पिछले पाठो मे आपने प्राकृत के कुछ प्रमुख सर्वनामो, क्रियाओ तथा अव्ययो की जानकारी प्राप्त की। इनके रूप इस प्रकार याद करलें —

सर्वनाम	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष (पु.)	अन्य पुरुष (स्त्री.)
एकवचन	अह	तुम	सो, इमो, को	सा, इमा, का
बहुवचन	अम्हे	तुम्हे	ते, इमे, के	ताओ, इमाओ, काओ

---

१. प्राकृत मे सर्वनामो के अन्य रूप भी प्रयुक्त होते है, जिनका विवेचन आगामी प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड २ मे किया जावेगा। यहाँ सर्वनाम के एक रूप को ही प्रयुक्त किया गया है।

क्रियाएं[1]

नम =नमन करना		एकवचन	बहुवचन
	(प्र पु)	नमामि	नमामो
	(म पु)	नमसि	नमित्था
	(अ पु)	नमइ	नमन्ति

निर्देश इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप बनेंगे। उनको तीनो पुरुषो एवं दोनो वचनो मे लिखकर अभ्यास कीजिए -

क्रियाकोश

पढ=पढना	पिव=पीना	जय=जीतना
जाण=जानना	चल=चलना	हस=हँसना
चिंत=चिन्तन करना	गच्छ=जाना	सेव=सेवा करना
इच्छ=इच्छा करना	भम=घूमना	सय=सोना
सुण=सुनना	धाव=दौडना	लिह=लिखना
पास=देखना	णच्च=नाचना	वस=रहना
भुंज=भोजन करना	खेल=खेलना	वध=बाधना

अव्यय :

नि० ८ जिन शब्दो के रूप मे कोई परिवर्तन नही होता उन्हे अव्यय कहते है। यथा -

अत्थ=यहाँ, सया=सदा, ण=नही, झत्ति=शीघ्र आदि।

अभ्यास

उपयुक्त सर्वनाम लिखो

(क) ...... पढन्ति
...... गच्छामो
...... नमसि
...... पिवित्था

उपयुक्त क्रियारूप लिखो

(ख) सा ...... (हस)।
अह ...... (धाव)
ताओ ...... (णच्च)
ते ...... (इच्छ)।

उपयुक्त अव्यय लिखो .

(ग) इमो ...... पढइ। ताओ ...... चलन्ति।
के ...... खेलन्ति। अम्हे ...... पासन्ति।
सो ...... भुंजइ। ते ...... लिहन्ति।

---

१ प्राकृत मे क्रियाओ के अन्य रूप भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका विवेचन आगामी प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड २ मे किया जावेगा। यहा ... । प्रयुक्त किया गया है।

पाठ ११

निर्देश · आगे के क्रिया-पाठो के अभ्यास के लिए निम्न सभी क्रियाओ, सज्ञाओ एव अव्ययो को याद करले ।

अकारान्त क्रियाए

पास=देखना	कर=करना
गच्छ=जाना	गिण्ह=ग्रहण करना
इच्छ=इच्छा करना	नम=नमन करना
खेल=खेलना	जाण=जानना
पढ=पढना	धाव=दौडना
सुण=सुनना	हस=हँसना
भु ज=भोजन करना	णच्च=नाचना
पुच्छ=पूछना	सेव=सेवा करना
कह=कहना	सय=सोना
खण=खोदना	अच्च=पूजा करना

आ, ए एव ओकारान्त क्रियाएं

दा=देना	पा=पीना
गा=गाना	ठा=ठहरना
खा=खाना	णे=ले जाना
झा=ध्यान करना	हो=होना

कर्म-सज्ञाएं :

विज्जालय=विद्यालय	कह=कथा
चित्त=चित्र	पत्त=पत्र
जस=यश	पण्ह=प्रश्न
दव्व=धन	कज्ज=कार्य
कन्दुअ=गेद	गीअ=गीत
सत्थ=शास्त्र	रोटिअ=रोटी
पोत्थअ=पुस्तक	फल=फल
जल=पानी	अप्प=आत्मा
दुद्ध=दूध	वत्थ=वस्त्र
वागरण=व्याकरण	पुण्ण=पुण्य

अव्यय :

पइदिण=प्रतिदिन	अत=भीतर
अज्ज=आज	बहि=बाहर
कल्ल=कल	किं=क्या
अवस्स=अवश्य	कत्थ=कहाँ

क्रियाए[1]

नम=नमन करना

	एकवचन	वहुवचन
(प्र पु)	नमामि	नमामो
(म पु)	नमसि	नमित्था
(अ पु)	नमइ	नमन्ति

निर्देश इसी प्रकार निम्न क्रियाओ के रूप बनेंगे। इनको तीनो पुरुषो एव दोनो वचनो मे लिखकर अभ्यास कीजिए –

क्रियाकोश

पढ=पढना	पिव=पीना	जय=जीतना
जाण=जानना	चल=चलना	हस=हँसना
चिंत=चिंतन करना	गच्छ=जाना	सेव=सेवा करना
इच्छ=इच्छा करना	भम=घूमना	सय=सोना
सुण=सुनना	धाव=दौडना	लिह=लिखना
पास=देखना	णच्च=नाचना	वस=रहना
भुंज=भोजन करना	खेल=खेलना	बध=बाधना

अव्यय :

नि० ८ जिन शब्दो के रूप मे कोई परिवर्तन नही होता उन्हे अव्यय कहते है। यथा –

अत्थ=यहाँ, सया=सदा, ण=नही, झति=शीघ्र आदि।

अभ्यास

उपयुक्त सर्वनाम लिखो		उपयुक्त क्रियारूप लिखो	
(क)	पढन्ति	(ख) सा ..	(हस)।
.....	गच्छामो	अह	(धाव)
...	नमसि	ताओ......	(णच्च)
..	पिवित्था	ते .	(इच्छ)।

उपयुक्त अव्यय लिखो

(ग) इमो ..... पढइ।	ताओ....... चलन्ति।
के .... खेलन्ति।	अम्हे .... पासन्ति।
सो . भुंजइ।	ते ... --- लिहन्ति।

---

१ प्राकृत मे क्रियाओ के अन्य रूप भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका विवेचन आगामी प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड २ मे किया जावेगा। यहा क्रियाओ के रूप को ही प्रयुक्त किया गया है।

पाठ ११

निर्देश : आगे के क्रिया-पाठो के अभ्यास के लिए निम्न सभी क्रियाओ, सज्ञाओ एव अव्ययो को याद करले ।

अकारान्त क्रियाएं

पास=देखना	कर=करना
गच्छ=जाना	गिण्ह=ग्रहण करना
इच्छ=इच्छा करना	नम=नमन करना
खेल=खेलना	जाण=जानना
पढ=पढना	धाव=दौडना
सुण=सुनना	हस=हँसना
भुज=भोजन करना	णच्च=नाचना
पुच्छ=पूछना	सेव=सेवा करना
कह=कहना	सय=सोना
खण=खोदना	अच्च=पूजा करना

आ, ए एव ओकारान्त क्रियाएं

दा=देना	पा=पीना
गा=गाना	ठा=ठहरना
खा=खाना	णे=ले जाना
झा=ध्यान करना	हो=होना

कर्म-सज्ञाएं :

विज्जालयं=विद्यालय	कहा=कथा
चित्त=चित्र	पत्त=पत्र
जस=यश	पण्ह=प्रश्न
दव्व=धन	कज्ज=कार्य
कन्दुअ=गेंद	गीअ=गीत
सत्थ=शास्त्र	रोटिअ=रोटी
पोत्थअ=पुस्तक	फल=फल
जल=पानी	अप्प=आत्मा
दुद्धं=दूध	वत्थ=वस्त्र
वागरण=व्याकरण	पुण्ण=पुण्य

अव्यय .

पइदिण=प्रतिदिन	अंत=भीतर
अज्ज=आज	बहि=बाहर
कल्ल=कल	किं=क्या
अवस्स=अवश्य	कत्थ=कहाँ

पाठ १२

(क) अकारान्त क्रियाएं **वर्तमानकाल**

एकवचन	बहुवचन
अह पासामि=मै देखता हूँ।	अम्हे पासामो=हम सब देखते हैं।
तुम पाससि=तुम देखते हो।	तुम्हे पासित्था=तुम सब देखते हो।
सो पासइ=वह देखता है।	ते पासन्ति=वे देखते है।

उदाहरण वाक्य

अह विज्जालय गच्छामि	=	मै विद्यालय जाता हूँ।
तुम जस इच्छसि	=	तुम यश को चाहते हो।
सो तत्थ कन्दुअ खेलइ	=	वह वहाँ गेंद खेलता है।
अम्हे वागरण पढामो	=	हम व्याकरण पढते हैं।
तुम्हे सत्थ सुणित्था	=	तुम सब शास्त्र सुनते हो।
ते अत्थ भु जति	=	वे यहाँ भोजन करते है।
सा किं करइ ?	=	वह क्या करती है ?
सा पत्त लिहइ	=	वह पत्र लिखती है।
ताओ कह कहन्ति	=	वे (स्त्रिया) कथा कहती है।
ते पण्ह पुच्छन्ति	=	वे प्रश्न पूछते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हम सब नमन करते हैं। वह धन ग्रहण करता है। तुम क्या करते हो ? मै पुस्तक पढता हूँ। वे सब वहाँ दौडते है। वह यहाँ नाचती है। तुम सब प्रतिदिन सेवा करते हो। वे (स्त्रिया) आत्मा को जानती हैं। वह वहाँ खेलता है। वे भीतर पूजा करते हैं।

क्रियाकोश

भण=कहना	आगच्छ=आना
पेस=भेजना	कीण=खरीदना
जिण=जीतना	वीह=डरना
कद=रोना	पाल=पालन करना
जिघ=सू घना	सीख=सीखना
अड=घूमना	घोस=घोपणा करना
गम=व्यतीत होना	जप=बोलना
घाय=मारना	दह=जलना
चिट्ठ=बैठना	णिम्म=बनाना
छुट्ट=छूटना	तुल=तौलना

निर्देश इन क्रियाओ के तीनो पुरुषो और दोनो वचनो मे वर्तमानकाल के रूप लिखो और वाक्यो मे उनका प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएं :

एकवचन	बहुवचन
अह दामि=मैं देता हूँ।	अम्हे दामो=हम देते है।
तुम दासि=तुम देते हो।	तुम्हे दाइत्था=तुम देते हो।
सो दाइ=वह देता है।	ते दान्ति=वे देते है।

उदाहरण वाक्य .

अह गीअ गामि = मै गीता गाता हूँ।
तुम तत्थ ठासि = तुम वहाँ ठहरते हो।
सो फल खाइ = वह फल खाता है।
ते कि णेति = वे क्या ले जाते है ?
अह अप्प झामि = मै आत्मा को ध्याता हूँ।
अम्हे दुद्ध पामो = हम सब दूध पीते है।
तत्थ किं होइ = वहा क्या होता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो :

मैं वहाँ ठहरता हूँ। तुम यहाँ गाते हो। वह इस समय ध्यान करता है। वे नही देते है। हम सब वहाँ ले जाते है। तुम सब यहाँ खाते हो। यहाँ क्या होता हे ? मै घन देता हूँ।

अभ्यास

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए ·

(क) सो .... (पेस)।
अह .... (बीह)।
ते .... (भण)।
सा .... (जिण)।
अम्हे .... (सीख)।

(ख) .... आगच्छसि।
.... कीणइ।
.... कन्दामो।
.... जिंघामि।
.... पालित्था।

(ग) अह .... कहामि।
सो .... खाअइ।
ते .... णेंति।

तुम .... पासि।
ताओ .... गच्छन्ति।
तत्थ .... होइ।

पाठ १३

(क) अकारान्त क्रियाएं : भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
अह पासीअ=मैने देखा ।	अम्हे पासीअ=हम सबने देखा ।
तुम पासीअ=तुमने देखा ।	तुम्हे पासीअ=तुम सबने देखा ।
सो पासीअ=उसने देखा ।	ते पासीअ=उन सबने देखा ।

उदाहरण वाक्य :

अह तत्थ गच्छीअ	=मैं वहाँ गया ।
तुम दव्व इच्छीअ	=तुमने धन को चाहा ।
सो कल्ल कन्दुअ खेलीअ	=उसने कल गेंद खेली ।
अम्हे पोत्थअ पढीअ	=हम सबने पुस्तक पढी ।
तुम्हे अज्ज सत्थ सुणीअ	=तुम सबने आज शास्त्र सुना ।
ते रोटिअ भुजीअ	=उन्होने रोटी खायी ।
सा कज्ज करीअ	=उस (स्त्री) ने कार्य किया ।
सो वागरण लिहीअ	=उसने व्याकरण लिखी ।
ते कह कहीअ	=उन्होने कथा कही ।
अम्हे अज्ज पण्ह पुच्छीअ	=हमने आज प्रश्न पूछा ।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम सबने नमन किया । उसने धन ग्रहण किया । तुमने क्या किया ? मैंने पुस्तक पढी । हम सब वहाँ दौडे । वह (स्त्री) कल नाची । उन्होने सेवा नही की । उन (स्त्रियो) ने नही जाना । उसने गेंद खेली । उन्होने प्रतिदिन पूजा की ।

क्रियाकोश

फास=छूना	उड्ड=उडना
गज्ज=गर्जना	जग्ग=जागना
थुण=स्तुति करना	तर=तैरना
कलह=झगडना	कस्स=जोतना
लज्ज=लजाना	खम=क्षमा करना
जण=उत्पन्न करना	जूर=खेद करना
ढक्क=ढकना	दूस=दूषण लगाना
तक्क=तर्क करना	पच=पकाना
दरिस=दिखलाना	पहर=प्रहार करना
तिप्प=सतुष्ट होना	पत्थर=बिछाना

निर्देश :—इन क्रियाओ के तीन पुरुषो एव दोनो वचनो मे भूतकाल के रूप लिखो और उनका वाक्यो मे प्रयोग करो ।

(ख) आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएं :

एकवचन	बहुवचन
अह दाही=मैंने दिया।	अम्हे दाही=हम सबने दिया।
तुम दाही=तुमने दिया।	तुम्हे दाही=तुम सबने दिया।
सो दाही=उसने दिया।	ते दाही=उन्होने दिया।

उदाहरण वाक्य

अह कल्ल गीअ गाही	=	मैंने कल गीत गाया।
तुम तत्थ ठाही	=	तुम वहाँ ठहरे।
सो रोटिअ खाही	=	उसने रोटी खायी।
सा अप्प झाही	=	उस (स्त्री) ने आत्मा को ध्याया।
ते किं गोही	=	वे क्या ले गये ?
अम्हे दुद्ध पाही	=	हमने दूध पिया।
तत्थ किं होही	=	वहाँ क्या हुआ ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह कहाँ ठहरा ? तुमने यहाँ गीत गाया। उसने कल ध्यान किया। उन्होने धन नही दिया। हम सबने यहाँ दूध पिया। तुम वस्त्र वहाँ ले गये। कल यहाँ क्या हुआ ? मैंने यहाँ रोटी खायी।

अभ्यास

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए

(क) अह ....(थुण)।
सो तत्थ ....(कलह)।
ते वत्थ ....(कीण)।
सा ण ....(लज्ज)।
तुम खेत्त ....(कस्स)।
ते ....(पा)।

(ख) ....कस्सीअ।
तुम्हे ....तरीअ।
सा ....फासीअ।
............भत्ति जग्गीअ।
............ण खमीअ।
............झाही।

(ग) मो ....भु जीअ।
ताओ ....पुच्छीअ।
अम्हे ....सुणीअ।
तुम्हे ....लिहीअ।
अह ....करीअ।
तुम ....कलहीअ।

पाठ १४

अस धातु=विद्यमान होना :

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
(प्र०पु०)	अह अम्हि=मैं हूँ।	अम्हे म्हो=हम है।
(म०पु०)	तुम असि=तुम हो।	तुम्हे थ=तुम सब हो।
(अ०पु०)	सो अत्थि=वह है।	ते सति=वे है।

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
अह अहेसि/आसि=मैं था।	अम्हे अहेसि/आसि=हम थे।
तुम अहेसि/आसि=तुम थे।	तुम्हे अहेसि/आसि=तुम सब थे।
सो अहेसि/आसि=वह था।	ते अहेसि, आसि=वे सब थे।

उदाहरण वाक्य

अह अत्थ अम्हि = मैं यहाँ हूँ।
तुम तत्थ असि = तुम वहाँ हो।
सो कत्थ अत्थि = वह कहाँ है ?
अह तत्थ अहेसि = मैं वहाँ था।
सो तत्थ ण आसि = वह वहाँ नही था।
ते कल्ल तत्थ अहेसि = वे सब कल वहाँ थे।
सो अत्थ अत्थि = वह यहाँ है।
सा तत्थ अत्थि = वह (स्त्री) वहाँ है।
ताओ कत्थ सति = वे स्त्रिया कहाँ है ?
ते अत्थ सति = वे यहाँ है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वहाँ पुस्तक है। यहाँ दूध है। मैं वहा हूँ। वह कहाँ है ? वे सब यहाँ थे। तुम वहाँ थे। हम सब यहाँ है। वह वहाँ नही है। तुम यहाँ नही थे। क्या वह वहाँ था ? वह स्त्री कहाँ थी ?

हिन्दी मे अनुवाद करो

अत्थ विज्जालय अत्थि। तत्थ चित्त नत्थि। पत्त कत्थ आसि ? सो तत्थ अहेसि। ते अत्थ ण सति। ताओ कत्थ आसि। तुम्हे तत्थ था। अम्हे कल्ल तत्थ अहेसि। अह अत्थ अम्हि।

अभ्यास

रिक्त स्थान भरिए :

(क) सर्वनाम

.... अत्थ पढामि । .. .. ..तत्थ गुंजइ ।
.. .. सया गच्छति । .... ण गच्छामो ।
. ... सणिय चलसि । ... . तत्थ रमित्था ।

(ख) अव्यय

अहं .... भुंजामि । ते . गच्छन्ति ।
सो ... .. खेलइ । तुम.. .... .. .सेवसि ।
अम्हे..... ... .. .पासामो । तुम्हे . मथित्था ।

(ग) क्रिया (वर्तमान)

सो कन्दुअं .. . . । अम्हे वागरण .. .. ।
ताओ कहं .. । ते पण्हं . . .. . ।
तुम्हे पइदिण . . ....। अहं अत्थ ।
अहं गीअं ... . . . । सो अप्प .... ।

(घ) क्रिया (भूतकाल)

ते वागरण . .. । अम्हे रोटिअं . . .।
सा कल्ल . .. .। अहं पोत्थअं .. . ।
तुम दुद्धं .... । तुम्हे दव्वं .... . ।

हिन्दी मे अनुवाद करो :

अम्हे दाणिं सयामो। तुम अग्गओ पाससि। सा मुहुं चिंतइ। ते सइ ण भुंजन्ति। ताओ कत्थ वसन्ति ? काओ अत्थ पढन्ति। तुम्हे सत्थं सुणित्था। तुम तत्थ ण ठासि। ते पोत्थअं फासीअ। अहं अप्प झाही।

क्रियाकोश

कड्ढ=खींचना विरम=अलग होना
छिन्न=काटना सचय=इकट्ठा करना
तूस=सतुष्ट होना सज्ज=सजाना
दुह=दुहना सिह=चाहना
पत्थ=प्रार्थना करना सोह=शोभित होना

निर्देश इन क्रियाओ के वर्तमान एव भूतकाल के रूप बनाकर वाक्यो मे प्रयोग करो।

पाठ १५

(क) अकारान्त क्रियाएं : **भविष्यकाल**

एकवचन	बहुवचन
अह पासिहिमि=मैं देखूंगा।	अम्हे पासिहामो=हम देखेंगे।
तुम पासिहिसि=तुम देखोगे।	तुम्हे पासिहित्था=तुम सब देखोगे।
सो पासिहिइ=वह देखेगा।	ते पासिहिति=वे देखेंगे।

उदाहरण वाक्य :

अह विज्जालय गच्छिहिमि = मै विद्यालय जाऊगा।
तुम दव्व इच्छिहिसि = तुम धन चाहोगे।
सो तत्थ कन्दुअ खेलिहिइ = वह वहा गेद खेलेगा।
अम्हे अवस्स पोत्थअ पढिहामो = हम अवश्य पुस्तक पढेंगे।
तुम्हे पइदिण सत्थ सुणिहित्था = तुम लोग प्रतिदिन शास्त्र सुनोगे।
ते तत्थ कि भुजिहिति = वे वहा क्या खायेंगे ?
सा कि कज्ज करिहिइ = वह क्या कार्य करेगी ?
सो पोत्थअ लिहिहिइ = वह पुस्तक लिखेगा।
ते अज्ज कह कहिहिति = वे आज कथा कहेगे।
अम्हे वागरण पुच्छिहामो = हम व्याकरण पूछेंगे।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम सब नमन करोगे। वह धन ग्रहण करेगा। तुम वहा क्या करोगे ? मैं आज पुस्तक पढूगा। हम वहा दौडेंगे। वह (स्त्री) आज नाचेगी। वे अवश्य सेवा करेगे। वे (स्त्रिया) क्या जानेंगी ? वह प्रतिदिन गेद खेलेगा। वे वहा पूजा करेंगे।

क्रियाकोश

पड=गिरना	हिंस=हिंसा करना
हिण्ड=घूमना	रूस=क्रोधित होना
तव=तप करना	धर=पकडना
मुच्छ=मूर्छित होना	मग्ग=मागना
धोव=धोना	मुच=छोडना
पविस=प्रवेश करना	फल=फलना
पलाय=भाग जाना	बोह=समझना
फुल्ल=फूलना	भज=तोडना
पीस=पीसना	बोल्ल=बोलना
पेच्छ=देखना	मन्न=मानना

निर्देश इन क्रियाओ के तीनो पुरुषो और दोनो वचनो मे भविष्यकाल के रूप लिखो और उनका वाक्यो मे प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएं

एकवचन	बहुवचन
अह दाहिमि = मैं दूंगा।	अम्हे दाहामो = हम देंगे।
तुम दाहिसि = तुम दोगे।	तुम्हे दाहित्था = तुम सब दोगे।
सो दाहिइ = वह देगा।	ते दाहिंति = वे देंगे।

उदाहरण वाक्य

अह तत्थ गीअ गाहिमि = मैं वहाँ गीत गाऊंगा।
तुम अत्थ ठाहिसि = तुम यहा ठहरोगे।
सो रोटिअ खाहिइ = वह रोटी खायेगा।
सा अप्प झाहिइ = वह आत्मा का ध्यान करेगी।
ते सत्थ णेहिंति = वे शास्त्र ले जायेंगे।
अम्हे दुद्ध पाहामो = हम दूध पियेंगे।
तत्थ कि होहिइ = वहाँ क्या होगा ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह कहाँ ठहरेगा। तुम आज गीत गाओगे। वह प्रतिदिन ध्यान करेगा। वे विद्यालय को धन देंगे। हम सब वहाँ दूध पीयेंगे। तुम वहाँ पुस्तक ले जाओगे। वहाँ क्या होगा ? मैं यहाँ रोटी खाऊंगा।

अभ्यास

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए :

(क) सो .... (पड)।
तुम .... (तव)।
अह .... (धोव)।
ते .... (मग्ग)।
अम्हे .... (धर)।
अह .... (ठा)।

(ख) .... धेणु (गाय) दुहिहिइ।
.... जिणहिमि।
.... खमिहित्था।
.... ण हिंसिहामो।
.... सिहिहिसि।
.... होहिइ।

(ग) सो .... लिहिहिइ।
अम्हे .... पढिहामो।
ते .... दुहिहिंति।
ताओ .... भुंजिहिंति।
अह .... पढिहिमि।
तुम .... मग्गिहिसि।

पाठ १६

(क) अकारान्त क्रियाएं : इच्छा/आज्ञा

एकवचन		बहुवचन	
अह पासमु	= मैं देखू ।	अम्हे पासमो	= हम सब देखे ।
तुम पासहि	= तुम देखो ।	तुम्हे पासह	= तुम सब देखो ।
सो पासउ	= वह देखे ।	ते पासतु	= वे सब देखें ।

उदाहरण वाक्य

अह विज्जालय गच्छमु	=	मैं विद्यालय जाऊ ।
तुम दव्व इच्छहि	=	तुम धन को चाहो ।
सो अत्थ न खेलउ	=	वह यहाँ न खेले ।
अम्हे अज्ज वागरण पढमो	=	हम आज व्याकरण पढे ।
तुम्हे तत्थ सत्थ सुणह	=	तुम सब वहाँ शास्त्र सुनो ।
ते तत्थ भुजतु	=	वे वहाँ भोजन करे ।
सा अत्थ कज्ज करउ	=	वह (स्त्री) यहाँ कार्य करे ।
सा पत्त लिहउ	=	वह पत्र लिखे ।
ताओ अत्थ कह कहतु	=	वे (स्त्रिया) यहाँ कथा कहे ।
ते वागरण पुच्छतु	=	वे व्याकरण पूछें ।

प्राकृत मे अनुवाद करो '

हम मब नमन करें। वह धन ग्रहण करे। तुम आज कार्य करो। मैं पुस्तक को पढू । वे सब वहाँ न दौडें। वह (स्त्री) यहाँ नाचे। तुम सब प्रतिदिन सेवा करो। वे (स्त्रिया) यह न जानें। वह प्रतिदिन वहाँ खेले। वे भीतर पूजा करें।

क्रियाकोश :

हव	=	होना	रम	=	रमण करना
ताड	=	पीटना	विहर	=	विहार करना
हण	=	मारना	सद्दह	=	श्रद्धान करना
वड्ढ	=	वढना	निन्द	=	निन्दा करना
गुथ	=	गूथना	लभ	=	प्राप्त करना
णिसेह	=	मना करना	तिम्म	=	भीगना
साह	=	कहना	लघ	=	लाघना
अच्छ	=	ठहरना	सक्क	=	समर्थ होना
अक्कोस	=	आक्रोश करना	सर	=	याद करना
आसक	=	सदेह करना	हरिस	=	खुश होना

निर्देश इन क्रियाओ के तीनो पुरुषो एव दोनो वचनो मे विधि (इच्छा) और आज्ञा के रूप लिखो तथा उनका वाक्यो मे प्रयोग करो।

(ख) आकारान्त, एकारान्त एव ओकारान्त क्रियाए ·

एकवचन		बहुवचन	
अह दामु	= मै दू ।	अम्हे दामो	= हम सब दें ।
तुम दाहि	= तुम दो ।	तुम्हे दाह	= तुम सब दो ।
सो दाउ	= वह दे ।	ते दातु	= वे सब दें ।

उदाहरण वाक्य ·

अह तत्थ गीअ गामु	=	मैं वहाँ गीत गाऊ ।
तुम अत्थ ठाहि	=	तुम यहाँ ठहरो ।
सो पइदिण रोटिअ खाउ	=	वह प्रतिदिन रोटी खाये ।
सा अप्प झाउ	=	वह (स्त्री) आत्मा का ध्यान करे ।
ते चित्त णेन्तु	=	वे चित्र ले जाए ।
अम्हे दुद्ध पामो	=	हम दूध पिये ।
अज्ज तत्थ किं होउ	=	आज वहाँ क्या हो ?
अत्थ गीअ ण गाहि	=	यहाँ गीत न गाओ ।

प्राकृत मे अनुवाद करो .

वह कहाँ ठहरे । तुम आज गीत गाओ । वह प्रतिदिन ध्यान करे । वे धन दें । हम सब आज दूध न पियें । तुम वहाँ पुस्तक ले जाओ । आज वहाँ क्या हो ? क्या मैं यहाँ रोटी खाऊ ?

अभ्यास

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए :

(क) सो ण .... (हण) ।
तुम पइदिण .... (वड्ढ) ।
तत्थ किं .... (हव) ।
ते ण .... (ताड) ।
सा .... (गुथ) ।

(ख) .... तत्थ रमउ ।
.... अत्थ विहरतु ।
.... सद्दहमु ।
.... ण निन्दमो ।
.... जस लभह ।

(ग) सो .... चिट्ठउ ।
अम्हे .... गच्छमो ।
तुम .... पाहि ।
ताओ .... सेवतु ।
सा .... ठाउ ।
तुम्हे .... झाह ।

पाठ १७

सम्बन्ध कृदन्त

पासिऊण	=	देखकर	करिऊण	=	करके
गच्छिऊण	=	जाकर	गिण्हिऊण	=	ग्रहणकर
इच्छिऊण	=	इच्छाकर	नमिऊण	=	नमनकर
खेलिऊण	=	खेलकर	जाणिऊण	=	जानकर
पढिऊण	=	पढकर	धाविऊण	=	दौडकर
सुणिऊण	=	सुनकर	हसिऊण	=	हसकर
भुंजिऊण	=	भोजनकर	णच्चिऊण	=	नाचकर
लिहिऊण	=	लिखकर	सेविऊण	=	सेवाकर
पुच्छिऊण	=	पूछकर	सयिऊण	=	सोकर
कहिऊण	=	कहकर	अच्चिऊण	=	पूजाकर
दाऊण	=	देकर	णेऊण	=	ले जाकर
गाऊण	=	गाकर	पाऊण	=	पीकर
खाऊण	=	खाकर	ठाऊण	=	ठहरकर
झाऊण	=	ध्यानकर	होऊण	=	होकर

प्रयोग वा

सो चित्त पासिऊण लिहइ	=	वह चित्र को देखकर लिखता है।
तुम विज्जालय गच्छिऊण पढसि	=	तुम विद्यालय जाकर पढते हो।
अह जस इच्छिऊण सेवामि	=	मैं यश की इच्छाकर सेवा करता हूँ।
अम्हे पढिऊण खेलामो	=	हम सब पढकर खेलते है।
तुम्हे भुंजिऊण सयिहित्था	=	तुम सब भोजन करके सोओगे।
ते लिहिऊण पुच्छिहिंति	=	वे लिखकर पूछेगे।
सा धाविऊण नमीअ	=	उसने दौडकर नमन किया।
सो तत्थ ठाऊण अच्चीअ	=	उसने वहाँ ठहरकर पूजा की।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं हँसकर नमन करता हूँ। वह जानकर क्या करेगा? तुम देखकर पढो। हम सब ध्यानकर पूजा करेंगे। वे सब व्याकरण पढकर क्या करेंगे। वह नाचकर सो गयी। मैने वहाँ जाकर पत्र लिखा। वह पुस्तक पढकर प्रश्न पूछे।

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो चिन्चिऊण जपइ। ते अच्छिऊण आगच्छीअ। अम्हे पोत्थअ कीणिऊण पढामो। तुम जिणिऊण जूरसि। अह तुलिऊण पेसामि। सा दहिऊण कदइ।

पाठ १८

हेत्वर्थ कृदन्त

पासिउ	=	देखने के लिए	करिउ	=	करने के लिए
गच्छिउ	=	जाने के लिए	गिण्हिउ	=	ग्रहण करने के लिए
इच्छिउ	=	इच्छा करने के लिए	नमिउ	=	नमन करने के लिए
खेलिउ	=	खेलने के लिए	जाणिउ	=	जानने के लिए
पढिउ	=	पढने के लिए	धाविउ	=	दौडने के लिए
सुणिउ	=	सुनने के लिए	हसिउ	=	हँसने के लिए
भुंजिउ	=	भोजन करने के लिए	णच्चिउ	=	नाचने के लिए
लिहिउ	=	लिखने के लिए	सेविउ	=	सेवा करने लिए
पुच्छिउ	=	पूछने के लिए	सयिउ	=	सोने के लिए
कहिउ	=	कहने के लिए	अच्चिउ	=	पूजा करने के लिए
दाउ	=	देने के लिए	णेउ	=	ले जाने के लिए
गाउ	=	गाने के लिए	पाउ	=	पीने के लिए
खाउ	=	खाने के लिए	ठाउ	=	ठहरने के लिए
झाउ	=	ध्यान करने के लिए	होउ	=	होने के लिए

प्रयोग वाक्य :

अह पढिउ विज्जालय गच्छामि	=	मै पढने के लिए विद्यालय जाता हूँ।
तुम खेलिउ तत्थ गच्छीअ	=	तुम खेलने के लिए वहाँ गये।
सो पुण्ण करिउ अच्चिहिइ	=	वह पुण्य करने के लिए पूजा करेगा।
ते धण दाउ इच्छति	=	वे धन देने के लिए इच्छा करते है।
अम्हे लिहिउ पढीअ	=	हम सबने लिखने के लिए पढा है।
तुम्हे नमिउ धावीअ	=	तुम सब नमन करने के लिए दौडे।
सा गाउ पुच्छइ	=	वह गाने के लिए पूछती है।
सो दुद्ध पाउ इच्छइ	=	वह दूध पीने के लिए इच्छा करता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह खेलने लिए वहाँ जाये। तुम चित्र देखने के लिए जाओगे। क्या मैं पढने के लिए जाऊ ? वे सब पूजा करने के लिए वहाँ ठहरते है। हम सब कार्य करने के लिए वहाँ गये। वह गाने के लिए इच्छा करती है। तुम सब यहाँ क्या कहने के लिए ठहरे हो। मैं भोजन करने के लिए वहाँ जाऊगा।

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो तविउ पुच्छइ। ते धोविउ वत्थ णेति। सा पीसिउ तत्थ गच्छइ। अह भुंजिउ भणामि। अम्हे वोहिउ आगच्छीअ।

पाठ १९

अभ्यास

निर्देश इन क्रियाओ के सम्बन्ध कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए –

(क)

रज	=	आसक्त होना	गण	=	गिनना
वच	=	ठगना	उज्जम	=	प्रयत्न करना
उवदिस	=	उपदेश देना	आदिस	=	आज्ञा देना
अवगण	=	अपमान करना	उट्ठ	=	उठना
फाड	=	फाडना	लव	=	कहना
मोत्त	=	छोडना	दट्ठ	=	देखना

निर्देश इन क्रियाओ के हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए –

(ख)

सिच	=	सीचना	परिहा	=	पहिनना
आरो	=	ले आना	ठव	=	स्थापना करना
चक्ख	=	स्वाद लेना	वस	=	रहना
वण्ण	=	वर्णन करना	वह	=	वहना
निमत	=	निमन्त्रण करना	सिव्व	=	सीना

(ग) सम्बन्ध कृदन्त की क्रियाए बनाकर भरिए

सो .... (वच) गच्छीअ । अह .... (दट्ठ) कहिहिमि ।

ते .... (रज) भमति । तुम .... (गण) गिण्हहि ।

.... अवगणूण खामइ । सो वत्थ........ (फाड) णेही ।

सो .... (उट्ठ) दुद्ध पाइ । अह .... (मोत्त) न गच्छिहिमि ।

अम्हे .... (उज्जम) मु जामो । तुम्हे .... (हिण्ड) सयित्था ।

(घ) हेत्वर्थ कृदन्त की क्रियाए बनाकर भरिए :

सो जल .... (सिंच) पुच्छइ । अह .... (चक्ख) भु जामि ।

ते .... (वण्ण) लिहन्ति । अम्हे .... (निमत) गच्छामो ।

सा फल .... (आरो) गच्छीअ । सो वत्थ .... (परिहा) गच्छइ ।

सो .... (वस) पुच्छीअ । अह चित्त .... (ठव) अम्हि ।

सो वत्थ .... (सिव्व) आणेइ । अह अत्थ .... (वस) ठाहिमि ।

पाठ २०

नियम क्रियारूप

क्रिया-प्रत्यय

नि० ९ मूल क्रिया या शब्द मे जो अन्य अक्षर या स्वर जुडते हैं उन्हे प्रत्यय कहा जाता है। यथा-'पासइ' क्रिया के रूप मे 'पास' मूल क्रिया है एव 'इ' प्रत्यय है। इसी तरह प्रत्येक काल की क्रियाओ के अलग-अलग प्रत्यय होते है, जो सभी क्रियाओ मे प्रयोग व काल के अनुसार जुडते रहते है।

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
(प्र० पु०)	मि	मो
(म० पु०)	सि	इत्था
(अ० पु०)	इ	न्ति

नि० १० प्र पु के प्रत्यय मि, मो क्रिया मे जुडने के पूर्व क्रिया के 'अ' को दीर्घ आ हो जाता है। यथा—पास + मि = पास् + आ + मि = पासामि, पास + मो = पासामो।

भूतकाल.

नि० ११ भूतकाल मे सभी अकारान्त क्रियाओ मे तीनो पुरुषो एव दोनो वचनो मे 'ईअ' प्रत्यय जुडता है। यथा—पास + ईअ = पासीअ।

नि० १२ आ, ए एव ओकारान्त क्रियाओ मे सी, ही, हीअ प्रत्यय जुडते है। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक मे 'ही' प्रत्यय वाले रूप प्रयुक्त हुए है। यथा—दा + ही = दाही, णे + ही = णेही।

भविष्यकाल :

नि० १३ भविष्यकाल की क्रियाओ मे कई प्रत्यय जुडते हैं। किन्तु यहाँ निम्न एक प्रत्यय को ही प्रयुक्त किया गया है। इस प्रत्यय के जुडने के पूर्व क्रिया के अ को 'इ' हो गया है। यथा—पास् + इ + हिमि = पासिहिमि।

	एकवचन	बहुवचन
(प्र० पु०)	हिमि	हामो
(म० पु०)	हिसि	हित्था
(अ० पु०)	हिइ	हिंति

इच्छा (विधि)/आज्ञा :

नि० १४ विधि एव आज्ञा वाली क्रियाओं मे निम्न प्रत्यय जुडते हैं —

(प्र० पु०)	मु	मो
(म० पु०)	हि	ह
(अ० पु०)	उ	न्तु

१

पाठ १९

अभ्यास

निर्देश इन क्रियाओ के सम्बन्ध कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए –

(क)

रज	=	आसक्त होना	गरण	=	गिनना
वच	=	ठगना	उज्जम	=	प्रयत्न करना
उवदिस	=	उपदेश देना	आदिस	=	आज्ञा देना
अवगरण	=	अपमान करना	उट्ठ	=	उठना
फाड	=	फाडना	लव	=	कहना
मोत्त	=	छोडना	दट्ठ	=	देखना

निर्देश इन क्रियाओ के हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए –

(ख)

सिच	=	सीचना	परिहा	=	पहिनना
आरणे	=	ले आना	ठव	=	स्थापना करना
चक्ख	=	स्वाद लेना	वस	=	रहना
वण्ण	=	वर्णन करना	वह	=	वहना
निमत	=	निमन्त्रण करना	सिव्व	=	सीना

(ग) सम्बन्ध कृदन्त की क्रियाए बनाकर भरिए

सो • • (वच) गच्छीअ ।	अह' • • • (दट्ठ) कहिहिमि ।
ते ....(रज) भमति ।	तुम .. .. .. (गरण) गिण्हहि ।
.... अवगरणूण खामइ ।	सो वत्थ.... (फाड) रोही ।
सो • .. • (उट्ठ) दुद्ध पाइ ।	अह' .. .. • (मोत्त) न गच्छिहिमि ।
अम्हे' • (उज्जम) भुजामो ।	तुम्हे' .. • .. (हिण्ड) सयित्था ।

(घ) हेत्वर्थ कृदन्त की क्रियाए बनाकर भरिए :

सो जल (सिंच) पुच्छइ ।	अह' ' • (चक्ख) भुजामि ।
ते • .. (वण्ण) लिहन्ति ।	अम्हे' .... (निमत) गच्छामो ।
सा फल (आरणे) गच्छीअ ।	सो वत्थ • • ... .. (परिहा) गच्छइ ।
सो • .. ' • (वस) पुच्छीअ ।	अह चित्त ... • (ठव) अम्हि ।
सो वत्थ • (सिव्व) आरणेइ ।	अह अत्थ .... (वस) ठाहिमि ।

पाठ २०

नियम क्रियारूप

क्रिया-प्रत्यय

नि० ९ मूल क्रिया या शब्द मे जो अन्य अक्षर या स्वर जुडते हैं उन्हे प्रत्यय कहा जाता है। यथा—'पासइ' क्रिया के रूप मे 'पास' मूल क्रिया है एव इ प्रत्यय है। इसी तरह प्रत्येक काल की क्रियाओ के अलग-अलग प्रत्यय होते है जो सभी क्रियाओ मे प्रयोग व काल के अनुसार जुडते रहते है।

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
(प्र० पु०)	मि	मो
(म० पु०)	सि	इत्था
(अ० पु०)	इ	न्ति

नि० १० प्र पु के प्रत्यय मि, मो क्रिया मे जुडने के पूर्व क्रिया के 'अ' को दीर्घ आ हो जाता है। यथा—पास + मि = पास् + आ + मि = पासामि, पास + मो = पासामो।

भूतकाल

नि० ११ भूतकाल मे सभी अकारान्त क्रियाओ मे तीनो पुरुषो एव दोनो वचनो मे 'ईअ' प्रत्यय जुडता है। यथा—पास + ईअ = पासीअ।

नि० १२ आ, ए एव ओकारान्त क्रियाओ मे सी, ही, हीअ प्रत्यय जुडते है। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक मे 'ही' प्रत्यय वाले रूप प्रयुक्त हुए है। यथा—दा + ही = दाही, णे + ही = णेही।

भविष्यकाल :

नि० १३ भविष्यकाल की क्रियाओ मे कई प्रत्यय जुडते हैं। किन्तु यहाँ निम्न एक प्रत्यय को ही प्रयुक्त किया गया है। इस प्रत्यय के जुडने के पूर्व क्रिया के अ को 'इ' हो गया है। यथा—पास् + इ + हिमि = पासिहिमि।

	एकवचन	बहुवचन
(प्र० पु०)	हिमि	हामो
(म० पु०)	हिसि	हित्था
(अ० पु०)	हिइ	हिंति

इच्छा (विधि)/आज्ञा

नि० १४ विधि एव आज्ञा वाली क्रियाओ मे निम्न प्रत्यय जुडते हैं —

(प्र० पु०)	मु	मो
(म० पु०)	हि	ह
(अ० पु०)	उ	न्तु

सम्बन्ध कृदन्त .

नि० १५ जब कर्ता एक कार्य को समाप्त कर दूसरा कार्य करता है तो पहले किये गये कार्य के लिए सम्बन्ध कृदन्त का व्यवहार होता है।

नि० १६ क्रिया से सम्बन्ध कृदन्त रूप बनाने के लिए प्राकृत मे तु, तूण आदि आठ प्रत्यय लगते हैं। यहाँ केवल 'तूण' प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है। तूण (ऊण) प्रत्यय लगाने के पूर्व क्रियाओ के 'अ' को 'इ' हो जाता है। यथा—
पास+इ+ऊण=पासिऊण (देखकर)।

नि० १७ आ, ए एव ओकारान्त क्रियाओ मे 'ऊण' प्रत्यय लगाकर रूप बनाये जाते हैं। यथा—दा+ऊण=दाऊण, णे+ऊण=णेऊण, हो+ऊण=होऊण।

हेत्वर्थ कृदन्त

नि० १८ जब कर्ता किसी अभीष्ट कार्य के लिए कोई दूसरी क्रिया करता है तो वहाँ अभीष्ट कार्य को सूचित करने के लिए हेत्वर्थ कृदन्त का प्रयोग होता है।

नि० १९ इस अभीष्ट कार्य वाली क्रिया मे तुं (उ) प्रत्यय जुड जाता है तथा अकारान्त क्रियाओ के 'अ' को 'इ' हो जाता है। यथा—
पास्+इ+उ=पासिउ (देखने के लिए)।

निर्देश उपर्युक्त पाठो के क्रिया-कोश मे आपने जो नयी क्रियाए सीखी है, उनके विभिन्न कालो मे रूप लिखिए और उनका एक चार्ट बनाइये। यथा—

मूल क्रिया	व०	भू०	भवि०	आज्ञा	स० कृ०	हे० कृ०
पास	पासइ	पासीअ	पासिहिइ	पासउ	पासिऊण	पासिउ
गच्छ	—	—	—	—	—	—
सुण	—	—	—	—	—	—

क्रियाओ का परिचय दीजिए :

	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
पढिहिइ	पढ	भविष्य	अन्य पुरुष	एक वचन
भु जउ	—	—	—	—
नमिऊण	—	—	—	—
हसिउ	—	—	—	—
जपहि	—	—	—	—
कीणित्था	—	—	—	—
पढमु	—	—	—	—

पाठ २१

मिश्रित अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो भणिहिइ।
अह चित्त पेसिहिमि।
तुम वागरण सीखिहिसि।
ते अज्ज आगच्छिहिंति।
अम्हे वत्थ कीणामो।
सा तत्थ कलहइ।
ताओ लज्जति।
अह थुणामि।
सो पडिऊण उट्ठइ।
अह वत्थ धोविऊण गच्छामि।
ते मग्गिऊण भुजति।
अम्हे रूसिऊण गच्छीअ।

सो ताडीअ।
अह दव्व लभीअ।
तत्थ किं हवीअ ?
ते ण सद्दहीअ।
तुम जल सिचहि।
अह फल चक्खमु।
सा वत्थ सिव्वउ।
ते तत्थ वसन्तु।
सो उवदिसिउ भणइ।
अह हिण्डिउ गच्छामि।
ते दट्ठुउ आगच्छीअ।
सो चित्त फाडिउ ण गच्छिहिइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह कल रोया।
मैं नही डरूगा।
वे पालन करेंगे।
तुम अवश्य जीतोगे।
वह वस्त्र को छूती है।
मैं वहाँ तैरता हूँ।
वे यहाँ जोतते है।
वहाँ वह गर्जता है।
वह गाय (धेणु) दुहेगी।
मै वहाँ तप करूँगा।
वे हिंसा नही करते है।
तुम सब धन को चाहते हो।

तुम प्रतिदिन बढते हो।
वह यहाँ विहार करता है।
वे निन्दा नही करते हैं।
वस्त्र यहाँ लाओ।
तुम यहाँ रहो।
तुम वस्त्र पहिनो।
वे निमन्त्रण करें।
मै यहाँ आसक्त होता हूँ।
वह अपमान नही करता है।
वे सदा प्रयत्न करते हैं।
वह आज्ञा देता है।
वे वहाँ खुश होगे।

पाठ २२

निर्देश सज्ञा शब्दो के आगामी पाठो के अभ्यास के लिए निम्नलिखित क्रियाओ, सज्ञाओ एव अव्ययो को याद करलें।

क्रियाकोश ·

अभिरुय	=	अच्छा लगना	णीसर	=	निकलना
उप्पन्न	=	उत्पन्न होना	पच्चाअ	=	विश्वास करना
मोड	=	मोडना	पराजय	=	हारना
चिरण	=	चुनना	मुण	=	जानना
जाय	=	पैदा होना	पसस	=	प्रशसा करना
जुज्झ	=	युद्ध करना	रोअ	=	पसन्द करना
झर	=	झरना	लिप्प	=	लिप्त होना
दुगुच्छ	=	घृणा करना	विक्कीण	=	वेचना

शब्दकोश

पुल्लिग शब्द

अग्गि	=	अग्नि	पव्वअ	=	पर्वत
अवगुण	=	अवगुण	पाइय	=	प्राकृत
आवण	=	दुकान	पासाय	=	महल
गुण	=	गुण	पीअ	=	पीला
जण	=	लोग	भडाआर	=	भडार
जम्म	=	जन्म	भमर	=	भौरा
जीव	=	जीव	भिच्च	=	नौकर
तड	=	तट	मदिर	=	मदिर
तन्तु	=	धागा	महुर	=	मधुर
तिलय	=	तिलक	मुक्ख	=	मूर्ख
तेअ	=	तेज	मुल्ल	=	कीमत
देस	=	देश	रग	=	रग
दोस	=	दोष	रत्त	=	लाल
पइ	=	पति	ववहार	=	व्यापार
पडिअ	=	पडित	वाउ	=	हवा
परिग्गह	=	परिग्रह	विनय	=	विनय
परिणअ	=	विवाह	सजम	=	सयम
सामि	=	स्वामी	पथ	=	रास्ता

नपुंसक लिंग शब्द

अण्णाण	=	अज्ञान	रस	=	रस
अभिहाण	=	नाम	लावण्ण	=	लावण्य
आकड्ढण	=	आकर्षण	वर	=	श्रेष्ठ
उववण	=	उपवन	विचित्त	=	विचित्र
कसिण	=	काला	सवेयण	=	सवेदन
घय	=	घी	सग्गहण	=	सग्रह
जीवण	=	जीवन	सच्च	=	सत्य
धिज्ज	=	धैर्य	सच्छ	=	स्वच्छ
तिण	=	तृण (घास)	सट्ठ	=	शठता
णाण	=	ज्ञान	समप्पण	=	समर्पण
पत्त	=	वर्तन	सम्माण	=	सम्मान
पाण	=	प्राण	सर	=	तालाब
रज्ज	=	राज्य	सासण	=	शासन

स्त्रीलिंग शब्द

आसत्ति	=	आसक्ति	लआ	=	लता
खमा	=	क्षमा	लज्जा	=	लज्जा
तारगा	=	तारे	विज्जा	=	विद्या
भत्ति	=	भक्ति	सड्ढा	=	श्रद्धा
भासा	=	भाषा	सत्ति	=	शक्ति
रज्जु	=	रस्सी	सोहा	=	शोभा

अव्यय

अणेअ	=	अनेक	ज	=	जो
अम्मो	=	आश्चर्य	जहा	=	जैसे
अल	=	बस	जहिं	=	जहा
अवस्स	=	अवश्य	जाव	=	जब तक
इत्थ	=	इस प्रकार	तहा	=	उस प्रकार से
एगया	=	एक बार	तहिं	=	वहा
कल्ल	=	कल	तारिसो	=	वैसा
कहि	=	कहा	ताव	=	तब तक
किं	=	क्यो	दुट्ठु	=	खराब
केरिसो	=	कैसा	धुव	=	निश्चय
केवल	=	केवल	तओ	=	उसके बाद
खिप्प	=	शीघ्र	पच्छा	=	बाद मे
पुणो	=	फिर से	पुव्व	=	पहले

पाठ २३

अकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बालअ	=	बालक	बालओ	बालआ
पुरिस	=	आदमी	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	=	छात्र	छत्तो	छत्ता
सीस	=	शिष्य	सीसो	सीसा
णर	=	मनुष्य	णरो	णरा

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

बालओ सीखइ	=	बालक सीखता है।
पुरिसो दाणिं लिहइ	=	आदमी इस समय लिखता है।
छत्तो पण्ह पुच्छइ	=	छात्र प्रश्न पूछता है।
सीसो सया झाइ	=	शिष्य सदा ध्यान करता है।
णरो दव्व गिण्हइ	=	मनुष्य धन ग्रहण करता है।

बहुवचन

बालआ सीखन्ति	=	बालक सीखते है।
पुरिसा दाणि लिहन्ति	=	आदमी इस समय लिखते हैं।
छत्ता पण्ह पुच्छन्ति	=	छात्र प्रश्न पूछते है।
सीसा सया झान्ति	=	शिष्य सदा ध्यान करते है।
णरा दव्व गिण्हन्ति	=	मनुष्य धन ग्रहण करते है।

शब्दकोश (पु०) :

निव	=	राजा	मेह	=	बादल
बुह	=	बुद्धिमान	मिअ	=	मृग
भड	=	योद्धा	सीह	=	सिंह
देव	=	देवता	मोर	=	मोर
आयरिअ	=	आचार्य	चोर	=	चोर

प्राकृत बनाओ :

राजा पालन करता है। बुद्धिमान पुस्तक पढता है। योद्धा जीतता है। देवता सतुष्ट होता है। आचार्य कथा कहता है। बादल गरजता है। मृग डरता है। सिंह वहाँ रहता है। मोर नाचता है। चोर यहाँ आता है।

निर्देश इन्ही वाक्यो की बहुवचन मे प्राकृत बनाइए।

पाठ २४

प्रथमा

इकारान्त एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.)

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
सुधि	=	विद्वान्	सुधी	सुधिणो
कवि	=	कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	=	कुलपति	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	=	बच्चा	सिसू	सिसुणो
साहु	=	साधु	साहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सुधी उवदिसइ = विद्वान् उपदेश देता है।
कवी पत्त लिहइ = कवि पत्र लिखता है।
कुलवई दव्व गिण्हइ = कुलपति धन ग्रहण करता है।
सिसू तत्थ खेलइ = बच्चा वहाँ खेलता है।
साहू पण्ह पुच्छइ = साधु प्रश्न पूछता है।

बहुवचन

सुधिणो उवदिसन्ति = विद्वान् उपदेश देते है।
कविणो लिहन्ति = कवि लिखते है।
कुलवइणो कि गिण्हन्ति = कुलपति क्या ग्रहण करते हैं?
सिसुणो तत्थ खेलन्ति = बच्चे वहाँ खेलते है।
साहुणो कि पुच्छन्ति = साधु क्या पूछते हैं?

शब्दकोश (पु०)

सेट्ठि	= सेठ	नाणि	= ज्ञानी	जन्तु	=	प्राणी
हत्थि	= हाथी	पक्खि	= पक्षी	गुरु	=	गुरु
जोगि	= योगी	उदहि	= समुद्र	तरु	=	वृक्ष
मुणि	= मुनि	भिक्खु	= भिक्षु	धणु	=	धनुष
तवस्सि	= तपस्वी	पिउ	= पिता	पसु	=	पशु
भूवइ	= राजा	पहु	= स्वामी	बाहु	=	भुजा
गहवइ	= मुखिया	रिउ	= शत्रु	फरसु	=	कुल्हाडा

प्राकृत मे अनुवाद करिए

तपस्वी कहाँ तप करता है? राजा क्रोध नही करता है। मुखिया प्रशसा करता है। ज्ञानी लिप्त नही होता है। पक्षी प्रतिदिन उडता है। शत्रु निन्दा करता है। धनुष टूटता है। वृक्ष गिरता है।

निर्देश इन्ही वाक्यो के बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइये।

पाठ २३

अकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बालअ	=	बालक	बालओ	बालआ
पुरिस	=	आदमी	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	=	छात्र	छत्तो	छत्ता
सीस	=	शिष्य	सीसो	सीसा
णर	=	मनुष्य	णरो	णरा

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

बालओ सीखइ	=	बालक सीखता है।
पुरिसो दाणि लिहइ	=	आदमी इस समय लिखता है।
छत्तो पण्ह पुच्छइ	=	छात्र प्रश्न पूछता है।
सीसो सया झाइ	=	शिष्य सदा ध्यान करता है।
णरो दव्व गिण्हइ	=	मनुष्य धन ग्रहण करता है।

बहुवचन

बालआ सीखन्ति	=	बालक सीखते है।
पुरिसा दाणि लिहन्ति	=	आदमी इस समय लिखते है।
छत्ता पण्ह पुच्छन्ति	=	छात्र प्रश्न पूछते है।
सीसा सया झान्ति	=	शिष्य सदा ध्यान करते है।
णरा दव्व गिण्हन्ति	=	मनुष्य धन ग्रहण करते है।

शब्दकोश (पु०) :

निव	=	राजा	मेह	=	बादल
वुह	=	बुद्धिमान	मिअ	=	मृग
भड	=	योद्धा	सीह	=	सिंह
देव	=	देवता	मोर	=	मोर
आयरिअ	=	आचार्य	चोर	=	चोर

प्राकृत बनाओ :

राजा पालन करता है। बुद्धिमान पुस्तक पढता है। योद्धा जीतता है। देवता सतुष्ट होता है। आचार्य कथा कहता है। बादल गरजता है। मृग डरता है। सिंह वहाँ रहता है। मोर नाचता है। चोर यहाँ आता है।

निर्देश इन्ही वाक्यो की बहुवचन मे प्राकृत बनाइए।

पाठ २४

इकारान्त एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.)

प्रथमा

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
सुधि	=	विद्वान्	सुधी	सुधिणो
कवि	=	कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	=	कुलपति	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	=	बच्चा	सिसू	सिसुणो
साहु	=	साधु	साहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सुधी उवदिसइ = विद्वान् उपदेश देता है।
कवी पत्त लिहइ = कवि पत्र लिखता है।
कुलवई दव्व गिण्हइ = कुलपति धन ग्रहण करता है।
सिसू तत्थ खेलइ = बच्चा वहाँ खेलता है।
साहू पण्ह पुच्छइ = साधु प्रश्न पूछता है।

बहुवचन

सुधिणो उवदिसन्ति = विद्वान् उपदेश देते है।
कविणो लिहन्ति = कवि लिखते हैं।
कुलवइणो कि गिण्हन्ति = कुलपति क्या ग्रहण करते हैं ?
सिसुणो तत्थ खेलन्ति = बच्चे वहाँ खेलते हैं।
साहुणो कि पुच्छन्ति = साधु क्या पूछते है ?

शब्दकोश (पु०)

सेट्ठि = सेठ		नाणि = ज्ञानी		जन्तु = प्राणी			
हत्थि = हाथी		पक्खि = पक्षी		गुरु = गुरु			
जोगि = योगी		उदहि = समुद्र		तरु = वृक्ष			
मुणि = मुनि		भिक्खु = भिक्षु		धणु = धनुष			
तवस्सि = तपस्वी		पिउ = पिता		पसु = पशु			
भूवइ = राजा		पहु = स्वामी		बाहु = भुजा			
गहवइ = मुखिया		रिउ = शत्रु		फरसु = कुल्हाडा			

प्राकृत मे अनुवाद करिए

तपस्वी कहाँ तप करता है ? राजा क्रोध नही करता है। मुखिया प्रशसा करता है। ज्ञानी लिप्त नही होता है। पक्षी प्रतिदिन उडता है। शत्रु निन्दा करता है। धनुष टूटता है। वृक्ष गिरता है।

निर्देश इन्ही वाक्यो के बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइये।

पाठ २५

नियम : प्रथमा (पु० संज्ञा शब्द)

नि० २० पुरुषवाचक संज्ञा शब्दो मे अकारान्त शब्द के आगे प्रथमा विभक्ति मे —

(क) एकवचन मे 'ओ' प्रत्यय लगता है[1]। जैसे—
पुरस=पुरिसो, णर=णरो, देव=देवो आदि।

(ख) बहुवचन मे 'आ' प्रत्यय लगता है। जैसे—
पुरिस=पुरिसा, णर=णरा, देव=देवा आदि।

नि० २१ इकारान्त शब्दो के आगे प्रथमा विभक्ति मे —

(क) एकवचन मे 'ई' प्रत्यय लगता है। अतः शब्द की 'इ' दीर्घ 'ई' हो जाती है। जैसे–कवि=कवी, सेट्ठि=सेट्ठी, हत्थि=हत्थी, आदि।

(ख) बहुवचन मे शब्दो के साथ 'णो' जुड जाता है। जैसे–
कवि=कविणो, सेट्ठि=सेट्ठिणो हत्थि=हत्थिणो, आदि।

नि० २२ उकारान्त शब्दो का 'उ' प्रथमा एकवचन मे –

(क) दीर्घ 'ऊ' हो जाता है। जैसे–
सिसु=सिसू, विउ=विऊ, साहु=साहू, आदि।

(ख) उकारान्त बहुवचन मे शब्द के साथ 'णो' जुड जाता है। जैसे–
सिसु=सिसुणो, विउ=विउणो, साहु=साहुणो, आदि।

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद करो :

निवो खमीअ। मेहा गज्जन्ति। मोरा णच्चन्ति। देवा तूसीअ। भूवइणो भणिहिइ। मुणिणो ण हिंसीअ। पक्खिणो उड्डेहिंति। नाणी सया जिणइ। पहू पससइ। रिउणो निन्दिहिंति। गुरुणो कह भणीअ। पिऊ तत्थ णच्चिहिइ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

मृग कापता है। सिंह गर्जन करेगा। आचार्य उपदेश देगे। योद्धा वहाँ लडे। कुलपति प्रश्न पूछेगा। तपस्वी ने वहाँ तप किया। मुखिया वहाँ रहते हैं। प्राणी उत्पन्न होगे। वे आज वृक्षो को काटेंगे। तुम धनुष तोडो। पशु वहाँ जायेंगे।

---

१ प्राकृत वैयाकरणो ने प्राकृत शब्दो के एकवचन एव बहुवचन मे कई प्रत्ययो का विकल्प से विधान किया है। किन्तु इस पुस्तक मे सरलता की दृष्टि से केवल एक-एक प्रत्यय का ही प्रयोग किया गया है। यही दृष्टिकोण आगे की सभी विभक्तियो मे रखा गया है।

पाठ २६

प्रथमा

अकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०)

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बाला	=	बालिका	बाला	बालाओ
माआ	=	माता	माआ	माआओ
सुण्हा	=	बहू	सुण्हा	सुण्हाओ
माला	=	माला	माला	मालाओ

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

बाला वड्ढइ	=	बालिका बढती है।
माआ अच्चइ	=	माता पूजा करती है।
सुण्हा लज्जइ	=	बहू लजाती है।
माला सोहइ	=	माला शोभित होती है।

बहुवचन

बालाओ वड्ढन्ति	=	बालिकाए बढती है।
माआओ अच्चन्ति	=	माताए पूजा करती हैं।
सुण्हाओ लज्जन्ति	=	बहुए लजाती हैं।
मालाओ सोहन्ति	=	मालाए शोभित होती है।

शब्दकोश (स्त्री०)

विज्जुला	=	बिजली	कमला	=	लक्ष्मी
सरिआ	=	नदी	गोवा	=	ग्वालिन
नावा	=	नाव	छालिया	=	बकरी
कन्ना	=	कन्या	भज्जा	=	पत्नी
धूआ	=	पुत्री	निसा	=	रात्रि

प्राकृत मे अनुवाद करो :

बिजली चमकती है। नदी बहती है। नाव तैरती है। कन्या कहती है। पुत्री गीत गाती है। लक्ष्मी यहाँ आती है। ग्वालिन दूध दुहती है। बकरी डरती है। पत्नी वस्त्र सीती है। रात्रि बीतती है।

निर्देश इन्ही वाक्यो की बहुवचन मे प्राकृत बनाइए।

पाठ २७

इ, ई, उ एव ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) प्रथमा

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
जुवइ	=	युवति	जुवई	जुवईओ
नई	=	नदी	नई	नईओ
साडी	=	साडी	साडी	साडीओ
धेणु	=	गाय	धेणू	धेणूओ
वहू	=	बहू	बहू	वहूओ
सासू	=	सास	सासू	सासूओ

उदाहरण वाक्य

एकवचन

जुवई पइदिण अच्चइ	=	युवति प्रतिदिन पूजा करती है।
नई सणिअ वहइ	=	नदी धीरे बहती है।
साडी सोहइ	=	साडी अच्छी लगती है।
धेणू दुद्ध दाइ	=	गाय दूध देती है।
बहू सया सेवइ	=	बहू सदा सेवा करती है।
सासू वत्थ कीणइ	=	सासें वस्त्र खरीदती है।

बहुवचन

जुवईओ पइदिण अच्चन्ति	=	युवतियाँ प्रतिदिन पूजा करती हैं।
नईओ सणिअ वहन्ति	=	नदियाँ धीरे बहती है।
साडीओ सोहन्ति	=	साडिया अच्छी लगती हैं।
धेणूओ दुद्ध दान्ति	=	गायें दूध देती है।
वहूओ न सेवन्ति	=	बहुए सेवा नही करती हैं।
सासूओ न लज्जन्ति	=	सासें नही लजाती हैं।

शब्दकोश (स्त्री०)

कुमारी	=	कुआरी	धाई	=	धाय
बहिणी	=	बहिन	लच्छी	=	लक्ष्मी
इत्थी	=	स्त्री	नडी	=	नटी (नर्तकी)
रत्ति	=	रात्रि	मऊरी	=	मोरनी
दासी	=	नौकरानी	विज्जु	=	बिजली

निर्देश इन शब्दो के एकवचन और बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइए।

पाठ २८

प्रथमा

अ, इ एव उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) :

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
णयर	=	नगर	णयर	णयराणि
फल	=	फल	फल	फलाणि
पुप्फ	=	फूल	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	=	कमल	कमल	कमलाणि
घर	=	घर	घर	घराणि
खेत्त	=	खेत, मैदान	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	=	शास्त्र	सत्थ	सत्थाणि
वारि	=	पानी	वारिं	वारीणि
दहि	=	दही	दहिं	दहीणि
वत्थु	=	वस्तु	वत्थुं	वत्थूणि

सर्वनाम (नपुं.) :

इम	=	यह	इम	इमाणि
त	=	वह	त	ताणि

उदाहरण वाक्य

एकवचन			बहुवचन		
इम णयर अत्थि	=	यह नगर है।	इमाणि णयराणि सति	=	ये नगर है।
त फल अत्थि	=	वह फल है।	ताणि फलाणि सति	=	वे फल है।
पुप्फ अत्थि	=	फूल है।	पुप्फाणि सति	=	फूल हैं।
कमल अत्थि	=	कमल है।	कमलाणि सति	=	कमल हैं।
घर अत्थि	=	घर है।	घराणि सति	=	घर है।
खेत्त अत्थि	=	खेत है।	खेत्ताणि सति	=	खेत हैं।
सत्थ अत्थि	=	शास्त्र है।	सत्थाणि सति	=	शास्त्र है।
वारिं अत्थि	=	पानी है।	वारीणि सति	=	पानी हैं।
दहिं अत्थि	=	दही है।	दहीणि सति	=	दही है।
वत्थु अत्थि	=	वस्तु है।	वत्थूणि सति	=	वस्तुए हैं।

शब्दकोश (नपुं०) :

भय	=	भय	सद्द	=	शब्द	कम्म	=	कर्म
सर	=	तालाब	सुह	=	सुख	वण	=	जगल
सअड	=	गाडी	दुह	=	दुख	कव्व	=	काव्य
सच्च	=	सत्य	रिण	=	कर्ज	धण	=	धन

निर्देश इन शब्दो के नपु० एकवचन एव बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइये।

पाठ २९

नियम : प्रथमा (स्त्री०, नपुं०)

स्त्रीलिंग शब्द

नि २३ (क) स्त्रीलिंग आकारान्त शब्द प्रथमा विभक्ति मे एकवचन मे यथावत् रहते है। उनमे कोई प्रत्यय नही जुडता।

जैसे—बाला=बाला, सुण्हा=सुण्हा इत्यादि।

(ख) बहुवचन मे शब्द के आगे 'ओ' प्रत्यय जुडता है।
जैसे—बाला=बालाओ, सुण्हा=सुण्हाओ आदि।

नि २४ इकारान्त शब्दो की 'इ' प्रथमा विभक्ति (क) एकवचन मे दीर्घ 'ई' हो जाती है। यथा-जुवइ=जुवई आदि। तथा ईकारान्त शब्द यथावत् रहते हैं। जैसे-नई=नई, साडी=साडी आदि।

(ख) बहुवचन मे दीर्घ 'ई' होकर 'ओ' प्रत्यय जुडता है।

जैसे-जुवइ=जुवईओ, नई=नईओ, साडी=साडीओ आदि।

नि २५ (क) उकारान्त शब्द प्रथमा विभक्ति एकवचन मे दीर्घ 'ऊ' वाले हो जाते हैं।
यथा-धेणु=धेणू, सासू=सासू आदि।

(ख) बहुवचन मे इनमे दीर्घ 'ऊ' होकर 'ओ' प्रत्यय लगता है।
यथा-धेणु=धेणूओ, सासू=सासूओ आदि।

नपुंसकलिंग शब्द

नि २६ (क) नपुंसकलिंग के अ, इ एवं उकारान्त शब्दो के आगे प्रथमा विभक्ति मे एकवचन मे अनुस्वार ( ) प्रत्यय लगता है।

जैसे—णयर=णयरं, वारि=वारिं, वत्थु=वत्थुं आदि।

(ख) बहुवचन मे अ, इ एव उ दीर्घ हो जाते है तथा 'णि' प्रत्यय जुडता है।

जैसे—णयर=णयराणि, वारि=वारीणि, वत्थु=वत्थूणि आदि।

(ग) नपु० सर्वनामो मे भी यही प्रत्यय लगते है।
यथा-इम=इमं, त=तं, इम=इमाणि, त=ताणि।

हिन्दी मे अनुवाद करो :

तत्थ विज्जुला चमक्कीअ। छालियाओ कत्थ गच्छन्ति। दासी पइदिणं सेविहिइ। तत्थ नडीओ णच्चीअ। सअडाणि सन्ति। रिणं अत्थि। धूआओ तत्थ पढन्ति। भारिया वत्थं कीणिहिइ। कुमारीओ अच्चन्ति। सुहाणि सन्ति।

पाठ ३०

सर्वनाम (पु०, स्त्री०) द्वितीया=को

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	मम	=	मुझको	अम्हे	=	हम सब/हम दोनो को
	तुम	=	तुमको	तुम्हे	=	तुम सब/तुम दोनो को
(पु)	त	=	उसको	ते	=	उन सब/उन दोनो को
(स्त्री)	त	=	उसको	ताओ	=	उन सब/उन सब को
(पु)	इम	=	इसको	इमे	=	इनको/इन दोनो को
(स्त्री)	इम	=	इसको	इमाओ	=	इनको/इन दोनो को
(पु)	क	=	किसको	के	=	किनको/किन दोनो को
(स्त्री)	क	=	किसको	काओ	=	किनको/किन दोनो को

उदाहरण वाक्य .

एकवचन

ते मम पासन्ति	=	वे मुझको देखते है।
अह तुम जाणामि	=	मैं तुमको जानता हूँ।
तुम त पुच्छसि	=	तुम उसको पूछते हो।
सो त पासइ	=	वह उसको (स्त्री) देखता है।
अह इम नमामि	=	मैं इसको नमन करता हूँ।
तुम क पाससि	=	तुम किसको देखते हो?

बहुवचन

ते अम्हे पासन्ति	=	वे हम सबको देखते है।
अह तुम्हे जाणामि	=	मैं तुम सबको जानता हूँ।
तुम ते पुच्छसि	=	तुम उन सबको पूछते हो।
सो ताओ नमइ	=	वह उन सबको (स्त्री) नमन करता है।
अह इमे नमामि	=	मैं इनको नमन करता हूँ।
तुम काओ पाससि	=	तुम किन (स्त्रियो) को देखते हो?

प्राकृत मे अनुवाद करो :

मैं तुमको देखता हूँ। बालक मुझको जानता है। राजा उसको पूछता है। वह हम सबको नमन करता है। तुम हम दोनो को देखते हो। वह तुम सबको जानता है। मैं तुम दोनो को नमन करता हूँ। तुम उस (स्त्री) को देखते हो। साधु उन सबको जानता है। कुलपति उन दोनो को पूछता है। तुम उन सब (स्त्रियो) को जानते हो। मैं उन दोनो (स्त्रियो) को देखता हूँ।

पाठ ३१

अ, इ एवं उकारान्त सज्ञा शब्द (पु०) : द्वितीया = को

शब्द	द्वितीया एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअ	बालआ
पुरिस	पुरिस	पुरिसा
छत्त	छत्त	छत्ता
सीस	सीस	सीसा
णर	णर	णरा
सुधि	सुधि	सुधिणो
कवि	कवि	कविणो
कुलवइ	कुलवइ	कुलवइणो
सिसु	सिसु	सिसुणो
साहु	साहु	साहुणो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

पिऊ बालअ पालइ = पिता बालक को पालता है ।
पहू पुरिस पेसइ = स्वामी आदमी को भेजता है ।
गुरू छत्त उवदिसइ = गुरु छात्र को उपदेश देता है ।
आयरिओ सीस खमइ = आचार्य शिष्य को क्षमा करता है ।
भूवई णर बधइ = राजा मनुष्य को बाँधता है ।
निवो सुधि जाणइ = नृप बुद्धिमान को जानता है ।
सो कवि पासइ = वह कवि को देखता है ।
कुलवइ को ण जाणइ = कुलपति को कौन नही जानता है ?
माआ सिसु गिण्हइ = माता बच्चे को लेती है ।
वुहा साहु पुच्छन्ति = बुद्धिमान् साधु को पूछते है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालक को जानता है । मैं आदमी को देखता हूँ । गुरु शिष्य को उपदेश देता है । वे मनुष्य को बाधते हैं । बालक देव को नमन करते हैं । राजा योद्धा को बाधता है । वह कुलपति को नही जानता है । आचार्य तपस्वी को जानते हैं । माता शिशु को पालती है । साधु को कौन नही जानता है ?

उदाहरण वाक्य :

पिऊ बालआ पालइ	=	पिता बालको को पालता है।
पहू पुरिसा पेसइ	=	स्वामी आदमियो को भेजता है।
गुरु छत्ता उवदिसइ	=	गुरु छात्रो को उपदेश देता है।
आयरिओ सीसा खमइ	=	आचार्य शिष्यो को क्षमा करता है।
भूवई णरा बधइ	=	राजा मनुष्यो को बाधता है।
निवो सुधिणो जाणइ	=	नृप विद्वानो को जानता है।
सो कविणो पासइ	=	वह कवियो को देखना है।
कुलवइणो को ण जाणइ	=	कुलपतियो को कौन नही जानता है ?
माआ सिसुणो गिण्हइ	=	माता बच्चो को लेती है।
वुहा साहुणो पुच्छन्ति	=	विद्वान् साधुओ को पूछते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं बालको को जानता हूँ। वह आदमियो को देखता है। साधु शिष्यो को उपदेश देता है। राजा मनुष्यो को बाँधता है। कन्याए देवताओ को नमन करती हैं। शत्रु योद्धाओ को जीतता है। वे कुलपतियो को जानते है। राजा कवियो को पूछता है। माता शिशुओ को पालती है। विद्वानो को कौन नही जानता है ?

शब्दकोश (पु०) :

उवज्भाय	=	उपाध्याय	पुत्त	=	पुत्र
इद	=	इन्द्र	चाइ	=	त्यागी
अज्ज	=	सज्जन	मति	=	मन्त्री
समण	=	श्रमण	गुरु	=	गुरु
जीव	=	जीव	बधु	=	भाई

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम उपाध्याय को नमन करो। वह इन्द्र को देखे। तुम सब सज्जन को नमन करो। वह श्रमण को न छुए। जीव को न मारो। पुत्र को पालो। वे त्यागी को पूछे। तुम मन्त्री को न भेजो। वह गुरु को क्रोधित न करे। तुम भाई को क्षमा करो।

निर्देश इन्ही वाक्यो के बहुवचन द्वितीया मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३२

आ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) द्वितीया=को

शब्द	द्वितीया एकवचन	बहुवचन
बाला	बाल	बालाओ
माआ	माअ	माआओ
सुण्हा	सुण्ह	सुण्हाओ
माला	माल	मालाओ
जुवइ	जुवइ	जुवईओ
नई	नइ	नईओ
साडी	साडि	साडीओ
बहू	बहु	बहूओ
घेणु	घेणु	घेणूओ
सासू	सासु	सासूओ

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

माआ बाल इच्छइ	= माता बालिका को चाहती है।
धूआ माअ नमइ	= पुत्री माता को नमन करती है।
सा सुण्ह जाणइ	= वह बहू को जानती है।
इत्थी माल धारइ	= स्त्री माला को धारण करती है।
भूवई जुवइं पासइ	= राजा युवती को देखता है।
भडो नइ तरइ	= योद्धा नदी को तैरता है।
सुण्हा साडि इच्छइ	= बहू साडी को चाहती है।
सो बहु पुच्छइ	= वह बहू को पूछता है।
णरो घेणु गिण्हइ	= मनुष्य गाय को ग्रहण करता है।
जुवई सासुं नमइ	= युवती सास को नमन करती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

मैं बालिका को देखता हूँ। माता बहू को जानती है। पुत्री माला को धारण करती है। वह साडी को चाहती है। सासु बहू को क्षमा करती है। बहू सास को नमन करती है। राजा माला को धारण करता है। युवती गाय को देखती है। साडी को कौन नही चाहती है? बहू को कौन जानता है?

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

माश्रा बालाश्रो पेसइ	=	माता बालिकाश्रो को भेजती है ।
धूश्रा माश्राश्रो नमइ	=	लडकी माताश्रो को नमन करती है ।
तोश्रा सुण्हाश्रो जाणन्ति	=	वे वहुश्रो को जानती है ।
इत्थीश्रो मालाश्रो धारन्ति	=	स्त्रिया मालाश्रो को धारण करती है ।
भूवई जुवईश्रो पासइ	=	राजा युवतियो को देखता है ।
भडो नईश्रो तरइ	=	योद्धा नदियो को पार करता है ।
सुण्हाश्रो साडीश्रो इच्छन्ति	=	वहुए साडियो को चाहती है ।
सासू बहूश्रो पुच्छइ	=	सास बहुश्रो को पूछती है ।
णरो धेणूश्रो गिण्हइ	=	मनुष्य गायो को लेता है ।
जुवईश्रो सासूश्रो नमन्ति	=	युवतिया सासो को नमन करती हैं ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालिकाश्रो को देखती है । मैं कन्याश्रो को जानता हूँ । माता बहुश्रो को पूछनी है । पुत्रियाँ मालाश्रो को धारण करती हैं । साडियो को कौन नही चाहती हैं ? सासे वहुश्रो को क्षमा करती हैं । बहू सासो को जानती है । युवनी गायो को देखती है । योद्धा युवतियो को देखता है । नदियो को कौन पार करता है ?

शब्दकोश : (स्त्री०)

निसा	=	रात्रि	तरुणी	=	जवान स्त्री
दिसा	=	दिशा	साहुनी	=	साध्वी
गिरा	=	वाणी	पुहवी	=	पृथ्वी
अच्छरसा	=	अप्सरा	सिप्पी	=	सीपी
आणा	=	आज्ञा	वावी	=	वापी

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह रात्रि को देखता है । मैं पूर्व दिशा को जाऊँगा । वह वाणी को सुने । हम सब अप्सरा को देखें । तुम उस आज्ञा को मानो । वह तरुणी को वस्त्र देता है । तुम साध्वी को नमन करो । उसने पृथ्वी को देखा । वह सीपी को लेता है । मैं वापी को बाँधता हूँ ।

निर्देश —इन वाक्यो का वहुवचन (द्वितीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो ।

पाठ ३३

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) - **द्वितीया=को**

शब्द	द्वितीया का एकवचन	बहुवचन
णयर	णयर	णयराणि
फल	फल	फलाणि
पुप्फ	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	कमल	कमलाणि
घर	घर	घराणि
खेत्त	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थ	सत्थाणि
वारि	वारिं	वारीणि
दहि	दहिं	दहीणि
वत्थु	वत्थुं	वत्थूणि

सर्वनाम (नपुं०)

इम	=	इमाणि
त	=	ताणि

उदाहरण वाक्य - **एकवचन**

पुरिसो त णयर गच्छइ	=	आदमी उस नगर को जाता है।
बालओ इद फल इच्छइ	=	बालक इस फल को चाहता है।
अह पुप्फ पासामि	=	मैं फूल को देखता हूँ।
सो कमल गिण्हइ	=	वह कमल को लेता है।
सेट्ठि घर गच्छइ	=	सेठ घर को जाता है।
णरो खेत्त कस्सइ	=	मनुष्य खेत को जोतता है।
छत्तो सत्थ पढइ	=	छात्र शास्त्र को पढता है।
कन्ना वारिं पिबइ	=	कन्या पानी को पीती है।
सुण्हा दहिं खाइ	=	बहू दही को खाती है।
साहू वत्थु ण इच्छइ	=	साधु वस्तु को नही चाहता है।

प्राकृत में अनुवाद करो -

बालक नगर को जाता है। तुम फल को चाहते हो। पुरुष फूल को देखता है। कन्या दही को खाती है। विद्वान् घर को जाता है। युवती कमल को लेती है। छात्र खेत को जोतता है। बालिका पानी को पीती है। बहू शास्त्र पढती है। मुनि वस्तु को नही चाहता है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

भूवई इमाणि णयराणि जयइ	=	राजा इन नगरो को जीतता है।
बालओ ताणि पुप्फाणि इच्छइ	=	बालक उन फूलो को चाहता है।
अह फलाणि भुजामि	=	मैं फलो को खाता हूँ।
पुरिसो कमलाणि गिण्हइ	=	आदमी कमलो को लेता है।
सो घराणि पासइ	=	वह घरो को देखता है।
णरो खेत्ताणि कस्सइ	=	मनुष्य खेतो को जोतता है।
सीसो सत्थाणि पढइ	=	शिष्य शास्त्रो को पढता है।
नई वारीणि गिण्हइ	=	नदी पानियो को ग्रहण करती है।
कन्ना दहीणि पासइ	=	कन्या दहियो को देखती है।
वत्थूणि को ण इच्छइ	=	वस्तुओ को कौन नही चाहता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

मनुष्य नगरो को देखता है। वह फलो को खाता है। मै फूलो को ग्रहण करता हूँ। बालिका कमलो को देखती है। युवतिया घरो को जाती है। आदमी खेतो को जोतते है। छात्र शास्त्रो को पढते है। स्त्रिया पानियो को लाती है। कन्याए दाहियो को देखती हैं। साधु वस्तुओ को नही चाहता है।

शब्दकोश (नपु०)

नयण	=	आख	कुल	=	वश
हियय	=	हृदय	अमिअ	=	अमृत
मित्त	=	मित्र	विस	=	विष
चारित्त	=	चारित्र	अट्ठि	=	हड्डि
पाव	=	पाप	असु	=	आसू

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह आख को खोलता है। मैं हृदय को जानता हूँ। वह मित्र को सतुष्ट करे। हम सब चारित्र को पाले। तुम सब पाप मत करो। पिता कुल को पूछता है। कौन अमृत को नही चाहता है। शिव विष को पीता है। वह हड्डी को त्यागता है। वह आसू को गिराता है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (द्वितीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

अ, इ एवं उकारान्त सज्ञा शब्द (नपुं०) - द्वितीया=को

शब्द	द्वितीया का एकवचन	बहुवचन
णयर	णयर	णयराणि
फल	फल	फलाणि
पुप्फ	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	कमल	कमलाणि
घर	घर	घराणि
खेत्त	खेत्तं	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थ	सत्थाणि
वारि	वारिं	वारीणि
दहि	दहिं	दहीणि
वत्थु	वत्थुं	वत्थूणि

सर्वनाम (नपुं०)

इम	=	इमाणि
त	=	ताणि

उदाहरण वाक्य — एकवचन

पुरिसो त णयर गच्छइ	=	आदमी उस नगर को जाता है।
बालओ इद फल इच्छइ	=	बालक इस फल को चाहता है।
अह पुप्फ पासामि	=	मै फूल को देखता हूँ।
सो कमल गिण्हइ	=	वह कमल को लेता है।
सेट्ठि घर गच्छइ	=	सेठ घर को जाता है।
णरो खेत्त कस्सइ	=	मनुष्य खेत को जोतता है।
छत्तो सत्थ पढइ	=	छात्र शास्त्र को पढता है।
कन्ना वारिं पिबइ	=	कन्या पानी को पीती है।
सुण्हा दहिं खाइ	=	बहू दही को खाती है।
साहू वत्थु ण इच्छइ	=	साधु वस्तु को नही चाहता है।

प्राकृत में अनुवाद करो

बालक नगर को जाता है। तुम कल को चाहते हो। पुरुष फूल को देखता है। कन्या दही को खाती है। विद्वान् घर को जाता है। युवती कमल को लेती है। छात्र खेत को जोतता है। बालिका पानी को पीती है। बहू शास्त्र पढती है। मुनि वस्तु को नही चाहता है।

बहुवचन (नपु०)

भूवई इमाणि णयराणि जयइ	=	राजा इन नगरो को जीतता है।
बालओ ताणि पुप्फाणि इच्छइ	=	बालक उन फूलो को चाहता है।
अह फलाणि भुजामि	=	मैं फलो को खाता हूँ।
पुरिसो कमलाणि गिण्हइ	=	आदमी कमलो को लेता है।
सो घराणि पासइ	=	वह घरो को देखता है।
णरो खेत्ताणि कस्सइ	=	मनुष्य खेतो को जोतता है।
सीसो सत्थाणि पढइ	=	शिष्य शास्त्रो को पढता है।
नई वारीणि गिण्हइ	=	नदी पानियो को ग्रहण करती है।
कन्ना दहीणि पासइ	=	कन्या दहियो को देखती है।
वत्थूणि को ण इच्छइ	=	वस्तुओ को कौन नही चाहता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

मनुष्य नगरो को देखता है। वह फलो को खाता है। मै फूलो को ग्रहण करता हूँ। बालिका कमलो को देखती है। युवतिया घरो को जाती है। आदमी खेतो को जोतते है। छात्र शास्त्रो को पढते हैं। स्त्रिया पानियो को लाती है। कन्याए दाहियो को देखती हैं। साधु वस्तुओ को नही चाहता है।

शब्दकोश (नपु०):

नयण	=	आख	कुल	=	वश
हियय	=	हृदय	अमिअ	=	अमृत
मित्त	=	मित्र	विस	=	विष
चारित्त	=	चारित्र	अट्ठि	=	हड्डि
पाव	=	पाप	असु	=	आसू

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह आख को खोलता है। मैं हृदय को जानता हूँ। वह मित्र को सतुष्ट करे। हम सब चारित्र को पालें। तुम सब पाप मत करो। पिता कुल को पूछता है। कौन अमृत को नही चाहता है। शिव विष को पीता है। वह हड्डी को त्यागता है। वह आसू को गिराता है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (द्वितीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३४

नियम : द्वितीया (पु०, स्त्री०, नपुं०)

सर्वनाम :

नि० २७ (क) द्वितीया विभक्ति के एक वचन मे अम्ह का **मम** तथा तुम्ह का **तुम** रूप बनता है। बहुवचन मे प्रथमा विभक्ति के समान **अम्हे** और **तुम्हे** रूप बनता है।

(ख) पुल्लिग सर्वनाम त, इम एव क मे द्वितीया विभक्ति के एकवचन मे अनुस्वार ( ) लग जाता है। बहुवचन मे प्रथमा विभक्ति के समान रूप बनते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा, का द्वितीया विभक्ति एकवचन मे ह्रस्व हो जाते है तव उनमे अनुस्वार ( ) लगता है और उनके रूप पुल्लिग सर्वनामो के समान वनते है। यथा– **त, इम, कं**। वहुवचन मे इन स्त्री० सर्वनामो के रूप प्रथमा विभक्ति के समान वनते है। यथा– **ताओ, इमाओ काओ**।

पुल्लिग शब्द :

नि० २८ पुल्लिग 'अ', 'इ' एव उकारान्त शब्दो के आगे द्वितीया विभक्ति मे —

(क) एकवचन मे अनुस्वार ( ) प्रत्यय लगता है। जैसे–
वालअ=**बालअ**, सुधि= **सुधिं**, सिसु=**सिसु** आदि।

(ख) वहुवचन मे अकारान्त शब्दो के आगे दीर्घ 'आ' लग जाता है।
जैसे– वालअ=**बालआ**, पुरिस=**पुरिसा**, आदि।

(ग) इकारान्त तथा उकारान्त शब्दो के आगे '**णो**' प्रत्यय लग जाता है।
जैसे– सुधि=**सुधिणो**, सिसु=**सिसुणो**, आदि।

स्त्रीलिंग शब्द :

नि० २९ स्त्रीलिंग आ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त शब्दो के आगे द्वितीया विभक्ति मे —

(क) एकवचन मे अनुस्वार ( ) प्रत्यय लगता है एव शब्द के अन्त के आ, ई तथा ऊ ह्रस्व हो जाते है। जैसे– वाला = **बाल**, नई = **नइ**, वहू=**बहु**, आदि।

(ख) बहुवचन मे आ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त शब्दो के आगे '**ओ**' प्रत्यय लगता है। जैसे– बाला=**बालाओ**, नई=**नईओ**, बहू=**बहूओ**, आदि।

नपु सकलिंग शब्द

नि० ३० नपु सक लिंग अ, इ एव ऊकारान्त शब्दो एव सर्वनामो के रूप द्वितीया विभक्ति के एकवचन एव बहुवचन मे प्रथमा विभक्ति के समान ही होते हैं। यथा–

ए० व०	—	णयर,	वारिं,	वत्थु	इम	त
व० व०	—	णयराणि,	वारीणि,	वत्थूणि	इमाणि	ताणि

पाठ ३५

सर्वनाम (पु० स्त्री०) तृतीया = के द्वारा, साथ, से

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	मए	=	मेरे द्वारा	अम्हेहि	=	हमारे/हम दोनो के द्वारा
	तुमए	=	तेरे द्वारा	तुम्हेहि	=	तुम्हारे/तुम दोनो के द्वारा
(पु०)	तेरा	=	उसके द्वारा	तेहि	=	उनके/उन दोनो के द्वारा
(स्त्री०)	ताए	=	उसके द्वारा	ताहि	=	उसके/उन दोनो के द्वारा
(पु०)	इमेरा	=	इनके द्वारा	इमेहि	=	इन सबके द्वारा
(स्त्री०)	इमाए	=	इनके द्वारा	इमाहि	=	इन सबके द्वारा
(पु०)	केरा	=	किनके द्वारा	केहि	=	किन सबके द्वारा
(स्त्री०)	काए	=	किनके द्वारा	काहि	=	किन सबके द्वारा

उदाहरण वाक्य .

एकवचन

इद कज्ज मए होइ	=	यह कार्य मेरे द्वारा होता है।
त कज्ज तुमए होइ	=	वह कार्य तेरे द्वारा होता है।
इद कज्ज तेरा होइ	=	यह कार्य उसके द्वारा होता है।
त कज्ज ताए होइ	=	वह कार्य उस (स्त्री) के द्वारा होता है।
त कज्ज इमिरा होइ	=	वह कार्य इसके द्वारा होता है।
इद कज्ज काए होइ	=	यह कार्य किस (स्त्री) के द्वारा होता है ?

बहुवचन

इमारिए कज्जारिए अम्हेहि होन्ति	=	ये कार्य हमारे द्वारा होते हैं।
तारिए कज्जारिए तुम्हेहि होन्ति	=	वे कार्य तुम्हारे द्वारा होते है।
इद दुक्ख तेहि होइ	=	यह दुख उनके द्वारा होता है।
त सुक्ख ताहि होइ	=	वह सुख उनके (स्त्री०) द्वारा होता है।
त कज्ज इमेहि होइ	=	वह कार्य इन सबके द्वारा होता है।
त दुक्ख काहि होइ	=	वह दुख किन (स्त्रियो) के द्वारा होता है ?

प्राकृत में अनुवाद करो '

यह सुख मेरे द्वारा होता है। यह कार्य तेरे द्वारा होता है। वह कार्य उसके द्वारा होता है। वे कार्य हमारे द्वारा होते है। यह कार्य तुम दोनो के द्वारा होता है। यह कार्य उन दोनों के द्वारा होता है। ये कार्य उन स्त्रियो के द्वारा होते है। यह दु ख उस स्त्री के द्वारा होता है। यह कार्य उन दोनो स्त्रियो के द्वारा होता है। वे कार्य तुम सबके द्वारा होते हैं। ये कार्य किन सबके द्वारा होते है ?

पाठ ३६

अ; इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) तृतीया=के द्वारा, साथ, से

शब्द	तृतीया-एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालएण	बालएहि
पुरिस	पुरिसेण	पुरिसेहि
छत्त	छत्तेण	छत्तेहि
सीस	सीसेण	सीसेहि
णर	णरेण	णरेहि
सुधि	सुधिणा	सुधीहि
कवि	कविणा	कवीहि
कुलवइ	कुलवइणा	कुलवईहि
सिसु	सिसुणा	सिसूहि
साहु	साहुणा	साहूहि

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

अह् बालएण सह् गच्छामि	=	मैं बालक के साथ जाता हूँ।
बालओ पुरिसेण सह् वसइ	=	बालक आदमी के साथ रहता है।
इद कज्ज छत्तेण होइ	=	यह कार्य छात्र के द्वारा होता है।
साहू सीसेण सह भुंजइ	=	साधु शिष्य के साथ भोजन करता है।
ताणि कज्जाणि नरेण होन्ति	=	वे कार्य मनुष्य के द्वारा होते हैं।
त कज्ज सुधिणा होइ	=	वह कार्य विद्वान् के द्वारा होता है।
कविणा कज्ज होइ	=	कवि के द्वारा कार्य होना है।
निवो कुलवइणा सह् गच्छइ	=	राजा कुलपति के साथ जाता है।
माआ सिसुणा सह् वसइ	=	माता बच्चे के साथ रहती है।
सीसो साहुणा सह् पढइ	=	शिष्य साधु के साथ पढता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :—

वह बालक के साथ रहता है। मैं आदमी के साथ जाता हूँ। ये कार्य शिष्य के द्वारा होते है। साधु छात्र के साथ भोजन करता है। वह कार्य मनुष्य के द्वारा होता है। वे कार्य विद्वान् के द्वारा होते हैं। राजा कवि के साथ रहता है। कुलपति के द्वारा वह कार्य होता है। माता बच्चे के साथ जाती है। वे साधु के साथ जाते है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पु०)

अह बालएहि सह गच्छामि	=	मैं बालको के साथ जाता हूँ।
बालओ पुरिसेहि सह वसइ	=	बालक आदमियो के साथ रहता है।
इमाणि कज्जाणि छत्तेहि होन्ति	=	ये कार्य छात्रो के द्वारा होते है।
साहू सीसेहि सह भुजइ	=	साधु शिष्य के साथ भोजन करता है।
ताणि कज्जाणि णरेहि होन्ति	=	वे कार्य मनुष्यो के द्वारा होते है।
त कज्ज सुधीहि होइ	=	वह कार्य विद्वानो के द्वारा होता है।
कवीहि कज्ज होइ	=	कवियो के द्वारा कार्य होता है।
निवो कुलवइहि सह गच्छइ	=	राजा कुलपतियो के साथ जाता है।
माआ सिसूहि सह वसइ	=	माता बच्चो के साथ रहती है।
सीसो साहूहि सह पढइ	=	शिष्य साधुओ के साथ पढता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालको के साथ रहता है। मैं आदमियो के साथ जाता हूँ। ये कार्य शिष्यो के द्वारा होते हैं। साधु छात्रो के साथ भोजन करता है। वह कार्य मनुष्यो के द्वारा होता है। वे कार्य विद्वानो के द्वारा होते हैं। राजा कवियो के साथ रहता है। यह कार्य कुलपतियो के द्वारा होता है। माता बच्चो के साथ जाती है। वे साधुओ के साथ रहते हैं।

शब्दकोश (पु०)

कर	=	हाथ	केसरि	=	सिंह
कण्ण	=	कान	मणि	=	रत्न
दत	=	दात	फणि	=	साप
कुन्त	=	माला	चक्खु	=	आख
दड	=	लाठी	केउ	=	ध्वजा

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह हाथ से पुस्तक लेता है। मैने कान से शब्द सुना। तुमने दात से रोटी खायी। उसने माला से साप को मारा। हम लाठी से लडेंगे। सिंह के साथ कौन रहेगा? मणि से प्रकाश होता है। साप के साथ वह नही रहेगा। वह आख से चित्र देखता है। ध्वजा से घर शोभित होता है।

निर्देश — इन्ही वाक्यो का बहुवचन (तृतीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३७

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) तृतीया = के द्वारा, साथ, से

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालाहि
माआ	माआए	माआहिं
सुण्हा	सुण्हाए	सुण्हाहि
माला	मालाए	मालाहि
जुवइ	जुवईए	जुवईहि
नई	नईए	नईहि
साडी	साडीए	साडीहि
बहू	बहूए	बहूहि
घेणु	घेणूए	घेणूहि
सासू	सासूए	सासूहि

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सा बालाए सह गच्छइ	=	वह बालिका के साथ जाती है।
अह माआए बिणा ण भुजामि	=	मैं माता के बिना नही खाता हूँ।
इमाणि कज्जाणि सुण्हाए होन्ति	=	ये कार्य बहू के द्वारा होते है।
मालाए परिणाओ होइ	=	माला से विवाह होता है।
पुरिसो जुवईए सह वसइ	=	आदमी युवती के साथ रहता है।
णयर नईए बिणा ण सोहइ	=	नगर नदी के बिना अच्छा नही लगता है।
हत्थी साडीए सोहइ	=	स्त्री साडी के द्वारा शोभित होती है।
सासू बहूए सह कलहइ	=	सास बहू के साथ झगडती है।
घेणूए सह निवो गच्छइ	=	गाय के साथ राजा जाता है।
सासूए सह सुण्हा वसइ	=	सास के साथ बहू रहती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं बालिका के साथ भोजन करता हूँ। वह माता के बिना नहीं खाता है। यह कार्य बहू के द्वारा होता हे। बहू सास के साथ झगडती है। मैं गाय के साथ जाता हूँ। बहू साडी के बिना अच्छी नही लगती है। स्त्री माला से शोभित होती है। नदी के साथ नगर होता है। युवती के साथ राजा जाता है। उसे बहू से सुख होता है।

उदाहरण वाक्य .

वहुवचन (स्त्री०)

सा बालाहि सह गच्छइ	=	वह बालिकाओ के साथ जाती है।
बालओ माआहि विणा ण भुंजइ	=	बालक माताओ के विना नही खाता है।
ताणि कज्जाणि सुण्हाहि होन्ति	=	वे कार्य वहुओ के द्वारा होते है।
परिणओ मालाहि होइ	=	विवाह मालाओ से होता है।
सो जुवईहि सह ण वसइ	=	वह युवतियो के साथ नही रहता है।
णयर नईहि विणा ण सोहइ	=	नगर नदियो के विना शोभित नही होता है।
इत्थी साडीहि सोहइ	=	स्त्री साडियो से अच्छी लगती है।
सासू बहूहि सह कलहइ	=	सास वहुओ के साथ झगडती है।
सो धेणूहि सह गच्छइ	=	वह गायो के साथ जाता है।
सुण्हा सासूहि विणा ण वसइ	=	वहू सासो के विना नही रहती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालिकाओ के साथ नाचती है। हम माताओ से क्या सुनते है ? वहुओ से घर शोभित होता है। मालाओ से बच्चे खेलते हैं। युवतियो के साथ राजा जाता है। देश नदियो से समृद्ध होता है। साडियो से स्त्रिया शोभित होती हैं। सासो के विना घर अच्छा नही लगता है।

शब्दकोश (स्त्री०)

णासा	=	नाक	अंगुली	=	उंगली
जीहा	=	जीभ	असी	=	तलवार
कला	=	कला	मेहदी	=	मेहदी
ससा	=	बहिन	पसाहणी	=	कघी
णणदा	=	ननद	चचु	=	चौंच

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह नाक से फूल सूंघे। तुम जीभ से फल चखते हो। स्त्री कला के साथ शोभित होती है। वह बहिन के साथ आज जायेगा। युवती ननद के बिना नही रहती है। वह उंगली से फूल को छूती है। हम तलवार से हिंसा नही करेंगे। स्त्रिया मेहदी से पैर रगती हैं। मैं कघी से केश सम्हारता हूँ। पक्षी चौच से अन्न चुगता है।

निर्देश — इन वाक्यो का वहुवचन (तृतीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) **तृतीया = के द्वारा, साथ, से**

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरेण	णयरेहि
फल	फलेण	फलेहि
पुप्फ	पुप्फेण	पुप्फेहि
कमल	कमलेण	कमलेहि
घर	घरेण	घरेहि
खेत्त	खेत्तेण	खेत्तेहि
सत्थ	सत्थेण	सत्थेहि
वारि	वारिणा	वारीहि
दहि	दहिणा	दहीहि
वत्थु	वत्थुणा	वत्थूहि

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

णयरेण विणा समिद्धी ण होइ	=	नगर के बिना समृद्धि नही होती है ।
सो फलेण बिणा ण भुंजइ	=	वह फल के बिना भोजन नही करता है ।
पुप्फेण अच्चा होइ	=	फूल के द्वारा पूजा होती है ।
कमलेण सर सोहइ	=	कमल से तालाब शोभित होता है ।
घरेण बिणा सुह णत्थि	=	घर के बिना सुख नही है ।
खेत्तेण विणा सस्सो ण होइ	=	खेत के बिना फसल नही होती है ।
सत्थेण पडिओ होइ	=	शास्त्र से पडित होता है ।
वारिणा बिणा जीवण णत्थि	=	पानी के बिना जीवन नही है ।
अह दहिणा सह भुंजामि	=	मैं दही के साथ भोजन करता हूँ ।
वत्थुणा परिग्गहो होइ	=	वस्तु से परिग्रह होता है ।

प्राकृत में अनुवाद करो

राजा नगर से शोभित होता है। मैं फल के साथ भोजन करता हूँ। फूल से लता अच्छी लगती है। कमल के बिना सरोवर अच्छा नही लगता है। शास्त्र के बिना आदमी मूर्ख होता है। खेत से घर शोभित होता है। वह पानी के बिना भोजन नही करता है। वे दही के साथ भोजन करते हैं। वस्तु के बिना समृद्धि नही होती है। घर के बिना जीवन नही है।

बहुवचन (नपु०)

णयरेहि बिणा समिद्धी ण होइ	=	नगरो के विना समृद्धि नही होती है।
फलेहि बिणा सो ण भुंजइ	=	फलो के बिना वह नही खाता है।
पुप्फेहि अच्चा होइ	=	फूलो से पूजा होती है।
कमलेहि सरोवरो सोहइ	=	कमलो से सरोवर शोभित होता है।
घरेहि रक्खा होइ	=	घरो से रक्षा होती है।
खेत्तेहि बिणा सस्सो ण होइ	=	खेतो के विना फसल नही होती है।
सत्थेहि को पंडिओ होइ	=	शास्त्रो से कौन पंडित होता है ?
वारीहि वाहीओ होन्ति	=	पानियो से बीमारिया होती है।
दहीहि सह अम्हे भुंजामो	=	दहियो के साथ हम भोजन करते हैं।
वत्थूहि सुह ण होइ	=	वस्तुओ से सुख नही होता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

नगरो से व्यापार होता है। वह फलो के साथ भोजन करता है। फूलो से माला बनती है। घरो के बिना जीवन नही है। फूलो से लता अच्छी लगती है। कमलो से पूजा होती है। शास्त्रो के बिना ज्ञान नही होता है। खेतो से किसान समृद्ध होता है। वस्तुओ के बिना घर नही बनता है।

शब्दकोश (नपु०)

कुंडल	=	कुंडल	बीअ	=	बीज
दुग्ग	=	किला	तण	=	तृण (घास)
भायण	=	वर्तन	अक्खि	=	आख
कट्ठ	=	लकडी	जाणु	=	घुटना
आउह	=	शस्त्र	महु	=	शहद

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह कुंडल से शोभित होगी। नगर किला से अच्छा लगता है। वह बर्तन के बिना भोजन नही करता है। मैं लकडी से तैरता हूँ। वह शस्त्र से युद्ध करता है। किसान बीज से खेती करता है। बगीचा घास से शोभित होता है। आख के बिना जीवन नही है। बालक घुटनो से चलता है। वह शहद के साथ रोटी खाता है।

निर्देश — इन्ही वाक्यो का बहुवचन (तृतीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३९

नियम तृतीया (पु०, स्त्री०, नपु ०)

सर्वनाम

नि० ३१ (क) तृतीया विभक्ति के एकवचन मे अम्ह का मए एव तुम्ह का तुमए रूप वनता है। बहुवचन मे इनमे एकार तथा 'हि' प्रत्यय जुड जाता है। यथा– अम्हेहि तुम्हेहि।

(ख) पुल्लिग सर्वनाम त, इम, क मे तृ० वि० एकवचन मे एकार तथा 'ण' प्रत्यय जुडकर तेण, इमेण एव केण रूप वनते हैं। वहुवचन मे एकार एव 'हि' प्रत्यय जुडकर तेहि, इमेहि एव केहि रूप वनते हैं।

(ग) स्त्रीलिग सर्वनाम ता, इमा एव का मे तृ० वि० एकवचन मे 'ए' प्रत्यय तथा वहुवचन मे 'हि' प्रत्यय जुडकर इस प्रकार रूप वनते है —

ए० व० ताए इमाए काए व० व० ताहि इमाहि काहि।

पुल्लिग शब्द

नि० ३२ पुल्लिग अकारान्त शब्दो के आगे तृतीया विभक्ति मे –

(क) एकवचन मे 'ण' प्रत्यय लगता है तथा शब्द के 'अ' को 'ए' हो जाता है। जैसे– वालअ > वालए + ण = वालएण, पुरिस > पुरिसेण, आदि।

(ख) इकारान्त एव उकारान्त पु० शब्दो के आगे 'णा' प्रत्यय लगता है। जैसे– सुधि = सुधिणा, सिसु = सिसुणा, आदि।

(ग) बहुवचन मे अकारान्त शब्दो के 'अ' को 'ए' होता है तथा 'हि' प्रत्यय लगता है।

जैसे– वालअ = बालए + हि = बालएहि, पुरिस = पुरिसेहि, आदि।

(घ) वहुवचन मे इकारान्त एव उकारान्त पु० शब्दो के 'इ' एव 'उ' दीर्घ 'ई', 'ऊ' हो जाते हैं तथा 'हि' प्रत्यय लगता है।

सुधि = सुधी + हि = सुधीहि, सिसु = सिसूहि, आदि।

स्त्रीलिग शब्द :

नि० ३३ स्त्रीलिंग के 'आ', 'ई', ऊकारान्त शब्दो के आगे तृतीया विभक्ति मे –

(क) एकवचन मे 'ए' प्रत्यय लगता है।

जैसे– वाला = बालाए, नई = नईए, वहू = बहूए, आदि।

(ख) बहुवचन मे 'आ', 'ई', ऊकारान्त शब्दो मे 'हि' प्रत्यय लगता है।

जैसे– वाला = बालाहि, नई = नईहि, बहू = बहूहि, आदि।

(ग) इ एव उकारान्त शब्द दीर्घ हो जाते है तब उनमे 'ए' या 'हि' प्रत्यय लगता है।

नपुसकलिग शब्द

नि० ३४ नपुसकलिग के 'अ', 'इ' एव उकारान्त शब्दो के रूप तृतीया विभक्ति के एकवचन एव वहुवचन मे पुल्लिग शब्दो के समान ही वनते है।

नि० ३५ नपु ० सर्वनामो (इद, त) के तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुल्लिग सर्वनामो के समान वनते हैं।

पाठ ४०

चतुर्थी=के लिए

सर्वनाम :

एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
मज्झ	मेरे लिए	अम्हाण	हम सब/हम दोनो के लिए
तुज्झ	तुम्हारे लिए	तुम्हाण	तुम सब/तुम दोनो के लिए
तस्स	उसके लिए	ताण	उनके/उन दोनो के लिए
ताअ	उसके लिए	ताण	उस/उन दोनो(स्त्री)के लिए
(पु०) इमस्स	इसके लिए	इमाण	इनके लिए
(स्त्री०) इमाअ	इसके लिए	इमाण	इनके लिए
(पु०) कस्स	किसके लिए	काण	किनके लिए
(स्त्री०) काअ	किसके लिए	काण	किनके लिए

उदाहरण वाक्य

एकवचन

इद कमल मज्झ अत्थि = यह कमल मेरे लिए है ।
त पुप्फ तुज्झ अत्थि = वह फूल तेरे लिए है ।
त फल तस्स अत्थि = वह फल उसके लिए है ।
इद घर ताअ अत्थि = यह घर उस (स्त्री) के लिए है ।
इद चित्त इमस्स अत्थि = यह चित्र इसके लिए है ।
त वत्थ काअ अत्थि = वह वस्त्र किसके (स्त्री) लिए है ।

बहुवचन

इमाणि सत्थाणि अम्हाण सन्ति = ये शास्त्र हमारे लिए हैं ।
ताणि फलाणि तुम्हाण सन्ति = वे फल तुम सबके लिए हैं ।
इद दुद्ध ताण अत्थि = यह दूध उनके लिए है ।
इमाणि वत्थूणि ताण सन्ति = ये वस्तुए उन स्त्रियो के लिए हैं ।
इमाणि चित्ताणि इमाण सन्ति = ये चित्र इनके लिए है ।
ताणि वत्थाणि काण सन्ति = वे वस्त्र किन (स्त्रियो) के लिए हैं ।

प्राकृत मे अनुवाद करो ·

यह वस्तु मेरे लिए है। वह घर उसके लिए है। यह दूध तुम्हारे लिए है। वे फल हम सबके लिए हैं। यह फूल उस स्त्री के लिए है। ये वस्तुए हम दोनो के लिए हैं। ये कमल तुम सबके लिए हैं। यह घर उन दोनो स्त्रियो के लिए है। ये शास्त्र इन सबके लिए है। यह फल तुम दोनो के लिए है। यह जल उन सब स्त्रियो के लिए है। वह वस्तु किन दोनो के लिए है ?

पाठ ४१

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) चतुर्थी=के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अह बालस्स फल दामि	=	मैं बालक के लिए फल देता हूँ।
इद पुप्फ पुरिसस्स अत्थि	=	यह फूल आदमी के लिए है।
त सत्थ छत्तस्स अत्थि	=	वह शास्त्र छात्र के लिए है।
इद घर सीसस्स अत्थि	=	यह घर शिष्य के लिए है।
सो णरस्स वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्य के लिए वस्तुए देता है।
निवो सुधिणो धण दाइ	=	राजा विद्वान् के लिए धन देता है।
सा कविणो कमल दाइ	=	वह कवि के लिए कमल देती है।
ते कुलवइणो नमन्ति	=	वे कुलपति को नमन करते हैं।
इद दुद्ध सिसुणो अत्थि	=	यह दूध बच्चे के लिए है।
ते साहुणो भोअण दाति	=	वे साधु के लिए भोजन देते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह दूध बालक के लिए है। मैं आदमी के लिए फूल देता हूँ। वह घर छात्र के लिए है। वह बच्चे के लिए फल देता है। मैं शिष्य के लिए शास्त्र देता हूँ। यह वस्तु मनुष्य के लिए है। वह धन विद्वान् के लिए है। राजा कवि के लिए धन देता है। यह कमल कुलपति के लिए है। हम साधु के लिऐ नमन करते है।

बहुवचन (पु०)

अह बालआरण फलारिण दामि	=	मैं बालको के लिए फल देता हूँ।
इमारिण पुप्फारिण पुरिसाण सन्ति	=	ये फूल आदमियो के लिए है।
तारिण सत्थाणि छत्ताण सन्ति	=	वे शास्त्र छात्रो के लिए है।
इद घर सीसारण अत्थि	=	यह घर शिष्यो के लिए है।
सो णरारण वत्थूरिण दाइ	=	वह मनुष्यो के लिए वस्तुए देता है।
निवो सुधीरण धरण दाइ	=	राजा विद्वानो के लिए धन देता है।
सा कवीरण कमलारिण दाइ	=	वह कवियो के लिए कमल देती है।
ते कुलवईरण नमन्ति	=	वे कुलपतियो को नमन करते है।
इद दुद्ध सिसूरण अत्थि	=	यह दूध बच्चो के लिए है।
ते साहूरण भोअण दान्ति	=	वे साधुओ के लिए भोजन देते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह दूध बालको के लिए है। मैं आदमियो के लिए फूल देता हू। यह वस्तु छात्रो के लिए है। वह बच्चो के लिए फल देता है। मै शिष्यो के लिए शास्त्र देता हूँ। यह घर मनुष्यो के लिए है। वह धन विद्वानो के लिए है। ये चित्र कवियो के लिए है। तुम सब कुलपतियो के लिए नमन करते हो। वह साधुओ के लिए नमन करता है।

शब्दकोश (पु०)

वरिणअ	=	वनिया	किसारण	=	किसान
गोव	=	ग्वाला	वानर	=	बन्दर
सेवअ	=	नौकर	हस	=	हस
समिय	=	मजदूर	जोगि	=	योगी
वेज्ज	=	वैद्य	जतु	=	प्राणी

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह धन वनिये के लिए है। यह रोटी ग्वाले के लिए है। यह दही नौकर के लिए है। यह पानी मजदूर के लिए है। यह फल वैद्य के लिए है। वह खेत किसान के लिए है। वह जल बन्दर के लिए है। वह दूध हस के लिए है। यह शास्त्र योगी के लिए है। यह फूल प्राणी के लिए है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (चतुर्थी पु०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद कीजिए।

पाठ ४१

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) — **चतुर्थी = के लिए**

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अह बालस्स फल दामि	=	मैं बालक के लिए फल देता हूँ।
इद पुप्फ पुरिसस्स अत्थि	=	यह फूल आदमी के लिए है।
त सत्थ छत्तस्स अत्थि	=	वह शास्त्र छात्र के लिए है।
इद घर सीसस्स अत्थि	=	यह घर शिष्य के लिए है।
सो णरस्स वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्य के लिए वस्तुए देता है।
निवो सुधिणो धण दाइ	=	राजा विद्वान् के लिए धन देता है।
सा कविणो कमल दाइ	=	वह कवि के लिए कमल देती है।
ते कुलवइणो नमन्ति	=	वे कुलपति को नमन करते हैं।
इद दुद्ध सिसुणो अत्थि	=	यह दूध बच्चे के लिए है।
ते साहुणो भोअण दाति	=	वे साधु के लिए भोजन देते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह दूध बालक के लिए है। मैं आदमी के लिए फूल देता हूँ। वह घर छात्र के लिए है। वह बच्चे के लिए फल देता है। मैं शिष्य के लिए शास्त्र देता हूँ। यह वस्तु मनुष्य के लिए है। वह धन विद्वान् के लिए है। राजा कवि के लिए धन देता है। यह कमल कुलपति के लिए है। हम साधु के लिऐ नमन करते हैं।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

अह बालआण फलाणि दामि	=	मैं बालको के लिए फल देता हूँ।
इमाणि पुप्फाणि पुरिसाण सन्ति	=	ये फूल आदमियो के लिए हैं।
ताणि सत्थाणि छत्ताण सन्ति	=	वे शास्त्र छात्रो के लिए है।
इद घर सीसाण अत्थि	=	यह घर शिष्यो के लिए है।
सो णराण वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्यो के लिए वस्तुए देता है।
निवो सुधीण धण दाइ	=	राजा विद्वानो के लिए धन देता है।
सा कवीण कमलाणि दाइ	=	वह कवियो के लिए कमल देती है।
ते कुलवईण नमन्ति	=	वे कुलपतियो को नमन करते है।
इद दुद्ध सिसूण अत्थि	=	यह दूध बच्चो के लिए है।
ते साहूण भोअण दान्ति	=	वे साधुओ के लिए भोजन देते है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह दूध बालको के लिए है। मैं आदमियो के लिए फूल देता हू। यह वस्तु छात्रो के लिए है। वह बच्चो के लिए फल देता है। मैं शिष्यो के लिए शास्त्र देता हूँ। यह घर मनुष्यो के लिए है। वह धन विद्वानो के लिए है। ये चित्र कवियो के लिए हैं। तुम सब कुलपतियो के लिए नमन करते हो। वह साधुओ के लिए नमन करता है।

शब्दकोश (पु०)

वणिअ	=	वनिया	किसाण	=	किसान
गोव	=	ग्वाला	वानर	=	वन्दर
सेवअ	=	नौकर	हस	=	हस
समिय	=	मजदूर	जोगि	=	योगी
वेज्ज	=	वैद्य	जतु	=	प्राणी

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह धन वनिये के लिए है। यह रोटी ग्वाले के लिए है। यह दही नौकर के लिए है। यह पानी मजदूर के लिए है। यह फल वैद्य के लिए है। वह खेत किसान के लिए है। वह जल वन्दर के लिए है। वह दूध हस के लिए है। यह शास्त्र योगी के लिए है। यह फूल प्राणी के लिए है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (चतुर्थी पु०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद कीजिए।

पाठ ४२

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) : चतुर्थी के=के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मालाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
वहू	वहूए	वहूण
धेणु	धेणूए	धेणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण-वाक्य

एकवचन

सो बालाअ फल दाइ	=	वह बालिका को फल देता है।
अह माआअ धण दामि	=	मैं माता के लिए धन देता हूँ।
सासू सुण्हाअ सांडि दाइ	=	सास बहू के लिए साडी देती है।
सिसू मालाअ कन्दइ	=	बच्चा माला के लिए रोता है।
जुवईआ साडी रोयइ	=	युवती के लिए साडी अच्छी लगती है।
नईआ जल बहइ	=	नदी के लिए पानी बहता है।
पुरिसो साडीआ धण दाइ	=	आदमी साडी के लिए धन देता है।
सासू बहूए उवदिसइ	=	सास बहू के लिए उपदेश देती है।
सो धेणूए धण दाइ	=	वह गाय के लिए धन देता है।
इद वत्थु सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास के लिए है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह फूल बालिका के लिए है। वह कमल माता के लिए है। मैं बहू के लिए साडी देता हूँ। तुम माला के लिए रोते हो। यह साडी युवती के लिए है। राजा नदी के लिए धन देता है। वह स्त्री साडी के लिए रोती है। यह माला बहू के लिए है। यह घर गाय के लिए है। बहू सास के लिए नमन करती है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री०)

अह बालाण फलाणि दामि	=	मैं बालिकाओ के लिए फल देता हूँ ।
ते माआण पुप्फाणि दाति	=	वे माताओ के लिए फूल देते है ।
सासू सुण्हाण साडीओ दाइ	=	सास बहुओ के लिए साडिया देती है ।
सिसू मालाण कन्दइ	=	बच्चा मालाओ के लिए रोता है ।
साडी जुवईण रोयइ	=	साडी युवतियो के लिए अच्छी लगती है ।
जल नईण वहइ	=	पानी नदियो के लिए बहता है ।
पुरिसो साडीण धण दाइ	=	आदमी साडियो के लिए धन देता है ।
सासू बहूण उवदिसइ	=	सास बहुओ के लिए उपदेश देती है ।
सो धेणूण धण दाइ	=	वह गायो के लिए धन देता है ।
इद वत्थु सासूण अत्थि	=	यह वस्तु सासो के लिए है ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

ये चित्र बालिकाओ के लिए है । वे कमल माताओ के लिए है । मैं बहुओ के लिए वस्त्र देता हूँ । तुम मालाओ के लिए क्यो रोते हो ? वे साडिया युवतियो के लिए है । राजा नदियो के लिए धन देता है । साडियो के लिए कौन स्त्री रोती है ? यह घर बहुओ के लिए है । गायो के लिए कौन पानी देता है ? तुम सब सासो के लिए नमन करते हो ।

शब्दकोश (स्त्री०) :

मेहला	=	करधनी	जणणी	=	माता
जत्ता	=	यात्रा	खिड्की	=	खिडकी
सहा	=	सभा	भित्ती	=	दीवाल
चडआ	=	चिडिया	समणी	=	साध्वी
फलिहा	=	खाई	गउ	=	गाय

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह फूल करधनी के लिए है । वह पुस्तक यात्रा के लिए है । यह वस्त्र सभा के लिए है । वह फल चिडिया के लिए है । यह पानी खाई के लिए है । यह साडी माता के लिए है । वह धन खिडकी के लिए है । यह वस्तु दीवाल के लिए है । वह वस्त्र साध्वी के लिए है । यह पानी गाय के लिए है ।

निर्देश :— इन्ही वाक्यो का बहुवचन (चतुर्थी स्त्री०) मे प्राकृत मे अनुवाद कीजिए ।

१

पाठ ४२

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) : **चतुर्थी के=के लिए**

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मालाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
वहू	वहूए	वहूण
धेणु	धेणूए	धेणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण-वाक्य

एकवचन

सो बालाअ फल दाइ	=	वह बालिका को फल देता है।
अहं माआअ धण दामि	=	मैं माता के लिए धन देता हूँ।
सासू सुण्हाअ साडि दाइ	=	सास बहू के लिए साडी देती है।
सिसू मालाअ कन्दइ	=	बच्चा माला के लिए रोता है।
जुवईआ साडी रोयइ	=	युवती के लिए साडी अच्छी लगती है।
नईआ जल बहइ	=	नदी के लिए पानी बहता है।
पुरिसो साडीआ धण दाइ	=	आदमी साडी के लिए धन देता है।
सासू बहूए उवदिसइ	=	सास बहू के लिए उपदेश देती है।
सो धेणूए धण दाइ	=	वह गाय के लिए धन देता है।
इद वत्थु सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास के लिए है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह फूल बालिका के लिए है। वह कमल माता के लिए है। मैं बहू के लिए साडी देता हूँ। तुम माला के लिए रोते हो। यह साडी युवती के लिए है। राजा नदी के लिए धन देता है। वह स्त्री साडी के लिए रोती है। यह माला बहू के लिए है। यह घर गाय के लिए है। बहू सास के लिए नमन करती है।

उदाहरण वाक्य :

वहुवचन (स्त्री०)

अह् बालाण फलाणि दामि	=	मै वालिकाओ के लिए फल देता हूँ ।
ते माआण पुप्फाणि दाति	=	वे माताओ के लिए फूल देते है ।
सासू सुण्हाण साडीओ दाइ	=	सास वहुओ के लिए साडिया देती है ।
सिसू मालाण कन्दइ	=	वच्चा मालाओ के लिए रोता है ।
साडी जुवईण रोयइ	=	साडी युवतियो के लिए अच्छी लगती है ।
जल नईण वहइ	=	पानी नदियो के लिए वहता है ।
पुरिसो साडीण धण दाइ	=	आदमी साडियो के लिए धन देता है ।
सासू बहूण उवदिसइ	=	सास वहुओ के लिए उपदेश देती है ।
सो धेणूण धण दाइ	=	वह गायो के लिए धन देता है ।
इद वत्थु सासूण अत्थि	=	यह वस्तु सासो के लिए है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

ये चित्र वालिकाओ के लिए है । वे कमल माताओ के लिए है । मैं वहुओ के लिए वस्त्र देता हूँ । तुम मालाओ के लिए क्यो रोते हो ? वे साडिया युवतियो के लिए हैं । राजा नदियो के लिए धन देता है । साडियो के लिए कौन स्त्री रोती है ? यह घर बहुओ के लिए है । गायो के लिए कौन पानी देता है ? तुम सव सासो के लिए नमन करते हो ।

शब्दकोश (स्त्री०) :

मेहला	=	करधनी	जणणी	=	माता
जत्ता	=	यात्रा	खिड्डकी	=	खिडकी
सहा	=	सभा	भित्ती	=	दीवाल
चडआ	=	चिडिया	समणी	=	साध्वी
फलिहा	=	खाई	गउ	=	गाय

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह फूल करधनी के लिए है । वह पुस्तक यात्रा के लिए है । यह वस्त्र सभा के लिए है । वह फल चिडिया के लिए है । यह पानी खाई के लिए है । यह साडी माता के लिए है । वह धन खिडकी के लिए है । यह वस्तु दीवाल के लिए है । वह वस्त्र साध्वी के लिए है । यह पानी गाय के लिए है ।

निर्देश – इन्ही वाक्यो का वहुवचन (चतुर्थी स्त्री०) मे प्राकृत मे अनुवाद कीजिए ।

पाठ ४३

अ, इ एव उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) **चतुर्थी=के लिए**

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरस्स	णयराण
फल	फलस्स	फलाण
पुप्फ	पुप्फस्स	पुप्फाण
कमल	कमलस्स	कमलाण
घर	घरस्स	घराण
खेत्त	खेत्तस्स	खेत्ताण
सत्थ	सत्थस्स	सत्थाण
वारि	वारिणो	वारीण
दहि	दहिणो	दहीण
वत्थु	वत्थुणो	वत्थूण

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

णिवो णयरस्स धण दाइ = राजा नगर के लिए धन देता है।
सिसू फलस्स कदइ = बच्चा फल के लिए रोता है।
सा पुप्फस्स सिहइ = वह फूल की चाहना करती है।
त जल कमलस्स अत्थि = वह जल कमल के लिए है।
इद वत्थु घरस्स अत्थि = यह वस्तु घर के लिए है।
इद वारि खेत्तस्स अत्थि = यह पानी खेत के लिए है।
अह सत्थस्स सिहामि = मैं शास्त्र की चाहना करता हूँ।
इमो तडाओ वारिणो अत्थि = यह तालाब पानी के लिए है।
इद पत्त दहिणो अत्थि = यह पात्र (बर्तन) दही के लिए है।
सो वत्थुणो धण दाइ = वह वस्तु के लिए धन देता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो ·

यह धन नगर के लिए है। वह फल के लिए धन देता है। मैं फूल की चाहना करता हूँ। बच्चा कमल के लिए रोता है। यह पानी घर के लिए है। राजा खेत के लिए धन देता है। यह वर्तन पानी के लिए है। वह दही की चाहना करता है। यह घर शास्त्र के लिए है। यह धन वस्तु के लिए है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

णिवो णयराण धण दाइ	=	राजा नगरो के लिए धन देता है।
सिसू फलाण कदइ	=	बच्चा फलो के लिए रोता है।
सा पुप्फाण सिहइ	=	वह फूलो की चाहना करती है।
त जल कमलाण अत्थि	=	वह जल कमलो के लिए है।
इमाणि वत्थूणि घराण सन्ति	=	ये वस्तुए घरो के लिए हैं।
इद वारि खेत्ताणि सन्ति	=	ये पानी खेतो के लिए है।
सो सत्थाण सिहइ	=	वह शास्त्रो को चाहता है।
इमो तडाओ वारीण अत्थि	=	यह तालाव पानियो के लिए है।
इद पत्त दहीण अत्थि	=	यह वर्तन दहियो के लिए है।
ते वत्थूण धण दाति	=	वे वस्तुओ के लिए धन देते है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

यह धन नगरो के लिए है। वह फलो के लिए धन देता है। मैं फूलो को चाहता हूँ। बच्चे कमलो के लिए रोते हैं। यह पानी घरो के लिए है। राजा खेतो के लिए धन देता है। वे बर्तन पानियो के लिए हैं। यह घर शास्त्रो के लिए है। वह धन वस्तुओ के लिए है।

शब्दकोश (नपुं०)

अन्न	=	अनाज		कचण	=	कगना
लोण	=	नमक		कवाड	=	किंवाड
वसन	=	वस्त्र		छत्त	=	छाता
उत्तरीय	=	दुपट्टा		तिण	=	घास
कचुअ	=	कुरता		सिर	=	सिर

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह पानी अनाज के लिए है। वह नमक के लिए झगडता है। वह वस्त्र के लिए वहाँ जायेगी। वे स्त्रिया दुपट्टे के लिए वस्त्र खरीदती है। मैं कुरता के लिए धन मागता हूँ। वह कगना के लिए क्रोध करती है। यह किंवाड के लिए लकडी है। तुम छाता के लिए क्यो रोते हो ? यह खेत घास के लिए है। यह छाता सिर के लिए है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (चतुर्थी नपु०) मे प्राकृत मे अनुवाद कीजिए।

पाठ ४४

नियम . चतुर्थी (पु०, स्त्री० नपुं०)

सर्वनाम ·

नि० ३६ (क) चतुर्थी विभक्ति के एकवचन मे अम्ह का मज्झ और तुम्ह का तुज्झ रूप बनता है। बहुवचन मे आकार एव 'ण' प्रत्यय जुडकर अम्हाण एव तुम्हाण रूप बनते है।

(ख) पुंल्लिग सर्वनाम त, इम, क मे चतुर्थी ए० व० मे 'स्स' प्रत्यय जुडकर तस्स, इमस्स एव कस्स रूप बनते है। बहुवचन मे आकार एव ण प्रत्यय जुडकर ताण, इमाण एव काण रूप बनते है।

(ग) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा, का मे चतुर्थी एकवचन मे 'अ' प्रत्यय तथा बहुवचन मे 'ण' प्रत्यय जुडकर इस प्रकार रूप बनते हैं।

ए० व० ताअ इमाअ काअ ब० व० ताण इमाण काण।

पुंल्लिग शब्द

नि० ३७ (क) पु० अकारान्त सज्ञा शब्दो के आगे चतुर्थी विभक्ति एकवचन मे 'स्स' प्रत्यय लगता हे। जैसे–

पुरिस=पुरिसस्स, णर=णरस्स, छत्त=छत्तस्स, आदि।

(ख) पु० इकारान्त एव उकारान्त शब्दो के आगे 'णो', प्रत्यय लगता है। जैसे–

सुधि=सुधिणो, कवि=कविणो, सिसु=सिसुणो, आदि।

नि० ३८ बहुवचन मे चतुर्थी के पुंल्लिग शब्दो के 'अ', 'इ', 'उ' दीर्घ हो जाते है तथा अन्त मे ण प्रत्यय लगता है। जैसे–

पुरिस=पुरिसाण, सुधि=सुधीण, सिसु=सिसूण, आदि।

स्त्रीलिंग शब्द :

नि० ३९ (क) स्त्री० आकारान्त शब्दो के आगे चतुर्थी विभक्ति मे एकवचन मे 'अ' प्रत्यय लगता है। जैसे–

बाला=बालाअ, सुण्हा = सुण्हाअ, माला=मालाअ, आदि।

(ख) स्त्री० इ, ईकारान्त शब्दो के आगे आ' प्रत्यय लगता है। यथा–

जुवइ=जुवईआ, नई=नईआ, साडी=साडीआ, आदि।

(ग) स्त्री०, उ, ऊकारान्त शब्दो के आगे 'ए' प्रत्यय लगता है। यथा–

धेणु=धेणूए, वहू=बहूए, सासू=सासूए, आदि।

नि० ४० स्त्री० सभी शब्दो के आगे चतुर्थी विभक्ति मे बहुवचन मे 'ण' प्रत्यय लगता है। जैसे– बाला=बालाण, जुवइ=जुवईण, धेणु=धेणूण, आदि।

नपुंसकलिंग शब्द

नि० ४१ नपु० के शब्द के रूप चतुर्थी विभक्ति के एकवचन एव बहुवचन मे पुंल्लिग शब्दो जैसे बनते है।

जैसे– ए० व०–णयरस्स वारिणो वत्थुणो। ब० व०–णयराण वारीण वत्थूण।

पाठ ४५

पंचमी=मे

सर्वनाम

	एकवचन	अर्थ	वहुवचन	अर्थ
	ममाओ	मुझसे	अम्हाहिंनो	हम से/हम दोनो से
	तुमाओ	तुझसे	तुम्हाहिंतो	तुम से/तुम दोनो मे
(पु०)	ताओ	उससे	ताहिंतो	उन से/उन दोनो से
(स्त्री०)	तत्तो	उससे	ताहिंनो	उन सब उन दोनो से
(पु०)	इमाओ	इससे	इमाहिंतो	इनसे
(स्त्री०)	इमत्तो	इससे	इमाहिंतो	इनसे
(पु०)	काओ	किससे	केहिंतो	किनसे
(स्त्री०)	कत्तो	किससे	काहिंतो	किनसे

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सो ममाओ फल गिण्हइ = वह मुझसे फल ग्रहण करता है।
अह तुमाओ कमल गिण्हामि = मैं तुझसे कमल लेता हूँ।
तुम ताओ बीहसि = तुम उससे डरते हो।
अह तत्तो दुगुच्छामि = मै उस स्त्री से घृणा करता हूँ।
सो इमाओ धण गिण्हइ = वह इससे धन ग्रहण करता है।
तुम काओ बीहसि = तुम किससे डरते हो?

बहुवचन

सो अम्हाहितो विरमइ = वह हमसे दूर होता है।
अह तुम्हाहिंतो धण गिण्हामि = मैं तुम लोगो से धन लेता हूँ।
सिसू ताहिंतो बीहइ = बच्चा उनसे डरता है।
सासू ताहितो दुगुच्छइ = सास उन स्त्रियो से घृणा करती है।
सो इमाहितो फल गिण्हइ = वह इनसे फल लेता है।
ते केहिंतो विरमति = वे किनसे दूर होते है?

प्राकृत मे अनुवाद करो

युवती मुझसे घृणा करती है। वह तुमसे डरता है। मैं उससे धन लेता हूँ। बच्चा उस स्त्री से फल लेता है। वह पुरुष हम दोनो से दूर होता है। मैं तुम सबसे डरता हूँ। तुम उन दोनो से घृणा करते हो। मैं उन स्त्रियो से कमलो को ग्रहण करता हूँ।

पाठ ४६

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) **पचमी=से**

शब्द	पचमी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअत्तो	बालआहितो
पुरिस	पुरिसत्तो	पुरिसाहितो
छत्त	छत्तत्तो	छत्ताहितो
सीस	सीसत्तो	सीसाहितो
णर	णरत्तो	णराहितो
सुधि	सुधित्तो	सुधीहितो
कवि	कवित्तो	कवीहितो
कुलवइ	कुलवइत्तो	कुलवईहितो
सिसु	सिसुत्तो	सिसूहितो
साहु	साहुत्तो	साहूहितो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

पुरिसो बालअत्तो पोत्थअ मग्गइ	=	आदमी बालक से पुस्तक मागता है।
सो पुरिसतो धण गिण्हइ	=	वह आदमी से धन लेता है।
अह छत्तत्तो फल णेमि	=	मैं छात्र से फल ले जाता हूँ।
साहू सीसत्तो सत्थ मग्गइ	=	साधु शिष्य से शास्त्र मागता है।
णिवो णरत्तो चित्त गिण्हइ	=	राजा मनुष्य से चित्र ग्रहण करता है।
मुक्खो सुधित्तो बीहइ	=	मूर्ख विद्वान् से डरता है।
छत्तो कुलवइत्तो पोत्थअ गिण्हइ	=	छात्र कुलपति से पुस्तक लेता है।
कवित्तो कव्व उप्पन्नइ	=	कवि से काव्य उत्पन्न होता है।
जणओ सिसुत्तो विरमइ	=	पिता बच्चे से दूर होता है।
सीसो साधुत्तो पढइ	=	शिष्य साधु से पढता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालक से फल लेता है। बच्चा आदमी से डरता है। गुरु छात्र से पराजित होता है (पराजयइ)। राजा शिष्य से पुस्तक मागता है। वह मनुष्य से धन लेता है। बच्चा विद्वान् से फल लेता है। वे कुलपति से डरते हैं। मूर्ख कवि से घृणा करता है। वह बच्चे से फूल लेता है। हम साधु से पढते है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पु०)

सो बालग्राहिंतो पुप्फाणि मग्गइ	=	वह बालको से फूल मागता है ।
ग्रह पुरिसाहितो धण गिण्हामि	=	मैं ग्रादमियो से धन लेता हूँ ।
पुरिसो छत्ताहितो पोत्थग्राणि णेइ	=	ग्रादमी छात्रो से पुस्तके ले जाता है ।
साहू सीसाहितो सत्थ मग्गइ	=	साधु शिष्यो से शास्त्र मागता है ।
णिवो णराहितो चित्ताणि गिण्हइ	=	राजा मनुष्यो से चित्र लेता है ।
मुक्खो सुधीहितो ण बीहइ	=	मूर्ख विद्वानो से नही डरता है ।
छत्ता कुलवईहितो बीहन्ति	=	छात्र कुलपतियो से डरते है ।
कव्वाणि कवीहितो उप्पन्नति	=	काव्य कवियो से उत्पन्न होते है ।
पिउ सिसूहितो विरमइ	=	पिता बच्चो से दूर होता है ।
सीसा साहूहितो पढन्ति	=	शिष्य साधुग्रो से पढते है ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं बालको से गैंद मागता हूँ । वह ग्रादमियो से डरता है । गुरु छात्रो से पराजित होता है । वे शिष्यो से पुस्तके लेते है । पशु मनुष्यो से डरता है । मूर्ख विद्वानो से घृणा करता है । कुलपतियो से कौन नही डरता है । राजा कवियो से धन मागता है । माता बच्चो से दूर नही होती है । वे साधुग्रो से उपदेश सुनते है ।

शब्दकोश (पु०)

रुक्ख	=	पेड	थण	=	स्तन
तडुल	=	चावल	ग्रोट्ठ	=	ग्रोठ
णेउर	=	नुपुर	गाम	=	गाव
पाडल	=	गुलाब	घड	=	घडा
पुत्त	=	बेटा	दीवग्र	=	दीपक

प्राकृत में अनुवाद करो :

पेड से पत्ता गिरता है । चावल से पानी बहता है । नूपुर से शब्द निकलता है । गुलाब से सुगन्ध ग्राती है । पुत्र से पिता पराजित होता है । स्तन से दूध झरता है । ग्रोठ से खून गिरता है । गाव से ग्रादमी ग्राता है । घडे से पानी गिरता है । दीपक से क्या गिरता है ?

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (पचमी पु०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद कीजिए ।

पाठ ४७

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) पंचमी=से

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालत्तो	बालाहिंतो
माआ	माअत्तो	माआहिंतो
सुण्हा	सुण्हत्तो	सुण्हाहिंतो
माला	मालत्तो	मालाहिंतो
जुवइ	जुवइत्तो	जुवईहिंतो
नई	नइत्तो	नईहिंतो
साडी	साडित्तो	साडीहिंतो
वहू	वहुत्तो	वहूहिंतो
घेणु	घेणुत्तो	घेणूहिंतो
सासू	सासुत्तो	सासूहिंतो

उदाहरण-वाक्य

एकवचन

सो बालत्तो माल गिण्हइ	=	वह बालिका से माला लेता है।
माअत्तो सिसू उप्पन्नइ	=	माता से बच्चा उत्पन्न होता है।
सासू सुण्हत्तो धण मग्गइ	=	सास बहू से धन मागती है।
मालत्तो सुयधो आयइ	=	माला से सुगध आती है।
सो जुवइत्तो दुगुच्छइ	=	वह युवती से घृणा करता है।
नइत्तो वारिं णेमि	=	मैं नदी से पानी ले जाता हूँ।
साडित्तो वारिं पडइ	=	साडी से पानी गिरता है।
सा वहुत्तो पढइ	=	वह बहू से पढती है।
तुम घेणुत्तो दुद्ध दुहसि	=	तुम गाय से दूध दुहते हो।
सा सासुत्तो साडिं मग्गइ	=	वह सास से साडी मागती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो .

माता बालिका से फूल मागती है। वह माता से डरता है। बहू से बच्चा उत्पन्न होता है। मैं युवती से पढती हूँ। वह नदी से पानी ले जाता है। माला से पानी गिरता है। साडी से सुगन्ध आती है। वह सास से घृणा करती है। मैं गाय से दूध दुहता हूँ। वह सास से धन लेती है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

अह बालाहितो मालाओ गिण्हामि	=	मैं बालिकाओ से मालाए लेता हूँ।
सिसूओ माआहितो उप्पन्नति	=	बच्चे माताओ से पैदा होते है।
मालाहितो सुयधो आयइ	=	मालाओ से सुगन्ध आती है।
सासू सुण्हाहितो धरण मग्गइ	=	सास बहुओ से धन मागती है।
ते जुवईहितो ण दुगुच्छति	=	वे युवतियो से घृणा नही करते है।
अह नईहितो वारि रोमि	=	मैं नदियो से पानी लाता हूँ।
साडीहितो जल पडइ	=	साडियो से पानी गिरता है।
ताओ बहूहितो पढन्ति	=	वे (स्त्रिया) बहुओ से पढती है।
सो धेणूहितो दुद्ध दुहइ	=	वह गायो से दूध दुहता है।
सा सासूहितो वत्थ मग्गइ	=	वह सासो से वस्त्र मागती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालिकाओ से फूल मागती है। बच्चे माताओ से नही डरते है। सास बहुओ से घृणा नही करती है। वे स्त्रिया नदियो से पानी लाती है। बहुओ से बच्चे पैदा होते हैं। बच्चे युवतियो से पढते है। मालाओ से पानी गिरता है। साडियो से सुगन्ध आती है। बहुए सासो से डरती है। ग्वाला गायो से दूध नही दुहता है। सास बहुओ से धन ग्रहण करती है।

शब्दकोश (स्त्री०)

भाउजाया	=	भौजाई	कयली	=	केला
माउसिआ	=	मौसी	जाई	=	चमेली
पेडिआ	=	पेटी	पुत्ति	=	पुत्री
रच्छा	=	गली	धूलि	=	धूल
महुमक्खिआ	=	मधुमक्खी	सिप्पि	=	सीपी

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह भौजाई से रोटी मागता है। वे मौसी से धन लेते हैं। तुम पेटी से वस्त्र निकालते हो। उस गली से कौन जाता है? धूल से क्या पैदा होता है? केला से पत्ते गिरते हैं। चमेली से सुगन्ध आती है। वह पुत्री से क्या लेता है? वे मधुमक्खी से डरते है। सीपी से मोती पैदा होता है।

निर्देश – इन्ही वाक्यो का बहुवचन (पचमी स्त्री०) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ४८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) : **पंचमी=से**

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरत्तो	णयराहिंतो
फल	फलत्तो	फलाहिंतो
पुप्फ	पुप्फत्तो	पुप्फाहिंतो
कमल	कमलत्तो	कमलाहिंतो
घर	घरत्तो	घराहिंनो
खेत्त	खेत्तत्तो	खेत्ताहिंतो
सत्थ	सत्थतो	सत्थाहिंतो
वारि	वारित्तो	वारीहिंतो
दहि	दहित्तो	दहीहिंतो
वत्थु	वत्थुत्तो	वत्थूहिंतो

उदाहरण-वाक्य :

एकवचन

वालओ णयरत्तो दूर गच्छइ = बालक नगर से दूर जाता है।
फलत्तो रस उपन्नइ = फल से रस उत्पन्न होता है।
पुप्फत्तो सुयधो आयइ = फूल से सुगध आती है।
कमलत्तो वारि पडइ = कमल से पानी गिरता है।
सो घरत्तो धण णेइ = वह घर से धन ले जाता है।
खेत्तत्तो धन्न उप्पन्नइ = खेत से धान्य उत्पन्न होता है।
सो सत्थत्तो विरमइ = वह शास्त्र से दूर रहता है।
वारित्तो कमल णिस्सरइ = पानी से कमल निकलता है।
दहित्तो घय जायइ = दही से घी बनता है।
अह तत्तो वत्थुत्तो दुगुच्छामि = मैं उस वस्तु से घृणा करता हूँ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह आदमी नगर से जाता है। मैं पानी से डरता हूँ। तुम दही से घृणा करते हो। फल से सुगध आती है। वह खेत से धन प्राप्त करता है। मैं घर से वस्तु ले जाता हूँ। वह उस वस्तु से दूर रहता है। कमल से सुगध नही आती है। बच्चा पानी से नही निकलता है। वह दही से घी निकालता है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

णयराहितो गाम दूर अत्थि	=	नगरो मे गाव दूर है।
फलाहितो रसो जायइ	=	फलो से रस पैदा होता है।
पुप्फाहितो सुयधो आयइ	=	फूलो से सुगन्ध आती है।
कमलाहितो जल पडइ	=	कमलो से पानी गिरता है।
घराहितो सो अन्न मग्गइ	=	घरो से वह अन्न मागता है।
खेत्ताहितो धन्न उप्पन्नइ	=	खेतो से धान्य उत्पन्न होता है।
सत्थाहितो सो विरमइ	=	शास्त्रो से वह अलग रहता है।
वारीहिंतो कमलाणि णिस्सरति	=	पानियो से कमल निकलते है।
दहीहितो घय जायइ	=	दहियो से घी पैदा होता है।
वत्थूहितो ते सया विरमति	=	वस्तुओ से वे सदा दूर रहते है।

प्राकृत में अनुवाद करो .

वे आदमी नगरो से दूर आते है। यह पानियो से डरते है। फलो से सुगन्ध आती है। वे खेतो से अन्न प्राप्त करते है। हम घरो से वस्तुए ले जाते है। कमलो से कौन डरता है? फूलो से धूलि गिरती है। वह शास्त्रो से पत्र खीचता है। मैं वस्तुओ से घृणा नही करता हूँ। वे दहियो से घी निकालते है।

शब्दकोश (नपु०)

काणण	=	जगल	पजर	=	पिंजडा
कप्पास	=	कपास	तेल	=	तेल
विजण	=	पखा	णीड्ड	=	घौसला
चदण	=	चदन	जाण	=	वाहन (गाडी)
चम्म	=	चमडा	छिद्दय	=	छेद (बिल)

प्राकृत में अनुवाद करो

जगल से कौन जाता है? कपास से धागा निकलता है। पखा से हवा आती है। चदन से सुगध आती है। चमडे से दुर्गन्ध निकलती है। पिंजरे से पक्षी उडता है। तेल से सुगध नही आती है। घोसले से पक्षी नही जाता है। वाहन से कौन उतरता है? छेद से साप निकलता है।

निर्देश – इन्ही वाक्यो का बहुवचन (पचमी नपु०) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ४९

नियम पचमी (पु०, स्त्री०, नपुं०)

सर्वनाम

नि० ४२ (क) पचमी विभक्ति के एकवचन मे अम्ह का ममाओ एव तुम्ह का तुमाओ रूप वनता है। वहुवचन मे आकार एव 'हिंतो' प्रत्यय जुडकर अम्हाहिंतो एव तुम्हाहिंतो रूप वनते है।

(ख) पुल्लिग सर्वनाम त, इम, क मे पचमी के एकवचन मे इन शब्दो के दीर्घ होने के वाद 'ओ' प्रत्यय जुडता है। यथा–ताओ, इमाओ, काओ। वहुवचन मे 'हिंतो' प्रत्यय जुडता है। यथा– ताहिंतो, इमाहिंतो, काहिंतो।

(ग) स्त्रीलिग सर्वनाम ता, इमा, का पचमी के एकवचन मे ह्रस्व हो जाते हैं तथा उनमे 'त्तो' प्रत्यय जुडता है। यथा– तत्तो, इमत्तो, कत्तो। वहुवचन मे हिंतो प्रत्यय जुडकर पुल्लिग के समान रूप वन जाते हैं। यथा– ताहिंतो, ईमाहिंतो, काहिंतो।

पुल्लिग शब्द

नि० ४३ (क) सभी अ, इ एव उकारान्त पुल्लिग शब्दो के आगे पचमी विभक्ति एकवचन मे 'त्तो' प्रत्यय लगता है। जैसे–
पुरिस = पुरिसत्तो, सुधि = सुधित्तो, सिसु = सिसुत्तो, आदि।

(ख) पचमी वहुवचन मे सभी पुल्लिग शब्द के अ, इ एव उ दीर्घ हो जाते हैं। उसके वाद 'हिंतो' प्रत्यय लगता है। जैसे–
पुरिस = पुरिसाहिंतो, सुधि = सुधीहिंतो, सिसु = सिसूहिंतो।

स्त्रीलिग शब्द :

नि० ४४ (क) सभी आ, ई, ऊकारान्त स्त्री० शब्द पचमी एकवचन मे ह्रस्व हो जाते हैं। उसके वाद 'त्तो' प्रत्यय लगता है। जैसे–
बाला = बालत्तो, नई = नइत्तो, वहू = बहुत्तो।

(ख) पचमी वहुवचन मे सभी स्त्री० शब्द दीर्घ होते हैं तथा उनमे 'हिंतो' प्रत्यय लगता है।
जैसे– बालाहिंतो, नईहिंतो, वहूहिंतो, आदि।

नपुंसकलिग शब्द

नि० ४५ पचमी के एकवचन एव वहुवचन मे नपुसकलिग शब्दो के रूप उपर्युक्त पुल्लिग शब्दो के समान ही वनते हैं जैसे—

ए० व०– णयरत्तो वारित्तो वत्थुत्तो।
व० व०– णयराहिंतो वारीहिंतो वत्थूहिंतो।

पाठ ५०

षष्ठी = का, के, की

सर्वनाम

(एकवचन – बहुवचन)

	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	मज्झ	मेरा	अम्हाण	हमारा, हम दोनो का
	तुज्झ	तेरा	तुम्हाण	तुम्हारा/तुम दोनो का
(पु०)	तस्स	उसका	ताण	उनका, उन दोनो का
(स्त्री०)	ताअ	उसका	ताण	उन सव/उन दोनो का
(पु०)	इमस्स	इसका	इमाण	इन सवका
(स्त्री०)	इमाअ	इसका	इमाण	इन सवका
(पु०)	कस्स	किसका	काण	किनका
(स्त्री०)	काअ	किसका	काण	किनका

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

त मज्झ पुत्थअ अत्थि = वह मेरी पुस्तक है ।
इद तुज्झ कमल अत्थि = यह तेरा कमल है ।
सो तस्स भायरो गच्छइ = वह उसका भाई जाता है ।
सा ताअ धूआ अत्थि = वह उस स्त्री की लडकी है ।
सो इमस्स पुत्तो अत्थि = वह इसका पुत्र है ।
इमा काअ साडी अत्थि = यह किस स्त्री की साडी है ?

बहुवचन

ताणि पुत्थआणि अम्हाण सति = वे पुस्तकें हमारी है ।
इमाणि खेत्ताणि तुम्हाण सन्ति = ये खेत तुम सबके हैं ।
सो ताण जणओ अत्थि = वह उन सबका पिता है ।
सा ताण बहिणी अत्थि = वह उन सब (स्त्रियो) की बहिन है ।
ते इमाण पुत्ता सन्ति = वे इनके पुत्र हैं ।
इमाणि पोत्थआणि काण सन्ति = ये पुस्तके किन स्त्रियो की है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह मेरा भाई है । वह तेरी पुस्तक है । यह उसकी बहिन है । यह साडी उस स्त्री की है । वे दोनो खेत किसके हैं ? ये पुस्तके तुम दोनो की है । यह लडकी किनकी बहिन है ? यह घर उनका है । यह उस स्त्री की सास है । ये मालाए इन दोनो स्त्रियो की हैं । यह हम दोनो की माता है । यह तुम सबका धन है ।

पाठ ५१

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) **षष्ठी=का, के, की**

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

इद पोत्थअ बालअस्स अत्थि	=	यह पुस्तक बालक की है।
इमो पुरिसस्स सिसू अत्थि	=	यह आदमी का बच्चा है।
इद छत्तस्स घर अत्थि	=	यह छात्र का घर है।
त सत्थ सीसस्स अत्थि	=	वह शास्त्र शिष्य का है।
णरस्स जम्मो सेट्ठो अत्थि	=	मनुष्य का जन्म श्रेष्ठ है।
सुधिणो णाण वड्ढइ	=	विद्वान का ज्ञान बढता है।
सो कविणो सम्माण करइ	=	वह कवि का आदर करता है।
अत्थ कुलवइणो सासण अत्थि	=	यहा कुलपति का शासन है।
सिसुणो जणओ गच्छइ	=	बच्चे का पिता जाता है।
इमो साहुणो सीसो अत्थि	=	यह साधु का शिष्य है।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

बालक का पिता जाता है। यह पुस्तक आदमी की है। यह छात्र का कार्य है। वह शिष्य का घर है। यह मनुष्य का मित्र है। वह विद्वान् की पुत्री है। कवि का काव्य उत्तम है। हम कुलपति का सम्मान करते हैं। बच्चे की माता जाती है। यह साधु का शास्त्र है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

इमाणि पोत्थआणि बालआण सन्ति	=	ये पुस्तकें बालको की हैं।
इद घर पुरिसाण अत्थि	=	यह घर आदमियो का है।
त विज्जालय छत्ताण अत्थि	=	वह विद्यालय छात्रो का है।
तानि सत्थाणि सीसाण सन्ति	=	वे शास्त्र शिष्यो के हैं।
णराण जम्मो सेट्ठो अत्थि	=	मनुष्यो का जन्म श्रेष्ठ है।
सुधीण णाण वड्ढइ	=	विद्वानो का ज्ञान बढता है।
सो कवीण सम्माण करइ	=	वह कवियो का सम्मान करता है।
इमे कुलवईण पुत्ता सन्ति	=	ये कुलपतियो के पुत्र है।
इद सिसूण उववण अत्थि	=	यह बच्चो का उपवन है।
साहूण के सीसा सन्ति	=	साधुओ के कौन शिष्य हैं ?

प्राकृत मे अनुवाद करो :

यह बालको का पिता जाता है। उन आदमियो की ये पुस्तके हैं। यह कार्य छात्रो का है। वह शिष्यो का घर है। इन मनुष्यो का कौन मित्र है ? वह विद्वानो की सभा है। कवियो के काव्य कौन पढता है ? हम कुलपतियो के शिष्य है। इन बच्चो की माता वहाँ रहती है। यह साधुओ का शास्त्र है।

शब्दकोश (पु०)

वसह	=	बैल	खत्ति	=	क्षत्रिय
मूसिअ	=	चूहा	नाणि	=	ज्ञानी
कबोअ	=	कबूतर	करेणु	=	हाथी
पाचअ	=	रसोइआ	मच्चु	=	मृत्यु
हट्ट	=	बाजार	विच्छु	=	विच्छू

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह बैल की रस्सी है। वह चूहे का बिल है। यह कबूतर का पिंजडा है। यह रसोइए का पुत्र है। वह बाजार का मार्ग है। यहाँ क्षत्रिय का राज्य है। वह ज्ञानी का घर है। इस हाथी का कौन मालिक है ? उसकी मृत्यु का विश्वास मत करो। यह बिच्छू का बिल है।

निर्देश – इन्ही वाक्यो का बहुवचन (षष्ठी पु०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५२

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) षष्ठी=का, के, की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मालाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
बहू	बहूए	बहूण
घेणु	घेणूए	घेणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

इद वत्थ बालाअ अत्थि	=	यह वस्त्र बालिका का है।
इमो पुत्तो माआअ अत्थि	=	यह पुत्र माता का है।
सुण्हाअ अभिहाणो कमला अत्थि	=	बहू का नाम कमला है।
मालाअ रग पीअ अत्थि	=	माला का रग पीला है।
सो जुवईआ भायरो अत्थि	=	वह युवती का भाई है।
इद नईआ वारिं अत्थि	=	यह नदी का पानी है।
इमो साडीआ आवणो अत्थि	=	यह साडी की दुकान है।
इद बहूए घर अत्थि	=	यह बहू का घर है।
घेणूए दुद्ध महुर होइ	=	गाय का दूध मीठा होता है।
इद वत्थू सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास की है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

बालिका का नाम मधु है। यह माता की पुत्री है। यह साडी बहू की है। वह माला की दुकान है। यह युवती का पति है। यह नदी का तट है। साडी का रग पीला है। यह सास का घर है। यह गाय का मालिक (सामी) है। यह पुस्तक बहू की है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

इमाणि वत्थाणि बालाण सन्ति = ये वस्त्र बालिकाओ के है।
इमाण माआण पुत्ता कत्थ सन्ति = इन माताओ के पुत्र कहाँ है ?
इमाण बहूण कि घर अत्थि = इन बहुओ का कौन घर है ?
ताण मालाण कि मोल्ल अत्थि = उन मालाओ का क्या मोल है ?
सो जुवईण भायरो अत्थि = वह युवतियो का भाई है।
इद नईण वारि अत्थि = यह नदियो का पानी है।
इमो साडीण आवणो अत्थि = यह साडियो की दुकान है।
बहूण त घर अत्थि = बहुओ का वह घर है।
धेणूण दुद्ध महुर होइ = गायो का दूध मीठा होता है।
इमाण सासूण बहूओ कत्थ सन्ति = इन सासो की बहुए कहाँ है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो :

उन बालिकाओ का नाम क्या है ? उन माताओ के वस्त्र कहाँ हैं ? ये बहुओ की साडिया है। वह मालाओ की दुकान है। इन युवतियो के पति यहाँ नही है। नदियो का पानी स्वच्छ होता है। उन साडियो का मालिक कौन है ? बहुओ के पिता वहाँ जाते हैं। गायो का घर कहाँ है ? हमारी सासो के पुत्र कहाँ है ?

शब्दकोश (स्त्री०)

हलिद्दा = हल्दी
मट्टिआ = मिट्टी
कीडिया = चीटी
कुचिया = चाबी
भासा = भाषा
दिट्ठि = दृष्टि
नीइ = नीति
रस्सि = डोरी
डाली = शाखा
सही = सखी

प्राकृत मे अनुवाद करो :

हल्दी का रग पीला होता है। मिट्टी का घडा अच्छा होता है। यह चीटी का बिल है। इस चाबी का रग कैसा है ? यह प्राकृत भाषा की पुस्तक है। यह उसकी दृष्टि का दोष है। यह हमारी नीति का फल है। उस डोरी का रग लाल है। इस डाली का पत्ता पीला है। मेरी सखी का घर वहाँ है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (षष्ठी स्त्री०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५३

अ, इ एव उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०)

षष्ठी=का, के, की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरस्स	णयराण
फल	फलस्स	फलाण
पुप्फ	पुप्फस्स	पुप्फाण
कमल	कमलस्म	कमलाण
घर	घरस्स	घराण
खेत्त	खेत्तस्स	खेत्ताण
सत्थ	सत्थस्स	सत्थाण
वारि	वारिणो	वारीण
दहि	दहिणो	दहीण
वत्थु	वत्थुणो	वत्थूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सो णयरस्स णिवो अत्थि = वह नगर का राजा है।
इमो फलस्स रुक्खो अत्थि = यह फल का वृक्ष है।
इमा पुप्फस्स लआ अत्थि = यह फूल की लता है।
इद कमलस्स पुप्फ अत्थि = यह कमल का फूल है।
सो घरस्स सामी अत्थि = वह घर का स्वामी है।
त खेत्तस्स वारिं अत्थि = वह खेत का पानी है।
सो सत्थस्स पडिओ अत्थि = वह शास्त्र का पडित है।
इमा वारिणो नई अत्थि = यह पानी की नदी है।
इद दहिणो पत्त अत्थि = यह दही का वर्तन है।
सो वत्थुणो ववहारो करेइ = वह वस्तु का व्यापार करता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह नगर का आदमी है। वह फल की दुकान है। यह फूल की शोभा है। वह कमल का सरोवर है। वह घर का नौकर है। मै खेत का मालिक हूँ। वहाँ शास्त्र का मन्दिर है। वहाँ पानी की नदी नही है। दही का मूल्य क्या है? वस्तु का सग्रह अच्छा नही है।

उदाहरण वाक्य

वहुवचन (नपु०)

ताण णयराण णिवो को अत्थि	=	उन नगरो का राजा कौन है ?
इमो फलाण रसो अत्थि	=	यह फलो का रस है।
इमा पुप्फाण लग्रा अत्थि	=	यह फूलो की माला है।
इमा कमलाण माला अत्थि	=	यह कमलो की माला है।
ताण घराण को सामी अत्थि	=	उन घरो का कौन मालिक है ?
खेत्ताण वारि वहइ	=	खेतो का पानी वहता है।
सो सत्थाण पडिग्रो णत्थि	=	वह शास्त्रो का पडित नही है।
इमा वारीण नई अत्थि	=	यह पानियो की नदी है।
त दहीण पत्त अत्थि	=	वह दहियो का वर्तन है।
इमो वत्थूण आवणो अत्थि	=	वह वस्तुओ की दुकान है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

नगरो की शोभा राजा है। फलो की दुकान यहाँ नही है। वह फूलो की माला गूथती है। यह कमलो का तालाब है। वह उन घरो का नौकर है। तुम इन खेतो के स्वामी हो। वहाँ शास्त्रो का भण्डार है। पानियो का रग विचित्र है। इन दहियो का घी कौन बेचेगा ? उन वस्तुओ का सग्रह मत करो।

शब्दकोश : (नपु०)

चिन्तण	=	विचार	महाणस	=	रसोइघर
आयास	=	आकाश	उवहाण	=	तकिया
हिम	=	वर्फ	तबोल	=	पान
हेम	=	स्वर्ण	मोत्तिय	=	मोती
हिरण्ण	=	चादी	जउ	=	लाख

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह विचार का अन्तर है। वे आकाश के तारे है। यह बर्फ का पहाड है। वह सोने का कगना है। यह चादी का नूपुर है। यह रसोइघर का बर्तन है। वह तकिया का कपास है। यह पान की दुकान है। वह मोती की माला है। यह लाख का भवन है।

निर्देश – इन्ही वाक्यो का (वहुवचन षष्ठी) मे भी प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५४

नियम : षष्ठी (पु०, स्त्री०, नपुं०)

नि० ४६ प्राकृत मे षष्ठी विभक्ति मे सभी सर्वनाम तथा सज्ञा शब्द चतुर्थी विभक्ति के समान ही प्रयुक्त होते है। यथा–

सर्वनाम

ए० व० –	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स
व० व० –	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण
(स्त्रीलिंग)	ए० व० –		ताअ	इमाअ	काअ
	व० व० –		ताण	इमाण	काण

पुल्लिग शब्द

नि० ४७ (क) पु० अकारान्त सज्ञा शब्दो के आगे षष्ठी विभक्ति एकवचन मे 'स्स' प्रत्यय लगता है। जैसे–
पुरिस=पुरिसस्स, णर=णरस्स छत्त=छत्तस्स, आदि।

(ख) पु० इकारान्त एव उकारान्त शब्दो के आगे 'णो' प्रत्यय लगता है। जैसे सुधि=सुधिणो, कवि=कविणो, सिसु=सिसुणो, आदि।

(ग) बहुवचन मे षष्ठी के पुल्लिग शब्दो के 'अ', 'इ', 'उ' दीर्घ हो जाते हैं तथा अन्त मे 'ण' प्रत्यय लगता है। जैसे–
पुरिस=पुरिसाण, सुधि=सुधीण, सिसु=सिसूण, आदि।

स्त्रीलिंग शब्द

नि० ४८ (क) स्त्री० अकारान्त शब्दो के आगे षष्ठी विभक्ति मे एकवचन मे 'अ' प्रत्यय लगता है। जैसे– बाला=बालाअ, सुण्हा=सुण्हाअ, माला=मालाअ, आदि।

(ख) स्त्री०, इ, ईकारान्त शब्दो के आगे आ' प्रत्यय लगता है यथा–
जुवइ=जुवईआ, नई=नईआ, साडी=साडीआ, आदि

(ग) स्त्री०, उ, ऊकारान्त शब्दो के आगे 'ए' प्रत्यय लगता है। यथा–
धेणु=धेणूए, वहू=बहूए सासू=सासूए, आदि।

(घ) स्त्री० सभी शब्दो के आगे षष्ठी विभक्ति मे बहुवचन मे 'ण' प्रत्यय लगता है।
जैसे– बाला=बालाण, जुवइ=जुवईण, धेणु=धेणूण, आदि।

नि० ४९ स्त्री० इकारान्त एव उकारान्त शब्दो मे दीर्घ होने के बाद प्रत्यय लगता है। यथा–जुवइ=जुवई+आ, धेणू+ए, आदि।

नपुंसकलिंग शब्द

नि० ५० नपु० के सभी शब्दो के रूप षष्ठी विभक्ति मे एकवचन एव बहुवचन मे पुल्लिग शब्दो जैसे बनते है।

पाठ ५५

सर्वनाम सप्तमी = मे, पर

	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	अम्हम्मि	मुझमे	अम्हेसु	हम सवमे/हम दोनो मे
	तुम्हम्मि	तुझमे	तुम्हेसु	तुम सवमे/तुम दोनो मे
(पु०)	तम्मि	उसमे	तेसु	उनमे/उन दोनो मे
(स्त्री०)	ताए	उसमे	तासु	उनमे/उन दोनो मे
(पु०)	इमम्मि	इस मे	इमेसु	इन सव मे
(स्त्री०)	इमाए	इस मे	इमासु	इन सव मे
(पु०)	कम्मि	किस मे	केसु	किन मे
(स्त्री०)	काए	किस मे	कासु	किन मे

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अम्हमि जीवरा अत्थि = मुझ मे जीवन है।
तुम्हम्मि पाणा सति = तुझ मे प्राण है।
तम्मि सत्ति अत्थि = उसमे शक्ति है।
ताए लावण्ण अत्थि = उस स्त्री मे सौन्दर्य है।
इमम्मि वाऊ नत्थि = इसमे हवा नही है।
काए लज्जा अत्थि = किस स्त्री मे लज्जा है ?

बहुवचन

अम्हेसु पाणा सति = हम सवमे प्राण है।
तुम्हेसु अवगुणा सति = तुम दोनो मे अवगुण है।
तेसु खमा वसइ = उनमे क्षमा रहती है।
तासु सद्धा निवसइ = उनमे (स्त्रियो मे) श्रद्धा निवास करती है।
इमेसु पाणा ण सन्ति = इनमे प्राण नही है।
कासु लज्जा ण अत्थि = किन स्त्रियो मे लज्जा नही है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मुझमे शक्ति है। तुझमे सौन्दर्य है। उसमे जीवन है। इस स्त्री मे क्षमा रहती है। हम सवमे अवगुण है। तुम दोनो मे प्राण हैं। उन सबमे शक्ति है। किन दोनो स्त्रियो मे सौन्दर्य है ? हम दोनो मे जीवन है। तुम सबमे क्षमा रहती है। उन सब स्त्रियो मे लज्जा है। उन दोनो मे शक्ति है।

पाठ ५६

अ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) **सप्तमी=मे, पर**

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
वालअ	वालए	वालएसु
पुरिस	पुरिसे	पुरिसेसु
छत्त	छत्ते	छत्तेसु
सीस	सीसे	सीसेसु
णर	णरे	णरेसु
सुधि	सुधिम्मि	सुधीसु
कवि	कविम्मि	कवीसु
कुलवइ	कुलवइम्मि	कुलवईसु
सिसु	सिसुम्मि	सिसूसु
साहु	साहुम्मि	साहूसु

उदाहरण वाक्य

एकवचन

वालए सच्च अत्थि	=	वालक मे सत्य है ।
पुरिसे सट्ठ अत्थि	=	आदमी मे शठता है ।
छत्ते विनय नत्थि	=	छात्र मे विनय नही है ।
सीसे विनय अत्थि	=	शिष्य मे विनय है ।
णरे सत्ती अत्थि	=	मनुष्य मे शक्ति है ।
सुधिम्मि बुद्धी अत्थि	=	विद्वान् मे बुद्धि है ।
कविम्मि सवेयण अत्थि	=	कवि मे सवेदन है ।
कुलवइम्मि सद्धा अत्थि	=	कुलपति मे श्रद्धा है ।
सिसुम्मि अण्णाण अत्थि	=	बच्चे मे अज्ञान है ।
साहुम्मि तेओ अत्थि	=	साधु मे तेज है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

विनय वालक मे है । सत्य छात्र मे है । शिष्य मे श्रद्धा हे । मनुष्य मे जीवन है आदमी मे अवगुण है । कवि मे बुद्धि है । कुलपति मे ज्ञान है । विद्वान् मे क्षमा है । साधु मे शक्ति है । बच्चे मे प्राण है ।

उदाहरण वाक्य :

वहुवचन (पु०)

केसु बालएसु सच्च अत्थि	=	किन वालकों मे सत्य है ?
इमेसु पुरिसेसु सट्ठ णत्थि	=	इन आदमियो मे शठता नही है।
तेसु छत्तेसु विनय अत्थि	=	उन छात्रो मे विनय है।
सीसेसु णाण अत्थि	=	शिष्यो मे ज्ञान है।
इमेसु णरेसु सत्ती अत्थि	=	इन मनुष्यो मे शक्ति है।
सुधीसु सया बुद्धी वसइ	=	विद्वानो मे सदा बुद्धि रहती है।
तेसु कवीसु सवेयण अत्थि	=	उन कवियो मे सवेदन है।
कुलपईसु सजमो अत्थि	=	कुलपतियो मे सयम है।
तेसु सिसूसु अण्णाण अत्थि	=	उन बच्चो मे अज्ञान है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

बालको मे विनय है। इन छात्रो मे सत्य है। किन मनुष्यो मे जीवन है ? उन आदमियो मे अवगुण है। कवियो मे सदा बुद्धि नही रहती है। कुलपतियो मे हमारी श्रद्धा है। उन विद्वानो मे क्षमा है। किन साधुओ मे तुम सवकी भक्ति है। उन बच्चो मे प्राण हैं।

शब्दकोश (पु०)

तिल	=	तिल	वभयारि	=	व्रह्मचारी
गब्भ	=	गर्भ	आहार	=	भोजन
बसअ	=	वासुरी	उदहि	=	समुद्र
उट्ठ	=	ऊट	भाणु	=	सूर्य
जर	=	बुखार	सव्वण्णु	=	सर्वज्ञ
काय	=	शरीर	मठ	=	मठ
पोक्खर	=	तालाब	कोस	=	खजाना
अक	=	गोद	पासाय	=	महल

प्राकृत मे अनुवाद करो

तिलो मे तेल है। गर्भ मे प्राणी है। वासुरी मे छेद है। मा की गोद मे बच्चा है। व्रह्मचारी मे शक्ति है। नदियो का पानी समुद्र मे एकत्र होता है। सूर्य मे अग्नि होती है। सर्वज्ञ मे ज्ञान है। महल मे राजा रहता है। ऊट पर योद्धा बैठता है।

निर्देश — इन्ही वाक्यो का वहुवचन (सप्तमी) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५७

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) **सप्तमी=मे, पर**

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालासु
माआ	माआए	माआसु
सुण्हा	सुण्हाए	सुण्हासु
माला	मालाए	मालासु
जुवइ	जुवईए	जुवईसु
नई	नईए	नईसु
साडी	साडीए	साडीसु
वहू	वहूए	वहूसु
धेणु	धेणूए	धेणूसु
सासू	सासूए	सासूसु

उदाहरण वाक्य ·

एकवचन

बालाए लज्जा अत्थि	=	बालिका मे लज्जा है।
माआए समप्पण अत्थि	=	माता मे समर्पण है।
सुण्हाए विनय अत्थि	=	बहू मे विनय है।
मालाए पुप्फाणि सन्ति	=	माला मे फूल हैं।
जुवईए लावण्ण अत्थि	=	युवती मे सौन्दर्य है।
नईए नावा सन्ति	=	नदी मे नावें है।
साडीए पुप्फाणि सन्ति	=	साडी मे फूल है।
वहूए सद्धा अत्थि	=	बहू मे श्रद्धा है।
धेणूए दुद्ध अत्थि	=	गाय मे दूध हे।
सासूए गुणा सन्ति	=	सास मे गुण हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

नदी मे पानी है। साडी मे फल है। माला मे सुगन्ध है। बहू मे गुण हैं। युवती मे लज्जा है। बालिका मे अज्ञान है। माता मे धैर्य है। सास मे ज्ञान है। गाय मे प्राण हैं। वहू मे जीवन है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री०)

तासु बालासु लज्जा अत्थि	=	उन बालिकाओ मे लज्जा ह ।
सुण्हासु विनय हवइ	=	बहुओ मे विनय होती है ।
इमासु मालासु पुप्फाणि सन्ति	=	इन मालाओ मे फूल है ।
कासु जुवईसु लावण्ण णत्थि	=	किन युवतियो मे सौन्दर्य नही है ?
नईसु नावा तरन्ति	=	नदी मे नाव तैरती है ।
साडीसु पुप्फाणि ण सन्ति	=	साडियो मे फूल नही है ।
बहूसु सया लज्जा वसइ	=	बहुओ मे सदा लज्जा रहती है ।
कासु धेणूसु दुद्ध अत्थि	=	किन गायो मे दूध है ?
सासूसु गुणा हवन्ति	=	सासो मे गुण होते है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उन नदियो मे आज पानी है । किनकी साडियो मे फूल है ? इन मालाओ मे गुलाब के फूल हैं । उनकी बहुओ मे सौन्दर्य है । उन बालिकाओ मे अज्ञान है । बच्चों की माताओ मे लज्जा नही होती है । सास की गायो मे दूध नही है । बहुओ की श्रद्धा सासो मे है ।

शब्दकोश (स्त्री०) :

भुक्खा	=	भूख	कलिआ	=	कली
तिसा	=	प्यास	चदिआ	=	चादनी
सभा	=	सन्ध्या	सति	=	स्मृति
निसा	=	रात्रि	पति	=	कतार
वाया	=	वाणी	पुहवी	=	पृथ्वी

प्राकृत मे अनुवाद करो :

भूख मे रोटी अच्छी लगती है । प्यास मे नदी का पानी भी अच्छा लगता है । सन्ध्या मे आकाश मे लालिमा होती है । रात्रि मे आकाश मे तारे होते है । किनकी वाणी मे अमृत है ? उन कलियो मे सुगन्ध नही है । वे चादनी मे सदा बाहर घूमते है । हमने पिता की स्मृति मे विद्यालय स्थापित किया । विद्यालय मे बच्चे कतार मे खडे होकर प्रार्थना करते है । इस पृथ्वी पर अनेक वस्तुए है ।

पाठ ५७

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) सप्तमी=मे, पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालासु
माआ	माआए	माआसु
सुण्हा	सुण्हाए	सुण्हासु
माला	मालाए	मालासु
जुवइ	जुवईए	जुवईसु
नई	नईए	नईसु
साडी	साडीए	साडीसु
वहू	वहूए	वहूसु
धेरणु	धेरणूए	धेरणूसु
सासू	सासूए	सासूसु

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

बालाए लज्जा अत्थि	=	बालिका मे लज्जा है।
माआए समप्पण अत्थि	=	माता मे समर्पण है।
सुण्हाए विनय अत्थि	=	बहू मे विनय है।
मालाए पुप्फाणि सति	=	माला मे फूल हैं।
जुवईए लावण्ण अत्थि	=	युवती मे सौन्दर्य है।
नईए नावा सति	=	नदी मे नावें है।
साडीए पुप्फाणि सति	=	साडी मे फूल है।
वहूए सद्धा अत्थि	=	बहू मे श्रद्धा हे।
धेरणूए दुद्ध अत्थि	=	गाय मे दूध है।
सासूए गुणा सति	=	सास मे गुण है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

नदी मे पानी है। साडी मे फल है। माला मे सुगन्ध है। बहू मे गुण हैं। युवती मे लज्जा है। बालिका मे अज्ञान है। माता मे धैर्य हे। सास मे ज्ञान है। गाय मे प्राण हैं। बहू मे जीवन है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री०)

तासु बालासु लज्जा अत्थि	=	उन बालिकाओ मे लज्जा है।
सुण्हासु विनय हवइ	=	बहुओ मे विनय होती है।
इमासु मालासु पुप्फाणि सन्ति	=	इन मालाओ मे फूल है।
कासु जुवईसु लावण्ण णत्थि	=	किन युवतियो मे सौन्दर्य नही है ?
नईसु नावा तरन्ति	=	नदी मे नाव तैरती है।
साडीसु पुप्फाणि ण सन्ति	=	साडियो मे फूल नही है।
बहूसु सया लज्जा वसइ	=	बहुओ मे सदा लज्जा रहती है।
कासु धेणूसु दुद्ध अत्थि	=	किन गायो मे दूध है ?
सासूसु गुणा हवन्ति	=	सासो मे गुण होते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उन नदियो मे आज पानी है। किनकी साडियो मे फूल है ? इन मालाओ मे गुलाब के फूल हैं। उनकी बहुओ मे सौन्दर्य है। उन बालिकाओ मे अज्ञान है। बच्चो की माताओ मे लज्जा नही होती है। सास की गायो मे दूध नही है। बहुओ की श्रद्धा सासो मे है।

शब्दकोश (स्त्री०) :

भुक्खा	=	भूख	कलिआ	=	कली
तिसा	=	प्यास	चंदिआ	=	चादनी
सझा	=	सन्ध्या	सति	=	स्मृति
निसा	=	रात्रि	पति	=	कतार
वाया	=	वाणी	पुहवी	=	पृथ्वी

प्राकृत मे अनुवाद करो :

भूख मे रोटी अच्छी लगती है। प्यास मे नदी का पानी भी अच्छा लगता है। सन्ध्या मे आकाश मे लालिमा होती है। रात्रि मे आकाश मे तारे होते है। किनकी वाणी मे अमृत है ? उन कलियो मे सुगन्ध नही है। वे चादनी मे सदा बाहर घूमते है। हमने पिता की स्मृति मे विद्यालय स्थापित किया। विद्यालय मे बच्चे कतार मे खडे होकर प्रार्थना करते है। इस पृथ्वी पर अनेक वस्तुए है।

पाठ ५८

अ, इ एव उकारान्त सज्ञा शब्द (नपु०) **सप्तमी = मे, पर**

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरे	णयरेसु
फल	फले	फलेसु
पुप्फ	पुप्फे	पुप्फेसु
कमल	कमले	कमलेसु
घर	घरे	घरेसु
खेत्त	खेत्ते	खेत्तेसु
सत्थ	सत्थे	सत्थेसु
वारि	वारिम्मि	वारीसु
दहि	दहिम्मि	दहीसु
वत्थु	वत्थुम्मि	वत्थूसु

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अह णयरे वसामि	=	मैं नगर मे रहता हूँ।
फले रस अत्थि	=	फल मे रस है।
पुप्फे सुयधो णत्थि	=	फूल मे सुगध नही है।
कमले भमरो अत्थि	=	कमल पर भौरा है।
घरे जणा णिवसति	=	घर मे लोग रहते है।
खेत्ते धेणू अत्थि	=	खेत मे गाय हे।
सत्थे विज्जा वसइ	=	शास्त्र मे विद्या रहती हे।
वारिम्मि नावा चलन्ति	=	पानी पर नाव चलती है।
दहिम्मि घअ अत्थि	=	दही मे घी है।
वत्थुम्मि पाणा ण सति	=	वस्तु मे प्राण नही है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

राजा नगर मे रहता है। फूल मे रस है। फल मे सुगन्ध नही है। घर मे गाय है। खेत मे आदमी है। पानी मे जीव है। शास्त्र मे ज्ञान है। दही मे प्राणी है। कमल मे पत्ते है। वस्तु मे मेरी आसक्ति नही है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपुं०)

अम्हे तेसु णयरेसु वसामो	=	हम उन नगरो मे रहते हैं।
इमेसु फलेसु रस णत्थि	=	इन फलो मे रस नही है।
केसु पुप्फेसु सुयधो अत्थि	=	किन फूलो मे सुगन्ध है ?
तेसु कमलेसु भमरा सन्ति	=	उन कमलो पर भौरे है।
इमेसु घरेसु णरा निवसन्ति	=	इन घरो मे मनुष्य रहते हैं।
ताण खेत्तेसु जल णत्थि	=	उनके खेतो मे पानी नही है।
सत्थेसु णाण ण होइ	=	शास्त्रो मे ज्ञान नही होता है।
नईण वारीसु नावा तरन्ति	=	नदियो के पानियो मे नाव तैरती हे।
ताण पत्ताण दहीसु घअ अत्थि	=	उन बर्तनो के दहियो मे घी है।
इमेसु वत्थूसु पाणा ण सति	=	इन वस्तुओ मे प्राण नही है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

राजा उन नगरो मे घूमता है। उपवन के फूलो मे सुगन्ध होती है। उनके घरो मे गाये है। तालाब के कमलो मे रस है। जगल के खेतो मे घास उत्पन्न होती हे। शास्त्रो मे इस ससार का वर्णन है। उन वस्तुओ मे किसकी आसक्ति है ?

शब्दकोश (नपु०)

भाल	=	ललाट	विहाण	=	प्रभात
पगरक्ख	=	जूता	मसाण	=	मरघट
आभरण	=	गहना	वेसम्म	=	विषमता
रुव	=	रूप	सागय	=	स्वागत
अडय	=	अडा	साहस	=	साहस

प्राकृत मे अनुवाद करिए

उसके ललाट पर तिलक है। मेरे जूते मे मिट्टी है। उसके गहने मे मोती है। किसके रूप मे आकर्षण है ? उस अडे मे प्राणी है। प्रभात मे चिडिया उडती है। मरघट मे शान्ति होती है। विषमता मे देश सुख प्राप्त नही करता है। हम उनके स्वागत मे यहाँ है। साहस मे शक्ति होती है।

निर्देश – इन्ही वाक्यो का बहुवचन (सप्तमी) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५९

नियम सप्तमी (पु०, स्त्री० नपुं०)

सर्वनाम

नि० ५१ (क) सप्तमी विभक्ति के एकवचन मे अम्ह एव तुम्ह मे तथा पुल्लिग त, इम, क सर्वनाम मे 'म्मि' प्रत्यय लगता है। बहुवचन मे इनमे एकार होकर 'सु' प्रत्यय लगता है। यथा–

ए० व० अम्हम्मि, तुम्हम्मि, तम्मि, इमम्मि, कम्मि।

ब० व० अम्हेसु, तुम्हेसु, तेसु, इमेसु, केसु।

(ख) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा एव का मे सप्तमी के एकवचन मे 'ए' प्रत्यय तथा बहुवचन मे 'सु' प्रत्यय लगता है। यथा–

ए० व० ताए इमाए काए। ब० व० तासु इमासु कासु।

पुल्लिग शब्द

नि० ५२ (क) अकारान्त पुल्लिग शब्दो के आगे सप्तमी विभक्ति एकवचन मे 'ए' प्रत्यय लगता है जो शब्द मे 'ए' की मात्रा के रूप मे (े) प्रयुक्त होता है। जैसे– पुरिस=पुरिसे, छत्त=छत्ते, सीस=सीसे, आदि।

(ख) बालअ शब्द मे 'ए' प्रत्यय लगने से बालए रूप बनता है।

(ग) इ एव उकारान्त पु० शब्दो मे 'म्मि' प्रत्यय लगाने से इस प्रकार रूप बनते है —

सुधि=सुधिम्मि, सिसु=सिसुम्मि, आदि।

नि० ५३ (क) अकारान्त पु० शब्दो के 'अ' को बहुवचन मे 'ए' हो जाता है तथा उसके बाद 'सु' प्रत्यय लगता है। जैसे– पुरिस=पुरिसेसु, छत्त=छत्तेसु, आदि।

(ख) इ एव उकारान्त पु० शब्द बहुवचन मे दीर्घ हो जाते है फिर उनमे 'सु' प्रत्यय लगता है। जैसे–सुधि—सुधी+सु=सुधीसु, सिसु=सिसूसु।

स्त्रीलिंग शब्द ·

नि० ५४ (क) आ, ई, ऊकारान्त स्त्री० शब्दो के आगे सप्तमी एकवचन मे 'ए' प्रत्यय लगता है। जैसे– बाला=बालाए, साडी=साडीए, बहू=बहूए।

(ख) इ एव उकारान्त स्त्री० शब्द दीर्घ हो जाते है तब उनमे 'ए' प्रत्यय लगता है। जैसे– जुवइ=जुवईए, धेणु=धेणूए, आदि।

नि० ५५ स्त्री० सभी शब्द सप्तमी बहुवचन मे दीर्घ आ, ई, ऊ वाले होते है, जिनके आगे 'सु' प्रत्यय लगता है। जैसे– बाला=बालासु, जुवइ=जुवईसु, धेणु=धेणूसु, सासू=सासूसु, आदि।

नपुंसकलिंग शब्द

नि० ५६ सप्तमी एकवचन और बहुवचन मे नपुं० शब्दो के रूप पु० शब्दो की तरह बनते हैं।

विभक्ति अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो मम पासइ। अह ताओ नमामि। तुम इन्द नमहि। जीवा मा हणउ। ते बधुणो खमन्तु। सो अज्ज अच्छरस पासिहिइ। तुम्हे पावाणि मा करह। त दुक्ख ताहि होइ। अह हत्थेण पत्त लिहामि। सा जीहाए फल चक्खउ। पक्खी चचुए अन्न चिणिहिइ। त वत्थ काण अत्थि। सेवआण कि अत्थि? अह समणीण वत्थाणि दाहिमि। सो अन्नस्स धण मग्गइ। अह कवाडस्स कट्ठ सचामि। सिसू ममाओ बीहइ। अह ताहितो पुप्फाणि गिण्हामि। रुक्खाहितो पत्ताणि पडन्ति। सिप्पिहितो मोत्तआणि जायन्ति। सा पेडिआ-हितो वत्थाणि गिण्हइ। ते मज्झ भायरा सन्ति। तानि पोत्थआणि काण सन्ति। अत्थ खत्तीण रज्ज अत्थि। त मोत्तिआण माला काअ अत्थि? तेसु कायेसु पाणा सन्ति। मढेसु छत्ता वसन्ति। अम्हे चदिआए निसाए भमाओ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वे किसको पूछते है? मन्त्रियो को कौन देखता है? वह वाणी को सुनता है। वे आसुओ को गिराती है। यह कार्य किसके द्वारा होता है? वे आखो से पुस्तक को देखते हैं। वह कु डलो से शोभित होती है। बच्चे घुटनो से चलेगे। वह तलवार से हिसा नही करेगा। ये कमल हमारे लिए है। प्राणियो के लिए अन्न है। यात्रा के लिए धन कहाँ है? यह धन सभा के लिए है। ये फल वैद्य के लिए है। मैं उन स्त्रियो से फूल लेता हूँ। गाय के थनो से दूध झरता है। गलियो से कौन नही जाता है? वे चूहो के छेद है। हम मिट्टी की गाडी देखते है। तकिये की रुई कौन निकालता है? सोने के मृग को किसने मारा? तुम इन खेतो के स्वामी हो। समुद्रो मे जल है। तुम्हारी वाणी मे अमृत है। कलि मे सुगन्ध नही होती है। विषमता मे सुख नही होता है। उसकी गहनो मे आसक्ति नही है।

पाठ ६०

अ, इ एवं उकारान्त सज्ञा शब्द (पु०) **सम्बोधन**

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
वालअ	वालओ	वालआ
पुरिस	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	छत्तो	छत्ता
सीस	सीमो	सीसा
णर	णरो	णरा
सुधि	सुधी	सुधिणो
कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	सिसू	सिसुणो
साहु	माहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य :

वालओ ! पोत्थअ पढहि	=	हे वालक, पुस्तक पढो।
छत्ता ! विज्जालय गच्छह	=	हे छात्रो, विद्यालय जाओ।
सुधी ! तत्थ उपदिसहि	=	हे विद्वान्, वहाँ उपदेश दो।
कविणो ! अत्थ कव्व पढह	=	हे कवियो, यहाँ काव्य पढो।
सिसू ! मा कन्दहि	=	हे बच्चे, मत रोओ।
साहुणो ! दाण गिण्हह	=	हे साधुओ, दान ग्रहण करो।

प्राकृत मे अनुवाद करो .

हे आदमी, पाप मत करो। हे शिष्यो, शास्त्र लिखो। हे मनुष्य, धन की इच्छा मत करो। हे कवि, गीत गाओ। हे कुलपति, नगर को मत जाओ। हे बच्चो, वहा नाचो। हे साधु, वस्तुओ को सचित मत करो।

शब्दकोश (पु०)

निव	=	राजा	तवस्सि	=	तपस्वी
वुह	=	बुद्धिमान	गहवइ	=	मुखिया
भड	=	योद्धा	रिसि	=	ऋषि
आयरिअ	=	आचार्य	गुरु	=	गुरु
मेह	=	बादल	रिउ	=	शत्रु

निर्देश — इन शब्दो के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन मे रूप लिख कर प्राकृत मे उनके वाक्य बनाओ।

पाठ ६१

आ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) सम्बोधन

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
बाला	बाला	बालाओ
माआ	माआ	माआओ
सुण्हा	सुण्हा	सुण्हाओ
माला	माला	मालाओ
जुवइ	जुवइ	जुवईओ
नई	नइ	नईओ
साडी	साडि	साडीओ
बहू	बहु	बहूओ
धेणु	धेणु	धेणूओ
सासू	सासु	सासूओ

उदाहरण वाक्य

बाला ! विज्जालय गच्छहि = हे बालिके, विद्यालय जाओ ।
सुण्हाओ ! ते नमह = हे बहुओ, उनको नमन करो ।
जुवइ ! कज्ज झत्ति करहि = हे युवति, कार्य शीघ्र करो ।
माआओ ! सिसुणो पालह = हे माताओ, बच्चो को पालो ।
सासु ! मम वत्थ दाहि = हे सास, मुझे वस्त्र दो ।
बालाओ ! तत्थ खेलह = हे बालिकाओ, वहाँ खेलो ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हे बहु उसको भोजन दो । हे युवतियो, वहाँ नृत्य करो । हे माता, इनकी रक्षा करो ।
हे सासो, बहुओ की निन्दा मत करो । हे बहुओ, उनकी सेवा करो ।

शब्दकोश (स्त्री०)

धूआ	= पुत्री	इत्थी	= स्त्री
गोवा	= ग्वालिन	दासी	= नौकरानी
भारिया	= पत्नी	धाई	= धाय
कुमारी	= कुआरी	नडी	= नटी
बहिणी	= बहिन	माउसिआ	= मौसी

निर्देश —इन शब्दो (स्त्री०) के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन मे रूप लिखकर प्राकृत मे उनके वाक्य बनाओ ।

अ, इ एवं ऊकारान्त सज्ञा शब्द (नपुं०) सम्बोधन

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
णयर	णयर	णयराणि
फल	फल	फलाणि
पुप्फ	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	कमल	कमलाणि
घर	घर	घराणि
खेत्त	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थ	सत्थाणि
वारि	वारि	वारीणि
दहि	दहि	दहीणि
वत्थु	वत्थु	वत्थूणि

उदाहरण वाक्य :

णयर ! अह तुम नमामि । = हे नगर, मै तुम्हे प्रणाम करता हूँ।
पुप्फ ! तुम मज्झ मित्त असि = हे फूल, तुम मेरे मित्र हो।
कमलाणि ! सर तुम्हाण घर अत्थि = हे कमलो, सरोवर तुम्हारा घर है।
खेत्ताणि ! तुम्ह अम्हाण पालआ सन्ति = हे खेतो, तुम हमारे पालक हो।
सत्थ ! तुम तस्स गुरु असि = हे शास्त्र, तुम उसके गुरु हो।
वारि ! तुम ससारस्म जीवण असि = हे पानी, तुम ससार का जीवन हो।

प्राकृत में अनुवाद करो

हे नगरो, तुम्हे आज हम छोड रहे हैं। हे फलो, तुम रोगी का जीवन हो। हे कमल, तुम तालाब की शोभा हो। हे फूलो, तुम कवि की प्रेरणा हो। हे घर, तुम प्राणियो की शरण हो। हे वस्तु, तुममे प्राण नही है।

शब्दकोश (नपु ०)

वण	=	जगल	पिंजर	=	पिंजडा
हियय	=	हृदय	चदण	=	चदन
मित्त	=	मित्र	आयास	=	आकाश
नयण	=	आख	हेम	=	स्वर्ण
चारित्त	=	चारित्र	मोत्तिय	=	मोती

निर्देश – इन शब्दो (नपु ०) के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन मे रूप लिख कर प्राकृत मे उनके वाक्य बनाओ।

पाठ ६३

पुंल्लिग शब्द : **नियम सम्बोधन (पु०, स्त्री०, नपु०)**

नि० ५७ पुंल्लिग अ, इ एव उकारान्त शब्दो के सम्वोधन मे प्रथमा विभक्ति के समान रूप वनते हैं। जैसे :-

ए० व० :-	वालओ	सुधी	सिसू
ब० व० -	वालआ	सुभिणो	सिसुणो

स्त्रीलिग शब्द

नि० ५८ (क) आकारान्त स्त्री० शब्दो के सम्बोधन मे प्रथमा विभक्ति के समान रूप बनते हैं। जैसे -

ए० व० :-	बाला	सुण्हा	माला
ब० व० -	बालाओ	सुण्हाओ	मालाओ

(ख) ईकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्री० शब्द सम्बोधन के एकवचन मे ह्रस्व हो जाते है।

(ग) बहुवचन मे प्रथमा विभक्ति के बहुवचन जैसे ही उनके रूप बनते हैं। जैसे -

ए० व० - नई = नइ, बहू = बहु, सासू = सासु।

ब० व० - नईओ बहूओ सासूओ।

नपुंसकलिंग शब्द

नि० ५९ (अ) अ, इ एव उकारान्त नपु० शब्द सम्बोधन के एकवचन मे मूल शब्द के रूप मे ही प्रयुक्त होते है। जैसे -

ए० व० - णयर = णयर, वारि = वारि, वत्थु = वत्थु।

(ब) सम्वोधन बहुवचन मे उनके प्रथमा विभक्ति के बहुवचन वाले रूप प्रयुक्त होते है। जैसे -

ब० व० - णयराणि वारीणि वत्थूणि

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो

निवो, अम्हाण रक्ख करहि। भडा, तत्थ जुज्झ मा करह। रिसी, ते णाण दाहि। गुरुणो, तुम्हाण अम्हे सीमा सन्ति। गोवा, मज्झ दुद्ध दाहि। दासि, इद कज्ज करहि। बहिणीओ, अम्हाण कह सुणह। हियय, दाणि तुम सन्त होहि। मित्ताणि, पावकम्माणि मा करह। चारित्त, तुम मज्झ धण असि।

सर्वनाम

एकवचन पु० स्त्री०			पुल्लिग			स्त्रीलिंग			नपुंसकलिंग		
शब्द	अम्ह	तुम्ह	त	इम	क	ता	इमा	का	त	इम	क
प्र०	अह	तुम	सो	इमो	को	सा	इमा	का	त	इम	किं
द्वि०	मम	तुम	त	इम	क	त	इम	क	त	इम	किं
तृ०	मए	तुमए	तेण	इमेण	केण	ताए	इमाए	काए	तेण	इमेण	केण
च०	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स	ताअ	इमाअ	काअ	तम्म	इमम्म	कम्म
प०	ममाओ	तुमाओ	ताओ	इमाओ	काओ	तत्तो	इमत्तो	कत्तो	ताओ	इमाओ	काओ
ष०	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स	ताअ	इमाअ	काअ	तम्म	इमम्म	कम्म
स०	अम्हम्मि	तुम्हम्मि	तम्मि	इमम्मि	कम्मि	ताए	इमाए	काए	तम्मि	इमम्मि	कम्मि

बहुवचन

प्र०	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	के	ताओ	इमाओ	काओ	ताणि	इमाणि	काणि
द्वि०	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	के	ताओ	इमाओ	काओ	ताणि	इमाणि	काणि
तृ०	अम्हेहि	तुम्हेहि	तेहि	इमेहि	केहि	ताहि	इमाहि	काहि	तेहि	इमेहि	केहि
च०	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण
प०	अम्हाहितो	तुम्हाहितो	ताहितो	इमाहितो	काहितो	ताहितो	इमाहित्तो	काहित्तो	ताहितो	इमाहित्तो	काहितो
ष०	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण
स०	अम्हेसु	तुम्हेसु	तेसु	इमेसु	केसु	तासु	इमासु	कासु	तेसु	इमेसु	केसु

सञ्ज्ञाशब्द

एकवचन	पुल्लिग शब्द			स्त्रीलिग शब्द					नपुंसकलिग शब्द		
	अकारान्त	इकारान्त	उकारान्त	आकारान्त	इकारान्त	ईकारान्त	उकारान्त	ऊकारान्त	अकारान्त	इकारान्त	उकारान्त
शब्द	पुरिस	सुधि	साहु	बाला	जुवइ	नई	धेणु	बहू	णयर	वारि	वत्थु
प्र	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवई	नई	धेणू	बहू	णयर	वारि	वत्थु
द्वि	पुरिस	सुधिं	साहु	बाल	जुवइ	नइ	धेणु	बहु	णयर	वारि	वत्थु
तृ	पुरिसेण	सुधिणा	साहुणा	बालाए	जुवईए	नईए	धेणूए	बहूए	णयरेण	वारिणा	वत्थुणा
च	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईआ	नईआ	धेणूए	बहूए	णयरस्स	वारिणो	वत्थुणो
प	पुरिसत्तो	सुधित्तो	साहुत्तो	बालत्तो	जुवइत्तो	नइत्तो	धेणुत्तो	बहुत्तो	णयरत्तो	वारित्तो	वत्थुत्तो
ष.	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईआ	नईआ	धेणूए	बहूए	णयरस्स	वारिणो	वत्थुणो
स	पुरिसे	सुधिम्मि	साहुम्मि	बालाए	जुवईए	नईए	धेणुए	बहूए	णयरे	वारिम्मि	वत्थुम्मि
स	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवइ	नइ	धेणु	बहू	णयर	वारि	वत्थु
बहुवचन											
प्र	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि
द्वि.	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि
तृ.	पुरिसेहिं	सुधीहि	साहूहि	बालाहि	जुवईहि	नईहि	धेणूहि	बहूहि	णयरेहि	वारीहि	वत्थूहि
च	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण	णयराण	वारीण	वत्थूण
प.	पुरिसाहिंतो	सुधीहितो	साहूहितो	बालाहितो	जुवईहितो	नईहितो	धेणूहित्तो	बहूहित्तो	णयराहित्तो	वारीहित्तो	वत्थूहित्तो
ष.	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण	णयराण	वारीण	वत्थूण
स	पुरिसेसु	सुधीसु	साहुसु	बालासु	जुवईसु	नईसु	धेणूसु	बहूसु	णयरेसु	वारीसु	वत्थूसु
स	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि

पाठ ६४

सञार्थक क्रियाएं (पुल्लिग सञा)

(क) शब्द	अर्थ	(ख) शब्द	अर्थ
आयार	आचार	उवदेसअ	उपदेशक
उवदेस	उपदेश	उवासअ	उपासक
कोव	क्रोध	किसअ	कृषक
पाढ	पाठ	गायअ	गायक
णास	नाश	सासअ	शासक
लेह	लेख	नत्तअ	नर्त्तक
तव	तप	सावअ	श्रावक
हरिस	हर्ष	सेवअ	सेवक
फास	स्पर्श	भारवह	मजदूर
खय	क्षय	रक्खअ	रक्षक

नि० ६०– इन शब्दो के रूप अकारान्त पुल्लिग शब्दो की तरह सभी विभक्तियो मे चलते हैं।

उदाहरण वाक्य

(क)

इमो महावीरस्स उवदेसो अत्थि = यह महावीर का उपदेश है।
सो कोव जिणइ = वह क्रोध को जीतता है।
मुणी तवेण झायइ = मुनि तप के द्वारा ध्यान करता है।
सो कम्मस्स खयस्स तवइ = वह कर्म के क्षय के लिए तप करता है।
बालओ कोवत्तो बीहइ = बालक क्रोध से डरता है।
साहू कोवस्स णास कुणइ = साधू क्रोध का नाश करता है।
सो तवे लीणो अत्थि = वह तप मे लीन है।

(ख)

उवदेसओ आगच्छइ = उपदेशक आता है।
सो सेवअ धण देइ = वह सेवक को धन देता है।
अह रक्खएण सह गच्छामि = मैं रक्षक के साथ जाता हूँ।
सो सासअस्स नमइ = वह शासक के लिए नमन करता है।
मुणि उवासअत्तो भोअण मग्गइ = मुनि उपासक से भोजन मागता है।
सो नत्तअस्स पुत्तो अत्थि = वह नर्त्तक का पुत्र है।
सावए भत्ती अत्थि = श्रावक मे भक्ति है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उसका आचार अच्छा है। यह किस पुस्तक का पाठ है? उसके लेख मे शक्ति है। पापो का नाश कब होगा। नारी के स्पर्श मे क्षणिक सुख है। तप से कर्मों का क्षय होता है। वह महावीर का उपासक है। तुम किस देश के शासक हो। वह राजा का सेवक है। मजदूरो के द्वारा महल बनता है। किसान अन्न पैदा करता है।

पाठ ६५

संज्ञार्थक क्रियाएं (स्त्रीलिंग संज्ञा)

(क) शब्द	अर्थ	(ख) शब्द	अर्थ
उवलद्धि	उपलब्धि	मुत्ति	मुक्ति
गइ	गति	थुइ	स्तुति
दिट्ठि	दृष्टि	सति	शान्ति
बुद्धि	बुद्धि	सिद्धि	सिद्धि
भत्ति	भक्ति	कित्ति	कीर्त्ति

नि० ६१ – इन शब्दो के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दो की तरह सभी विभक्तियो मे चलते हैं।

उदाहरण वाक्य

मज्झ कज्जस्स इमा उवलद्धि अत्थि = मेरे कार्य की यह उपलब्धि है।
जणा तस्स भत्तिं पासन्ति = लोग उसकी भक्ति को देखते है।
बुद्धीआ कज्जाणि सिज्झन्ति = बुद्धि से कार्य सिद्ध होते है।
मुत्तीए सो तव कुणइ = मुक्ति के लिए वह तप करता है।
सो कित्तीत्तो वीहइ = वह कीर्त्ति से डरता है।
इद खतीए दार अत्थि = यह शान्ति का द्वार है।
सो थुईसु लीणो अत्थि = वह स्तुतियो मे लीन है।

शब्दकोश (स्त्री०)

सति	=	स्मृति	कति	=	कान्ति
पति	=	पवित	सिद्धि	=	सिद्धि
मइ	=	मति	दित्ति	=	दीप्ति
रइ	=	रति	धिइ	=	धैर्य

प्राकृत मे अनुवाद करो

उस तरुणी की गति धीमी है। उनकी दृष्टि तेज है। इस कार्य की सिद्धि कब होगी? तुम सब ईश्वर की भक्ति करो। स्तुति से देवता प्रसन्न नही होते है। शन्ति से जीवन मे सुख होता है। कवि काव्य लिख कर कीर्ति प्राप्त करता है।

निर्देश –इन सज्ञार्थक क्रियाओ (स्त्रीलिंग) के सभी विभक्तियो मे रूप लिख कर अभ्यास कीजिये।

पाठ ६४

संज्ञार्थक क्रियाएं (पुल्लिग सज्ञा)

(क) शब्द	अर्थ	(ख) शब्द	अर्थ
आयार	आचार	उवदेसअ	उपदेशक
उवदेस	उपदेश	उवासअ	उपासक
कोव	क्रोध	किसअ	कृषक
पाढ	पाठ	गायअ	गायक
णास	नाश	सासअ	शासक
लेह	लेख	नत्तअ	नर्त्तक
तव	तप	सावअ	श्रावक
हरिस	हर्ष	सेवअ	सेवक
फास	स्पर्श	भारवह	मजदूर
खय	क्षय	रक्खअ	रक्षक

नि० ६०– इन शब्दो के रूप अकारान्त पुल्लिग शब्दो की तरह सभी विभक्तियो मे चलते है।

उदाहरण वाक्य

(क)

इमो महावीरस्स उवदेसो अत्थि	=	यह महावीर का उपदेश है।
सो कोव जिणइ	=	वह क्रोध को जीतता है।
मुणी तवेण झायइ	=	मुनि तप के द्वारा ध्यान करता है।
सो कम्मस्स खयस्स तवइ	=	वह कर्म के क्षय के लिए तप करता है।
बालओ कोवत्तो बीहइ	=	बालक क्रोध से डरता है।
साहू कोवस्स णास कुणइ	=	साधू क्रोध का नाश करता है।
सो तवे लीणो अत्थि	=	वह तप मे लीन है।

(ख)

उवदेसओ आगच्छइ	=	उपदेशक आता है।
सो सेवअ धण देइ	=	वह सेवक को धन देता है।
अह रक्खएण सह गच्छामि	=	मैं रक्षक के साथ जाता हूँ।
सो सासअस्स नमइ	=	वह शासक के लिए नमन करता है।
मुणि उवासअत्तो भोअण मग्गइ	=	मुनि उपासक से भोजन मागता है।
सो नत्तअस्स पुत्तो अत्थि	=	वह नर्त्तक का पुत्र है।
सावए भत्ती अत्थि	=	श्रावक मे भक्ति है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उसका आचार अच्छा है। यह किस पुस्तक का पाठ है? उसके लेख मे शक्ति है। पापो का नाश कब होगा। नारी के स्पर्श मे क्षणिक सुख है। तप से कर्मो का क्षय होता है। वह महावीर का उपासक है। तुम किस देश के शासक हो। वह राजा का सेवक है। मजदूरो के द्वारा महल बनता है। किसान अन्न पैदा करता है।

पाठ ६५

संज्ञार्थक क्रियाएं (स्त्रीलिंग संज्ञा)

(क)		(ख)	
शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उवलद्धि	उपलब्धि	मुत्ति	मुक्ति
गइ	गति	थुइ	स्तुति
दिट्ठि	दृष्टि	सति	शान्ति
बुद्धि	बुद्धि	सिद्धि	सिद्धि
भत्ति	भक्ति	कित्ति	कीर्ति

नि० ६१ – इन शब्दो के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दो की तरह सभी विभक्तियो मे चलते है।

उदाहरण वाक्य ·

मज्झ कज्जस्स इमा उवलद्धि अत्थि	=	मेरे कार्य की यह उपलब्धि है।
जणा तस्स भत्ति पासन्ति	=	लोग उसकी भक्ति को देखते है।
बुद्धीआ कज्जाणि सिज्झन्ति	=	बुद्धि से कार्य सिद्ध होते है।
मुत्तीए सो तव कुणइ	=	मुक्ति के लिए वह तप करता है।
सो कित्तीत्तो वीहइ	=	वह कीर्ति से डरता है।
इद खतीए दार अत्थि	=	यह शान्ति का द्वार है।
सो थुईसु लीणो अत्थि	=	वह स्तुतियो मे लीन है।

शब्दकोश (स्त्री०)

सति	=	स्मृति	कति	=	कान्ति
पति	=	पवित्र	सिद्धि	=	सिद्धि
मइ	=	मति	दित्ति	=	दीप्ति
रइ	=	रति	धिइ	=	धैर्य

प्राकृत मे अनुवाद करो

उस तरुणी की गति धीमी है। उनकी दृष्टि तेज है। इस कार्य की सिद्धि कब होगी ? तुम सब ईश्वर की भक्ति करो। स्तुति से देवता प्रसन्न नही होते हैं। शन्ति से जीवन मे सुख होता है। कवि काव्य लिख कर कीर्ति प्राप्त करता है।

निर्देश –इन सज्ञार्थक क्रियाओ (स्त्रीलिंग) के सभी विभक्तियो मे रूप लिख कर अभ्यास कीजिये।

पाठ ६६

सज्ञार्थक क्रियाए (नपुंसकलिंग)

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अज्झयण	अध्ययन	रक्खण	रक्षा करना
आयरण	आचरण	लेहण	लिखना
कहण	कथन	सयण	सोना
गज्जण	गर्जना	सवण	सुनना
गहण	ग्रहण करना	गमण	जाना
चयन	चुनना	जीवण	जीवन
धावण	दौडना	मरण	मरण
धामण	नमन करना	पोसण	पालन करना
पढण	पढना	कपण	कपना
पूयण	पूजन	आसण	बैठना

नि० ६२ – इन शब्दो के रूप अकारान्त नपुसकलिंग शब्दो की तरह सभी विभक्तियो मे चलते है ।

उदाहरण वाक्य :

पच्चूसे अज्झयण वर अत्थि = प्रात काल मे अध्ययन करना अच्छा है ।
सो तस्स आयरण पासइ = वह उसके आचरण को देखता है ।
केवल कहणेण किं होइ = केवल कहने से क्या होता है ?
सो पढणस्स गच्छइ = वह पढने के लिए जाता है ।
सो पूयणत्तो विरमइ = वह पूजन करने से अलग होता है ।
जीवणस्स कि उद्देस्सो अत्थि = जीवन का क्या उद्देश्य है ?
तस्स कहणे सच्च अत्थि = उसके कहने मे सत्य है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उसने बादल की गर्जना सुनी । युवति पति का चयन करती है । तुम्हारा दौडना अच्छा नही है । दिन मे पूजन करना अच्छा है । वह लेखन से धन इकट्ठा करता है । प्रात काल मे सोना हानिकारक है । शास्त्रो का सुनना हितकारी है ।

निर्देश – इन सज्ञार्थक क्रियाओ (नपुसकलिंग) के सभी विभक्तियो मे रूप लिख कर अभ्यास कीजिए ।

पाठ ६७

कुछ अन्य पुल्लिग सज्ञा शब्द

शब्द	अर्थ	एकवचन (प्रथमा)	बहुवचन
भगवत	भगवान	भगवतो	भगवता
गुणवत	गुणवान	गुणवतो	गुणवता
णाणवत	ज्ञानवान	णाणवतो	णाणवता
जुवाण	युवक	जुवाणो	जुवाणा
अप्पाण	आत्मा	अप्पाणो	अप्पाणा
राय	राजा	रायो	राया
जम्म	जन्म	जम्मो	जम्मा
चदम	चन्द्रमा	चदमो	चदमा

नि० ६३ – इन शब्दो के रूप अकारान्त पुल्लिग शब्दो की भाति प्रयुक्त किये जाते है।
यद्यपि विकल्प से इनके अन्य रूप भी बनते हैं।

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

भगवतो वीयराओ होइ	=	भगवान वीतराग होता है।
सो भगवत पणमइ	=	वह भगवान को प्रणाम करता है।
भगवतेण विणा धम्मो नत्थि	=	भगवान के बिना धर्म नही है।
अह भगवतस्स नमामि	=	मैं भगवान के लिए नमन करता हूँ।
ते भगवतत्तो कि मग्गन्ति	=	वे भगवान से क्या मागते हैं ?
भगवतस्स णाणो सेट्ठो अत्थि	=	भगवान का ज्ञान श्रेष्ठ है।
भगवते अवगुणा ण सन्ति	=	भगवान मे अवगुण नही है।
भगवो ! अम्हे उवदिसहि	=	हे भगवान ! हमे उपदेश दो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह भगवान को पूजता है। गुणवान राजा लोगो का कल्याण करता है। ज्ञानवान साधु के साथ हम रहते हैं। राजा युवक से डरता है। आत्मा का कल्याण कब होगा ? राजा का पुत्र नगर मे घूमता है। वह पूर्व जन्म मे मृग था। बालक चन्द्रमा को देखता है। हे ज्ञानवान ! उन्हे शिक्षा दो।

उदाहरण वाक्य

भगवता वीयराग्रा होन्ति	=	भगवान वीतराग होते हैं ।
अम्हे भगवता पणमामो	=	हम भगवानो को प्रणाम करते है ।
भगवतेहि विणा भत्ती ण होइ	=	भगवानो के विना भक्ति नही होती है ।
इमो जिणालयो भगवताण अत्थि	=	यह जिनालय भगवानो के लिए है ।
भगवताहितो जणा किं मग्गन्ति	=	भगवानो से लोग क्या मागते है ?
इमे भगवताण सावग्रा सन्ति	=	ये भगवानो के श्रावक है ।
भगवतेसु राग्रदोसो ण होइ	=	भगवानो मे रागद्वेष नही होता है ।
भगवा ! अम्हे उवदिसन्तु	=	हे भगवानो ! हमे उपदेश दो ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

भगवान यहाँ कब आयेंगे ? राजा गुणवानो का सम्मान करता है । ज्ञानवान साधुओ के साथ वह नही रहता है । बालक युवको से डरते हैं । तुम ससार की आत्माओ का कल्याण करो । वहाँ राजाओ की सभा है । वे पूर्व-जन्मो मे कहाँ थे ? चन्द्रमाओ मे किसका चित्र है ?

निर्देश – (क) उपर्युक्त भगवत आदि शब्दो के सभी विभक्तियो मे रूप लिखिए ।
(ख) राय (राजा) शब्द के विकल्प वाले ये रूप भी याद करले ।

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	राया	राइणो
द्वि०	राइण	राइणो
तृ०	राइणा	राईहि
च०	राइणो	राईण
प०	राइणो	राईहितो
ष०	राइणो	राईण
स०	राइम्मि	राईसु
स०	राया	राइणो

नि० ६४ – राय शब्द के ये उपर्युक्त रूप पुल्लिग इकारान्त शब्द की तरह हैं । किन्तु प्रथमा, द्वितीया एव पचमी एकवचन मे राया, राइण, राइणो ये रूप उससे भिन्न हैं ।

पाठ ६८

विशेषण शब्द (पु०, स्त्री०, नपुं०): **गुणवाचक**

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उत्तम	श्रेष्ठ (अच्छा)	गभीर	गभीर
अहम	नीच	चवल	चचल
निट्ठुर	कठोर	सीयल	ठडा
दयालु	दयावान्	उण्ह	गरम
किसरण	काला	नारिण	ज्ञानी
धवल	सफेद	मुक्ख	मूर्ख
बलिटठ	बलशाली	रुग्ग	रोगी
निव्वल	कमजोर	णीरोग	स्वस्थ
चाइ	त्यागी	पमाइ	आलसी
लुद्ध	लोभी	उज्जमसील	उद्यमशील

नि० ६५ – इन विशेषण शब्दो के रूप एव लिंग विशेषण के अनुसार बनते है।

उदाहरण-वाक्य

	प्रथमा – एकवचन	प्रथमा – बहुवचन
(पु०)	उत्तमो साहू झाइ	उत्तमा साहुणो झायन्ति
(स्त्री०)	उत्तमा जुवई पढइ	उत्तमाओ जुवईओ पढन्ति
(नपु०)	उत्तम मित्त पच्चाअइ	उत्तमाणि मित्ताणि पच्चाअन्ति
	द्वितीया – एकवचन	**द्वितीया – बहुवचन**
(पु०)	उत्तम कवि सो नमइ	उत्तमा कविणो ते नमन्ति
(स्त्री०)	उत्तम साडि सा इच्छइ	उत्तमाओ साडीओ ताओ इच्छन्ति
(नपु०)	उत्तम सत्थ सा पढइ	उत्तमाणि सत्थाणि सा पढइ
	तृतीया – एकवचन	**तृतीया – बहुवचन**
(पु०)	उत्तमेण सुधिणा सह सो पढइ	उत्तमेहि सुधीहिं सह सो पढइ
(स्त्री०)	उत्तमाए सासूए सह सुण्हा वसइ	उत्तमाहि सासूहि सह कलह ण होइ
(नपु०)	उत्तमेण घरेण विणा सुह नत्थि	उत्तमेहि पुप्फेहि सोहा होइ
	चतुर्थी – एकवचन	**चतुर्थी – बहुवचन**
(पु०)	उत्तमस्स छत्तस्स इद फल अत्थि	उत्तमाण छत्ताण इमाणि फलाणि सन्ति
(स्त्री०)	उत्तमाअ वालाअ त पुप्फ अत्थि	उत्तमाण वालाण ताणि पुप्फाणि सति
(नपु०)	उत्तमस्स वत्थुणो इद धण अत्थि	उत्तमाण वत्थूण इद धण अत्थि

पंचमी – एकवचन		पचमी – बहुवचन
(पु०)	उत्तमत्तो साहुत्तो सो पढइ	उत्तमाहिंतो कवीहिंतो कव्व उपन्नइ
(स्त्री०)	उत्तमत्तो मालत्तो सुअ्रधो आयइ	उत्तमाहिंतो मालाहिंतो सुअ्रधो आयइ
(नपु०)	उत्तमत्तो फलत्तो रस उप्पन्नइ	उत्तमाहिंतो फलाहिंतो रस उप्पन्नइ

षष्ठी – एकवचन		षष्ठी – बहुवचन
(पु०)	उत्तमस्स पुरिसस्स इमो पुत्तो अत्थि	उत्तमाण पुरिसाण इमे पुत्ता सन्ति
(स्त्री०)	उत्तमाए लदाए इद पुप्फ अत्थि	उत्तमाण लदाण इमाणि पुप्फाणि सति
(नपु०)	उत्तमस्स पुप्फस्स इद रस अत्थि	उत्तमाण पुप्फाण इमा माला अत्थि

सप्तमी – एकवचन		सप्तमी – बहुवचन
(पु०)	उत्तमे सीसे विनय होइ	उत्तमेसु सीसेसु विनय होइ
(स्त्री०)	उत्तमाए नारीए लज्जा होइ	उत्तमेसु नारीसु लज्जा होइ
(नपु०)	उत्तमे घरे खन्ति होइ	उत्तमेसु घरेसु खन्ति होइ

निर्देश - उपर्युक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करा ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह नीच पुरुष है। उस राजा का कठोर शासन है। यह साधु बहुत दयालु है। लोभी मनुष्य दु ख प्राप्त करता है। गभीर नदी बहती है। चचल युवति लज्जा नहीं करती है। यह जल शीतल है। अग्नि सदा गरम होती है। ज्ञानी आचार्य का शिष्य आदर करते हैं। मूर्ख आदमियो की सभा मे वह निन्दा करता है। आलसी नहीं पढता है। उद्यमशील बालिकाओ की वह प्रशसा करता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो .

किसणो सप्पो गच्छइ। धवलो मेहो ण वरसइ। बलिट्ठो पुरिसो धण अज्जइ। लुद्धा जणा निट्ठुरा होन्ति। मुक्खा बाला चित्त फाडइ। णीरोगे सरीरे सत्ती होइ। चवलेण वाणरेण सह मित्तो ण गच्छइ। उत्तमाण बालाण ताणि पुप्फाणि सति। अहमेसु जणेसु गुणा ण सन्ति।

पाठ ६९

विशेषरग शब्द (पु०, स्त्री०, नपुं०) . तुलनात्मक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अप्प	छोटा	कणीअस	उससे छोटा	कणिट्ठ	सबसे छोटा
जेट्ठ	बडा	जेट्ठयर	उससे बडा	जेट्ठयम	सबसे बडा
पिअ	प्रिय	पिअअर	उससे प्रिय	पिअअम	सबसे प्रिय
उच्च	ऊंचा	उच्चअर	उससे ऊंचा	उच्चअम	सबसे ऊंचा
सेट्ठ	श्रेष्ठ	सेट्ठअर	उससे श्रेष्ठ	सेट्ठअम	सबसे श्रेष्ठ
बहु	बहुत	भूयस	उससे अधिक	भूयिट्ठ	सबसे अधिक
खुद्द	नीच	खुद्दअर	उससे नीच	खुद्दअम	सबसे नीच

नि० ६६ –इन विशेषरग शब्दो के सभी विभक्तियो मे रूप एव लिंग विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे– सेट्ठो पुत्तो, सेट्ठा धूआ, सेट्ठ पोत्थअ।

उदाहरण वाक्य

तुम ममत्तो कणीअसो अत्थि	=	तुम मुझसे छोटे हो।
मोहणो तस्स कणिट्ठो पुत्तो अत्थि	=	मोहन उसका सबसे छोटा पुत्र है।
सईसु सीया सेट्टा अत्थि	=	सतियो मे सीता श्रेष्ठ है।
नईसु गगा सेट्ठअमा अत्थि	=	नदियो मे गगा सबसे श्रेष्ठ है।
गिरीसु हिमालयो उच्चअमो अत्थि	=	पर्वतो मे हिमालय सबसे ऊंचा है।
तस्स पुत्ताण रामो जेट्ठो अत्थि	=	उसके पुत्रो मे राम सबसे बडा है।
सव्व जन्तूसु गद्दभो खुद्दअरो होइ	=	सब प्राणियो मे गधा नीच होता है।
कणिट्ठा धूआ पियअमा होइ	=	छोटी पुत्री सबसे प्रिय होती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं तुमसे छोटा हूँ। तुम उसके सबसे वडे पुत्र हो। साधुओ मे काश्यप श्रेष्ठ है। वह पेड सबसे ऊंचा है। बर्फ सबसे अधिक शीतल होता है। तुम्हे उसकी पुत्री सबसे अधिक प्रिय है। यह पुस्तक मुझे प्रिय है।

हिन्दी मे अनुवाद करो :

तुम ममाओ जेट्ठयमो असि। कणिट्ठो पुत्तो पिअअमो होइ। पावस्स मग्गो पिअअरो ण होइ। सो मज्झ कणिट्ठो भायरा अत्थि। कवीसु कालिआसो सेट्ठो अत्थि। णयरेसु उदयपुरो सेट्ठअमो अत्थि।

पाठ ७०

विशेषण शब्द **संख्यावाचक**

(क) एक

एगो	=	एक (पु०)	एगो छत्तो पढइ	=	एक छात्र पढता है।
एगा	=	एक (स्त्री०)	एगा बालिआ गच्छइ	=	एक बालिका जाती है।
एग	=	एक (नपु०)	इम एग फल अत्थि	=	यह एक फल है।

नि० ६७ – एक शब्द के रूप सातो विभक्तियो मे पुल्लिग, स्त्रीलिग एवम् नपुसकलिग के अकारान्त शब्दो के समान चलेंगे। विशेष्य शब्द के अनुरूप ही एक शब्द का प्रयोग होगा। यथा –

एगस्स पुरिसस्स इद घर अत्थि	=	एक आदमी का यह घर है।
एगेण बालएण सह अह गच्छामि	=	एक बालक के साथ मैं जाता हूँ।
एगे खेत्ते वारिं अत्थि	=	एक खेत मे पानी है।

(ख) दो

नि० ६८ – एक शब्द को छोड कर सभी सख्यावाची शब्द प्राकृत मे तीनो लिगो मे समान होते है। यथा —

(पु०)	दोण्णि बालआ पढन्ति	=	दो बालक पढते है।
(स्त्री०)	दोण्णि जुवईओ गच्छन्ति	=	दो युवतिया जाती है।
(नपु०)	दोण्णि फलाणि सन्ति	=	दो फल हैं।

(ग) दो से अठारह एव कई

नि० ६९ – दो (२) से लेकर अट्ठारह (१८) सख्या तक के शब्द तथा कई (कितने) शब्द सभी विभक्तियो मे बहुवचन मे ही प्रयुक्त होते है —

दोण्णि	=	दो	एगारह	=	ग्यारह
तिण्णि	=	तीन	बारह	=	बारह
चउरो	=	चार	तेरह	=	तेरह
पच	=	पाच	चउद्दह	=	चौदह
छ	=	छह	पण्णरह	=	पन्द्रह
सत्त	=	सात	सोलह	=	सोलह
अट्ठ	=	आठ	सत्तरह	=	सत्तरह
णव	=	नो	अट्ठारह	=	अट्ठारह
दह	=	दस	कइ	=	कितने

तीन शब्द के सात विभक्तियो के रूप :

प्र०	तिण्णि बालग्रा पढन्ति	=	तीन बालक पढते है।
द्विती०	तिण्णि साडीग्रो सा गिण्हइ	=	तीन साडियो को वह लेती है।
तृ०	तीहि कवीहि सह सो गच्छइ	=	तीन कवियो के साथ वह जाता है।
च०	तीण्ह वत्थूण सो धण दाइ	=	तीन वस्तुग्रो के लिए वह धन देता है।
प०	तीहिन्तो कमलाहितो वारि पडइ	=	तीन कमलो से पानी गिरता है।
ष०	तीण्ह पुरिसाण त घर ग्रत्थि	=	तीन ग्रादमियो का वह घर है।
स०	तीसु खेत्तेसु वारि ग्रत्थि	=	तीन खेतो मे पानी है।

(घ) उन्नीस से ग्रट्ठावन तक

नि० ७० – उन्नीस (१६) से ग्रट्ठावन (५८) सख्या तक के शब्दो के रूप माला शब्द के समान ग्राकारान्त बनते है। ग्रत' उनके रूप माला शब्द के समान सातो विभक्तियो मे चलते है तथा तीनो लिगो मे समान होते हैं।

एगूणवीसा	=	उन्नीस	छव्वीसा	=	छब्बीस
वीसा	=	बीस	सत्तवीसा	=	सत्ताइस
एगवीसा	=	इक्कीस	ग्रट्ठावीसा	=	ग्रट्ठाईस
दुवीसा	=	बाइस	एगूणतीसा	=	उन्तीस
तेवीसा	=	तेइस	तीसा	=	तीस
चउवीसा	=	चौबीस	एगतीसा	=	इकतीस
पण्णवीसा	=	पच्चीस	चत्तालीसा	=	चालीस

(ङ०) उनसठ से निन्नानवे तक

नि० ७१ – उनसठ (५६) से निन्नानवे (६६) सख्या तक के शब्दो के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग जैसे होते है। ग्रत उनके रूप 'जुवइ' शब्द जैसे चलते है। तथा तीनो लिगो मे समान होते हैं।

एगूणसट्ठि	=	उनसठ	एगूणसत्तरि	=	उनहत्तर
सट्ठि	=	साठ	सत्तरि	=	सत्तर
एगसट्ठि	=	इकसठ	एकसत्तरि	=	इकहत्तर
दोसट्ठि	=	बासठ	एगूणसीइ	=	उन्नासी
तेसट्ठि	=	त्रेसठ	ग्रसीइ	=	ग्रस्सी
चउसट्ठि	=	चौंसठ	एगासीइ	=	इक्यासी
पणसट्ठि	=	पैंसठ	एगूणनवइ	=	नवासी
छसट्ठि	=	छयासठ	णवइ	=	नब्बे
सत्तसट्ठि	=	सडसठ	एगणवइ	=	इक्यानवे
ग्रट्ठसट्ठि	=	ग्रडसठ	नवणवइ	=	निन्नानवे

पाठ ७०

विशेषण शब्द | संख्यावाचक

(क) एक

एगो	=	एक (पु०)	एगो छत्तो पढइ	=	एक छात्र पढता है ।
एगा	=	एक (स्त्री०)	एगा बालिआ गच्छइ	=	एक बालिका जाती है ।
एग	=	एक (नपु०)	इम एग फल अत्थि	=	यह एक फल है ।

नि० ६७ – एक शब्द के रूप सातो विभक्तियो मे पुल्लिग, स्त्रीलिग एवम् नपु सकलिग के अकारान्त शब्दो के समान चलेंगे । विशेष्य शब्द के अनुरूप ही एक शब्द का प्रयोग होगा । यथा –

एगस्स पुरिसस्स इद घर अत्थि	=	एक आदमी का यह घर है ।
एगेण बालएण सह अह गच्छामि	=	एक बालक के साथ मैं जाता हूँ ।
एगे खेत्ते वारि अत्थि	=	एक खेत मे पानी है ।

(ख) दो

नि० ६८ – एक शब्द को छोड कर सभी सख्यावाची शब्द प्राकृत मे तीनो लिगो मे समान होते हैं । यथा —

(पु०)	दोण्णि बालआ पढन्ति	=	दो बालक पढते है ।
(स्त्री०)	दोण्णि जुवईओ गच्छन्ति	=	दो युवतिया जाती है ।
(नपु०)	दोण्णि फलाणि सन्ति	=	दो फल है ।

(ग) दो से अठारह एव कई

नि० ६९ – दो (२) से लेकर अट्ठारह (१८) सख्या तक के शब्द तथा कई (कितने) शब्द सभी विभत्तियो मे बहुवचन मे ही प्रयुक्त होते है —

दोण्णि	=	दो	एगारह	=	ग्यारह
तिण्णि	=	तीन	बारह	=	बारह
चउरो	=	चार	तेरह	=	तेरह
पच	=	पाच	चउद्दह	=	चौदह
छ	=	छह	पण्णरह	=	पन्द्रह
सत्त	=	सात	सोलह	=	सोलह
अट्ठ	=	आठ	सत्तरह	=	सत्तरह
णव	=	नो	अट्ठारह	=	अट्ठारह
दह	=	दस	कइ	=	कितने

तीन शब्द के सात विभक्तियो के रूप :

प्र०	तिण्णि बालआ पढन्ति	=	तीन बालक पढते है।
द्विती०	तिण्णि साडीओ सा गिण्हइ	=	तीन साडियो को वह लेती है।
तृ०	तीहि कवीहि सह सो गच्छइ	=	तीन कवियो के साथ वह जाता है।
च०	तीण्ह वत्थूण सो धण दाइ	=	तीन वस्तुओ के लिए वह धन देता है।
प०	तीहिन्तो कमलाहितो वारि पडइ	=	तीन कमलो मे पानी गिरता है।
ष०	तीण्ह पुरिसाण त घर अत्थि	=	तीन आदमियो का वह घर है।
स०	तीसु खेत्तोसु वारि अत्थि	=	तीन खेतो मे पानी है।

(घ) उन्नीस से अट्ठावन तक

नि० ७० – उन्नीस (१९) से अट्ठावन (५८) सख्या तक के शब्दो के रूप माला शब्द के समान आकारान्त बनते है। अतः उनके रूप माला शब्द के समान सातो विभक्तियो मे चलते है तथा तीनो लिगो मे समान होते हैं।

एगूणवीसा	=	उन्नीस	छव्वीसा	=	छब्बीस
वीसा	=	बीस	सत्तवीसा	=	सत्ताइस
एगवीसा	=	इक्कीस	अट्ठावीसा	=	अट्ठाईस
दुवीसा	=	बाइस	एगूणतीसा	=	उन्तीस
तेवीसा	=	तेइस	तीसा	=	तीस
चउवीसा	=	चौबीस	एगतीसा	=	इकतीस
पण्णवीसा	=	पच्चीस	चत्तालोसा	=	चालीस

(ङ०) उनसठ से निन्नानवे तक

नि० ७१ – उनसठ (५९) से निन्नानवे (९९) सख्या तक के शब्दो के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग जैसे होते है। अत उनके रूप 'जुवइ' शब्द जैसे चलते है। तथा तीनो लिगो मे समान होते हैं।

एगूणसट्ठि	=	उनसठ	एगूणसत्तरि	=	उन्हत्तर
सट्ठि	=	साठ	सत्तरि	=	सत्तर
एगसट्ठि	=	इकसठ	एकसत्तरि	=	इकहत्तर
दोसट्ठि	=	बासठ	एगूणसीइ	=	उन्नासी
तेसट्ठि	=	त्रेसठ	असीइ	=	अस्सी
चउसट्ठि	=	चौसठ	एगासीइ	=	इक्यासी
पणसट्ठि	=	पैसठ	एगूणनवइ	=	नवासी
छसट्ठि	=	छयासठ	णवइ	=	नव्वे
सत्तसट्ठि	=	सडसठ	एगणवइ	=	इक्यानवे
अट्ठसट्ठि	=	अडसठ	नवणवइ	=	निन्नानवे

उदाहरण वाक्य :

वीसा (तीनो लिगो मे समान)

(पु०)	वीसा बालग्रा पढन्ति	=	वीस बालक पढते हैं।
(स्त्री०)	वीसा साडीग्रो सन्ति	=	वीस साडिया है।
(नपु०)	वीसा खेत्ताणि सन्ति	=	वीस खेत है।

सट्ठि (तीनों लिगो मे समान)

(पु०)	सट्ठी पुरिसा गच्छन्ति	=	साठ ग्रादमी जाते है।
(स्त्री०)	सट्ठी जुवईग्रो गायन्ति	=	साठ युवतिया गाती है।
(नपु०)	सट्ठी फलाणि सो गेण्हइ	=	साठ फलो को वह लेता है।

(च) सौ, हजार, लाख

नि० ७२ – निम्नलिखित सख्या शब्दो के रूप नपुसकलिग ग्रकारान्त शब्दो के समान चलते है —

सय	=	सौ	तिसय	=	तीन सौ
दुसय	=	दो सौ	सहस्स	=	(एक) हजार
नवसय	=	नौ सौ	लक्ख	=	(एक) लाख

प्राकृत मे ग्रनुवाद करो

मनुष्य के शरीर मे एक ग्रात्मा है। उसकी दो ग्राखे है। तुम्हारी तीन पुत्रियाँ हैं। ये चार पुस्तकें मेरी है। महावीर के पाच शिष्य हैं। इस गाँव मे सत्तर लोग रहते हैं। मेरे विद्यालय मे नब्वे छात्र हैं। इस नगर मे एक हजार पुरुष हैं।

हिन्दी मे ग्रनुवाद करो :–

इमम्मि नयरे तिण्णि नईग्रो सन्ति। सत्त उदही सन्ति। चउद्दह भुवणाणि सन्ति। पण्णासा जणा तम्मि नयरे वसन्ति। ग्रट्ठारह पुराणा पसिद्धा सन्ति। तम्मि खेत्ते तिसयाणि बालग्रा खेलन्ति। ताए लताए वीसा पुप्फाणि सति। इमम्मि कारायारे चत्तारि चोरा सति। सत्त दीवा होन्ति। सट्ठी बालग्रा पढमाए पढन्ति।

पाठ ७१

प्रकार एव क्रमवाचक

विशेषण शब्द :

एगहा	=	एक प्रकार
दुविहा	=	दो प्रकार
तिविह	=	तीन प्रकार
चउहा	=	चार प्रकार
दसविह	=	दस प्रकार
पढमो	=	पहला
बीओ	=	दूसरा
तइओ	=	तीसरा
चउत्थो	=	चौथा
पचमो	=	पाचवा
सट्ठो	=	छठवा
सत्तमो	=	सातवा
बहुविह	=	बहुत प्रकार
अणेहविह	=	अनेक प्रकार
णाणाविह	=	नाना प्रकार
सयहा	=	सैकडो प्रकार
सहस्सहा	=	हजारो प्रकार
अट्ठमो	=	आठवा
नवमो	=	नौवा
दहमो	=	दसवा
वीसइमो	=	वीसवा
चउवीसइमो	=	चौवीसवा
सयमो	=	सौवा
अणतयमो	=	अनन्तवा

उदाहरण वाक्य

दुविहा जीवा	=	दो प्रकार के जीव ।
तिविह मोक्ख मग्ग	=	तीन प्रकार का मोक्ष मार्ग ।
चउहा गईओ	=	चार प्रकार की गतिया ।
दसविहो धम्मो	=	दस प्रकार का धर्म ।
बहुविहा कम्मा	=	बहुत प्रकार के कर्म
णाणाविहाणि पोत्थआणि	=	नाना प्रकार की पुस्तकें ।
पढमो बालओ निउणो अत्थि	=	पहला बालक निपुण है ।
पढमा जुवई नमइ	=	पहली युवति नमन करती है।
पढम सत्थ आयारो अत्थि	=	पहला शास्त्र आचाराग है ।
चउवीसइमो तिथ्ययरो महावीरो अत्थि	=	चौबीसवें तीर्थंकर महावीर हैं ।
चउत्थी बाला मम धूआ अत्थि	=	चौथी बालिका मेरी पुत्री है ।
पचम घर मज्झ अत्थि	=	पाचवा घर मेरा है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

दूसरा बालक दयालु है । तीसरी पुस्तक काव्य की है । छठी युवति तुम्हारी बहिन है । सातवा फूल गुलाब का है । आठवी गाय काली है । नौवा वस्त्र सफेद है । दसवा आदमी मूर्ख है । चार प्रकार के फल । तीन प्रकार के वस्त्र । दो प्रकार की पुस्तके । दस प्रकार के फूल । हजारो प्रकार के प्राणी । नाना प्रकार के जन्म । अनेक प्रकार के घर ।

चतुर्थी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्तस्स बालअस्स इद फल अत्थि	पढन्ताण बालआण इमाणि फलाणि सन्ति
स्त्री०	पढन्तीआ जुवईआ त पुष्फ अत्थि	पढन्तीण जुवईण तानि पुप्फाणि सति
नपु०	पढन्तस्स मित्तस्स इद पोत्थअ अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि मत्थाणि सति

पचमी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्तत्तो बालअत्तो सो पोत्थअ मग्गइ	पढन्ताहिंतो बालआहिंतो सो पोत्थअ मग्गइ
स्त्री०	पढन्तित्तो जुवइत्तो सा कमल गिण्हइ	पढन्तीहिंतो जुवईहिंतो सा कमल गेण्हइ
नपु०	पढन्तत्तो मित्तत्तो सद्दो उप्पन्नइ	पढन्ताहितो मित्ताहितो सद्दो उप्पन्नइ

षष्ठी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्तस्स बालअस्स इमो जणओ अत्थि	पढन्ताण बालआण इद घर अत्थि
स्त्री०	पढन्तीआ जुवईआ इमा माआ अत्थि	पढन्तीण जुवईण इमाणि आसणाणि सति
नपु०	पढन्तस्स मित्तस्स इद कलम अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि फलाणि सति

सप्तमी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्ते बालए विनय होइ	पढन्तेसु बालएसु विनय अत्थि
स्त्री०	पढन्तीए जुवईए लज्जा अत्थि	पढन्तेसु जुवईसु लज्जा अत्थि
नपु०	पढन्ते मित्ते खमा अत्थि	पढन्तेसु मित्तेसु खमा अत्थि

निर्देश – उपर्युक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

दौडता हुआ बालक जीतता है। बोलती हुई बहू शोभित नही होती है। नाचता हुआ मोर जाता है। हँसती हुई युवति पूछती है। गर्जता हुआ बादल बरसता है। भागता हुआ नौकर यहाँ आया। लजाती हुई बालिका वहाँ गयी। उडता हुआ पक्षी भूमि पर गिर पडा। कपता हुआ मृग सिंह के समीप गया। नमन करता हुआ छात्र पुस्तक पढता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

हसन्ती बाला तत्थ गच्छीअ। कपमाणी जुवई पुच्छइ। अभीयमाणेण मित्तेण सह सो ण कलहइ। उड्डमाणाण कवोआण इम अन्न अत्थि। गज्जन्तेसु मेहेसु जल ण होइ।

पाठ ७२

कृदन्त विशेषण शब्द **वर्तमानकाल**

पु० शब्द	अर्थ	पु० शब्द	अर्थ
पढन्तो	पढता हुआ	गज्जन्तो	गर्जता हुआ
धावन्तो	दौडता हुआ	रुदन्तो	रोता हुआ
बोलन्तो	बोलता हुआ	अभीयमाणो	अध्ययन करता हुआ
णच्चन्तो	नाचता हुआ	हसमाणो	हँसता हुआ
हसन्तो	हँसता हुआ	पलायमाणो	भागता हुआ
गच्छन्तो	जाता हुआ	कपमाणो	कपता हुआ
खेलन्तो	खेलता हुआ	लज्जणो	लजाता हुआ
नमन्तो	नमन करता हुआ	उड्डमाणो	उडता हुआ

नि० ७३ (क) मूल धातु मे 'न्त' एव 'माण' प्रत्यय लगने पर वर्तमान काल के कृदन्त रूप बनते है। जैसे– पढ+न्त=पढन्त पु० मे पढन्तो। हस+माण=हसमाण। पु० मे हसमाणो।

(ख) इन कृदन्तो मे 'ई' प्रत्यय लगकर स्त्रीलिंग रूप बन जाते है। जैसे– पढन्त+ई=पढन्ती, हसमाण+ई=हसमाणी।

नि० ७४ इन विशेषण शब्दो के रूप तीनो लिंगो मे सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार बनेगे।

उदाहरण वाक्य –

	प्रथमा – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	पढन्तो बालओ गच्छइ	पढन्ता बालआ गच्छन्ति
स्त्री०	पढन्ती जुवई नमइ	पढन्तीओ जुवईओ नमन्ति
नपु०	पढन्त मित्त हसइ	पढन्ताणि मित्ताणि हसन्ति

	द्वितीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	पढन्त बालअ सो पुच्छइ	पढन्ता बालआ सो पुच्छइ
स्त्री०	पढन्ति जुवइ सा कहइ	पढन्तीओ जुवईओ सा कहइ
नपु०	पढन्त मित्त अह पासामि	पढन्ताणि मित्ताणि अह पासामि

	तृतीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	पढन्तेण बालएण सह सो पढइ	पढन्तेहि बालएहि गाम सोहइ
स्त्री०	पढन्तीए जुवईए सह सा वसइ	पढन्तीहि जुवईहि घर सोहइ
नपु०	पढन्तेण मित्तेण सह अह पढामि	पढन्तेहि मित्तेहि सह कलह ण होइ

	चतुर्थी — एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्तस्स बालअस्स इद फल अत्थि	पढन्ताण बालआण इमाणि फलाणि सन्ति
स्त्री०	पढन्तीआ जुवईआ त पुप्फ अत्थि	पढन्तीण जुवईण तानि पुप्फाणि सति
नपु०	पढन्तस्स मित्तस्स इद पोत्थअ अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि सत्थाणि सन्ति

	पचमी — एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्तत्तो बालअत्तो सो पोत्थअ मग्गइ	पढन्ताहिंतो बालआहिंतो सो पोत्थअ मग्गइ
स्त्री०	पढन्तित्तो जुवइत्तो सा कमल गिण्हइ	पढन्तीहिंतो जुवईहिंतो सा कमल गेण्हइ
नपु०	पढन्तत्तो मित्तत्तो सद्दो उप्पन्नइ	पढन्ताहिंतो मित्ताहिंतो सद्दो उप्पन्नइ

	षष्ठी — एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्तस्स बालअस्स इमो जणओ अत्थि	पढन्ताण बालआण इद घर अत्थि
स्त्री०	पढन्तीआ जुवईआ इमा माआ अत्थि	पढन्तीण जुवईण इमाणि आसणाणि सति
नपु०	पढन्तस्स मित्तस्स इद कलम अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि फलाणि सति

	सप्तमी — एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्ते बालए विनय होइ	पढन्तेसु बालएसु विनय अत्थि
स्त्री०	पढन्तीए जुवईए लज्जा अत्थि	पढन्तेसु जुवईसु लज्जा अत्थि
नपु०	पढन्ते मित्ते खमा अत्थि	पढन्तेसु मित्तेसु खमा अत्थि

निर्देश — उपर्युक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

दौडता हुआ बालक जीतता है। बोलती हुई वहू शोभित नही होती है। नाचता हुआ मोर जाता है। हँसती हुई युवति पूछती है। गर्जता हुआ बादल बरसता है। भागता हुआ नौकर यहाँ आया। लजाती हुई बालिका वहाँ गयी। उडता हुआ पक्षी भूमि पर गिर पडा। कपता हुआ मृग सिंह के समीप गया। नमन करता हुआ छात्र पुस्तक पढता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

हसन्ती बाला तत्थ गच्छीअ। कपमाणी जुवई पुच्छइ। अभीयमाणेण मित्तेण सह सो ण कलहइ। उड्डमाणाण कवोआण इम अन्न अत्थि। गज्जन्तेसु मेहेसु जल ण होइ।

पाठ ७२

कृदन्त विशेषण शब्द **वर्तमानकाल**

पु० शब्द	अर्थ	पु० शब्द	अर्थ
पढन्तो	पढता हुआ	गज्जन्तो	गर्जता हुआ
धावन्तो	दौडता हुआ	रुदन्तो	रोता हुआ
बोलन्तो	बोलता हुआ	अभीयमाणो	अध्ययन करता हुआ
णच्चन्तो	नाचता हुआ	हसमाणो	हँसता हुआ
हसन्तो	हँसता हुआ	पलायमाणो	भागता हुआ
गच्छन्तो	जाता हुआ	कपमाणो	कपता हुआ
खेलन्तो	खेलता हुआ	लज्जणो	लजाता हुआ
नमन्तो	नमन करता हुआ	उड्डमाणो	उडता हुआ

नि० ७३ (क) मूल धातु मे 'न्त' एव 'माण' प्रत्यय लगने पर वर्तमान काल के कृदन्त रूप बनते है। जैसे– पढ+न्त=पढन्त पु० मे पढन्तो। हस+माण=हसमाण। पु० मे हसमाणो।

(ख) इन कृदन्तो मे 'ई' प्रत्यय लगकर स्त्रीलिंग रूप बन जाते हैं। जैसे– पढन्त+ई=पढन्ती, हसमाण+ई=हसमाणी।

नि० ७४ इन विशेषण शब्दो के रूप तीनो लिंगो मे सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार बनेंगे।

उदाहरण वाक्य :—

	प्रथमा – एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्तो बालओ गच्छइ	पढन्ता बालआ गच्छन्ति
स्त्री०	पढन्ती जुवई नमइ	पढन्तीओ जुवईओ नमन्ति
नपु०	पढन्त मित्त हसइ	पढन्ताणि मित्ताणि हसन्ति
	द्वितीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	पढन्त बालअ सो पुच्छइ	पढन्ता बालआ सो पुच्छइ
स्त्री०	पढन्ति जुवइ सा कहइ	पढन्तीओ जुवईओ सा कहइ
नपु०	पढन्त मित्त अह पासामि	पढन्ताणि मित्ताणि अह पासामि
	तृतीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	पढन्तेण बालएण सह सो पढइ	पढन्तेहि बालएहि गाम सोहइ
स्त्री०	पढन्तीए जुवईए सह सा वसइ	पढन्तीहि जुवईहि घर सोहइ
नपु०	पढन्तेण मित्तेण सह अह पढामि	पढन्तेहि मित्तेहि सह कलह ण होइ

चतुर्थी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्तस्स बालअस्स इद फल अत्थि	पढन्ताण बालआण इमाणि फलाणि सन्ति
स्त्री०	पढन्तीआ जुवईआ त पुप्फ अत्थि	पढन्तीण जुवईण तानि पुप्फाणि सति
नपु०	पढन्तस्स मित्तस्स इद पोत्थअ अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि सत्थाणि सन्ति

पचमी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्तत्तो बालअत्तो सो पोत्थअ मग्गइ	पढन्ताहिंतो बालआहिंतो सो पोत्थअ मग्गइ
स्त्री०	पढन्तित्तो जुवइत्तो सा कमल गिण्हइ	पढन्तीहिंतो जुवईहिंतो सा कमल गेण्हइ
नपु०	पढन्तत्तो मित्तत्तो सद्दो उप्पन्नइ	पढन्ताहिंतो मित्ताहिंतो सद्दो उप्पन्नइ

षष्ठी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्तस्स बालअस्स इमो जणओ अत्थि	पढन्ताण बालआण इद घर अत्थि
स्त्री०	पढन्तीआ जुवईआ इमा माआ अत्थि	पढन्तीण जुवईण इमाणि आसणाणि सति
नपु०	पढन्तस्स मित्तस्स इद कलम अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि फलाणि सति

सप्तमी – एकवचन		बहुवचन
पु०	पढन्ते बालए विनय होइ	पढन्तेसु बालएसु विनय अत्थि
स्त्री०	पढन्तीए जुवईए लज्जा अत्थि	पढन्तेसु जुवईसु लज्जा अत्थि
नपु०	पढन्ते मित्ते खमा अत्थि	पढन्तेसु मित्तेसु खमा अत्थि

निर्देश – उपर्युक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करो।

प्राकृत में अनुवाद करो ·

दौडता हुआ बालक जीतता है। बोलती हुई बहू शोभित नही होती है। नाचता हुआ मोर जाता है। हँसती हुई युवति पूछती है। गर्जता हुआ बादल बरसता है। भागता हुआ नौकर यहाँ आया। लजाती हुई बालिका वहाँ गयी। उडता हुआ पक्षी भूमि पर गिर पडा। कपता हुआ मृग सिह के समीप गया। नमन करता हुआ छात्र पुस्तक पढता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

हसन्ती बाला तत्थ गच्छीअ। कपमाणी जुवई पुच्छइ। अभीयमाणेण मित्तेण सह सो ण कलहइ। उड्डमाणाण कवोआण इम अन्न अत्थि। गज्जन्तेसु मेहेसु जल ण होइ।

पाठ ७३

कृदन्त विशेषरण शब्द : **भूतकाल**

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सतुट्ठ	सन्तुष्ट हुआ/हुई	भरिणअ	कहा हुआ/हुई
गमिअ	गया हुआ/हुई	पढिअ	पढा हुआ/हुई
अहीअ	पढा हुआ/हुई	रक्खिअ	रक्षित हुआ/हुई
कुविअ	क्रोधित हुआ/हुई	विअसअ	विकसित हुआ/हुई
चिंतिअ	चिंतित हुआ/हुई	लिहिअ	लिखा हुआ/हुई
गाअ	झुका हुआ/हुई	कअ	किया हुआ/हुई
नट्ठ	नष्ट हुआ/हुई	गअ	गया हुआ
पूइअ	पूजित हुआ/हुई	हअ	मरा हुआ/हुई
भीअ	डरा हुआ, हुई	गाअ	जाना हुआ
मुइअ	आनन्दित हुआ/हुई	दिट्ठ	देखा हुआ

नि० ७५ – मूल धातु मे 'अ' प्रत्यय लगने पर तथा विकल्प से धातु के अ को इ होने पर भूतकाल के कृदन्त रूप बनते हैं। यथा– गम + इ + अ = गमिअ। गा + अ = गाअ।

नि० ७६ – इन विशेषरण शब्दो के रूप तीनो लिंगो मे सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार बनेंगे।

उदाहरण वाक्य

	प्रथमा – एकवचन	बहुवचन
पु०	सतुट्ठो णिवो धण देइ	सतुट्ठा णिवा धण देन्ति
स्त्री०	सतुट्ठा णारी लज्जइ	सतुट्ठाओ णारीओ मुअन्ति
नपु०	सतुट्ठ मित्त किं करइ	सतुट्ठाणि मित्ताणि कज्ज करन्ति
	द्वितीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	सतुट्ठ णिव सो नमइ	सतुट्ठा णिवा को ण इच्छइ
स्त्री०	सतुट्ठ णारिं सो इच्छइ	सतुट्ठाओ णारीओ ते इच्छन्ति
नपु०	सतुट्ठ मित्त अह इच्छामि	सतुट्ठाणि मित्ताणि सो धण देइ
	तृतीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	सतुट्ठेण णिवेण सह सुह होइ	सतुट्ठेहि णिवेहि कलह ण होइ
स्त्री०	सतुट्ठाए णारीए विणा सुह णत्थि	सतुट्ठीहि णारीहि सह सो वसइ
नपु०	मतुट्ठेण मित्तेण सह अह वसामि	सतुट्ठेहि मित्तेहि सह सो गच्छइ

चतुर्थी – एकवचन		बहुवचन
पु०	सतुट्ठस्स णिवस्स इद सम्माण अत्थि	सतुट्ठाण णिवाण ससारो असारो अत्थि
स्त्री०	सतुट्ठाअ णारीए इद धण अत्थि	सतुट्ठाण णारीण इद घर अत्थि
नपु०	सतुट्ठस्स मित्तस्स सो फल देइ	सतुट्ठाण मित्ताण अह नमामि
पचमी – एकवचन		बहुवचन
पु०	सतुट्ठत्तो णिवत्तो सो धण मग्गइ	सतुट्ठाहिंतो णिवाहिंतो सो धण मग्गइ
स्त्री०	सतुट्ठत्तो णारित्तो सा सिक्ख लहइ	सतुट्ठाहिंतो णारीहिंतो सा सिक्ख लहइ
नपु०	सतुट्ठत्तो मित्तत्तो सो फल गिण्हइ	सतुट्ठाहिंतो मित्ताहिंतो सो फलाणि गिण्हइ
षष्ठी – एकवचन		बहुवचन
पु०	सतुट्ठस्स णिवस्स इद रज्ज अत्थि	सतुट्ठाण णिवाण इद कज्ज अत्थि
स्त्री०	सतुट्ठाअ णारीए इद कात्रव्व अत्थि	सतुट्ठाण णारीण इद घर अत्थि
नपु०	सतुट्ठस्स मित्तस्स इमो पुत्तो अत्थि	सतुट्ठाण मित्ताण इद कात्रव्व अत्थि
सप्तमी – एकवचन		बहुवचन
पु०	सतुट्ठे णिवे लच्छी वसइ	सतुट्ठेसु णिवेसु लच्छी वसइ
स्त्री०	सतुट्ठाए णारीए लज्जा होइ	सतुट्ठेसु णारीसु लज्जा होइ
नपु०	सतुट्ठे मित्ते णाण होइ	सतुट्ठेसु मित्तेसु खंति होइ

निर्देश – इन उपर्युक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करो ।

भविष्यकाल

उदाहरण वाक्य .

पु०	पढिस्सतो गथो	=	पढा जाने वाला ग्रन्थ ।
स्त्री०	पढिस्सता गाहा	=	पढी जाने वाली गाथा ।
नपु०	पढिस्सत पत्त	=	पढा जाने वाला पत्र ।

नि० ७७ – (क) मूल क्रिया के अ को इ होने पर 'स्सत' प्रत्यय लगने पर भविष्यकाल कृदन्त के रूप बनते है । जैसे–
पढ् + इ + स्सत = पढिस्सत ।

(ख) भविष्य कृदन्त बन जाने पर पु०, स्त्री० एव नपु० विशेष्य के अनुसार इन कृदन्तो के सभी विभक्तियो मे रूप बनते हैं ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

वह जयपुर गया हुआ है । यह पुस्तक पढी हुई है । झुकी हुई लता से फूल तोडा । पूजित साधुओ को प्रणाम करो । डरी हुई युवतियो से बात करो । आनन्दित पुरुषो का जीवन अच्छा है । उसके द्वारा यह कहा हुआ है । विकसित कलियो को मत तोडो । लिखी हुई पुस्तक यहा लाओ । यह देखा हुआ नगर है । लिखा जाने वाला पत्र कहाँ है ? सुना जाने वाला शास्त्र वहाँ है ।

पाठ ७४

कृदन्त विशेषण शब्द **योग्यतासूचक**

(क)			(ख)		
करणीअ	=	करने योग्य	होअव्व	=	होने योग्य
पढणीअ	=	पढने योग्य	मुणेअव्व	=	जानने योग्य
हसणीअ	=	हँसने योग्य	नच्चेअव्व	=	नाचने योग्य
कहणीअ	=	कहने योग्य	फासेअव्व	=	छूने योग्य
पुज्जणीअ	=	पूज्यनीय	मग्गेअव्व	=	मागने योग्य

नि० ७७ – (क) मूल धातु मे **'अणीअ'** प्रत्यय लगने पर विध्यर्थ (योग्यता सूचक) कृदन्त बनते है । यथा– कर + अणीअ = करणीअ ।

(ख) मूल धातु मे **'अव्व'** प्रत्यय लगने पर तथा धातु के अ को ए होने पर दूसरे प्रकार के योग्यता सूचक कृदन्त बनते हैं । यथा—
मुण + ए + अव्व = मुणेअव्व ।

नि० ७८ इन विशेषण शब्दो के रूप तीनो लिगो मे सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार चलेंगे ।

उदाहरण वाक्य

(क)

पु०	कहणीओ वितान्तो अत्थि	=	कहने योग्य वृत्तान्त है ।
स्त्री०	कहणीआ कहा अत्थि	=	कहने योग्य कथा है ।
नपु०	कहणीअ चरित्त अत्थि	=	कहने योग्य चरित्र है ।

(ख)

पु०	मुणेअव्वो धम्मो सुह दाइ	=	जानने योग्य धर्म सुख देता है ।
स्त्री०	मुणेअव्वा आणा कि अत्थि	=	जानने योग्य आज्ञा क्या है ?
नपु०	मुणेअव्व जीवण अप्प अत्थि	=	जानने योग्य जीवन थोडा है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

(क)

यह पुस्तक पढने योग्य है । वह आदमी हँसने योग्य है । करने योग्य कार्यों को शीघ्र करो । पूज्यनीय स्त्रियो को प्रणाम करो । वह कथा पढने योग्य है । यह दृष्टान्त कहने योग्य है । पूज्यनीय पुस्तको को सग्रह करो ।

(ख)

यह विवाह होने योग्य है । वह मा होने योग्य नही है । ये पुस्तके जानने योग्य हैं । तुम जानने योग्य कथा कहो । वह युवति नाचने योग्य है । वह आदमी छूने योग्य नही है । यह वस्तु छूने योग्य है । वह वस्तु मांगने योग्य है ।

पाठ ७५

(क) योग्यता-वाचक

तद्धित विशेषण शब्द :

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
रसाल	रसयुक्त	दयालु	दया-युक्त
जडाल	जटाधारी	ईसालु	ईर्ष्या-युक्त
सद्दाल	शब्द-युक्त	नेहालु	स्नेह-युक्त
जोण्हाल	चाँदनी युक्त	लज्जालु	लज्जा-युक्त
गव्विर	गर्व-युक्त	सोहिल्ल	शोभा-युक्त
रेहिर	रेखा-युक्त	छाइल्ल	छाया-युक्त
दप्पुल्ल	दर्प-युक्त	मंसुल्ल	दाढीवाला
धणमण	धनयुक्त	सिरिमत	श्री-युक्त
सोहामण	शोभा-युक्त	धीमत	बुद्धि-युक्त
भत्तिवत	भक्ति-युक्त	गामिल्ल	ग्रामीण
धणवत	धन-युक्त	घरिल्ल	घरेलु
एकल्ल	अकेला	णयरुल्ल	नागरिक
नवल्ल	नया	अप्पुल्ल	आत्मा मे उत्पन्न
नत्थिअ	नास्तिक	अत्थिअ	आस्तिक

उदाहरण वाक्य :

जडालो जणो कत्थ गच्छइ = जटाधारी व्यक्ति कहाँ जाता है ?
अज्ज जुण्हाली रत्ति अत्थि = आज चाँदनी रात है।
ईसालू पुरिसो दुह दाइ = ईर्ष्यालु आदमी दु ख देता है।
गव्विरा जुवई ण सोहइ = घमडी युवति अच्छी नही लगती है।
त रुक्ख छाइल्ल णत्थि = वह वृक्ष छायावाला नही है।
धीमता धणमणा ण होंति = बुद्धिमान् धनवान् नही होते हैं।
तस्स घरिल्ल अभिहाण कि अत्थि = उसका घरेलु नाम क्या है ?
नवल्ली वहू लज्जालू होइ = नयी बहू लज्जालु होती है।

नि० ८० सज्ञा शब्दो से बने ये शब्द तद्धित कहे जाते हैं। इनका प्रयोग विशेषण की तरह होता है। विशेष्य की तरह इनके रूप चलते है।

(ख) अन्य अर्थवाचक

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
एगहुत्त	एक वार	एगत्तो	एक ओर से
तिहुत्त	तीन वार	सवत्तो	सब ओर से
इत्तो	इस ओर से	तत्तो	उस ओर से
कत्तो	किस ओर से	जत्तो	जिस ओर से
अम्हकेर	हमारा	तुम्हकेर	तुम्हारा
परकेर	दूसरे का	अप्पणय	अपना
जहि	जहाँ पर	तहि	वहाँ पर
कहि	कहाँ पर	अन्नहि	अन्य स्थान पर
एत्तिअ	इतना	तेत्तिअ	उतना
केत्तिअ	कितना	जेत्तिअ	जितना
ऐरिस	ऐसा	तारिस	वैसा
केरिस	कैसा	जारिस	जैसा
अम्हारिस	हमारे जैसा	तुम्हारिस	तुम्हारे जैसा

प्रयोग वाक्य :

ते तिहुत्त भुजति = वे तीन बार भोजन करते है ।
सो इत्तो गच्छइ = वह इस ओर से जाता है ।
इद परकेर पोत्शअ अत्थि = यह दूसरे की पुस्तक है ।
सो एकल्लो किं करइ = वह अकेला क्या करता है ?
एत्तिअ सचय वर णत्थि = इतना सचय अच्छा नही है ।
वासुदेवो केरिस कज्ज करइ = वासुदेव कैसा काम करता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो :

ग्रामीण लोग वहाँ पढते हैं । दयालु आदमी हिंसा नही करता है । घमड करने वाला सदा दु ख पाता है । आम का फल रमयुक्त है । वह घरेलु पक्षी है । तुम एकवार क्यो भोजन करते हो ? तुम्हारा पुत्र कहाँ पर है ? साधु आस्तिक है । तुम जितना मागोगे वह उतना नही देगा । हमारे जैसा श्रीमत अन्य स्थान पर नही है ।

क्रियारूप चार्ट

एकवचन

पुरुष	वर्तमानकाल		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध कृदन्त		हेत्वर्थ कृदन्त	
	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा
प्रथम	नमामि	दामि	नमीअ	दाही	नमिहिमि	दाहिमि	नममु	दामु	नमिऊण	दाऊण	नमिउ	दाउ
मध्यम	नमसि	दासि	नमीअ	दाही	नमिहिसि	दाहिसि	नमहि	दाहि	"	"	"	"
अन्य	नमइ	दाइ	नमीअ	दाही	नमिहिइ	दाहिइ	नमउ	दाउ	"	"	"	"

बहुवचन

पुरुष	वर्तमानकाल		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध कृदन्त		हेत्वर्थ कृदन्त	
प्रथम	नमामो	दामो	नमीअ	दाही	नमिहामो	दाहामो	नममो	दामो	नमिऊण	दाऊण	नमिउ	दाउ
मध्यम	नमित्था	दाइत्था	नमीअ	दाही	नमिहित्था	दाहित्था	नमह	दाह	"	"	"	"
अन्य	नमन्ति	दान्ति	नमीअ	दाही	नमिहिन्ति	दाहिन्ति	नमन्तु	दान्तु				

(ख) अन्य अर्थवाचक

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
एगहुत्तं	एक बार	एगत्तो	एक ओर से
तिहुत्त	तीन बार	सवत्तो	सब ओर से
इत्तो	इस ओर से	तत्तो	उस ओर से
कत्तो	किस ओर से	जत्तो	जिस ओर से
अम्हकेर	हमारा	तुम्हकेर	तुम्हारा
परकेर	दूसरे का	अप्पणय	अपना
जहि	जहाँ पर	तहि	वहाँ पर
कहि	कहाँ पर	अन्नहि	अन्य स्थान पर
एत्तिअ	इतना	तेत्तिअ	उतना
केत्तिअ	कितना	जेत्तिअ	जितना
ऐरिस	ऐसा	तारिस	वैसा
केरिस	कैसा	जारिस	जैसा
अम्हारिस	हमारे जैसा	तुम्हारिस	तुम्हारे जैसा

प्रयोग वाक्य :

ते तिहुत्त भुजंति = वे तीन बार भोजन करते है ।
सो इत्तो गच्छइ = वह इस ओर से जाता है ।
इद परकेर पोत्थअ अत्थि = यह दूसरे की पुस्तक है ।
सो एकल्लो किं करइ = वह अकेला क्या करता है ?
एत्तिअ सचय वर णत्थि = इतना सचय अच्छा नही है ।
वासुदेवो केरिस कज्ज करइ = वासुदेव कैसा काम करता है ?

प्राकृत में अनुवाद करो '

ग्रामीण लोग वहाँ पढते हैं । दयालु आदमी हिंसा नही करता है । घमड करने वाला सदा दु ख पाता है । आम का फल रसयुक्त है । वह घरेलु पक्षी है । तुम एकबार क्यो भोजन करते हो ? तुम्हारा पुत्र कहाँ पर है ? साधु आस्तिक है । तुम जितना मागोगे वह उतना नही देगा । हमारे जैसा श्रीमत अन्य स्थान पर नही है ।

क्रियारूप चार्ट

एकवचन

पुरुष	वर्तमानकाल		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध कृदन्त		हेत्वर्थ कृदन्त	
	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा
प्रथम	नमामि	दामि	नमीअ	दाही	नमिहिमि	दाहिमि	नममु	दामु	नमिऊण	दाऊण	नमिउ	दाउ
मध्यम	नमसि	दासि	नमीअ	दाही	नमिहिसि	दाहिसि	नमहि	दाहि	,,	,,	,,	,,
अन्य	नमइ	दाइ	नमीअ	दाही	नमिहिइ	दाहिइ	नमउ	दाउ	,,	,,	,,	,,

बहुवचन

पुरुष	वर्तमानकाल		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध कृदन्त		हेत्वर्थ कृदन्त	
	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	अ क्रिया नम	आ क्रिया दा
प्रथम	नमामो	दामो	नमीअ	दाही	नमिहामो	दाहामो	नममो	दामो	नमिऊण	दाऊण	नमिउ	दाउ
मध्यम	नमित्था	दाइत्था	नमीअ	दाही	नमिहित्था	दाहित्था	नमह	दाह	,,	,,	,,	,,
अन्य	नमन्ति	दान्ति	नमीअ	दाही	नमिहिन्ति	दाहिन्ति	नमन्तु	दान्तु				

कृदन्त विशेषण चार्ट

प्रथमाविभक्ति

काल	मूलक्रिया एव प्रत्यय	एकवचन पु०	एकवचन स्त्री०	एकवचन नपुं०	बहुवचन पु०	बहुवचन स्त्री०	बहुवचन नपुं०
वर्तमानकाल	पढ + अत	पढन्तो	पढन्ती	पढन्त	पढन्ता	पढन्तीओ	पढन्ताणि
"	पढ + माण	पढमाणो	पढमाणी	पढमाण	पढमाणा	पढमाणीओ	पढमाणाणि
भूतकाल	पढ + अ	पढिओ	पढिआ	पढिअ	पढिआ	पढिआओ	पढिआणि
भविष्यकाल	पढ + स्सत	पढिस्सतो	पढिस्सती	पढिस्सत	पढिस्सता	पढिस्सतीओ	पढिस्सताणि
योग्यतासूचक (क) (विधिकृदन्त)	पढ + अणीअ	पढणीओ	पढणीआ	पढणीअ	पढणीआ	पढणीआओ	पढणीआणि
" (ख)	पढ + अव्व	पढेअव्वो	पढेअव्वा	पढेअव्व	पढेअव्वा	पढेअव्वाओ	पढेअव्वाणि

निर्देश — इसी प्रकार सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार इन विशेषणो के रूप प्रयुक्त होते हैं। पढ क्रिया के समान अन्य क्रियाओ के सभी कालो मे कृदन्त विशेषण बनाकर अभ्यास कीजिए।

पाठ ७६

वर्तमानकाल

कर्मवाच्य क्रिया-प्रयोग

तेण अह पासीअमि/पासिज्जमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
निवेण अम्हे पासीअमो/पासिज्जमो	=	राजा के द्वारा हम देखे जाते है।
मए तुम पासीअसि/पासिज्जसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।
तुम्हे पासीअइत्था/पासिज्जित्था	=	तुम सब देखे जाते हो।
तुमए सो पासीअइ/पासिज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जाता है।
साहुणा ते पासीअति/पासिज्जति	=	साधु के द्वारा वे सब देखे जाते है।

उदाहरण वाक्य

जुवईए बालओ पासीअइ	=	युवति के द्वारा बालक देखा जाता है।
मए घडो करीअइ	=	मेरे द्वारा घडा बनाया जाता है।
तेण पोत्थअ पढिज्जइ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढी जाती है।
बहूए देवो अच्चीअइ	=	बहू के द्वारा देव पूजा जाता है।
पुरिसेण पत्ताणि लिहिज्जति	=	आदमी के द्वारा पत्र लिखे जाते है।
निवेण तुम पुच्छिज्जसि	=	राजा के द्वारा तुम पूछे जाते हो।
तेहि भिच्चो पेसिज्जइ	=	उनके द्वारा नौकर भेजा जाता है।
बालाए चुण्ण पीसिज्जइ	=	बालिका के द्वारा आटा पीसा जाता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

बालएण फलाणि भुजीअति। तुमए किं कज्ज करीअइ। आयरिएण गथाणि लिहिज्जति। तेहि पुत्तेण संह बहू ण पेसिज्जइ। साहुणा सया झाण करिज्जइ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

तुम्हारे द्वारा जल पिया जाता है। उसके द्वारा चित्र देखा जाता है। बालक के द्वारा पुस्तकें पढी जाती है। विद्वान् के द्वारा मैं पूछा जाता हूँ। हम सबके द्वारा साधु नमन किया जाता है। उनके द्वारा तुम भेजे जाते हो। विद्या के द्वारा वह जाना जाता है। साधु द्वारा सयम पाला जाता है। राम के द्वारा सेतु बांधा जाता है। गुरु द्वारा शिष्य ताडित किया जाता है। भ्रमर द्वारा फूल सूघा जाता है।

क्रियाकोश

अइकम्म	=	उलघन करना	आकद	=	रोना-चिल्लाना
अक्ख	=	कहना	आयण्ण	=	सुनना
अणुकप	=	दया करना	अतिकख	=	इच्छा करना
अणुमण्ण	=	अनुमति देना	अवमण्ण	=	तिरस्कार करना
अवरज्झ	=	अपराध करना	अभिलस	=	चाहना

सामान्य क्रिया-प्रयोग

तेरा अह पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	उसके द्वारा मैं देखा गया।
निवेरा अम्हे पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	राजा के द्वारा हम देखे गये।
मए तुम पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	मेरे द्वारा तुम देखे गये।
तुम्हे पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	तुम सब देखे गये।
तुमए सो पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा गया।
साहुरा ते पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	साधु के द्वारा वे सब देखे गये।

उदाहरण वाक्य

मए घडो करीअईअ/ करिज्जीअ	=	मेरे द्वारा घडा बनाया गया।
तेरा पोत्थअ पढीअईअ/पढिज्जीअ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढी गयी।
सासूए बहू तूसीअईअ/तूसिज्जीअ	=	सास के द्वारा बहू सतुष्ट की गयी।
पत्तारिग लिहीअईअ/लिहिज्जीअ	=	पत्र लिखे गये।
तेहि भिच्चो पेसीअईअ/पेसिज्जीअ	=	उनके द्वारा नौकर भेजा गया।

कृदन्त प्रयोग

तेरा अहं दिट्ठो	=	उसके द्वारा मैं देखा गया।
	या	उसने मुझे देखा।
मए घडो कओ	=	मैंने घडा बनाया।
तेरा पोत्थअ पढिअ	=	उसने पुस्तक पढी।
सासूए बहू सतुट्ठा	=	सास ने बहू को सतुष्ट किया।
पुरिसेहि पत्तारिग लिहिआरिग	=	आदमियो ने पत्र लिखे।
तेहि भिच्चो पेसिओ	=	उन्होने नौकर को भेजा।

हिन्दी में अनुवाद करो

पवराजएरा अजरा पुच्छिआ। मए तुज्झ अवराहो रा कओ। लकाहिवेरा दूओ पेसिओ। आयरिएरा सीसा रा सतुट्ठा। मन्तीहि रिगवो भरिगओ। बहूए घरस्स कज्जारिग रा करिज्जीअ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

मेरे द्वारा देव पूजा गया। राजा के द्वारा हम सब पूछे गये। हमारे द्वारा साधु को नमन किया गया। कुलपति द्वारा छात्र ताडित किया गया। बालिका द्वारा फूल सूँघा गया। उनके द्वारा फल खाया गया। तपस्वी द्वारा सयम पाला गया।

तेण अह पासिहिमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाऊँगा।
निवेण अम्हे पासिहामो	=	राजा के द्वारा हम देखे जायेंगे।
मए तुम पासिहिसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाओगे।
सुधिणा तुम्हे पासिहित्था	=	विद्वान् के द्वारा तुम सब देखे जाओगे।
तुमए सो पासिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जायेगा।
साहुणा ते पासिहिति	=	साधु के द्वारा वे देखे जायेंगे।

निर्देश – पाठ ७६ के उदाहरण वाक्यो एव अनुवाद वाक्यो मे भविष्यकाल की सामान्य क्रियाए लगाकर कर्मवाच्य के प्राकृत वाक्य बनाओ।

विधि एव आज्ञा

तुमए अह पासीअमु/पासिज्जमु	=	तुम्हारे द्वारा मै देखा जाऊ।
अम्हे पासीअमो/पासिज्जमो	=	हम सब देखे जाय।
तेण तुम पासीअहि/पासिज्जहि	=	उसके द्वारा तुम देखे जाओ।
निवेण तुम्हे पासीअह/पासिज्जह	=	राजा के द्वारा तुम सब देखे जाओ।
मए सो पासीअउ/पासिज्जउ	=	मेरे द्वारा वह देखा जाय।
सुधिणा ते पासीअतु पासिज्जतु	=	विद्वान् के द्वारा वे सब देखे जाय।

उदाहरण वाक्य

जुवईए साडी कीणीअउ	=	युवति के द्वारा साडी खरीदी जाय।
तेण कदुओ ण खेलीअउ	=	उसके द्वारा गेद न खेली जाय।
सीसेहि सत्थाणि सुणीअतु	=	शिष्यो के द्वारा शास्त्र सुने जाय।
सुधिणो नमिज्जतु	=	विद्वानो को नमन किया जाय।
तुमए अह पुच्छीअमु	=	तुम्हारे द्वारा मैं पूछा जाऊ।

प्राकृत मे अनुवाद करो :

बालिका के द्वारा जल पिया जाय। राजा के द्वारा चित्र देखा जाय। छात्र के द्वारा पुस्तक पढी जाय। आदमी के द्वारा पत्र न लिखा जाय। कुलपति के द्वारा मैं वहाँ भेजा जाऊँ। उनके द्वारा वह ताडित न किया जाय। युवति के द्वारा आटा पीसा जाय।

क्रियाकोश ·

अणुसध	=	खोजना	अवधार	=	निश्चय करना
अत्थम	=	अस्त होना	आसास	=	आश्वासन देना
अब्भत्थ	=	सत्कार करना	उवदस	=	दिखाना
अब्भुट्ठ	=	आदर देना	गरह	=	घृणा करना
अभिणद	=	प्रशसा करना	गुफ	=	गूथना

पाठ ७७

भाववाच्य क्रिया-प्रयोग .

वर्तमानकाल

मए हसीअइ/हसिज्जइ	=	मेरे द्वारा हँसा जाता है ।
अम्हेहि हसीअइ/हसिज्जइ	=	हमारे द्वारा हँसा जाता है ।
तुमए धावीअइ/धाविज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा दौडा जाता है ।
तुम्हेहि धावीअइ/धाविज्जइ	=	तुम सबके द्वारा दौडा जाता है ।
तेण झाईअइ/झाइज्जइ	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाता है ।
तेहि झाईअइ/झाइज्जइ	=	उनके द्वारा ध्यान किया जाता है ।
बालाए णच्चीअइ/णच्चिज्जइ	=	बालिका के द्वारा नाचा जाता है ।
मोरेहि णच्चीअइ/णच्चिज्जइ	=	मोरो के द्वारा नाचा जाता है ।
छत्तेण भणीअइ/भणिज्जइ	=	छात्र के द्वारा पढा जाता है ।
सीसेहि भणीअइ/भणिज्जइ	=	शिष्यो के द्वारा पढा जाता है ।

भूतकाल

मए हसीअईअ/हसिज्जीअ	=	मेरे द्वारा हँसा गया/मैं हँसा ।
मए हसिअ	=	,, ,,
तेण झाईअईअ/झाइज्जीअ	=	उसके द्वारा ध्यान किया गया ।
तेण झाइअ	=	,, ,, /उसने ध्यान किया ।
सीसेहि भणीअईअ/भणिज्जीअ	=	शिष्यो के द्वारा पढा गया ।
सीसेहि भणिअ	=	,, ,, / शिष्यो ने पढा ।

भविष्यकाल

तेण पासिहिइ	=	उसके द्वारा देखा जायेगा ।
अम्हेहि पासिहिइ	=	हम सबके द्वारा देखा जायेगा ।
मए भणिहिइ	=	मेरे द्वारा पढा जायेगा ।
बालाए भणिहिइ	=	बालिका के द्वारा पढा जायेगा ।

विधि एव आज्ञा

मए सुणीअउ/सुणिज्जउ	=	मेरे द्वारा सुना जाय ।
सीसेहि सुणीअउ/सुणिज्जउ	=	शिष्यो के द्वारा सुना जाय ।
तुमए नमीअउ/नमिज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा नमन किया जाय ।
बहूहि नमीअउ/नमिज्जउ	=	बहुओ के द्वारा नमन किया जाय ।

क्रियाकोश

उक्खिव	=	फेकना	रध	=	पकाना
चेत्त	=	ले जाना	लुक्क	=	छिपना
ढुक्क	=	भेंट करना	विअस	=	खिलना
बुड्ड	=	डूबना	निहुण	=	नोचना
मुस	=	चोरी करना	विण्णव	=	निवेदन करना

पाठ ७८

नियम कर्मवाच्य-भाववाच्य

नि० ८१– प्राकृत मे कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एव भाववाच्य के प्रयोग होते है। कर्तृवाच्य मे कर्ता को प्रथमा विभक्ति और कर्म को द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। इसके नियम आप पाठ २० मे सीख चुके है।

कर्मवाच्य .

नि० ८२– कर्मवाच्य के कर्ता मे तृतीया विभक्ति और कर्म मे प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार रहता है।

नि० ८३– मूल क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए उसमे ईअ अथवा इज्ज प्रत्यय लगाया जाता है। उसके बाद वर्तमान, भूतकाल, विधि आज्ञा के प्रत्यय लगाकर क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

मूलक्रिया	वाच्य-प्रत्यय	वर्तमान	भू० का०	विधि आज्ञा
पास + ईअ	पासीअ—	पासीअमि	पासीअईअ	पासीअमु
पास + इज्ज =	पासिज्ज—	पासिज्जमि	पासिज्जीअ	पासिज्जमु

नि० ८४– कर्मवाच्य या भाववाच्य मे भविष्यकाल के प्रयोगो मे ईअ या इज्ज प्रत्यय मूल क्रिया मे नही लगते है। अत सामान्य भविष्यकाल के प्रत्यय लगकर ही क्रियाए प्रयुक्त होती है। यथा— **पासिहिमि पासिहामो** इत्यादि।

नि० ८५– भूतकाल के कर्मवाच्य या भाववाच्य मे भूतकाल के कृदन्तो का भी प्रयोग होता है। इनमे **ईअ** या **इज्ज** प्रत्यय नही लगते। कृदन्तो के प्रयोग कर्मवाच्य मे कर्म के अनुसार होते है। यथा—

तेण छत्तो दिट्ठो	=	उसके द्वारा छात्र को देखा गया।
तेण बाला दिट्ठा	=	उसके द्वारा बालिका को देखा गया।
तेण मित्तं दिट्ठं	=	उसके द्वारा मित्र को देखा गया।

नि० ८६– भाववाच्य के कर्ता मे तृतीया विभक्ति होती है। कर्म नही रहता और क्रिया सभी कालो मे अन्य पुरुष एकवचन मे होती है। जैसे—

तृतीया वि	व का	भू का	भ का	विधि-आज्ञा
अम्हेहि	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	हसिहिइ	हसिज्जउ
मीसेहि	भणीअइ	भणीअईअ	भणिहिइ	भणीअउ
तेण	जाणिज्जइ	जाणिज्जीअ	जाणिहिइ	जाणीअउ
मए	पासीअइ	पासीअईअ	पासिहिइ	पासीअउ

पाठ ७९

कर्मवाच्य कृदन्त प्रयोग

वर्तमान कृदन्त

मए पढीअतो/पढीअमाणो गथो = मेरे द्वारा पढा जाता हुआ ग्रन्थ ।
तुमए पढीअती/पढीअमाणी गाहा = तुम्हारे द्वारा पढी जाती हुई गाथा।
तेण पढीअत/पढीअमाण पोत्थअ = उसके द्वारा पढी जाती हुई पुस्तक ।

भूत कृदन्त

मए पढिओ गथो = मेरे द्वारा पढा हुआ ग्रन्थ ।
तुमए पढिआ गाहा = तुम्हारे द्वारा पढी हुई गाथा ।
तेण पढिअ पोत्थअ = उसके द्वारा पढी हुई पुस्तक ।

भविष्य कृदन्त

रामेण पढिस्समाणो गथो = राम के द्वारा पढा जाने वाला ग्रन्थ ।
बालाए पढिस्समाणी गाहा = बालिका के द्वारा पढी जाने वाली गाथा ।
छत्तेण पढिस्समाण पोत्थअ = छात्र के द्वारा पढी जाने वाली पुस्तक ।

विधि कृदन्त

मए पढणीओ/पढेअव्वो गथो = मेरे द्वारा पढने योग्य ग्रन्थ ।
बालाए पढणीआ/पढेअव्वा गाहा = बालिका के द्वारा पढने योग्य गाथा ।
तेण पढणीअ/पढेअव्व पोत्थअ = उमके द्वारा पढने योग्य पुस्तक ।

उदाहरण वाक्य

मए कहीअमाणा कहा अत्थि = मेरे द्वारा कही जाती हुई कथा है ।
तेण नमिआ बाला भणइ = उसके द्वारा नमन की हुई बालिका पढती है ।
तुमए भुजिस्समाण फल णत्थि = तुम्हारे द्वारा खाये जाने वाला फल नहीं है ।
बालाए मुणेअव्व चरित्त अत्थि = बालिका के द्वारा जानने योग्य चरित्र है ।

अन्य प्रयोग

मए गथो पढीअतो = मेरे द्वारा ग्रन्थ पढा जाता है ।
तुमए गथो पढिओ = तुम्हारे द्वारा ग्रन्थ पढा गया ।
बालाए गथो पढिस्समाणो = बालिका के द्वारा ग्रन्थ पढा जायेगा ।
तेण गथो पढणीओ = उसके द्वारा ग्रन्थ पढा जाना चाहिए ।
जुवईए गाहा पढिआ = युवती के द्वारा गाथा पढी गयी ।
पुरिसेण पत्ताणि लिहिआणि = आदमियो के द्वारा पत्र लिखे गये ।
निवेण धण गिण्हिअ = राजा के द्वारा धन लिया गया ।

वर्तमान कृदन्त

मए हसीअत/हसीअमाण	=	मेरे द्वारा हँसा जाता है।
तुमए धावीअत/धावीअमाण	=	तुम्हारे द्वारा दौडा जाता है।
बालाए णच्चीअत/णच्चीअमाण	=	बालिका के द्वारा नाचा जाता है।
तेण झाईअत/झाईअमाण	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाता है।

भूत कृदन्त

मए हसिअ	=	मैं हँसा/मेरे द्वारा हँसा गया।
तुमए धाविअ	=	तुम दौडे/तुम्हारे द्वारा दौडा गया।
बालाए णच्चिअ	=	बालिका नाची/द्वारा नाचा गया।
तेण झाईअ	=	उसने ध्यान किया।

भविष्य कृदन्त

मए हसिस्समाण	=	मेरे द्वारा हँसा जाने वाला है।
तुमए धाविस्समाण	=	तुम्हारे द्वारा दौडा जाने वाला है।
बालाए णच्चिस्समाण	=	बालिका द्वारा नृत्य किया जाना है।
तेण झाइस्समाण	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाना हे।

विधि कृदन्त

मए हसेअव्व/हसणीअ	=	मेरा द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तुमए धावेअव्व/धावणीअ	=	तुम्हारे द्वारा दौडा जाना चाहिए।
वालाए णच्चेअव्व/णच्चणीअ	=	बालिका के द्वारा नृत्य किया जाना चाहिए।
तेण झाएअव्व/झाणीअ	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाना चाहिए।

हिन्दी में अनुवाद करो

सुधिणा हसीअमाण। पुरिसेहि धावीअत। साहुणा अणुकपीअमाण। जुवईए णच्चीअत। बालाए भणिअ। बहूहि नमिअ। छत्तेहि पढिस्समाण। साहूहि झाइस्समाण। अम्हेहि धावणीअ। जुवईहि णच्चेअव्व। तुम्हेहि ण गच्छेअव्व।

प्राकृत में अनुवाद करो

शिष्य के द्वारा पढा जाता है। वालको के द्वारा दौडा जाता है। उनके द्वारा नमन नही किया जाता है। विद्वानो के द्वारा कहा गया। तपस्वियो के द्वारा तप किया गया। हमारे द्वारा सुना गया। राजा के द्वारा कहा जाने वाला है। तुम्हारे द्वारा नृत्य किया जाना है। उसके द्वारा आज नही हँसा जाना चाहिए। छात्रो के द्वारा ध्यान किया जाना चाहिए।

पाठ ८०

नियम वाच्य कृदन्त-प्रयोग

नियम ८७ – कर्मवाच्य एव भाववाच्य मे सामान्य क्रियाओ के अतिरिक्त विभिन्न कालो के कृदन्तो का प्रयोग भी क्रिया के रूप मे होता है । यथा—

	सा क्रि. प्रयोग		कृदन्त प्रयोग
(व०)	तेण गथो पढीअइ	=	तेण गथो पढीअमाणो ।
(भू०)	मए गथो पढीअईअ	=	मए गथो पढिओ ।
(भ०)	रामेण गथो पढिहिइ	=	रामेण गथो पढिस्समाणो ।
(वि०)	तुमए गथो पढीअउ	=	तुमए गथो पढणीओ ।

नि० ८८— कर्मणि कृदन्त प्रयोगो मे सामान्य क्रिया मे वाच्य प्रत्यय **ईअ** या **इज्ज** जोडकर व० कृदन्त प्रत्यय **अत** या **माण** जोडे जाते हैं । यथा—

पढ + ईअ = पढीअ + अत/माण = **पढीअत, पढीअमाण**

पढ + इज्ज = पढिज्ज + अत/माण = **पढिज्जत, पढिज्जमाण**

नि० ८९— कर्मवाच्य मे कृदन्तो का प्रयोग कर्म के अनुसार पु०, स्त्री० एव नपु० रूपो मे होता है । यथा—

पढीअतो (पु०), **पढीअती** (स्त्री०), **पढीअत** (नपु०)

नि० ९०— भू० के कृदन्तो मे वाच्य का कोई प्रत्यय नही लगता है । वे कर्म के लिंग के अनुसार प्रयुक्त होते है । यथा—

पढिओ (पु०), **पढिआ** (स्त्री०), **पढिअ** (नपु०)

नि० ९१— निकट भविष्य मे होने वाली क्रिया को सूचित करने के लिए भविष्य कृदन्तो का प्रयोग किया जाता है । मूल धातु मे कर्मवाच्य प्रयोग के लिए **इस्समाण** प्रत्यय जोडा जाता है । यथा—

पढ + इस्समाण = **पढिस्समाण** ।

नि० ९२— विधि कृदन्तो का प्रयोग वाच्य मे ही होता है । अत इनमे वाच्य का कोई प्रत्यय नही लगाया जाता । यथा—

पढणीओ, पढणीआ, पढणीअ ।

नि० ९३— भाववाच्य मे सभी कालो के कृदन्त कर्म न रहने से नपु० लिंग एकवचन मे ही प्रयुक्त होते है । यथा—

व०– **हसीअत**, भू०– **हसिअ**, भवि०– **हसिस्समाण**, वि०– **हसेअव्व** ।

कर्मणि-प्रयोग चार्ट

कर्मवाच्य

मूलक्रिया	प्रत्यय	वर्तमान	भूत०	भविष्य०	विधि / आज्ञा	व० कृ०	भू० कृ०	भ० कृ०
पास	ईअ	पासीअइ	पासीअईअ	पासिहिइ	पासीअउ	पासीअमाणो	पासिओ	पासिस्समाणो
,,	इज्ज	पासिज्जइ	पासिज्जीअ	,,	पासिज्जउ	पासिज्जमाणो	,,	,,

निर्देश — कर्मवाच्य के प्रत्यय ईअ/इज्ज क्रिया मे लगाने के बाद क्रिया के रूप कर्म के अनुसार बनते है। विभिन्न क्रियाओ मे ये प्रत्यय लगाकर कर्मवाच्य की क्रिया बनाने का अभ्यास करिए।

भाववाच्य

मूलक्रिया	प्रत्यय	वर्तमान	भूत०	भविष्य०	विधि / आज्ञा	व० कृ०	भूत कृ०	भ० कृ०
हस	ईअ	हसीअइ	हसीअईअ	हसिहिइ	हसीअउ	हसीअमाण	हसिअ	हसिस्समाण
,,	इज्ज	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	,,	हसिज्जउ	हसिज्जमाण	,,	,,

निर्देश — भाववाच्य की क्रिया सभी कालो मे अन्य पुरुष एकवचन मे ही प्रयुक्त होती है। तथा भाववाच्य कृदन्त नपुसकलिंग एकवचन मे ही प्रयुक्त होते है।

प्रेरणार्थक क्रिया के प्रयोग **१ प्रेरक सामान्य क्रियाएं**

क्रियाए

पिवाव	=	पिलाना	सीखाव	=	सिखाना
खेलाव	=	खिलाना	जग्गाव	=	जगाना
हसाव	=	हँसाना	कराव	=	कराना
लिहाव	=	लिखाना	उट्ठाव	=	उठाना
णच्चाव	=	नचाना	सयाव	=	सुलाना

वर्तमानकाल

अह सीस पढावेमि	=	मैं शिष्य को पढाता हूँ।
अम्हे बालाओ पढावेमो	=	हम बालिकाओ को पढाते है।
तुम त पढावेसि	=	तुम उसको पढाते हो।
तुम्हे छत्ता पढावेइत्था	=	तुम सब छात्रो को पढाते हो।
सो मम पढावेइ	=	वह मुझे पढाता है।
ते जुवइओ पढावेंति	=	वे युवतियो को पढाते है।

भूतकाल

अह सीस पढावीअ	=	मैंने शिष्य को पढाया।
अम्हे बालाओ पढावीअ	=	हमने बालिकाओ को पढाया।
सो मम पढावीअ	=	उसने मुझे पढाया।

भविष्यकाल

अह सीस पढाविहिमि	=	मैं शिष्य को पढाऊँगा।
अम्हे बालाओ पढाविहामो	=	हम बालिकाओ को पढायेंगे।
तुम त पढाविहिसि	=	तुम उसे पढाओगे।

इच्छा/आज्ञा

अह सोस पढावमु	=	मैं शिष्य को पढाऊँ।
तुम त पढावहि	=	तुम उसे पढाओ।
सो मम पढावउ	=	वह मुझे पढाये।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मै उसे जल पिलाता हूँ। तुम मुझे पत्र लिखाते हो। उसने शिष्य को क्या सिखाया ? तुमने यहाँ बालिका को नचाया। गुरु ने छात्र को पढाया। विद्वान् साधु को उठाते है। वह बच्चे को सुलायेगी। सास बहू को जगायेगी। तुम उसे न हँसाओ। राजा नौकर से कार्य कराये।

सम्बन्ध कृदन्त

पिवाविऊण	= पिलाकर		लिहाविऊण	= लिखाकर
खेलाविऊण	= जगाकर		जग्गाविऊण	= जगाकर
हसाविऊण	= हँसाकर		पढाविऊण	= पढाकर

हेत्वर्थ कृदन्त

पिवाविउ	= पिलाने के लिए		लिहाविउ	= लिखाने के लिए
खेलाविउ	= खिलाने के लिए		जग्गाविउ	= जगाने के लिए
हसाविउ	= हँसाने के लिए		पढाविउ	= पढाने के लिए

विधि कृदन्त

पिवावणीअ	= पिलाने योग्य		लिहावणीअ	= लिखाने योग्य
खेलावणीअ	= खिलाने योग्य		जग्गावणीअ	= जगाने योग्य
हसावणीअ	= हँसाने योग्य		पढावणीअ	= पढाने योग्य
हसावअव्व	= हँसाने योग्य		पढावअव्व	= पढाने योग्य

वर्त० कृदन्त

पिवावमाणो	= पिलाता हुआ		लिहावतो	= लिखाता हुआ
खेलावमाणो	= खिलाता हुआ		जग्गावतो	= जगाता हुआ
हसावमाणो	= हँसाता हुआ		पढावतो	= पढाता हुआ

भूत कृदन्त

पिवाविओ	= पिलाया हुआ		लिहाविओ	= लिखाया हुआ
खेलाविओ	= खिलाया हुआ		जग्गाविओ	= जगाया हुआ
हसाविओ	= हँसाया हुआ		पढाविओ	= पढाया हुआ

भविष्य कृदन्त

पिवाविस्सतो	= पिलाया जाने वाला		लिहाविस्सतो	= लिखाया जाने वाला
खेलाविस्सतो	= खिलाया जाने वाला		जग्गाविस्सतो	= जगाया जाने वाला
हसाविस्सतो	= हँसाया जाने वाला		पढाविस्सतो	= पढाया जाने वाला

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह दूध पिलाकर जाये। मैं उसे पढाने के लिए आऊँगा। यह दूध पिलाने योग्य नही है। वह ग्रन्थ लिखाने योग्य है। गुरु हँसाता हुआ पढाता है। बालिका जगाती हुई हँसती है। उनके द्वारा लिखाया गया पत्र लाओ। मेरे द्वारा पढायी गयी गाथा कहो। पिलाया जाने वाला जल कहाँ है?

पाठ ८२

३ प्रेरक वाच्य-प्रयोग :

(क) प्रेरक कर्मवाच्य सामान्य क्रियाए

पिवावीअ	=	पिलाया जाना	सीखाविज्ज	=	सिखाया जाना
खेलावीअ	=	खिलाया जाना	जग्गाविज्ज	=	जगाया जाना
हसावीअ	=	हँसाया जाना	कराविज्ज	=	कराया जाना
लिहावीअ	=	लिखाया जाना	उट्ठाविज्ज	=	उठाया जाना
णच्चावीअ	=	नचाया जाना	सयाविज्ज	=	सुलाया जाना
पढावीअ	=	पढाया जाना	पासाविज्ज	=	दिखाया जाना

वर्तमानकाल

जुवईए बालओ पासाविज्जइ = युवति के द्वारा बालक दिखाया जाता हे ।
मए घडो कराविज्जइ = मेरे द्वारा घडा बनवाया जाता है ।
तेण बाला सीखाविज्जइ = उसके द्वारा बालिका सिखायी जाती है ।
गुरुणा पोत्थअ पढावीअइ = गुरु के द्वारा पुस्तक पढायी जाती है ।

भूतकाल

मए बालओ पासाविज्जीअ = मेरे द्वारा बालिका दिखायी गयी है ।
तेण घडो कराविज्जीअ = उसके द्वारा घडा बनवाया गया है ।
जुवईए बाला णच्चावीअईअ = युवति के द्वारा बालिका नचायी गयी है ।

भविष्यकाल

तेण अह पासाविहिमि = उसके द्वारा मै दिखाया जाऊँगा ।
मए तुम णच्चाविहिसि = मेरे द्वारा तुम नचाये जाओगे ।
गुरुणा पोत्थअ पढाविहिइ = गुरु के द्वारा पुस्तक पढायी जायेगी ।

विधि / आज्ञा

तेण पत्त लिहावीअउ = उसके द्वारा पत्र लिखाया जाय ।
तुमए कदुओ खेलावीअउ = तुम्हारे द्वारा गेद खिलायी जाय ।
छत्तेहि सुधिणो नमावीअतु = छात्रो के द्वारा विद्वानो को नमन कराया जाय ।
तेण अह ण उठाविज्जमु = उसके द्वारा मुझे न उठाया जाय ।

प्राकृत में अनुवाद करो

उसके द्वारा बालिका को जल पिलाया जाय । तुम्हारे द्वारा शिष्य को सिखाया जाय । तुम्हारे द्वारा वह उठाया जाता है । छात्र के द्वारा शास्त्र नही पढा जाता है । युवति के द्वारा बालको को जल पिलाया गया । मेरे द्वारा बालिकाओ को गीत सिखाया गया । माता के द्वारा मैं जगाया जाऊँगा । पिता के द्वारा घडा बनाया जायेगा । हमारे द्वारा चित्र दिखाये जायेंगे ।

(ख) प्रेरक कर्मवाच्य कृदन्त क्रियाएं :

वर्तमान कृदन्त

पढावीअतो/पढावीअमाणो गथो	=	पढाया जाता हुआ ग्रन्थ ।
पढावीअती/पढावीअमाणी गाहा	=	पढायी जाती हुई गाथा ।
पढावीअतं/पढावीअमाण पोत्थअ	=	पढायी जाती हुई पुस्तक ।

भूत कृदन्त

पढाविओ गथो	=	पढाया गया ग्रन्थ ।
पढाविआ गाहा	=	पढायी गयी गाथा ।
पढाविअ पोत्थअ	=	पढायी गयी पुस्तक ।

भविष्य कृदन्त

पढाविस्समाणो गथो	=	पढाया जाने वाला ग्रन्थ ।
पढाविस्समाणी गाहा	=	पढायी जाने वाली गाथा ।
पढाविस्समाण पोत्थअ	=	पढायी जाने वाली पुस्तक ।

विधि कृदन्त

पढावणीओ गथो	=	पढाने योग्य ग्रन्थ ।
पढावणीआ गाहा	=	पढाने योग्य गाथा ।
पढावणीअ पोत्थअ	=	पढाने योग्य पुस्तक ।

प्रयोग्य वाक्य .

मए. गथो पढावीअमाणो	=	मेरे द्वारा ग्रन्थ पढाया जाता है ।
तेण गाहा पढाविआ	=	उसके द्वारा गाथा पढायी गयी ।
तुमए पोत्थअ पढाविस्समाण	=	तुम्हारे द्वारा पुस्तक पढायी जायगी ।
गुरुणा गथो पढावणीओ	=	गुरु के द्वारा ग्रन्थ पढाया जाना चाहिए ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

माता के द्वारा वालक जगाया जाता है। गुरु के द्वारा शिष्य पढाये जाते है। उनके द्वारा गेद खिलायी गयी। साधु के द्वारा जल पिलाया गया। राजा के द्वारा पत्र लिखाया गया। मेरे द्वारा शास्त्र पढाया जायेगा। तुम्हारे द्वारा कथा सुनायी जायेगी। उनके द्वारा तुमको नमन किया जायेगा। तुम सबके द्वारा साधु को पानी पिलाया जाना चाहिए। गुरु के द्वारा छात्र को लिखाया जाना चाहिए। तुम्हारे द्वारा कार्य किया जाना चाहिए।

पाठ ८३

(ग) प्रेरक भाववाच्य सामान्य क्रियाएं

वर्तमानकाल

मएहसावीग्रइ/हसाविज्जइ	=	मेरे द्वारा हँसाया जाता है।
ग्रम्हेहि हसावीग्रइ/हसाविज्जइ	=	हमारे द्वारा हँसाया जाता है।
तुमए धावावीग्रइ/धावाविज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा दौडाया जाता है।
तेरा झावीग्रइ/झाविज्जइ	=	उसके द्वारा ध्यान कराया जाता है।
बालाए राच्चावीग्रइ/राच्चाविज्जइ	=	बालिका के द्वारा नचाया जाता है।
छत्तेण भणावीग्रइ/भरााविज्जइ	=	छात्र के द्वारा पढाया जाता है।

भूतकाल

मए हसावीग्रईग्र/हसाविज्जीग्र	=	मेरे द्वारा हँसाया गया।
तेण धावावीग्रईग्र/धावाविज्जीग्र	=	उसके द्वारा दौडाया गया।
तुमए राच्चावीग्रईग्र/राच्चाविज्जीग्र	=	तुम्हारे द्वारा नचाया गया।
छत्तेरा भणावीग्रईग्र/भणाविज्जीग्र	=	छात्र के द्वारा पढाया गया।

भविष्यकाल

तेरा हसाविहिइ/हसाविज्जिहिइ	=	उसके द्वारा हँसाया जायेगा।
ग्रम्हेहि पढाविहिइ/पढाविज्जिहिइ	=	हमारे द्वारा पढाया जायेगा।
तुमए धावाविहिइ/धावाविज्जिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा दौडाया जायेगा।

विधि एव ग्राज्ञा

तेहि सुरावीग्रउ/सुराविज्जउ	=	उनके द्वारा सुनाया जाय।
तेरा पढावीग्रउ/पढाविज्जउ	=	उसके द्वारा पढाया जाय।
तुमए नमावीग्रइ/नमाविज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा नमन कराया जाय।

क्रियाकोश

मोह	=	मोहित होना	कूद	=	कूदना
लुब्भ	=	लोभ करना	चव्व	=	चबाना
सगह	=	सग्रह करना	बुक्क	=	भौंकना
सलह	=	प्रशसा करना	थक्क	=	थकना
सवर	=	रोकना	कडूग्र	=	खुजाना
सीग्र	=	खेद करना	लुरा	=	काटना
हर	=	छीनना	वरिस	=	बरसना

(ख) कृदन्त क्रियाए :

वर्तमानकृदन्त

मए हसावीअत/हसावीअमाण	=	मेरे द्वारा हँसाया जाता है/हुआ
तुमए धावावीअत/धावावीअमाण	=	तुम्हारे द्वारा दौडाया जाता है/हुआ
तेण पढावीअत/पढावीअमाण	=	उसके द्वारा पढाया जाता है/हुआ

भूतकृदन्त

मए हसाविअ/हसाविज्ज	=	मेरे द्वारा हँसाया गया, मैंने हँसाया ।
तुमए धाविअ/धावाविज्ज	=	तुमने दौडाया/तुम्हारे द्वारा दौडाया गया ।
तेण पढाविअ/पढाविज्ज	=	उसके द्वारा पढाया गया/उसने पढा ।

भविष्य कृदन्त

मए हसाविस्समाण	=	मेरे द्वारा हँसाया जायेगा ।
तुमए धाविस्समाण	=	तुम्हारे द्वारा दौडाया जायेगा ।
तेण पढाविस्समाण	=	उसके द्वारा पढाया जायेगा ।

विधिकृदन्त

मए हसावेअव्व/हसावणीअ	=	मेरे द्वारा हँसाया जाना चाहिए ।
तुमए धावावेअव्व/ धावावणीअ	=	तुम्हारे द्वारा दौडाया जाना चाहिए ।
तेण पढावेअव्व/पढावणीअ	=	उसके द्वारा पढाया जाना चाहिए ।

हिन्दी मे अनुवाद करो

पुरिसेण सिक्खावीअत । सुधिणा दरिसावीअमाण । निवेण ताडाविअ । तेण दिक्खाविज्ज । अम्हे पिवाविस्समाण । तुमए सुणाविस्समाण । तेण पेसावणीअं । मए लिहावेअव्व ।

प्राकृत में अनुवाद करो

कवि द्वारा हँसाया जाता है । गुरु के द्वारा पढाया जाता है । राजा के द्वारा दौडाया जाता है । मेरे द्वारा सिखाया गया । साधु के द्वारा दिखाया गया । बालिका द्वारा भेजा जायेगा । नौकर द्वारा कराया जाना चाहिए । उसके द्वारा नही हँसाया जाना चाहिए । तुम्हारे द्वारा क्षमा कराया जाना चाहिए । युवति के द्वारा नृत्य कराया जाना चाहिए ।

पाठ ८४

४. प्रेरणार्थक क्रिया के अन्य प्रयोग :

(क) कर्तृ वाच्य

सामान्य क्रियाएँ

अह सीसेण पढावेमि	=	मैं शिष्य से पढवाता हूँ ।
तुम मए पढावेसि	=	तुम मुझसे पढवाते हो ।
अम्हे तुमए पढावीअ	=	हमने तुमसे पढवाया ।
ते वालाहि पढाविहिति	=	वे बालिकाओ से पढवायेंगे ।
सो तेण पढावउ	=	वह उससे पढवाये ।

कृदन्त क्रियाएँ

तेण पढाविऊण	=	उससे पढवाकर ।
मए लिहाविऊण	=	मुझसे लिखवाकर ।
तुमए पढाविउ	=	तुमसे पढवाने के लिए ।
छत्तेण लिहाविउ	=	छात्र से लिखवाने के लिए ।
सीसेण पढावणीअ	=	शिष्य से पढवाने योग्य ।
बालाए लिहावतो	=	बालिका से लिखवाता हुआ ।
तेण पढावमाणो	=	उससे पढवाता हुआ ।
मए लिहाविओ	=	मुझसे लिखवाया हुआ ।
तुमए पढाविस्सतो	=	तुमसे पढवाया जाने वाला ।

(ख) कर्म एव भाव वाच्य

मए छत्तेण पोत्थअ पढावीअइ	=	मेरे द्वारा छात्र से पुस्तक पढवायी जाती है ।
निवेण तेण घडो कराविज्जीअ	=	राजा के द्वारा उससे घडा बनवाया गया ।
गुरुणा बालाए णच्चाविहिइ	=	गुरु के द्वारा बालिका से नचवाया जायेगा ।
तुमए तेण पढाविज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा उससे पढवाया जाय ।

कृदन्त प्रयोग

तेण पढावीअतो गथो	=	उससे पढवाया जाता हुआ ग्रन्थ ।
मए लिहाविअ पत्त	=	मुझसे लिखवाया गया पत्र ।
तेण पढाविस्समाणी गाहा	=	उससे पढवायी जाने वाली गाथा ।
छत्तेण लिहावणीअ पोत्थअ	=	छात्र से लिखवाने योग्य पुस्तक ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

राजा नौकर से कार्य करवाता है । गुरु शिष्य से लिखवाता है । युवति बालिका से नृत्य करवाती है । तुमने उससे पत्र लिखवाकर भेजा । पुत्र पिता से पुस्तक खरीदवाने के लिए रोता है । यह गाथा शिष्य से पढवाने योग्य नही है । यह पत्र उसके द्वारा लिखवाया हुआ है ।

पाठ ८५

नियम प्रेरणार्थक क्रिया-प्रयोग

नि० ९४ प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग तब होता है जब किसी भी क्रिया को करने मे कर्ता स्वतन्त्र नही होता है। क्रिया करने के लिए (i) कर्ता दूसरे को प्रेरणा देता है अथवा (ii) स्वय दूसरे के लिए वह क्रिया करता है। यथा—

(i) अह सीसेण पढावमि = मैं शिष्य से पढवाता हूँ।

(ii) अह सीस पढावमि = मैं शिष्य को पढाता हूँ।

इन दोनो वाक्यो मे पढाने की क्रिया मैं अह (मैं) की प्रेरणा है। अत अह के साथ सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले पढामि क्रिया रूप मे प्रेरणार्थक आव प्रत्यय जुड जाने से पढ+आव+मि=पढावमि रूप बन जाता है।

नि० ९५ प्राकृत मे प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के लिए मूल क्रिया मे आव प्रत्यय जोडने के बाद काल और पुरुष-बोधक प्रत्यय जोडे जाते है। जैसे—

मू० क्रि०		प्रे० प्र०			उ० पु० ए० व०		प्रेरणार्थक क्रियारूप
पढ	+	आव	——		+ मि	=	पढावमि (वर्त०)
पढ	+	आव	+	ईअ	+ —	=	पढावीअ (भूत०)
पढ	+	आव	+	इहि	+ मि	=	पढाविहिमि (भवि०)
पढ	+	आव	——		+ मु	=	पढावमु (इच्छा/आज्ञा)

नि० ९६ प्रेरणार्थक क्रिया के सामान्य प्रयोगो मे जिससे वह क्रिया करायी जाती है उस कर्ता मे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे— अह सीसेण पढावमि। (देखे, पाठ ८४) और जिसके लिए वह क्रिया की जाती है उस कर्ता मे द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे— अह सीस पढावमि।

नि० ९७ प्रेरणार्थक कृदन्त रूपो मे मूल क्रिया मे आव प्रत्यय जोडने के बाद विभिन्न कृदन्तो के प्रत्यय जोडे जाते है।
जैसे—

स० कृ०	—	पढ + आव + इ + ऊण	= पढाविऊण
हे० कृ०	—	पढ + आ + इ + उ	= पढाविउ
वि० कृ०	—	पढ + आव + अणीअ	= पढावणीअ
"		" " + ए + अव्व	= पढावेअव्व

व० कृ० — पढ + आव + माण = पढावमाण
" " " अत = पढावत
भू० कृ० — पढ + आव + इ + अ = पढाविअ
भ० कृ० — पढ + आव + इस्सत = पढाविस्सत

निर्देश — इन सभी प्रेरक कृदन्तरूपों के पु०, स्त्री० एव नपु० रूप बनाकर विशेषण जैसे प्रयुक्त किये जा सकते हैं। इनके प्रयोग एव नियम आप कृदन्त विशेषण पाठो मे सीख चुके हैं। यथा—

पढावणीआ गाहा = पढवाने योग्य गाथा। (स्त्री० वि० कृ०)
पढावतो पुरिसो = पढाता हुआ पुरुष। (पु० व० कृ०)
पढाविअ पोत्थअ = पढवायी हुई पुस्तक। (नपु० भू० कृ०)
पढाविस्सतो गयो = पढाया जाने वाला ग्रन्थ (पु० भवि० कृ०)

नि० ९८ प्रेरक कर्म वाच्य क्रियाए बनाने के लिए मूल क्रिया मे आवि प्रत्यय जोडकर वाच्य के प्रत्यय जोडे जाते हैं। उसके बाद विभिन्न कालो के और पुरुष-बोधक प्रत्यय जोडे जाते है जैसे—

मू० क्रि०		प्रे० प्र०		वाच्य प्र०		पु० बो० प्र०		प्रेरकवाच्यरूप
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	इ	=	पढावीअइ (व०का०)
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	ईअ	=	पढाविज्जीअ (भू०का०)
पढ	+	आवि		————	+	हिइ	=	पढाविहिइ (भ०का०)
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	उ	=	पढावीअउ (विधि)

निर्देश — वाच्य क्रियाओ मे भविष्यकाल मे वाच्य प्रत्यय **ईअ/इज्ज** नही जुडते है। (देख नि० ८४) अत पढाविहिइ मे इनका प्रयोग नही है।

नि० ९९ (क) प्रेरणार्थक कर्म वाच्य कृदन्तो मे वर्तमान कृदन्त मे वाच्य प्रत्यय **ईअ** जुडता है तथा भविष्य कृदन्त मे **इस्समाण** प्रत्यय जुडता है। यथा—

व०कृ० — पढ + आव + **ईअ** + माण = **पढावीअमाणो** (पु०)
भ०कृ० — पढ + आव ———+ **इस्समाण**=**पढाविस्समाणो** (पु०)

(ख) अन्य प्रेरणार्थक कर्म वाच्य कृदन्त सामान्य प्रेरक कृदन्तो की भाति बनते है (देखें, नि० ९७)।

नि० १०० –(क) प्रेरक भाववाच्य सामान्य क्रियाए प्रेरक कर्मवाच्य क्रियाओ की तरह ही बनती हैं (देखे, नि० ९८)। ये क्रियाए अन्य पुरुष के एकवचन मे ही प्रयुक्त होती हैं।

(ख) प्रेरक भाववाच्य कृदन्त प्रेरक कर्मवाच्य कृदन्तो के समान ही बनते है (देखें, नि० ९९)। ये कृदन्त नपु० मे ही प्रयुक्त होते है।

प्रेरणार्थक क्रिया चार्ट

क्रिया प्रयोग

	मू० क्रि०	प्रत्यय	व० का०	भू० का०	भ० का०	वि० आ०
सामान्य क्रिया	पढ	आव	पढावइ	पढावीअ	पढाविहिइ	पढावउ
कर्मवाच्य	पढ	आव	पढावीअइ	पढावीअईअ	,,	पढावीअउ
भाववाच्य	हस	आव	हसावीअइ	हसावीअईअ	,,	हसावीअउ

कृदन्त प्रयोग

	मू० कि०	प्रत्यय	व० कृ०	भू० कृ०	भ० कृ०	वि० कृ०	स० कृ०	हे० कृ०
सामान्य कृदन्त	पढ	आव	पढावमाणो पढावतो	पढाविओ	पढाविस्सतो	पढावणीअ/ पढावेअव्व	पढाविऊण	पढाविउ
कर्मवाच्य	पढ	आव	पढावीअमाण पढावीअतो	,,	पढाविस्समाणो	,,	,,	,,
भाववाच्य	हस	आव	हसावीअमाण हसावीअत	हसाविअ	हसाविस्समाण	हसावणीअ,' हसावेअव्व	हसाविऊण	हमाविउ

पाठ ८६

क्रियातिपत्ति के प्रयोग

तुम झाणेण पढेज्जा अण्णहा सहल ण होज्जा।	=	तुम ध्यान से पढो अन्यथा सफल नही होओगे।
जइ अह कम्म ण करेज्जा सा धण ण लभेज्जा।	=	यदि मैं कर्म नही करूँ तो धन नही मिलेगा।
जइ समयम्मि वेज्जो ण आगच्छेज्जा ता णिवो अवस्स मरेज्जा।	=	यदि समय पर वैद्य नही आता तो राजा अवश्य मर जाता।
जया दीवो होज्जा तया अंधयारो नस्सेज्जा।	=	जब दीपक होता है तब अंधकार नष्ट हो जाता है।
आयासे जया विज्जुला चमक्केज्जा तया मेहा वरसेज्जा	=	आकाश मे जब विजली चमकती है तब बादल बरसते है।
जइ मग्गमि पयासो होन्तो ता अम्हे खड्डुम्मि ण पडन्तो।	=	यदि मार्ग मे प्रकाश होता तो हम खड्डे मे न गिरते।

	एकवचन				बहुवचन			
उ० पु०–	हसेज्ज,	हसेज्जा,	हसन्तो,	हसमाणो	हसेज्ज,	हसेज्जा,	हसन्तो,	हसमाणो
म० पु०	"	"	"	"	"	"	"	"
अ० पु०	"	"	"	"	"	"	"	"

पढेज्ज,	पढेज्जा,	पढन्तो,	पढमाणो,	पढेज्ज,	पढेज्जा	पढन्तो,	पढमाणो
करेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
गच्छेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
भणेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
नमेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
जाणेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
होज्ज	होज्जा,	होन्तो,	होमाणो,	होज्ज,	होज्जा,	होन्तो,	होमाणो
णेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
झाज्ज	——	——	——	——	——	——	——

प्राकृत मे अनुवाद करो

यदि तुम वहां जाते तो सब जान जाते। यदि हम पहले आ जाते तो अवश्य उनको देखते। यदि मेरे पास धन होता तो मैं विदेश यात्रा करता। रावण यदि शील की रक्षा करता तो राम उसकी रक्षा करते। यदि वहा तालाब न होता तो गाव जल जाता।

नि० १०१ – क्रियातिपत्ति का प्रयोग प्राय तब होता है जब पूर्व वाक्य मे कोई कारण हो और दूसरे वाक्य मे उसका फल ।

नि० १०२ – क्रियातिपत्ति के तीनो पुरुषो, दोनो वचनो और सभी कालो मे क्रिया का एक रूप प्रयुक्त होता है । क्रिया मे ज्ज, ज्जा, न्त एव माण प्रत्यय विकल्प से जुडते है । जैसे—

पढ + ए + ज्ज = पढेज्ज, पढ + ए + ज्जा = पढेज्जा
पढ + न्त = पढन्तो (पु०) पढ + माण = पढमाणो (पु०)
हो + ज्ज = होज्ज हो + ज्जा = होज्जा
हो + न्त = होन्तो हो + माण = होमाणो

निर्देश – जिन क्रियाओ को आपने सीखा है उनके क्रियातिपत्ति रूप बनाइए और उनके वाक्यो मे प्रयोग कीजिए ।

हिन्दी मे अनुवाद करो

तुमए ण झाइअ । तुम त लिहाविहिसि । सो मम ण जग्गावउ । जुवईए बाला सयाविज्जइ । पुरिसेण चित्त पासावीअइ । गुरुणा गाहा ण लिहाविआ । अम्हेहि पत्त लिहाविज्जइ । तेण तत्थ पढावीअउ । साहू तेण गथ पढाविऊण सुणइ । जया णाण होज्जा तया अण्णाण नस्सेज्जा ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हमारे द्वारा नही सुना गया । शिष्य साधु को जगाता है । स्वामी नौकर को सिखायेगा । यह पुस्तक पढने योग्य नही है । तुम्हारे द्वारा गीत लिखाया जायेगा । विद्वान् के द्वारा ग्रन्थ पढाया जाना चाहिए । युवती छात्र से पत्र लिखवाती है । यदि मैं नही पढूंगा तो ज्ञान नही मिलेगा ।

पाठ ८७

संधि-प्रयोग

निर्देश – प्राकृत मे सधि का प्रयोग प्राय वैकल्पिक है, अनिवार्य नही। प्राकृत साहित्य मे सधि के कई प्रयोग देखने को मिलते हैं। प्राकृत-वैयाकरणो ने सधि के कुछ नियम भी बतलाये है। प्रारम्भिक जानकारी के लिए कुछ प्रमुख नियम एव उनके उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है।

१ स्वर-सधि

प्रथम शब्द के अन्तिम स्वर एव द्वितीय शब्द के पहले स्वर मिल जाने पर शब्द मे जो परिवर्तन होता है उसे स्वर-सधि कहते है।

प्राकृत मे स्वर-सधि के प्राय निम्न प्रयोग देखे जाते हैं –

समान स्वर

नियम		उदाहरण				
(१) अ + अ = आ	यथा–	जीव	+	अजीव	=	जीवाजीव
		णर	+	अहिव	=	णराहिव
		धम्म	+	अधम्म	=	धम्माधम्म
(२) इ + इ, ई + इ = ई	यथा–	मुणि	+	ईसर	=	मुणीसर
		मुणि	+	इद	=	मुणिंद
		रयणी	+	ईस	=	रयणीस
(३) उ + उ, ऊ + उ = ऊ	यथा–	बहु	+	उअय	=	बहूअयं
		भाणु	+	उवज्झाय	=	भाणूवज्झाय

असमान स्वर

नियम		उदाहरण				
(४) अ + इ अ + ई = ए	यथा–	ण	+	इच्छइ	=	णेच्छइ
		दिण	+	ईस	=	दिणेस
		महा	+	इसि	=	महेसि
		राअ	+	इसि	=	राएसि
(५) अ + आ, आ + अ = आ	यथा–	गीअ	+	आइ	=	गीआइ
		कला	+	अहिवइ	=	कलाहिवइ
(६) अ + उ, अ + ऊ = ओ	यथा–	तस्स	+	उवरि	=	तस्सोवरि
		समण	+	उवासग	=	समणोपासग
		पाअ	+	ऊण	=	पाओण

सयुक्त-व्यजन के पूर्व स्वर

नियम		उदाहरण				
(७) अ + इ = इ	यथा–	गअ	+	इद	=	गइद
		णर	+	इद	=	णरिंद
अ + उ = उ	यथा–	णील	+	उप्पल	=	णीलुप्पल
		रयण	+	उज्जल	=	रयणुज्जल

दीर्घ स्वर के पूर्व स्वर का लोप

(८) अ + ई = ई — यथा– तिअस + ईस = तिअसीस
राअ + ईसर = राईसर

आ + ऊ = ऊ — यथा– महा + ऊसव = महूसव
एग + ऊण = एगूण

अ + ए = ए — यथा– गाम + एणी = गामेणी
इह + एव = इहेव
तहा + एव – तहेव

अ+ओ, आ+ओ=ओ — यथा– जल + ओह = जलोह
महा + ओसहि = महोसहि

अव्यय के पूर्व स्वर का लोप

(९) अपि का अ लोप — यथा– केण + अपि = केण वि
को + अपि = को वि
मरण + अपि = मरण पि
त + अपि = त पि

इति की इ लोप — यथा– तहा + इति = तहत्ति
दीसइ + इति = दीसइत्ति
पढम + इति = पढमत्ति
ज + इति = जत्ति

इव की इ लोप — यथा– चन्दो + इव = चण्दो व्व
गेह + इव = गेह व
जइ + इमा = जइमा

२ प्रकृतिभाव संधि

(१०) क्रियापद मे यथास्थिति— होइ + इह = होइ इह
गच्छइ + इह = गच्छइ इह

व्यजन लोप पर यथास्थिति— निसा + अर = निसाअर
गध + उडी = गधउडी

स्वर के वाद यथास्थिति— एगे + आया = एगे आया
अहो + अच्छरिय = अहो अच्छरिय

३ व्यजन सधि

(११) म् का अनुस्वार — यथा– जलम् = जलं
गिरिम् = गिरिं

विकल्प से मेल — यथा– किम् + इह = किमिह

व्यजन का अनुस्वार — यथा– यत् = ज, सम्यक् = सम्मं

विकल्प से मेल — यथा– यद् + अस्ति = यदत्थि
पुनर् + अपि = पुणरवि
निर् + अन्तर = निरन्तर

पाठ ८८

समास

निर्देश—थोडे शब्दो मे अधिक अर्थ बतलाने वाली प्रक्रिया को समास कहते है। समास के प्रयोग से वाक्य-रचना मे सौन्दर्य आ जाता है। प्राकृत मे सरल समासो का प्रयोग अधिक हुआ है। प्राकृत वैयाकरणो ने समास के लिए कोई नियम नही बनाये है। अत प्रयोग के अनुसार प्राकृत के समासो को समझना चाहिए। समास के छह भेद निम्न प्रकार है।

१ अव्ययीभाव समास

जिसमे पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता हो तथा अव्ययो के साथ जिसका प्रयोग हो वह अव्ययीभाव समास है। यथा—

उवगुरु = गुरुणो समीव (गुरु के पास)।
अगुभोयण = भोयणस्स पच्छा (भोजन के बाद)।
पइदिण = दिण दिण पइ (दिन के बाद दिन)।
अणुरुव = रूवस्स जोग्ग (रूप के समान)।

२. तत्पुरुष समास

जिसमे उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है तथा पूर्वपद से विभक्तियो का लोप होता है उसे तत्पुरुप समास कहते है। यथा—

द्वि० वि०— सुहपत्तो = सुह पत्तो (सुख को प्राप्त)।
तृ० — गुणसम्पण्णो = गुणेहि सम्पण्णो (गुणो से सम्पन्न)।
च० — बहुजणहितो = बहुजणस्स हितो (सब जनो के लिए हित)।
प० — चोरभय = चोरत्तो भीओ (चोर से डरा हुआ)।
ष० — देवमदिरं = देवस्स मदिर (देव का मदिर)।
स० — कलाकुसलो = कलासु कुसलो (कलाओ मे कुशल)।

३ विशेषण और विशेष्य के समास कर्मधारय समास कहलाते हैं। यथा—

महावीरो = महन्तो सो वीरो (महान् वीर)।
पीअवत्थ = पीअ त वत्थ (पीला वस्त्र)।
रत्तपीअ = रत्त अ पीअ अ (लाल और पीला)।
चन्दमुह = चदो व्व मुह (चन्द्र की तरह मुख)।
जिणेंदो = जिणो इदो इव (जिन इन्द्र की तरह)।
सजमधण = सजमो एव धण (सयम ही है धन)।
असच्च = ण सच्च (सत्य नही है)।

४. द्विगु समास

प्रथम पद यदि सख्यासूचक हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं। यथा–

तिलोग	=	तिण्ह लोगाण समूहो (तीन लोको का समूह)।
कसाय	=	चउण्ह कसायाण समूहो (चार कषायो का समूह)।
नवतत्तं	=	नवण्ह तत्ताण समाहारो (नव तत्त्वो का समूह)।

५ द्वन्द समास

दो या दो से अधिक सज्ञाए जब एक साथ जोडे के रूप मे प्रयुक्त हो तो उसे द्वन्द समास कहते है। यथा–

पुण्णपावाइ	=	पुण्ण अ पाव अ (पुण्य और पाप)।
पिअरा	=	माअ अ पिआ अ (माता और पिता)।
सुहदुक्खाइ	=	सुह अ दुक्ख अ (सुख और दुख)।
णाणदसणचरित्त	=	णाण अ दसण अ चरित्त अ (ज्ञान, दर्शन और चारित्र)।

६ बहुब्रीहि समास

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य का विशेषण बनते हो तो उस समास को बहुब्रीहि कहते हैं। यथा–

पीअबरो	=	पीअ अबर जस्स सो (पीला है वस्त्र जिसका, वह)।
अपुत्तो	=	नत्थि पुत्तो जस्स सो (नही है पुत्र जिसका, वह)।
सफल	=	फलेण सह (फल के साथ ...)।
निलज्जो	=	निग्गया लज्जा जस्स सो (निकल गयी है लज्जा जिसकी, वह)।
जिअकामो	=	जिओ कामो जेण सो (जीता है काम को जिसने, वह)।

उदाहरण वाक्य

अणुभोयण ते पढन्ति	=	भोजन के बाद वे पढते हैं।
गुणसम्पण्णो णिवो सासइ	=	गुणसम्पन्न राजा शासन करता है।
सो देवमदिरे ण गच्छइ	=	वह देवता के मदिर मे नही जाता है।
रत्तपीअ वत्थ अत्थ णत्थि	=	लाल और पीला वस्त्र यहाँ नही है।
चदमुही कन्ना कस्स घरे अत्थि	=	चद्रमा के समान मुखवाली कन्या किसके घर मे है ?
महावीरो तिलोय जाणइ	=	महावीर तीनो लोको को जानता है।
पुण्णपावाणि बधस्स कारणाणि सति	=	पुण्य और पाप बध के कारण हैं।
पीअावरो तत्थ णच्चइ	=	पीले वस्त्र वाला वहाँ नाचता है।

पाठ ८९

वैकल्पिक प्रयोग

निर्देश – प्राकृत व्याकरण के जिन नियमो का अभ्यास अभी तक आपने किया है उनका प्रयोग आपको आगे दिये गये प्राकृत के पद्य एव गद्य-सकलन मे देखने को मिलेगा। साथ ही कुछ ऐसे प्रयोग भी इस सकलन मे है, जो आपके लिए नये हैं तथा जिनका विकल्प से प्रयोग होता है। ऐसे वैकल्पिक प्रयोगो का विस्तार से विवेचन प्राकृत स्वय-शिक्षक खण्ड २ मे किया जावेगा। किन्तु सामान्य जानकारी के लिए ऐसे नये प्रयोगो के कुछ नियम एव उदाहरण यहाँ भी दिये जा रहे हैं। इनके अभ्यास द्वारा इस प्रथम खण्ड मे सकलित पाठो को सरलता से समझा जा सकेगा।

सर्वनाम

			एकवचन			बहुवचन		
१	उत्तमपुरुष	प्र० वि०	अह	=	ह	अम्हे	=	अम्ह
		द्वि०	मम	=	म	,,	=	,,
		तृ०	मए	=	मे, ममए	अम्हेहि	=	अम्हे
		च० ष०	मज्झ	=	मह, मम, मे	अम्हाण	=	मज्झ
		प०	ममाओ	=	ममत्तो	अम्हाहिंतो	=	अम्हत्तो
		स०	अम्हम्मि	=	महम्मि	अम्हेसु	=	ममेसु
२	मध्यम पुरुष	प्र०	तुम	=	तु, तुह	तुम्हे	=	तुब्भे, तुम्ह
		द्वि०	तुमं	=	तुमे, तव	तुम्हे	=	वो
		तृ०	तुमए	=	तुमे	तुम्हेहि	=	तुज्झेहि
		च० ष०	तुज्झ	=	तुह,तुम्ह,तस्स	तुम्हाण	=	तुमाण
		प०	तुमाओ	=	तुम्हत्तो	तुम्हाहिंतो	=	तुम्हाओ
		स०	तुम्हम्मि	=	तुमम्मि	तुम्हेसु	=	तुमेसु
३	अन्यपुरुष	प्र०	सो	=	से, ण,	ते	=	ते, णे
	(पुल्लिग)	द्वि०	त	=	ण	ते	=	णे
		तृ०	तेण	=	णेण	तेहि	=	णेहि
		च० ष०	तस्स	=	से	ताण	=	तेसि
		स०	तम्मि	=	तस्सि	तेसु	=	तेसु

		एकवचन			बहुवचन		
४ अन्यपुरुष	प्र०	सा	=	रणा	ताम्रो	=	तीम्रा
(स्त्री०)	तृ०	ताए	=	तीए	ताहि	=	तीहि
	च०प०	ताम्र	=	तिस्सा	ताण	=	तेसि
	स०	ताए	=	तीए	तासु	=	तीसु

५ ज=जो सर्वनाम के विभिन्न रूप

	पुल्लिग रूप		स्त्रीलिंग रूप	
	ए व	ब व	ए व	ब व
प्र०	जो	जे	जा	जाम्रो, जीम्रो
द्वि०	ज	जे	ज	जाम्रो, जीम्रो
तृ०	जेरण	जेहि	जीम्रा, जीए	जाहि, जीहि
च०	जस्स	जाण	जिस्सा जीए	जाण, जेसि
प०	जम्हा, जत्तो	जाहिन्तो	जित्तो, जीए	जाहिन्तो, जीहिन्तो
ष०	जस्स	जाण	जस्सा, जीए	जाण, जेसि
स०	जम्मि,जस्सि	जेसु	जाए, जीए	जासु, जीसु

नपु० रूप		
प्र०	ज	जाणि, जाइ
द्वि०	ज	जाणि, जाइ

(शेष विभक्तियो के रूप पुल्लिग के समान होते है)

क्रियाए

६ क्रियाम्रो के अतिम अ अथवा आ को वर्तमान काल मे विकल्प से ए भी होता है तब क्रियाम्रो के रूप इस प्रकार प्रयुक्त होते है ।—

अकारान्त क्रियाए

	एकवचन			बहुवचन		
उत्तमपुरुष	जपामि	=	जपेमि	जपामो	=	जपेमो
मध्यमपुरुष	जपसि	=	जपेसि	जपित्था	=	जपेत्था
अन्यपुरुष	जंपइ	=	जपेइ	जपति	=	जपेंति
	गमइ	=	गमेइ	गमति	=	गामेति
	कहइ	=	कहेइ	कहति	=	कहेति
	पालइ	=	पालेइ	पालंति	=	पालेंति
	वम्रइ	=	वएइ	वम्रति	=	वएन्ति

आकारान्त क्रियाए

उ० पु०	दामि	=	देमि	दामो	=	देमो
म० पु०	दासि	=	देसि	दाइत्था	=	देइत्था
अ० पु०	दाइ	=	देइ	दांति	=	देंति

७ भूतकाल मे आ, ए, ओकारान्त क्रियाओ मे ही प्रत्यय के अतिरिक्त सी एव हीअ प्रत्यय भी प्रयुक्त होते है। जैसे—

सभी पुरुषो एव	दाही	=	दासी, दाहीअ
सभी वचनो मे	पाही	=	पासी, पाहीअ
	ग्रोही	=	ग्रोसी, ग्रोहीअ
	होही	=	होसी, होहीअ

८ भविष्यकाल मे मूलक्रिया मे स्स प्रत्यय भी विकल्प से जुडता है। जैसे—

मू० क्रि०		एकवचन			बहुवचन		
पास	उ० पु०	पासिहिमि	=	पासिस्सामि	पासिहामो	=	पासिस्सामो
	म० पु०	पासिहिसि	=	पासिस्ससि	पासिहित्था	=	पासिस्सह
	ग्र० पु०	पासिहिइ	=	पासिस्सइ	पासिहिंति	=	पासिस्सति
दा	उ० पु०	दाहिमि	=	दास्सामि	दाहामो	=	दास्सामो
	म० पु०	दाहिसि	=	दास्ससि	दाहित्था	=	दास्सह
	ग्र० पु०	दाहिइ	=	दास्सइ	दाहिंति	=	दास्सति

९ विधि तथा आज्ञार्थक क्रियारूपो मे मध्यमपुरुष के एकवचन मे विकल्प से निम्न रूप भी प्रयुक्त होते है।

मू० क्रि०	सीखा हुआ रूप		वैकल्पिक रूप	अर्थ
कुरा	कुणहि	=	कुरा, कुराह, कुरासु	करो
मुच	मुचहि	=	मुच, मुचह, मुचसु	छोडो
जप	जपहि	=	जप, जपह, जपसु	बोलो
जाण	जाणहि	=	जाण, जाणह, जाणसु	जानो
पेस	पेसहि	=	पेस, पेसह, पेससु	भेजो
धार	धारहि	=	धार, धारह, धारसु	धारण करो
सिक्ख	सिक्खहि	=	सिक्ख, सिक्खह, सिक्खसु	सीखो
झा	झाहि	=	झायह, झाएह	ध्यान करो
दा	दाहि	=	दाह, देहि	दो
मोच	मोचहि	=	मोएह, मोयसु	छोडो
निक्कास	निक्कासहि	=	निक्कासय	निकालो

सम्बन्ध कृदन्त :

१०. सम्बन्ध कृदन्तो मे मूल क्रिया के साथ 'ऊण' प्रत्यय के अतिरिक्त निम्नांकित प्रत्यय भी प्रयुक्त होते है ।

मू० क्रि०	सीखा हुआ रूप		वैकल्पिक रूप	प्रत्यय
हस	हसिऊण	=	हसितु, हसिउ	तु (उ)
कर	करिऊण	=	करिउ, काउ	"
सुण	सुणिऊण	=	सोउ	"
ठव	ठविऊण	=	ठवेउ	"
झा	झाइऊण	=	झाइत्ता	इत्ता
वद	वदिऊण	=	वदित्ता	"
बध	बधिऊण	=	बधित्ता	"
गिण्ह	गिण्हिऊण	=	गिण्हित्ता	"
चिंत	चिंतिऊण	=	चिंतित्ता	"
उट्ठ	उट्ठिऊण	=	उट्ठित्ता	"
नम	नमिऊण	=	नमिअ	अ
हस	हसिऊण	=	हसिअ	"
आरुह	आरुहिऊण	=	आरुहिय	य/अ
आराह	आराहिऊण	=	आराहिय	"
परिणाव	परिणाविऊण	=	परिणाविय	"

११ अनियमित सम्बन्ध कृदन्त

दट्ठ	दट्ठिऊण	=	दट्ठु	=	देखकर
गच्छ	गच्छिऊण	=	गच्चा	=	जाकर
कर	करिऊण	=	किच्चा	=	करके
जाण	जाणिऊण	=	णच्चा	=	जानकर
सुण	सुणिऊण	=	सोच्चा	=	सुनकर
दा	दाऊण	=	दच्चा	=	देकर
चय	चयिऊण	=	चिच्चा	=	छोडकर
सय	सयिऊण	=	सुत्ता	=	सोकर

निर्देश – सम्बन्ध कृदन्त के ये रूप उच्चारण भेद एव ध्वनि-परिवर्तन के आधार पर प्रयुक्त होते है । इनके लिए कोई निश्चित नियम नही है ।

१२ प्राकृत के कुछ शब्दो मे 'अ' के स्थान पर 'य' का प्रयोग होता है । जैसे–

वअण	=	वयण (वचन)	पाआल	=	पायाल (पाताल)
नअण	=	नयण (आख)	पआ	=	पया (प्रजा)
नअर	=	नयर (नगर)	जोअण	=	जोयण (योजन)

१३ सज्ञा शब्दो मे विभिन्न विभक्तिओ मे विकल्प से कई रूप वनते है। प्रयोग की दृष्टि से कुछ उदाहरण यहा प्रस्तुत है —

पुल्लिग सज्ञा शब्द

विभक्ति	एकवचन			वहुवचन		
प्र०	पुरिसो	=	पुरिसे	पुरिसा	=	पुरिसे
द्वि०	—		—	पुरिसा	=	पुरिसे
तृ०	पुरिसेण	=	पुरिसेण	पुरिसेहि	=	पुरिसेहिं
च०	पुरिसस्स	=	पुरिसाय	पुरिसाण	=	पुरिसाण
	छुट्टणस्स	=	छुट्टणाय	(छूटने के लिए)		
	सयणस्स	=	सयणाय	(सोने के लिए)		
	भोयणस्स	=	भोयणाय	(भोजन के लिए)		
	वहस्स	=	वहाय	(वध के लिए)		
	परिहाणस्स	=	परिहाणाय	(पहिनने के लिए)		
प०	पुरिसत्तो	=	पुरिसाओ	पुरिसाहित्तो	=	पुरिसाहि
	सीलत्तो	=	सीलाउ	—		—
ष०	—		—	पुरिसाण	=	पुरिसाण
स०	पुरिसे	=	पुरिसम्मि	पुरिसेसु	=	पुरिसेसु

पु० इकारान्त, उकारान्त शब्दो के चतुर्थी एव षष्ठी विभक्ति मे ये वैकल्पिक रूप वनते है —

सामिणो	=	सामिस्स
पिउणो	=	पिउस्स
गुरुणो	=	गुरुस्स

१४ स्त्रीलिंग सज्ञा शब्दो मे निम्नाकित परिवर्तन ध्यान देने योग्य है —

		एकवचन			वहुवचन		
आकारान्त —	प्र०	—			मालाओ	=	मालाउ
	द्वि०	—			”		”
	तृ० से स०	मालाए	=	मालाइ	मालाहि	=	मालाहिं
ईकारान्त एव	प्र० द्वि०				नईओ	=	नईउ
उकारान्त	तृ० से स०	नईए	=	नईआ	—		—
	प०	नईए	=	नइत्तो	—		—

१५ नपुसकलिंग सज्ञाशब्दो मे प्र० एव द्वि० विभक्ति के बहुवचन मे वैकल्पिक रूप प्रयुक्त होते हैं। यथा—

नेत्ताणि	=	नेत्ताइ	मुहाणि	=	मुहाइ
वत्थाणि	=	वत्थाइ	भोगाणि	=	भोगाइ
कमलाणि	=	कमलाइ	नयराणि	=	नयराइ

पाइय-पज्ज-गज्ज संगहो

पज्ज-संगहो

१. अंजणासुंदरीकहा

अंजणाअ चागो परिवेअण य

सरिऊण मिस्सकेसी-वयणं पवणजएण रुट्ठेण ।
चत्ता महिन्दतणया, दुक्खियमणसा अकयदोसा ।।१।।

विरहाणलतवियंगी, न लभइ विहाणलोयणा निद्दं ।
वामकरधरियवयणा, वाउकुमारं विचिन्तन्ती ।।२।।

उक्कण्ठिय त्ति गाढं, नयणजलासित्तमलिणथणजुयला ।
हरिणी व वाहभीया, अच्छइ मग्गं पलोयन्ती ।।३।।

अइतणुइयसव्वंगी, कडिसुत्तय-कडयसिढिलियाभरणा ।
भारेण अंसुयस्स य, जाइ महन्तं परमखेयं ।।४।।

ववगयदप्पुच्छाहा, दुक्खं धारेइ अंगमंगाइं ।
एमेव सुन्नहियया, पलवइ अन्नन्नवयणाइं ।।५।।

पासायतलत्था चिय, मोहं गच्छइ पुणो पुणो बाला ।
नवरं आसासिज्जइ, सीयलपवणेण फुसियंगी ।।६।।

मिउ-महुर-मम्मणाए, जंपइ वायाए दीणवयणाइं ।
अइतणुओ वि महायस ! तुज्झऽवराहो मए न कओ ।।७।।

मुंचसु कोवारम्भं, पसियसु मा एव निट्ठुरो होहि ।
पणिवइयवच्छला किल, होन्ति मणुस्सा महिलियाण ।।८।।

एयाणि य अन्नाणि य, जंपन्ती तत्थ दीणवयणाइं ।
अह सा महिन्दतणया, गमेइ कालं चिय बहुत्तं ।।९।।

एत्थन्तरे विरोहो, जाओ अइदारुणो रणारम्भो ।
रावण-वरुणाण तओ, दोह्ण वि पुण दिप्पयबलाण ।।१०।।

लंकाहिवेण दूओ, वरुणस्स य पेसिओ अइतुरन्तो ।
गन्तूण पणमिऊण य, कयासणो भणइ वयणाइं ।।११।।

विज्जाहराण सामी, वरुण ! तुमं भणइ रावणो रुट्ठो ।
कुणह पणामं व फुडं, अह ठाहि रणे सवडहुत्तो ।।१२।।

हसिऊण भणइ वरुणो, दूयाहम ! को सि रावणो नाम ? ।
न य तस्स सिरपणामं, करेमि आणापमाणं वा ।।१३।।

न य सो वेसमणो ह, नेय जमो न य सहस्सकिरणो वा ।
जो दिव्वसत्थभीओ, कुणइ पणामं तुहं दीणो ।।१४।।

वरुणेण उवलद्धो, दूओ जं एव फरुसवयणेहिं ।
तो रावणस्स गन्तुं, कहेइ सव्वं जहाभणियं ।।१५।।

सोऊण दूयवयणं रुट्ठो लंकाहिवो भणइ एवं ।
दिव्वत्थेहि विणा मए, अवस्स वरुणो जिणेयव्वो ।।१६।।

एत्थन्तरे पयट्टो, दसाणणो सयलबलकयाडोवो ।
संपत्तो वरुणपुरं, मणि-कणयविचित्तपायारं ।।१७।।

सोऊण रावणं सो, समागयं पुत्तबलसमाउत्तो ।
रणपरिहत्थुच्छाहो, विणिग्गओ अभिमुहो वरुणो ।।१८।।

राईवपुण्डरीया, पुत्ता बत्तीसइं सहस्साइं ।
सन्नद्ध-बद्ध-कवया, अब्भिट्टा रक्खसभडाणं ।।१९।।

अन्नोन्नसत्थभज्जन्त-सकुलं हुयवहुट्ठियफुल्लिंगं ।
अइदारुणं पवत्तं, जुज्झं विवडन्तवरसुहडं ।।२०।।

रह-गय-तुरग-जोहा, समरे जुज्झन्ति अभिमुहावडिया ।
सर-सत्ति-खग्ग-तोमर-चक्काउह-मोग्गरकरग्गा ।।२१।।

रक्खसभडेहि भग्गं, वरुणबलं विवडियाऽऽस-गय-जोहं ।
दट्ठूण पलायन्तं, जलकन्तो अभिमुहीहूओ ।।२२।।

वरुणेण बलं भग्गं, ओसरियं पेच्छिऊण दहवयणो ।
अब्भिडइ रोमपसरिय-सरोहनिवहं विमुञ्चन्तो ।।२३।।

वरुणस्स रावणस्स य, वट्टन्ते दारुणे महाजुज्झे।
ताव य वरुणसुएहिं, गहिओ खरदूसणो समरे ।।२४।।

दट्ठूण दूसण सो, गहिओ मन्तीहि रावणो भणिओ।
जुज्झन्तेण पहु! तुमे अवस्स मारिज्जए कुमरो ।।२५।।

काऊण सपहार, समय मन्तीहि रक्खसाहिवई।
खरदूसणजीयत्थे, रणमज्झाओ समोसरिओ ।।२६।।

पायालपुरवर सो, पत्तो मेलेइ सव्वसामन्ते।
पल्हायखेयरस्स वि, सिग्घ पुरिस विसज्जेइ ।।२७।।

पवणवेगस्स रणत्थ गमण

गन्तूण पणमिऊण य, पल्हायनिवस्स कहइ सवन्ध।
रावण–वरुणाण रण, दूसणगहण जहावत्त ।।२८।।

पडियागओ महप्पा, पायालपुरट्ठिओ ससामन्तो।
मेलेइ रक्खसवई, अहमवि वीसज्जिओ तुज्झ ।।२९।।

सोऊण वयणमेय, पल्हाओ तक्खणे गमणसज्जो।
पवणजएण धरिओ, अच्छ तुम ताव वीसत्थो ।।३०।।

सन्तेण मए सामिय!, कीस तुम कुणसि गमणआरम्भ ?।
आलिगणफलमेय, देमि अह तुज्झ साहीण ।।३१।।

भणिओ य नरवईण, बालोसि तुम अदिट्ठसगामो।
अच्छसु पुत्त! घरगओ, कीलन्तो नियमकीलाए ।।३२।

मा ताय! एव जपसु, बालो त्ति अह अदिट्ठरणकज्जो।
कि वा मत्तवरगए, सीहकिसोरो न घाएइ ? ।।३३।।

पल्हायनरवईण, ताहे वीसज्जिओ पवणवेगो।
भणिओ य पत्थिवजय, पुत्तय! पावन्तओ होहि ।।३४।।

तातस्स सिरपणाम, काउ आपुच्छिऊण से जणणिं।
आहरणभूसियगो, विणिग्गओ सो सभवणाओ ।।३५।।

सहसा पुरम्मि जाओ, उल्लोल्लो निग्गओ पवणवेगो।
सोऊण अजणा वि य, त सद्द निग्गया तुरिय ।।३६।।

अइपसरन्तसिणेहा, थम्भल्लीणा पइ पलोयन्ती।
वरसालिभंजिया इव, दिट्ठा बाला जणवएण ।।३७।।

पेच्छइ य त कुमार, महिन्दतणया नरिन्दमग्गम्मि ।
पुलयन्ति न य तिप्पइ, कुवलयदलसरिसनयणेहि ॥३८॥

पवणजएण वि तओ, पासायतलट्ठिया पलोयन्ती ।
दूर उव्वियणिज्जा, उक्का इव अजणा दिट्ठा ॥३९॥

त पेच्छिऊण रुट्ठो, पवणगई रोसपसरियसरीरो ।
भणइ य अहो ! अलज्जा, जा मज्झ उवट्ठिया पुरओ ॥४०॥

रइऊण अजलिउड, चलणपणाम च तस्स काऊण ।
भणइ उवालम्भन्ती, दूरपवासो तुम सामी ! ॥४१॥

वच्चन्तेण परियणो, सव्वो सभासिओ तुमे सामि ! ।
न य अन्नमणगएण वि, आलत्ता ह अकयपुण्णा ॥४२॥

जीय मरण पि तुमे, आयत्त मज्झ नत्थि सदेहो ।
जइ वि हु जासि पवास, तह वि य अम्हे सरेज्जासु ॥४३॥

एव पलवन्तीए, पवणगई मत्तगयवरारूढो ।
निग्गन्तूण पुराओ, उवट्ठिओ माणससरम्मि ॥४४॥

विज्जाबलेण रइओ, तत्थ निवेसो घरा-ऽऽसणाईओ ।
ताव च्चिय अत्थगिरि, कमेण सूरो समल्लीणो ॥४५॥

पवणवेगेण अंजनाअ सुमरण

अह सो सझासमए, भवण-गवक्खन्तरेण पवणगई ।
पेच्छइ सर सुरम्म, निम्मलवरसलिलसपुण्ण ॥४६॥

मच्छेसु कच्छभेसु य, सारस-हसेसु पयलियतरग ।
गुमुगुमुगुमन्तभमर, सहस्सपत्तेसु सछन्न ॥४७॥

अइदारुणप्पयावो, लोए काऊण दीहरज्ज सो ।
अत्थाओ दिवसयरो, अवसाणे नरवई चेव ॥४८॥

दियहम्मि वियसियाइ, नियय भमरउलछड्डियदलाइ ।
मउलेन्ति कुवलयाइ, दिणयरविरहम्मि दुहियाइ ॥४९॥

अह ते हसाईया, सउणा लीलाइउ सरवरम्मि ।
दट्ठु सझासमय, गया य निययाइँ ठाणाइ ॥५०॥

तत्थेक्का चक्काई, दिट्ठा पवणंजएण कुव्वन्ती ।
अहिय समाउलमणा, अहिणवविरहग्गितवियगी ॥५१॥

उड्डाइ चलइ वेवइ, विहुणइ पक्खावलि वियम्भन्ती।
तडपायवे विलग्गइ, पुणरवि सलिल समल्लियइ ।।५२।।

विहुडेइ पउमसण्ड, दइययसकाएँ चञ्चुपहरेहि।
उप्पयइ गयणमग्ग, सहसा पडिसद्दय सोउ ।।५३।।

गरुयपियविरहदुहिय, चक्कि दट्ठूण तग्गयमणेण।
पवणजएण सरिया, महिन्दतणया चिरपमुक्का ।।५४।।

भणिऊण समाढत्तो, हा! कट्ट जा मए अकज्जेण।
मूढेण पावगुरुणा, चत्ता वरिसाणि वावीस ।।५५।।

जह एसा चक्काई,, गाढ पियविरहदुक्खिया जाया।
तह सा मज्झ पियथमा, मुदीणवयणा गमइ काल ।।५६।।

जइ नाम अकण्णसुह, भणिय सहियाएँ तीएँ पावाए।
तो कि मए विमुक्का, पसयच्छी दोसपरिहीणा? ।।५७।।

परिचिन्तिऊण एव वाउकुमारेण पहसिओ भणिओ।
दट्ठूण चक्कवाई, सरिया से अजणा भज्जा ।।५८।।

एन्तेण मए दिट्ठा, पासायतलट्ठिया पलोयन्ती।
ववगयसिरि-सोहग्गा, हिमेण पहया कमलिणि व्व ।।५९।।

त चिय करेहि सुपुरिस!, अज्ज उवाय अकालहीणम्मि।
जेण चिरविरहदुहिया, पेच्छामि अहजणा वाला ।।६०।।

परिमुणियकज्जनिहसो, पवणगइ भणइ पहसिओ मित्तो।
मोत्तूण तत्थ गमण, अन्नोवाय न पेच्छामि ।।६१।।

पवणजएण तुरिय, सद्दावेऊण मोग्गरामच्चो।
ठविओ य सेन्नरक्खो, भणिओ मेरु अह जामि ।।६२।।

चन्दणकुसुमविहत्था, दोण्णि वि गयणगणेण वच्चन्ता।
रयणीए तुरियचवला, सपत्ता अजणाभवण ।।६३।।

तो पहसिओ ठवेउ, घरस्स अग्गीवए पवणवेग।
अब्भिन्तर पविट्ठो, दिट्ठो वालाएँ सहस त्ति ।।६४।।

भणिओ य भो! तुम को?, केण व कज्जेण आगओ एत्थ?।
तो पणमिऊण साहइ, मित्तो ह पवणवेगस्स ।।६५।।

सो तुज्झ पिओ सुन्दरि!, इहागओ तेण पेसिओ तुरिय।
नामेण पहसिओ ह, मा सामिणि! ससय कुणसु ।।६६।।

सोऊण सुमिणसरिसं, बाला पवणजयस्स आगमणं ।
भणइ य किं हससि तुमं ?, पहसिय ! हसिया कयन्तेण ॥६७॥

अहवा को तुह दोसो ?, दोसो च्चिय मज्झ पुव्वकम्माणं ।
जा ह पियपरिभूया, परिभूया सव्वलोएण ॥६८॥

भणिया य पहसिएणं, सामिणि ! मा एव दुक्खिया होहि ।
सो तुज्झ हिययइट्ठो, एत्थ चिय आगओ भवणे ॥६९॥

कच्छन्तरट्ठिओ सो, वसन्तमालाए कयपणामाए ।
पवणजओ कुमारो, पवेसिओ वासभवणम्मि ॥७०॥

अब्भुट्ठिया य सहसा, दइयं दट्ठूण अजणा वाला ।
ओणमियउत्तमंगा, तस्स य चलणंजली कुणइ ॥७१॥

पवणजओवविट्ठो, कुसुमपडोच्छइयरयणपल्लंके ।
हरिसवसुब्भिन्नं गी, तस्स ठिया अजणा पासे ॥७२॥

कच्छन्तरम्मि बीए, वसन्तमाला समं पहसिएण ।
अच्छइ विणोयमुहला, कहासु विविहासु जपन्ती ॥७३॥

पवणवेगेण सह अजनाअ समागम

तो भणइ पवणवेगो, जं सि तुमं सासिया अकज्जेण ।
तं मे खमाहि सुन्दरि !, अवराहसहस्ससंघायं ॥७४॥

भणइ य महिन्दतणया, नाह ! तुमं नत्थि कोइ अवराहो ।
सुमरियं मणोरहफलं, संपइ नेहं वहेज्जासु ॥७५॥

तो भणइ पवणवेगो, सुन्दरि ! पम्हुससु सव्वअवराहे ।
होहि सुपसन्नहियया, एस पणामो कओ तुज्झ ॥७६॥

आलिंगिया सनेहं, कुवलयदलसरिसकोमलसरीरा ।
वयणं पियस्स अणिमिस-नयणेहि व पियइ अणुरायं ॥७७॥

घणनेहनिब्भराणं, दोण्हं वि अणुरायलद्धपसराणं ।
आवडियं चिय सुरयं, अणंगचडुकम्मविणिओगं ॥७८॥

आलिङ्गण-परिचुम्बण-रइउच्छाहणगुणेहिं सुसमिद्धं ।
निव्ववियविरहदुक्खं, मणतुट्ठियरंजियजहिच्छं ॥७९॥

सुरतूसवे समत्ते, दोण्णि वि खेयालसंगमंगाइं ।
अन्नोन्नभुयालिंगण-सुहेण निद्दं पवन्नाइं ॥८०॥

एव कमेण ताण, सुरयसुहासायलद्धनिद्दाण ।
किंचावसेससमया, ताव य रयणी खय पत्ता ।।८१।।

रयणीमुहपडिबुद्धो, पवणगई भणइ पहसिओ मित्तो ।
उट्ठेहि लहु सुपुरिस !, खन्धावार पगच्छामो ।।८२।।

सुणिऊण मित्तवयण, सयणाओ उट्ठिओ पवणवेगो ।
उवगूहिऊण कन्त, भणइ य वयण निसामेहि ।।८३।।

अच्छ तुम वीसत्था, मा उव्वेयस्स देहि अत्ताण ।
जाव अह दहवयण, दट्ठूण लहु नियत्तामि ।।८४।।

तो विरहदुक्खभीया, चलणपणाम करेइ विणएण ।
मम्मण-मुहुरुल्लावा, भणइ य पवणजय बाला ।।८५।।

अज्ज चिय उदुसमओ, सामिय ! गब्भो कयाइ उयरम्मि ।
होही वयणिज्जयरो, नियमेण तुमे परोक्खेण ।।८६।।

तम्हा कहेहि गन्तु गुरूण गब्भस्स सभव एय ।
होहि बहुदीहपेही, करेहि दोसस्स परिहार ।।८७।।

अह भणइ पवणवेगो, मह नामामुद्दिय रयणचित्त ।
गेण्हसु मियकवयणे !, एसा दोस पणासिहिइ ।।८८।।

आपुच्छिऊण कान्ता, वसन्तमाला य गयणमग्गेण ।
नियय निवेसभवण, पहसिय-पवणजया पत्ता ।।८९।।

धम्मा-ऽधम्मविवाग, सजोग-विओग-सोग-सुहभाव ।
नाऊण जीवलोए, विमले जिणसासणे समुज्जमह सया ।।९०।।

———

२. सिरिसिरिवालकहा

कहामुहं—

अरिहाइनवपयाइ, झाइत्ता हिअयकमलमज्झमि ।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पमुत्तम किपि जपेमि ।।१।।

अत्थित्थ जबुदीवे, दाहिणभरहद्धमज्झिमे खडे ।
बहुधणधन्नसमिद्धो, मगहादेसो जयपसिद्धो ।।२।।

जत्थुप्पन्न सिरिवीरनाहतित्थ जयमि वित्थरिय ।
त देस सविसेस, तित्थ भासति गीयत्था ।।३।।

तत्थ य मगहादेसे, रायगिह नाम पुरवर अत्थि ।
वेभारविउलगिरिवरसमलकियपरिसरपएस ।।४।।

तत्थ य सेणियराओ, रज्ज पालेइ तिजयविक्खाओ ।
वीरजिणचलणभत्तो, विहिअज्जियतित्थयरगुत्तो ।।५।।

जस्सत्थि पढमपत्ती, नदा नामेण जीइ वरपुत्तो ।
अभयकुमारो बहुगुणसारो चउबुद्धिभडारो ।।६।।

चेडयनरिदधूया, बीया जस्सत्थि चिल्लणा देवी ।
जीए असोगचदो, पुत्तो हल्लो विहल्लो अ ।।७।।

अन्नाउ अणेगाओ धारणीपमुहाउ जस्स देवीओ ।
मेहाइणो अणेगे, पुत्ता पियमाइपयभत्ता ।।८।।

सो सेणियनरनाहो, अभयकुमारेण विहियउच्छाहो ।
तिहुयणपयडपयावो, पालइ रज्ज च धम्म च ।।९।।

एयमि पुणो समए, सुरमहिओ वद्धमाणतित्थयरो ।
विहरतो सपत्तो, रायगिहासन्ननयरमि ।।१०।।

पेसेइ पढमसीस, जिट्ठ गणहारिण गुणगरिट्ठ ।
सिरिगोयम मुणिद, रायगिहलोयलाभत्थ ।।११।।

सो लद्धजिणाएसो, सपत्तो रायगिहपुरोज्जाणे ।
कइवयमुणिपरियरिओ, गोयमसामी समोसरिओ ।।१२।।

तस्सागमण सोउ, सयलो नरनाहपमुहपुरलोश्रो ।
नियनियरिद्धिसमेश्रो, समागश्रो भत्ति उज्जाणे ।।१३।।

पचविह अभिगमण, काउ तिपयाहिणाउ दाऊण ।
पणमिय गोयमचलणे, उवविट्ठो उचियभूमीए ।।१४।।

भयवपि सजलजलहर-गभीरसरेण कहिउमाढत्तो ।
धम्मसरूव सम्म, परोवयारिक्कतल्लिच्छो ।।१५।।

भो भो महाणुभागा ! दुलह लहिऊण माणुस जम्म ।
खित्तकुलाइपहाण, गुरुसामग्गि च पुण्णवसा ।।१६।।

पचविहपि पमाय गुरुयावाय विवज्जिउ झत्ति ।
सद्धम्मकम्मविसए, समुज्जमो होइ कायव्वो ।।१७।।

सो धम्मो चउभेश्रो, उवइट्ठो सयलजिणवरिंदेहिं ।
दाण सील च तवो, भावोऽवि अ तस्सिमे भेया ।।१८।।

तत्थवि भावेण विणा, दाण न हु सिद्धिसाहण होई ।
सीलपि भाववियल, विहल चिय होइ लोगमि ।।१९।।

भाव विणा तवोविहु, भवोहवित्थारकारण चेव ।
तम्हा नियभावुच्चिय, सुविसुद्धो होइ कायव्वो ।।२०।।

भावोवि मणोविसश्रो, मण च अइदुज्जय निरालब ।
तो तस्स नियमणत्थ, कहिय सालवण झाण ।।२१।।

आलबणाणि जइविहु, बहुप्पयाराणि सति सत्थेसु ।
तह वि हु नवपयझाण सुपहाण बिंति जगगुरुणो ।।२२।।

अरिह-सिद्धायरिया, उज्झाया साहुणो अ सम्मत्त ।
नाण चरण च तवो, इव पयनवग मुणेयव्व ।।२३।।

तत्थऽरिहतेऽट्ठारसदोसविमुक्के विसुद्धनाणमए ।
पयडियतत्ते नयसुरराए झाएह निच्चपि ।।२४।।

पनरसभेयपसिद्धे सिद्धे घणकम्मबधणविमुक्के ।
सिद्धाण तचउक्के, झायह तम्मयमणा सयय ।।२५।।

पचायारपवित्ते, विसुद्धसिद्ध तदेसणुज्जुत्ते ।
परउवयारिक्कपरे, निच्च झाएह सूरिवरे ।।२६।।

गणतित्तीसु निउत्ते, सुत्तत्थज्झावण मि उज्जुत्ते ।
सज्झाए लीणमणे, सम्म झाएह उज्झाए ।।२७।।

उत्पन्न होते है। ज्ञान के द्वारा अविद्या के नष्ट होते ही सब दुःखो का अन्त हो जाता है।

ब्रह्म नि सन्देह निर्गुण है किन्तु यही निर्गुण ब्रह्म जब माया से उपहित हो जाता है तो सगुण परमेश्वर कहलाता है। यह सगुण ब्रह्म ही जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलय का कारण है। यही इस सारे सासारिक प्रपच का सृजनकर्त्ता, नियन्ता और हन्ता है।

बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन के अनुसार आत्मा और जगत् अनित्य है। ससार का प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील एव नाशवान है। वस्तु की उत्पत्ति किसी कारण से होती है, यदि कारण नष्ट हो जाये तो वस्तु भी नष्ट हो जाती है। जो भी नित्य और स्थायी प्रतीत होता है वह सब नाशवान् है। जहाँ जन्म है वहाँ मरण भी है। इस प्रकार सारी सृष्टि प्रतिक्षण होने वाले परिवर्तन का ही परिणाम है। अणुओ के द्वयणुकादि सयोग द्वारा यह सृष्टि विकसित होती है और इसका क्रम चलता रहता है। बौद्ध दर्शन मे पृथ्वी, जल, तेज और वायु ये ही चार भूत माने है, आकाश की गणना भूतो मे नही की। अणुओ के पृथक् होने से सृष्टि का प्रलय हो जाता है।

बुद्ध ने जरा, मरण और रोगादि से छुटकारा प्राप्त करने के लिए तपस्या का आश्रय लिया था। तपस्या द्वारा उन्हे बोधि ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसका सार चार आर्य सत्यो मे निहित है। वे चार आर्य सत्य है (१)दुख है। (२)दुःख का कारण है। (३)दुःख का निरोध है (४) दुःख-निरोध-गामिनी प्रतिपद अर्थात् साधन है। दुःखो से परिपूर्ण इस दृश्यमान जगत् से निर्वाण पाने के लिए बौद्ध दर्शन मे अष्टागी मार्ग का पालन करने का बुद्ध ने उपदेश दिया है। वे आठ मार्ग है सम्यक् दृष्टि, सकल्प, वाक्, कर्मान्त, आजीव, व्यायाम, स्मृति और समाधि। इन मार्गो का अनुसरण करने से ही मानव मे रहने वाली अविद्या और तृष्णा का नाश होता है, जीव को निर्मल बुद्धि प्राप्त होती है, उसमे दृढता आती है और उसे शान्ति मिलती है। इन्ही उपायो द्वारा ही जीव के दुःखो का नाश होता है, उसे अपने सत्य स्वरूप का ज्ञान होता है और पुनर्जन्म से छुटकारा मिलता है। इन सासारिक दुःखो

तस्सागमण सोउ, सयलो नरनाहपमुहपुरलोग्रो ।
नियनियरिद्धिसमेग्रो, समागग्रो भत्ति उज्जाणे ।।१३।।

पचविह ग्रभिगमण, काउ तिपयाहिणाउ दाऊण ।
पणमिय गोयमचलणे, उवविट्ठो उचियभूमीए ।।१४।।

भयवपि सजलजलहर-गभीरसरेण कहिउमाढत्तो ।
धम्मसरूव सम्म, परोवयारिक्कतल्लिच्छो ।।१५।।

भो भो महाणुभागा ! दुलह लहिऊण माणुस जम्म ।
खित्तकुलाइपहाण, गुरुसामग्गि च पुण्णवसा ।।१६।।

पचविहपि पमाय गुरुयावाय विवज्जिउ झत्ति ।
सद्धम्मकम्मविसए, समुज्जमो होइ कायव्वो ।।१७।।

सो धम्मो चउभेग्रो, उवइट्ठो सयलजिणवरिंदेहिं ।
दाण सील च तवो, भावोऽवि ग्र तस्सिमे भेया ।।१८।।

तत्थवि भावेण विणा, दाण न हु सिद्धिसाहण होई ।
सीलपि भाववियल, विहल चिय होइ लोगमि ।।१९।।

भाव विणा तवोविहु, भवोहवित्थारकारण चेव ।
तम्हा नियभावुच्चिय, सुविसुद्धो होइ कायव्वो ।।२०।।

भावोवि मणोविसग्रो, मण च ग्रइदुज्जय निरालब ।
तो तस्स नियमणत्थ, कहिय सालवण झाण ।।२१।।

ग्रालबणाणि जइविहु, बहुप्पयाराणि सति सत्थेसु ।
तह वि हु नवपयझाण सुपहाण बिंति जगगुरुणो ।।२२।।

ग्ररिह-सिद्धायरिया, उज्झाया साहुणो ग्र सम्मत्त ।
नाण चरण च तवो, इव पयनवग मुणेयव्व ।।२३।।

तत्थऽरिहतेऽट्ठारसदोसविमुक्के विसुद्धनाणमए ।
पयडियतत्ते नयसुरराए झाएह निच्चपि ।।२४।।

पनरसभेयपसिद्धे सिद्धे घणकम्मबधणविमुक्के ।
सिद्धाण तचउक्के, झायह तम्मयमणा सयय ।।२५।।

पचायारपवित्ते, विसुद्धसिद्ध तदेसणुज्जुत्ते ।
परउवयारिक्कपरे, निच्च झाएह सूरिवरे ।।२६।।

गणतित्तीसु निउत्ते, सुत्तत्थज्झावणमि उज्जुत्ते ।
सज्झाए लीणमणे, सम्म झाएह उज्झाए ।।२७।।

सव्वासु कम्मभूमिसु, विहरते गुणगणेहि सजुत्ते ।
गुत्ते मुत्ते झायह, मुणिराए निट्ठियकसाए ।।२८।।

सव्वन्नुपणीयागमपयडियतत्तत्थसद्दहणरुव ।
दसणरयणपईव, निच्च धारेह मणभवणे ।।२९।।

जीवाजीवाइपयत्थ सत्थ तत्तावबोहरूव च ।
नाण सव्वगुणाण, मूल सिक्खेह विणएण ।।३०।।

असुह किरियाण चाओ, सहासुकिरिया जो य अपमाओ ।
त चारित्त उत्तमगुणजुत्त पालह निरुत्त ।।३१।।

घणकम्मतमोभरहरणभाणुभूय दुवालसगधर ।
नवरमकसायताव, चरेह सम्म तवोकम्म ।।३२।।

एयाइ नवपयाइ, जिणवरधम्ममि सारभूयाइ ।
कल्लाणकारणाइ, विहिणा आराहियव्वाइ ।।३३।।

अन्न चएएहि नवपएहि, सिद्ध सिरिसिद्धचक्कामाउत्तो ।
आराहतो सतो, सिरिसिरिपालुव्व लहइ सुह ।।३४।।

तो पुच्छइ मगहेसो को एसो मुणिवरिद ! सिरिपालो ।
कह तेण सिद्धचक्क, आराहिय पाविय सुक्ख ? ।।३५।।

तो भणइ मुणी निसुणसु, नरवर ! अक्खाणय इम रम्म ।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पसु दर परमचुज्जकर ।।३६।।

कहारभं

इत्थेव भरहखित्ते, दाहिणखडमि अत्थि सुपसिद्धो ।
सव्वड्ढिकयपवेसो, मालवनामेण वरदेसो ।।३७।।

पए पए जत्थ सुगुत्तिगुत्ता, जोगप्पवेसा इव सनिवेसा ।
पए पए जत्थ अगजणीया, कुडु बमेला इव तु गसेला ।।३८।।

पए पए जत्थ रसाउलाओ, पण गणाओव्वतरगिणीओ ।
पए पए जत्थ सुहकराओ, गुणावलीओव्व वणावलीओ ।।३९।।

पए पए जत्थ सवाणियाणि, महापुराणीव महासराणी ।
पए पए जत्थ सगोरसाणि, सुहीमुहाणीव सुगोउलाणि ।।४०।।

तत्थ य मालवदेसे, अकयपवेसे दुकालडमरेहिं ।
अत्थि पुरी पोराणा, उज्जेणी नाम सुपहाणा ।।४१।।

अणंगसो जत्थ पयावईओ, नरुत्तमाण च न जत्थ सखा ।
महेसरा जत्थ गिहे गिहेसु, सचीवरा जत्थ सम्मग्गलोया ।।४२।।

घरे घरे जत्थ रमति गोरी-गणा सिरीओ अ पए पए अ ।
वणे वणे यावि अणंगरभा, रई अ पीई विय ठाणठाणे ।।४३।।

तीसे पुरीई सुरवरपुरीई अहियाइ वण्णण काउ ।
जइ निउणबुद्धिकलिओ, सक्कगुरु चेव सक्केइ ।।४४।।

तत्थत्थि पुहविपालो, पयपालो, नामओ अ गुणओ अ ।
जस्स पयावो सोमो, भीमो विय सिट्ठदुट्ठजणे ।।४५।।

तस्सवरोहे वहुदेहसोह अवहरिय गोरिगव्वेवि ।
अच्चत मणहरणे, निउणाओ दुन्नि देविओ ।।४६।।

सोहग्गलडहदेहा, एगा सोहग्गसुन्दरीनामा ।
बीया अ रूवसुन्दरी नामा रूवेण रइतुल्ला ।।४७।।

पढमा माहेसरकुलसभूया तेण मिच्छदिट्ठित्ति ।
बीया साअवधूया तेण सा सम्मदिट्ठित्ति ।।४८।।

तओ सरिसवयाओ, समसोहग्गाउ सरिसरूवाओ ।
सावत्ते वि हु पाय, परुप्पर पीतिकलिआओ ।।४९।।

नवर ताण मणट्ठियधम्मसरूव वियारयताण ।
दूरेण विसवाओ, विसपीऊसेहि सारिच्छो ।।५०।।

तओ अ रमतीओ, नवनवलीलाहि नरवरेण सम ।
थोवतरमि समए, दोवि सगब्भाउ जायाओ ।।५१।।

कन्नगा-सिक्खा

समयमि पसूयाओ, जायाओ कन्नगाउ दोहिपि ।
नरनाहोवि सहरिसो, वद्धावणय करावेई ।।५२।।

सोहग्गसुदरी नदणाइ सुरसुदरित्ति वरनाम ।
बीयाइ मयणसुदरि, नाम च ठवेइ नरनाहो ।।५३।।

समये समप्पियाओ, तओ सिवधम्मजिणमयविऊण ।
अज्झावयाण रन्ना, सिवभूतिसुबुद्धिनामाण ।।५४।।

सुरसुदरी अ सिक्खइ, लिहिय गणिय च लक्खण छद ।
कव्वमलकारजुय, तक्क च पुराणसमिईओ ।।५५।।

सिक्खेइ भरहसत्थ, गीय नट्ट च जोइसतिगिच्छ।
विज्ज मत तत, हरमेहलचित्तकम्माइ ॥५६॥

अन्नाइ पि कु डलविटलाइ करलाघवाइकम्माइ।
सत्थाइ सिक्खियाइ, तीइ चमुक्कारजणयाइ ॥५७॥

सा कावि कला त किपि, कोसल त च नत्थि विन्नाण।
ज सिक्खिय न तीए, पन्नाअभिओगजोगेण ॥५८॥

सविसेस गीयाइसु, निउणा वीणाविणीयलीणा सा।
सुरसुन्दरी वियड्ढा,—जाया पत्ता य तारून्न ॥५९॥

जारिसओ होह गुरू, तारिसओ होइ सीसगुणजोगो।
इत्तु च्चिय सा मिच्छ—दिट्ठि उक्किठ्ठदप्पा अ ॥६०॥

तह मयणसु दरीवि हु, एया उ कलाओ लीलमित्त ेण।
सिक्खेइ विमलपन्ना, धन्ना विणएण सपन्ना ॥६१॥

जिणमयनिउणेणज्झावएण मयणसु दरीबाला।
तह सिक्खविया जह जिणमयमि कुसलत्तण पत्ता ॥६२॥

एगा सत्ता दुविहो नओ य कालत्तय गइचउक्क।
पचेव अत्थिकाया, दव्वछक्क च सत्त नया ॥६३॥

अठ्ठेव य कम्माइ नवतत्ताइ च दसविहो धम्मो।
एगारस पडिमाओ बारस वयाइ गिहीण च ॥६४॥

इच्चाइ वियाराचारसारकुसलत्तण च सपत्ता।
अन्ने सुहुमवियारेवि मुणइ सा निययनाम वि ॥६५॥

कम्माण मूलुत्तरपयडीओ गणइ मुणइ कम्मठिइ।
णाणइ कम्मविवाग, बधोदयदीण सत ॥६६॥

जीसे सो उज्झाओ, सतो दतो जिइदिओ धीरो।
जिणमयरओ सुबुद्धि, सा किं नहु होइ तस्सीला ? ॥६७॥

सयलकलागमकुसला, निम्मलसम्मत्तसीलगुणकलिया।
लज्जासज्जा सा मयणसु दरी जुव्वण पत्ता ॥६८॥

अन्नदिणे अब्भितरसहानिविठ्ठेण नरवरिंदेण।
अज्झावयसहियाओ, अणविवाओ कुमारीओ ॥६९॥

विणओणयाउ ताओ, सरुवलावन्नखोहिअसहाओ।
विणिवेसिआउ रन्ना, नेहेण उभयपासेसु ॥७०॥

बुद्धिपरिक्खणं

हरिसवसेण राया, तासि बुद्धिपरिक्खणनिमित्त ।
एग देइ समस्सा—पय दुविन्हपि समकाल ॥७१॥

जहा "पुन्निहिं लब्भइ एहु,"..... .... ।

तो तक्काल अइचचलाइ अच्चतगव्वगहिलाए ।।
सुरसुन्दरीइ भणिय, हु हु पूरेमि निसुहेण ॥७२॥

जहा-धणजुव्वण सुवियड्ढपण, रोगरहिअ निअ देहु ।
मणवल्लह मेलावडउ, पुन्निहिँ लब्भइ एहु ॥७३॥

त सुणिय निवो तुठ्ठो, पससए साहु साहु उज्झाओ ।
जेणेसा सिक्खविआ, परिसावि भणेइ सच्चमिण ॥७४॥

तो रन्ना आइठ्ठा, मयणा वि हु पूरए समस्स त ।
जिणवयणरया सता दता ससहावसारिच्छ ॥७५॥

जहा—विणयविवेयपसण्णमणु सीलसुनिम्मलदेह ।
परमप्पहमेलावडउ, पुण्णेहिँ लब्भइ एहु ॥७६॥

तो तीए उवझाओ, मायावि अ हरिसिआ न उण सेसा ।
जेण तत्तोवएसो न कुणइ हरिस कुदिट्ठिण ॥७७॥

केरिसो वरो

कुरुजगलमि देसे, सखपुरीनामपुरवरी अत्थि ।
जा पच्छा विक्खाया, जाया अहिछत्तनामेण ॥७८॥

तत्थत्थि महीपालो कालो इव वेरिआण दमिआरी ।
पइवरिस सो गच्छइ, उज्जेणिनिवस्स सेवाए ॥७९॥

अन्नदिणे तप्पुत्तो, अरिदमनो नाम तारतारुन्नो ।
सम्पत्तो पिअठाणे, उज्जेणिं रायसेवाए ॥८०॥

त च निवपणमणत्थ समागय तत्थ दिव्वरूवधर ।
सुरसुन्दरी निरिक्खइ, तिक्खकडक्खेहि ताडत्ति ॥८१॥

तत्थेव थिरनिवेसिअदिट्ठी दिट्ठा निवेण सा बाला ।
भणिया य कहसु वच्छे ! तुज्झ वरो केरिसो होउ ? ॥८२॥

तो तीए हिट्ठाए, धिट्ठाए मुक्कलोअलज्जाए ।
भणिय तायपसाया, जइ लब्भइ मग्गिय कहवि ॥८३॥

ता सव्वकलाकुसलो, तरूणोवररूवपुण्णलायन्नो ।
एरिसओ होउ वरो, अहवा ताओच्चिअ पमाण ॥८४॥

जेण ताय तुम चिय, सेवयजणमणसमीहियत्थाण ।
पूरणपवणो दीससि, पच्चक्खो कप्परुक्खव्व ॥८५॥

तो तुट्ठो नरनाहो, दिट्ठिनिवेसेण नायतीइमणा ।
पभणेइ होउ वच्छे! एसऽरिदमणो वरो तुज्झ ॥८६॥

तो सयलसभालोओ, पभणइ नरनाह! एस सजोगो ।
अइसोहणोऽहिवल्लीपूगतरूण व निऽभत ॥८७॥

अह मयणसुन्दरीवि हु, रन्ना नेहेण पुच्छिया वच्छे ।
केरिसओ तुज्झ वरो, कीरउ? मह कहसु अविलब ॥८८॥

सा पुण जिणवयणवियारसारसजणियनिम्मलविवेआ ।
लज्जागुणिक्कसज्जा, अहोमुही जा न जपेइ ॥८९॥

ताव नरिदेण पुणो पुट्ठा सा भणइ ईसि हसिऊण ।
ताय विवेयसमेओ, म पुच्छसि तसि किमजुत्त ॥९०॥

जेण कुलबालिआओ, न कहति हवेउ एस मज्झ वरो ।
जो करि पिऊहिं दिन्नो, सो चेव पमाणियव्वुत्ति ॥९१॥

अम्मा पिउणोवि निमित्तमित्तमेवेह वरपयाणमि ।
पाय पुव्वनिबद्धो, सम्बन्धो होइ जीवाण ॥९२॥

कम्म-परिणामो

ज जेण जया जारिसमुवज्जिय होइ कम्म सुहमसुह ।
त तारिस तया से, सपज्जइ दोरियनिबद्ध ॥९३॥

जा कन्ना बहुपुन्ना, दिन्ना सुकुलेवि सा हवइ सुहिया ।
जा होइ हीणपुन्ना, सुकुले दिन्नावि सा दुहिया ॥९४॥

ता ताय! नायतत्तस्स, तुज्झ नो जुज्जए इमो गव्वो ।
ज मज्झ कयपसायापसायओ सुहदुहे लोए ॥९५॥

जो होइ पुन्नवलिओ, तस्स तुम ताय! लहु पीसीएसि ।
जो पुण पुण्णविहूणो, तस्स तुम नो पसीएसि ॥९६॥

भवियव्वया सहावो, दव्वाइया सहाइणो वावि ।
पाय पुव्वोवज्जियकम्माणुगया फल दिंति ॥९७॥

तो दुम्मिश्रो य राया, भरगेइ रे तसि मह पसाएण ।
वत्थालकाराइ, पहिरती कीसिम भरगासि ? ॥९८॥

हसिऊरग भरगइ मयरगा, कयसुकयवसेरग तुज्झ गेहमि ।
उप्पन्ना ताय ! ग्रह, तेरग मारगेमि सुक्खाइ ॥९९॥

पुव्वकय सुकय चिग्र, जीवारग सुक्खकाररग होइ ।
दुकय च कय दुक्खारग, काररग होइ निव्भत ॥१००॥

न सुरासुरेहिं, नो नरवरेहि, नो ग्रुद्धिवलसमिद्धेहिं ।
कहवि खलिज्जइ इतो, सुहासुहो कम्मपरिरगामो ॥१०१॥

तो रुट्ठो नरनाहो, ग्रहो ग्रहो ग्रप्पपुन्निग्रा एसा ।
मज्झ कय किपि गुरग, नो मन्नइ दुव्वियड्ढा य ॥१०२॥

पभरगेइ सहालोग्रो, सामिय ? किमिय मुरगेइ मुद्धमई ।
त चेव कप्परुक्खो, तुट्ठो रुट्ठो कयतो य ॥ १०३॥

मयरगा भरगेइ धिद्धि, धरगलवमित्तत्थिरगो इमे सव्वे ।
जारगतावि हु ग्रलिग्र, मुहप्पिय चेव जपति ॥१०४॥

जइ ताय ! तुह पसाया, सेवयलोग्रा हवति सव्वेवि ।
सुहिया ता समसेवानिरया कि दुक्खिया एगे ? ॥१०५॥

तम्हा जो तुम्हारग, रुच्चइ सो ताय ! मज्झ होउ वरो ।
जइ ग्रत्थि मज्झ पुन्न, ता होही निग्गुरगोवि गुणी ॥१०६॥

जइ पुण पुन्नविहीरगा, ताय ! ग्रह ताव सु दरोवि वरो ।
होही ग्रसु दरुच्चिय, नूरग मह कम्मदोसेरग ॥१०७॥

तो गाढयर राया, रुट्ठो चितेइ दुव्वियड्ढाए ।
एयाइ कग्रो लहुग्रो, ग्रह तग्रो वेरिणी एसा ॥१०८॥

रोसेण वियडभिउडीभीसरगवयरग पलोइऊरग निव ।
दक्खो भरगेइ मती, सामिय ! रइवाडियासमग्रो ॥१०९॥

रोसेरग धमधमतो, नरनाहो तुरयरयरगमारूढो ।
सामतमतिसहिग्रो, विरिगग्गग्रो रायवाडीए ॥११०॥

कुट्ठिभूयोउबरो

जाव पुराग्रो बाहिं, निग्गच्छइ नरवरो सपरिवारो ।
ता पुरग्रो जरगवद, पिच्छइ साडबरमियत ॥१११॥

तो विम्हिएण रन्ना, पुट्ठो मती स नायवुत्त तो ।
विन्नवइ देव निसुणह, कहेमि जणवंद परमत्थ ।।११२।।

सामिय ! सरूवपुरिसा, सत्तसया नववया ससोडीरा ।
दुट्ठकुट्ठभिभूया, सव्वे एगत्थ समिलिया ।।११३।।

एगो य ताण बालो, मिलिओ उबरयवाहिगहियगो ।
सो तेहि परिगहिओ उबरराणुत्ति कयनामो ।।११४।।

वरवेसरिमारूढो, तयदोसी छत्तधारओ तस्स ।
गयनासा चमरधरा, धिणिधिणिसद्दा य अग्गपहा ।।११५।।

गयकन्ना घटकरा, मडलवइ अगरक्खगा तस्स ।
दद्दुलथइआवत्तो गलीअगुलि नामओ मती ।।११६।।

केवि पसूइयवाया, कच्छादब्भेहि केवि विकराला ।
केवि विउचिअपामासमन्निया सेवगा तस्स ।।११७।।

एव सो कुट्ठिअपेडएण परिवेढिओ महीवीढे ।
रायकुलेसु भमतो, पजिअदाण पगिण्हेइ ।।११८।।

सो एसो आगच्छइ, नरवर ! आडबरेण सजुत्तो ।
ता मग्गमिण मुत्तु , गच्छह अन्न ! दिस तुब्भे ।।११९।।

तो वलिओ नरनाहो. अन्नाइ दिसाइ जाव ताव पुरो ।
तो पेडयपि तीए, दीसाइ वलिय तुरिअ तुरित ।।१२०।।

राया भणेइ मति, पुरओ गतूणिमे निवारेसु ।
मुहमग्गियपि दाउ, जेणेसिं, दसण न सुह ।।१२१।।

जा त करेइ मति, गलिअगुलिनामओ दुय ताव ।
नरवर पुरओ ठाउ, एव भणिउ समाढत्तो ।।१२२।।

सामिअ ! अम्हाण पहू, उबरनामेण राणओ एसो ।
सव्वत्थ वि मन्निज्जइ, गरुएहि दाणमाणेहि ।।१२३।।

तेणऽम्हाण धणकणयचीरपमुहेहि कीरइ न किंपि ।
एतस्स पसायेण, अम्हे सव्वेवि अइसुहिणो ।।१२४।।

एगो नाह ! समत्थि अम्ह मणचितिओ विअप्पुत्ति ।
जइ लहइ राणओ राणियति ता सुन्दर होइ ।।१२५।।

ता नरनाह ! पसाय, काऊण देहि कन्नग एग ।
अन्नरेण कणगकप्पणदाणेण तुम्ह पज्जत ।।१२६।।

तो भणइ रायमती अहो अजुत्त विमग्गिअ तुमए।
को देइ निय धूय कुट्ठकिलिट्ठस्स जाणतो ॥१२७॥

गलिअगुलिणा भणिय, अम्हेहिं सुया निवम्सिमा कित्ती।
ज किल मालवराया, करेइ नो पत्थणाभग ॥१२८॥

तो सा निम्मलकित्ति, हारिज्जउ अज्ज नरवरिंदस्स।
अहवा दिज्जउ कावि हु, धूया कुकुलेवि सभूया ॥१२९॥

मयणसुंदरीविवाहो

पभणेइ नरवरिंदो, दाहिस्सइ तुम्ह कन्नगा एगा।
को किर हारइ कित्ती, इत्तियमित्तेण कज्जेण? ॥१३०॥

चिंतेइ मणे राया, कोवानलजलियनिम्मलविवेगो।
नियधूय अरिभय, त दाहिस्सामि एयस्स ॥१३१॥

सहसा वलिऊण तओ, नियआवासमि आगओ राया।
बुल्लावइ त मयणासुन्दरिनाम निय धूय ॥१३२॥

हु अज्जवि जइ मन्नसि, मज्झ पसायस्स सभव सुक्ख।
ता उत्तम वर ते, परिणाविय देमि भूरि धण ॥१३३॥

जइ पुण नियकम्म चिय, मन्नसि ता तुज्झ कम्मणाणीओ।
एसो कुट्ठिअराणो, होउ वरो कि वियप्पेण? ॥१३४॥

हसिऊण भणइ बाला, आणीओ मज्झ कम्मणा जो उ।
सो चेव मह पमाण, राओ वा रकजाओ वा ॥१३५॥

कोवधेण रन्ना, सो उबरराणओ समाहूओ।
भणिओ य तुममिमीए, कम्माणीओसि होसु वरो ॥१३६॥

तेणुत्त नो जुत्त, नरवर! वुत्त पि तुज्झ इय वयण।
को कणयरयणमाल बधइ कागस्स कठमि ॥१३७॥

एगमह पुव्वकय, कम्म भुजेमि एरिसमणज्ज।
अवर च कहमिमीए, जम्म बोलेमि जाणतो? ॥१३८॥

ता भो नरवर! जइ देसि कावि ता देसु मज्झ अणुरूव।
दासीविलासिणिधूय, नो वा ते होउ कल्लाण ॥१३९॥

तो भणइ नरवरिंदो, भो भो महनदणी इमा किंपि।
नो मज्झकय मन्नइ, नियकम्म चेव मन्नेइ ॥१४०॥

तेण चिअ कम्मेण, आणीओ तसि चेव जीइ वरो।
जइ सा निअकम्मफल, पावइ ता अम्ह को दोसो ? ।।१४१।।

त सोउण बाला, उट्ठित्ता झत्ति उबरस्स कर।
गिण्हइ नियकरेण, विवाहलग्गव साहति ।।१४२।।

सामतमतिअतेउरिउ वारति तहवि सा बाला।
सरयससिसरिसवयणा, भणइ सई सुच्चिअ पमाण ।।१४३।।

एगत्तो माउलओ, एगत्तो रुप्पसु दरीमाया।
एगत्तो परिवारो, रुयइ अहो केरिसमजुत्त ? ।।१४४।।

तहवि न नियकोवाओ, वलेइ राया अईव कढिणमणो।
मयणावि मुणियतत्ता, निअसत्ताओ न पचलेइ ।।१४५।।

त वेसरिमारोविअ, जा चलिओ उबरो निअयठाण।
ता भणइ नयरलोओ, अहो अजुत्त अजुत्त ति ।।१४६।।

एगे भणति धिद्धी, रायाण जेणिम कयमजुत्त।
अन्ने भणति धिद्धी, एय अइदुव्विणीयति ।।१४७।।

केवि निंदिति जणणिं, तीए निदति केवि उवभाय।
केवि निंदति दिव्व, जिणधम्म केवि निदिति ।।१४८।।

तहवि हु वियसियवयणा, मयणा तेणु बरेण सह जति।
न कुणई मणे विसाय, सम्म धम्म वियाणति ।।१४९।।

उबरपरिवारेण, मिलिएण हरिसनिब्भरगेणं।
निअपहुणो भत्तेण, विवाहकिच्चाइ विहियाइ ।।१५०।।

सुरसुन्दरीविवाहो

इत्तो—रन्ना सुरसु दरीइ वीवाहणत्थमुज्भाओ।
पुट्ठो सोहणलग्ग, सो पभणइ राय ! निसुणेसु ।।१५१।।

अज्ज चिय दिणसुद्धी, अत्थि पर सोहण गय लग्ग।
तइया जइया मयणाइ, तीइ कुट्ठिअकरो गहिओ ।।१५२।।

राया भणेइ हु हु नाओ लग्गस्स तस्स परमत्थो।
अहुणावि हु निअधूय एय परिणावइस्सामि ।।१५३।।

रायाएसेण तओ, खणमित्तेणावि विहिअसामग्गि।
मतीहि पहिट्ठेहिं, विवाहपव्व समाढत्तं ।।१५४।।

तं च केरिसं —

ऊसिअतोरणपयडपडाय, वज्जिरतुरगहीरनिनाय।
नच्चिरचारुविलासिणिघट्ट, जयजयसद्दकरंत सुभट्ट ॥१५५॥

पट्ट सुयघडओज्जिमाल, कूरकपूरतवोल विसाल।
धवलदिअंतसुवासिणिवग्ग वुद्ढपुरंधिकहिअविहिमग्ग ॥१५६॥

मग्गणजणदिज्जंतमुदान, सयण सुवासिणिकयसम्माण।
मद्दलवायचउप्फललोय जणजणवयमणि जणियपमोय ॥१५७॥

कारिअसुरसुन्दरिसिणगार, सिंगारिअअरिदमनकुमार।
हथलेवइ मंडलविहिचग करमोयणं करिदाणसुरंग ॥१५८॥

एवं विहिअविवाहो, अरिदमणो लद्धहयगयसणाहो।
सुरसुंदरीसमेओ, जा निग्गच्छइ पुरवरीओ ॥१५९॥

ता भणइ सयललोओ, अहोऽणुरुवो इमाण संजोगो।
धन्ना एसा सुरसुंदरी य जीए वरो एसो ॥१६०॥

केवि पससंति निवं, केवि वरं केवि सुंदरिं कन्नं।
केवि तीएँ उज्झायं, केवि पससंति सिवधम्मं ॥१६१॥

सुरसुंदरिसम्माण, मयणाइ विडंबणं जणो दट्ठु।
सिवसासणप्पसंसं, जिणसासणनिंदणं कुणइ ॥१६२॥

सीलमहिमा

निअपेडयस्स मज्झे, रयणीए ऊबरेण सा मयणा।
भणिआ भद्दे! निसुणसु, इमं अजुत्तं कयं रन्ना ॥१६३॥

तहवि न किंपि विणट्ठं, अज्जवि तं गच्छ कमवि नररयणं।
जेण होइ न विहलं, एयं तुह रूवनिम्भाणं ॥१६४॥

इअ पेडयस्स मज्झे, तुज्झवि चिट्ठतिआइ नो कुसलं।
पायं कुसंगजणिअं, मज्झवि जायं इमं कुट्ठं ॥१६५॥

तो तीए मयणाए, नयणंसुयनीरकलुसवयणाए।
पइपाएसु निवेसिअसिराइ भणिअं इमं वयणं ॥१६६॥

सामिअ! सव्वं महं आइसेसु किंचेरिसं पुणो वयणं।
नो भणियव्वं जं दूहवेइ महं माणसं एयं ॥१६७॥

अन्नं च-पढमं महिलाजम्मं, केरिसयं तंपि होइ जइ लोए।
सीलविहूणं नूणं, ता जाणह कंजिअं कुहिअं ॥१६८॥

सील चिअ महिलाण, विभूषण सीलमेव सव्वस्स ।
सील जीवियसरिस, सीलाउ न सुदर किपि ।।१६६।।

ता सामिअ ! आमरण, मह सरण तसि चेव नो अन्नो ।
इअ निच्छिय वियाणह, अवर ज होइ त होउ ।।१७०।।

एव तीए अइनिच्चलाइ दढसत्तपिक्खणनिमित्त ।
सहसा सहस्सकिरणो, उदयाचलचूलिअ पत्तो ।।१७१।।

मयणाए वयणेण, सो उवरराणओ पभायमि ।
तीए सम तुरतो, पत्तो सिरिरिसहभवणमि ।।१७२।।

जिणवरपूआ

आणदपुलइ अगेहि तेहि दोहिवि नमसिओ सामी ।
मयणा जिणमयनिउणा, एव थोउ समाढत्ता ।।१७३।।

भत्तिभरनमिरसुरिदवद-वदिअपयपढमजिणदचद ।
चदुज्जलकेवलकित्तिपूर पूरियभुवणतरवेरिसूर ।।१७४।।

सूरुव्व हरिअतमतिमिरदेव देवासुरखेयरविहिअसेव ।
सेवागयगयमयरायपाय पायडियपणामह कयपसाय ।।१७५।।

सायरसमसमयामयनिवास, वासवगुरुगोयरगुणविकास ।
कासुज्जलसजमसीललील, लीलाइविहिअमोहावहील ।।१७६।।

हीलापरजतुसु अकयसाव, सावयजणजणिअआणदभाव ।
भावलयअलकिअ रिसहनाह, नाहत्तणु करिहरि दुक्खदाह ।।१७७।।

इअ रिसह जिणेसर भुवणदिणेसर, तिजयविजयसिरिपालपहो !
मयणाहिअ सामिअ सिवगइगामिअ, मणह मणोरह पूरिमहो ।।

एव समाहिलीणा, मयणा जा थुणइ ताव जिणकठा ।
करठिअफलेण सहिआ उच्छलिआ कुसुमवरमाला ।।१७६।।

मयणावयणाओ उबरेण सहसत्ति त फल गहिअ ।
मयणाइ सय माला, गहिया आणदिअमणाए ।।१८०।।

भणिअ च तीइ सामिअ फिट्टिस्सइ एस तुम्ह तणुरोगो ।
जेणेसो सजोगो जाओ जिणवरकयपसाओ ।।१८१।।

तत्तो मयणा पइणा सहिआ मुनिचदगुरुसमीवमि ।
पत्ता पमुइअचित्ता भत्तीए नमइ तस्स पए ।।१८२।।

गुरुणो य तया करुणापरित्तचित्ता कहति भवियाण ।
गभीरसजलजलहरसरेण धम्मस्स फलमेव ॥१८३॥

सुमाणुमत्त सुकुल सुरूव, सोहग्गमाऽग्गमतुच्छमाउ ।
रिद्धि च विद्धि च पहुत्त कित्ती पुन्नप्पसाएण लहन्ति सत्ता ॥१८४।

णवपयाण-आराहण

इच्चाइ देसणते गुरुणो पुच्छति परिचिय मयण ।
वच्छे कोऽय धन्नो वरलक्खणलक्खिअसुपुन्नो ? ॥१८५॥

मयणाइ रुअतीए कहिओ सव्वोवि निअयवुत्त तो ।
विन्नत च न अन्न भयव ! मह किपि अत्थि दुह ॥१८६॥

एय चिअ मह दुक्ख ज मिच्छादिट्ठिणो इमे लोआ ।
निदति जिणहधम्म सिवधम्म चेव ससति ॥१८७॥

मा पहु कुणह पसाय किपि उवाय कहेह मह पइणो ।
जेणेस दुट्ठवाही जाइ खय लोअवाय च ॥१८८॥

पभणेइ गुरु भद्दे ! साहूण न कप्पए हु सावज्ज ।
कहिउ किपि तिगिच्छ विज्ज मत च तत च ॥१८९॥

तहवि अणवज्जमेग समत्थि आराहण नवपयाण ।
इहलोइअपरलोइअसुहाणमूल जिणुद्दिट्ठ ॥१९०॥

अरिह सिद्धायरिआ उज्झाया साहुणो य सम्मत्त ।
नाण चरण च तवो, इअ पयनवग परमतत्त ॥१९१॥

एएहि नवपएहिं, रइअ अन्न न अत्थि परमत्थ ।
एएसु च्चिअ जिणसासणस्स सव्वस्स अवयारो ॥१९२॥

जे किर सिद्धा, सिज्झति जे अ, जे आवि सिज्झइस्सति ।
ते सव्वेवि हु नवपयझाणेण चेव निब्भत ॥१९३॥

एएसि च पयाण पयमेगयर च परम भत्तीए ।
आराहिऊण णेगे सपत्ता तिजयसामित्त ॥१९४।

एएहि नवपएहि सिद्ध सिरिसिद्धचक्कमेअ ज ! ।
तस्सुद्धारो एसो पुव्वायरिएहिं निद्दिट्ठो ॥१९५॥

• ☐ •

३. लीलावईकहा

मंगलाचरण

णमह सारोससुयरिसण सच्चविय कररुहावलीजुयल ।
हिरण्णक्ससवियडोरत्थलट्ठिदलगब्भिण्ण हरिणो ।।१।।

त णमह जस्स तइया तइयवय तिहुयण तुलतस्स ।
सायारमणायारे अप्पणमप्प च्चिय णिसण्ण ।।२।।

तस्सेय पुणो पणमह णिहुय हलिणा हसिज्जमाणस्स ।
अपहुत्त-देहली-लघणद्धवह-सठिय चलण ।।३।।

सो जयउ जस्स पत्तो कठे रिट्ठासुरस्स घणकसणो ।
उप्पायपवड्ढियकालवासकरणी भुयप्फलिहो ।।४।।

रक्खतु वो महोवहिसयणे सेसस्स फेणमणिमऊहा ।
हरिणो सिरिसिहिणोत्थयकोत्थुहकदकुरायारा ।।५।।

हरिणो जमलज्जुणरिट्ठकेसिकसासुरिंद-सेलाण ।
भजणवलणवियारणकड्ढणधरणे भुए णमह ।।६।।

कक्कसभुयकोप्परपूरियाणणो कढिणकरकयावेसो ।
केसि-किसोर-कयत्थण-कउज्जमो जयइ महुमहणो ।।७।।

सो जयउ जेण तयलोय-कवलणारभ-गब्भिय मुहेण ।
ओसावणि व्व पीया सत्त वि चुलुय-ट्ठिया उयही ।।८।।

गोरीए गुरुभरक्कतमहिससीसट्ठिभजणुद्धरिय ।
णमह णमतसुरासुरसिरमसिणियणेउर चलण ।।९।।

चडीए कढिणकोयडकड्ढणायाससेय सलिलुल्लो ।
णित कुसभुप्पीलो रक्खउ वो कचुओ णिच्च ।।१०।।

ससहरकरसवलिया तुम्ह सुरणिण्णयाएणासतु ।
पाव फुरतरुद्दट्टहासधवला जलुप्पीला ।।११।।

सज्जण-दुज्जण

जयति ते सज्जणभाणुणो सया वियारिणो जाण सुवण्णसचया ।
अइट्ठदोसा वियसति सगमे कहाणुबधा कमलायरा इव ।।१२।।

सो जयउ सुयणा वि दुज्जणा इह विणिम्मिया भुयणे ।
ण तमेण विणा पावति चद-किरणा वि परिहाव ।।१३।।

दुज्जण-सुयणाण णमो णिच्च पर-कज्ज-वावड-मणाण ।
एक्के भसण-सहावा पर दोस-परम्मुहा अण्णे ।।१४।।

अहवा ण को वि दोसो दीसइ सयलम्मि जीय-लोयम्मि ।
सव्वो च्चिय सुयण-यणो ज भणिमो त णिसामेह ।।१५।।

सज्जण-सगेण वि दुज्जणस्स ण हु कलुसिमा समोसरइ ।
ससि-मडल-मज्झ-परिट्ठिओ वि कसणो च्चिय कुरगो ।।१६।।

[दुज्जण-सगेण वि सज्जणस्स णास ण होइ सीलस्स ।
तीए सलोणे वि मुहे तह चि हु अहरो महु सवइ ।।१७।।]

अलमवरेणासबधालाव-परिग्गहाणुबधेण ।
बाल-जण-विलसिएण व णिरत्थ-वाया-पसगेण ।।१८।।

कविउलवण्णण

आसि तिवेय-तिहोमग्गि-सग-सजणिय-तियस-परिओसो ।
सपत्त-तिवग्ग-फलो बहुलाइच्चो त्ति णामेण ।।१९।।

अज्ज वि महग्गि-पसरिय-धूम-सिहा-कलुसिय व वच्छयल ।
उव्वहइ मय-कलकच्छलेण मयलछणो जस्स ।।२०।।

तस्स य गुण-रयण-महोवहीए एक्को सुओ समुप्पण्णो ।
भूसणभट्टो णामेण णियय-कुल-णहयल-मयको ।।२१।।

जस्स पिय-बधवेहि व चउवयण-विणिग्गएहि वेएहि ।
एक्क-वयणारविंद-ट्ठिएहिं बहु-मण्णिओ अप्पा ।।२२।।

तस्स तणएण एय असार-मइणा वि विरइय सुणह ।
कोऊहलेण लीलावइ त्ति णाम कहा-रयण ।।२३।।

त जह मियक-केसरि-कर पहरण-दलिय-तिमिर-करि-कु भे ।
विक्खित्त-रिक्ख-मुताहलुज्जले सरय-रयणीए ।।२४।।

सरअवण्णण :

जोण्हाऊरिय-कोस-कंति-धवले सव्वग-गधुक्कडे
णिव्विग्घ घर-दीहियाए सुरस वेवतओ मासल ।
आसाएइ सुमजु-गु जिय-रवो तिगिच्छि-पाणासव
उम्मिल्लत-दलावली परियओ चदुज्जुए छप्पओ ।।२४।।

इमिणा सरएण ससी ससिणा वि णिसा णिसाए कुमुय-वरण ।
कुमुय-वणेण व पुलिण पुलिणेण व सहइ हस-उल ।।२५।।

णव-बिस-कसायससुद्ध-कठ-कल-मणोहरो णिसामेह ।
सरय-सिरि-चलण-णेउर-राओ इव हस-सलावो ।।२६।।

सचरइ सीयलायंत-सलिल-कल्लोल-सग-णिव्वविओ ।
दर-दलिय-मालई-मुद्ध-मउल-गधुद्धुरो पवणो ।।२७।।

एसा वि दस-दिसा-वहु वयण-विसेसावलि व्व सर-सलिले ।
विम्वल-तरग-दोलंत-पायवा सहइ वण-राई ।।२८।।

एयाइ दियस-सभावणेक्क-हियाइं पेच्छह घडंति ।
आमुक्क-विरह-वयणाइ चक्कवायाइ वावीसु ।।२९।।

एय उय वियसिय-सत्तवत्त-परिमल-विलोहविज्जत ।
अविहाविय-कुसुमासाय-विमुहिय भमइ भमर-उल ।।३०।।

चदुज्जुयावयस पवियभिय-सुरहि-कुवलयामोय ।
णिम्मल-तारालोय पियइ व रयणी-मुह चदो ।।३१।।

ता किं बहुणा पयपिएण—

अइ-रमणीया रयणी सरओ विमलो तुम च साहीणो ।
अणुकूल-परियणाए मण्णे त णत्थि ज णत्थि ।।३२।।

कहा-सरूवं :

ता किं पि पओस-विणोय-मत्त-सुहय म्ह मणहरुल्लाव ।
साहेह अउव्व-कह सुरस महिला-यण-मणोज्ज ।।३३।।

त मुद्धमुहवुल्लाहि वयणय णिसुणिऊण णे भणिय ।
कुवलय-दलच्छि, एत्थ कईहि तिविहा कहा भणिया ।।३४।।

त जह दिव्वा तह दिव्व-माणुसी माणुसी तह च्चेय ।
तत्थ वि पढमेहिं कय कईहिं किर लक्खण किं पि ।।३५।।

अण्ण सक्कय-पायय-सकिण्ण-विहा सुवण्ण-रइयाओ ।
सुव्व तिमहा-कई-पुगवेहि विविहाउ सुकहाओ ।।३६।।

ताण मज्झे अम्हारिसेहिं अबुहेहिं जाउ सीसति ।
ताउ कहाओ ण लोए मयच्छि पावति परिहाव ।।३७।।

ता किं म उवहासेसि सुयणु असुएण सद्द-सत्थेण ।
उल्लविउ पि ण तीरइ किं पुण वियडो कहा-वधो ।।३८।।

भणिय च पिययमाए पिययम किं तेण सद्द-सत्थेण ।
जेण सुहासिय-मग्गोभग्गो अम्हारिस-जणस्स ।।३९।।

उवलब्भइ जेण फुड अत्थो अकयत्थिएण हियएण ।
सो चेय परो सद्दो णिच्चो किं लक्खणेणम्ह ।।४०।।

एमेय मुद्ध-जुयई-मणोहर पाययाए भासाए ।
पविरल-देसि-सुलक्ख कहसु कह दिव्व-माणुसिय ।।४१।।

तं तह सोऊण पुणो भणिय उब्बिम-बाल-हरिणच्छि ।
जइ एव ता सुव्वउ सुसधि-बध कहा-वत्थु ।।४२।।

कहारम्भं

चउ-जलहि-वलय-रसणा-णिबद्ध-वियडोवरोह-सोहाए ।
सेसक-सुप्परिट्ठिय-सव्वगुव्वूढ-भुवणाए ।।४३।।

पलय-वराह-समुद्धरण-सोक्ख-सपति-गरुय-भवाए ।
णाणा-विह-रयणालकियाए भयवईए पुहईए ।।४४।।

णीसेस-सस्स-सपत्ति-पमुइयासेस-पामर-जणोहो ।
सुव्वसिय-गाम-गोहण-भभा-रव-मुहलिय-दियतो ।।४५।।

अइ-सुहिय-पाण-आवाण-चच्चरी-रव-रमाउलारामो ।
णीसेस-सुह-णिवासो आसय-विसहो त्ति विक्खाओ ।।४६।।

जो सो अविउत्तो कय-जुअस्स धम्मस्स सणिवेसो व्व ।
सिक्खा-ठाण व पयावइस्स सुकयाण आवासो ।।४७।।

सासणमिव पुण्णाण जम्मुप्पत्ति व्व सुह-समूहाण ।
आयरिसो आयाराण सइ सुछेत्त पिव गुणाण ।।४८।।

सुसणिद्ध-घास-सतुट्ठ-गोहणालोय-मुइय-गोयालो ।
गेयारव-भरिय-दिसो वर-वल्लइ-वेणु-णिवहेसु ।।४९।।

दूरुण्णय-गरुय-पत्रोहराओ कोमल-मुणाल-वाहीग्रो ।
सइ महुर-वाणियाग्रो जुवईग्रो णिण्णयाउ व्व ।।५०।।

अच्छउ ता णिय छेत्त सेसाइ वि जत्थ पामर-वहूहि ।
रक्खिज्जाति मणोहार-गेयारव-हरिय-हरिणाहि ।।५१।।

णयर

इय एरिसस्स सु दरि मज्झम्मि सुजणवयस्स रमणीय ।
णीसेस-सुह-णिवास णयर णाम पइट्ठाण ।।५२।।

त च पिए वर-णयर वण्णिज्जइ जा विहाइ ता रयणी ।
उद्देसो सखेवेण किं पि वोच्छामि णिसुणेसु ।।५३।।

जत्थ वर-कामिणी-चलण-णेउरारावमणुसरतेहिं ।
पडिराविज्जइ मुह-मुक्क-किसलय रायहसेहिं ।।५४।।

जण्णग्गि-धूम-सामालिय-णहयलालोयणेक्क-रसिएहि ।
णच्चिज्जइ ससहर-मणि-सिलायले-घर-मयूरेहि ।।५५।।

ण तरिज्जइ घर-मणि-किरण-जाल पडिरुद्ध-तिमिर-णियरम्मि ।
अहिसारियाहि आमुक्क-मडणाहि पि सचरिउ ।।५६।।

साणूर-थूहिया-धय-णिरतरतरिय-तरणि-कर-णियरे ।
परिसेसियायवत्त गम्मइ सगीय-विलयाहि ।।५७।।

सरसावराह-परिकुविय-कामिणी-माण-मोह-लपिक्क ।
कलयठि-उल चिय कुणइ जत्थ दोच्च पियाण सया ।।५८।।

णिद्दय-रय-रहस-किलत-कामिणी-सेय-जल-लवुप्फुसणा ।
पिज्जति जत्थ णासजलीहि उज्जाण-गधवहा ।।५९।।

घर-सिर-पसुत्त-कामिणि-कवोल-सकत-ससिकलावलय ।
हसेहि अहिलसिज्जइ मुणाल-सद्धालुएहि जहि ।।६०।।

मरहट्टिया पत्रोहर-हलिद्द-परिपिंजरबुवाहीए ।
धुव्वति जत्थ गोला-णईए तद्दियसिय पाव ।।६१।।

अह णवर तत्थ दोसो ज गिम्ह-पत्रोस-मल्लियामोग्रो ।
अणुणय-सुहाइं माणसिणीण भोत्तु च्चिय ण देइ ।।६२।।

[अह णवर तत्थ दोसो ज फलिह-सिलायलम्मि तरुणीण ।
मयण-वियारा दीसति वाहिर-ठिएहि त्ति जणेहिं ।।६२/१।।]

अह णवर तत्थ दोसो ज वियसिय-कुसुम-रेणु-पडलेण ।
मइलिज्जति समीरण-वसेण घर-चित भित्तीओ ।।६३।।

राया •

तत्थेरिसम्मि णयरे णीसेस-गुणावगूहिय-सरीरो ।
भुवण-पवित्थरिय-जसो राया सालाहणो णाम ।।६४।।

जो सो अविग्गहो वि हु सव्वगावयव-सु दरो सुहओ ।
दुद्दसणो वि लोयाण लोयाणाणद-सजणणो ।।६५।।

कुवई वि वल्लहो पणइणीण तह णयवरो वि साहसिओ ।
परलोय-भीरुओ वि हु वीरेक्क-रसो तह च्चेय ।।६६।।

सूरो वि ण सत्तासो सोमो वि कलक-वज्जिओ णिच्च ।
भोई वि ण दोजीहो तु गो वि समीव-दिण्ण-फलो ।।६७।।

वहुलत-दिणेसु ससि व्व जेण वोच्छिण्ण-मडल-णिवेसो ।
ठविओ तणुयत्तण-दुक्ख-लक्खिओ रिउ-जणो सव्वो ।।६८।।

णिय-तेय-पसाहिय-मडलस्स ससिणो व्व जस्स लोएण ।
अक्कत-जयस्स जए पट्ठी ण परेहि सच्चविया ।।६९।।

ओसहि-सिहा-पिसगाण वोलिया गिरि-गुहासु रयणीओ ।
जस्स पयावाणल-कति-कवलियाण पिव रिऊण ।।७०।।

आलिहियइ जो वम्मह-णिभेण णिय-वास-भवण भित्तीसु ।
लडह-विलयाहि णह-मणि-किरणारुणियग्ग-हत्थेहि ।।७१।।

हियए च्चेय विरायति सुइर-परिचिंतिया वि सुकईण ।
जेण विणा दुहियाण व मणोरहा कव्व-विणिवेसा ।।७२।।

वसन्तवण्णणं :

इय तस्स महा-पुहईसरस्स इच्छा-पहुत्त-विहवस्स ।
कुसुमसराउह-दूओ व्व आगओ सुयणु महु-मासो ।।७३।।

पत्थाण पढमागय-मलयाणिल-पिसुणिय वसतस्स ।
वहुलच्छलत-कोइल-रवेण साहति व वणाइ ।।७४।

मउलत-मउलिएसु वियसिय-वियसत कुसुम-णिवहेसु ।
सरिस च्चिय ठवइ पय वणेसु लच्छी वसतस्स ।।७५।।

बहुएहि वि कि परिवडिढ्एहि बाणेहि कुसुम--चावस्स ।
एक्केण च्चिय चूयकुरेण कज्ज ण पज्जत ।।७६।।

घिप्पइ कणयमय पिव पसाहण जणिय-तिलय-सोहेण ।
अब्भहिय-जणिय-सोह कणियार-वण वसतेण ।।७७।।

वियसत विविह वणराइ कुसुमसिरिपरिगया महा-तरुणो ।
कि पुण वियभमाणो ज ण कुणइ मल्लियामोओ ।।७८।।

पढम च्चिय कामि यणस्स कुणइ मउयाइ पाडलामोओ ।
हिययाइ सुह पच्छा विसति सेसा वि कुसुम-सरा ।।७९।।

पज्जत-वियासुव्वेल्ल-गु दि पब्भार-णूमिय दलाइ ।
पहियाण दुरालोयाइ होति मायगहणाइ ।।८०।।

अपहुत्त-वियासुड्डीण भमर-विच्छाय-दल उडुब्भेय ।
कु द लइयाए वियलइ हिम-विरहायासिय कुसुम ।।८१।।

आवज्झत-फलुप्पक-थोय विहडत सधि-बधेहि ।
मद पवणाहएहि वि परिगलिय सिदुवारेहि ।।८२।।

थोऊससत-पकय-मुहीए णिव्वण्णिए वसतम्मि ।
वोलीण-तुहिणभरसुत्थियाए हसिय व णलिणीए ।।८३।।

मलय-समीर-समागम-सतोस-पणच्चिराहि सव्वत्तो ।
वाहिप्पइ णव-किसलय-कराहि साहाहि महु-लच्छी ।।८४।।

दीसइ पलास-वण-वीहियासु पप्फुल्ल-कुसुमणिवहेण ।
रत्त बर-णेवच्छो णव-वरइत्तो व्व महुमासो ।।८५।।

परिवड्ढइ चूय-वणेसु विसइ णव-माहवी-वियाणेसु ।
लुलइ व ककेलि दलावलीसु मुइउ व्व महुमासो ।।८६।।

अण्णण्ण-वणलया-गहिय-परिमलेणाणिलेण छिप्पती ।
कुसुमसुएहि रुयइ व परम्मुही तरुण चूय-लया ।।८७।।

वियसिय णीसेस वणतराल परिसठिएण कामेण ।
विवसिज्जइ कुसुम सरेहि लद्ध पसरेहि कामियणो ।।८८।।

इय वम्मह वाण-वसीकयम्मि सयलम्मि जीव-लोयम्मि ।
महु-सिरि-समागमत्थाण-मडवं उवगओ राया ।।८९।।

अह णवर तत्थ दोसो ज वियसिय-कुमुम-रेगु-पडलेण ।
मइलिज्जति समीरण-वसेण घर-चित भित्तीग्रो ।।६३।।

राया •

तत्थेरिसम्मि गयरे णीसेस-गुणावगूहिय-सरीरो ।
भुवण-पवित्थरिय-जसो राया सालाहणो णाम ।।६४।।

जो सो अविग्गहो वि हु सव्वगावयव-सु दरो सुहग्रो ।
दुद्दसणो वि लोयाण लोयाणाणद-सजणणो ।।६५।।

कुवई वि वल्लहो पणइणीण तह णयवरो वि साहसिग्रो ।
परलोय-भीरुग्रो वि हु वीरेक्क-रसो तह च्चेय ।।६६।।

सूरो वि ण सत्तासो सोमो वि कलक-वज्जिग्रो णिच्च ।
भोई वि ण दोजीहो तु गो वि समीव-दिण्ण-फलो ।।६७।।

वहुलत-दिणेसु ससि व्व जेण वोच्छिण्ण-मडल-णिवेसो ।
ठविग्रो तणुयत्तण-दुक्ख-लक्खिग्रो रिउ-जणो सव्वो ।।६८।।

णिय-तेय-पसाहिय-मडलस्स ससिणो व्व जस्स लोएण ।
अक्कत-जयस्स जए पट्ठी ण परेहि सच्चविया ।।६९।।

ओसहि-सिहा-पिसगाण वोलिया गिरि-गुहासु रयणीग्रो ।
जस्स पयावाणल-कति-कवलियाण पिव रिऊण ।।७०।।

आलिहियइ जो वम्मह-णिभेण णिय-वास-भवण भित्तीसु ।
लडह-विलयाहिं णह-मणि-किरणारुणियग्ग-हत्थेहि ।।७१।।

हियए च्चेय विरायति सुइर-परिचिंतिया वि सुकईण ।
जेण विणा दुहियाण व मणोरहा कव्व-विणिवेसा ।।७२।।

वसन्तवण्णण •

इय तस्स महा-पुहईसरस्स इच्छा-पहुत्त-विहवस्स ।
कुसुमसराउह-दूग्रो व्व आगग्रो सुयणु महु-मासो ।।७३।।

पत्थाण पढमागय-मलयाणिल-पिसुणिय वसतस्स ।
बहुलच्छलत-कोइल-रवेण साहति व वणाइ ।।७४।।

[गहिऊण चूय-मजरि कीरो परिभमइ पत्तला-हत्थो ।
ओसरस सिसिर-णरवइ पुहई लद्धा वसतेण ।।७४/१।।]

मउलत-मउलिएसु वियसिय-वियसत कुसुम-णिवहेसु ।
सरिस चिय ठवइ पय वणेसु लच्छी वसतस्स ।।७५।।

वहुएहि वि कि परिवडि्ढएहि वाणेहि कुसुम--चावस्स ।
एक्केण चिय चूयकुरेण कज्ज ण पज्जत ।।७६।।

घिप्पइ कणयमय पिव पसाहण जणिय-तिलय-सोहेण ।
अब्भहिय-जणिय-सोह कणियार-वण वसतेण ।।७७।।

वियसत विविह वणराइ कुसुमसिरिपरिगया महा-तरुणो ।
कि पुण वियभमाणो ज ण कुणइ मल्लियामोओ ।।७८।।

पढम चिय कामि यणस्स कुणइ मउयाइ पाडलामोओ ।
हिययाइ सुह पच्छा विसति सेसा वि कुसुम-सरा ।।७९।।

पज्जत-वियासुव्वेल्ल-गु दि पब्भार-णमिय दलाइ ।
पहियाण दुरालोयाइ होति मायगहणाइ ।।८०।।

अपहुत्त-वियासुड्डीण भमर-विच्छाय-दल उडुब्भेय ।
कु द लइयाए वियलइ हिम-विरहायासिय कुसुम ।।८१।।

आबज्झत-फलुप्पक-थोय विहडत सधि-बधेहि ।
मद पवणाहएहि वि परिगलिय सिदुवारेहि ।।८२।।

थोऊससत-पकय-मुहीए णिव्वण्णिए वसतम्मि ।
वोलीण-तुहिणभरसुत्थियाए हसिय व णलिणीए ।।८३।।

मलय-समीर-समागम-सतोस-पणच्चिराहिं सव्वत्तो ।
वाहिप्पइ णव-किसलय-कराहि साहाहिं महु-लच्छी ।।८४।।

दीसइ पलास-वण-वीहियासु पप्फुल्ल-कुसुमणिवहेण ।
रत्त बर-णेवच्छो णव-वरइत्तो व्व महुमासो ।।८५।।

परिवड्ढइ चूय-वणेसु विसइ णव-माहवी-वियाणेसु ।
लुलइ व ककेलि दलावलीसु मुइउ व्व महुमासो ।।८६।।

अण्णण्ण-वणलया-गहिय-परिमलेणाणिलेण छिप्पती ।
कुसुमसुएहि रुयइ व परम्मुही तरुण चूय-लया ।।८७।।

वियसिय णीसेस वणतराल परिसठिएण कामेण ।
विवसिज्जइ कुसुम सरेहि लद्ध पसरेहि कामियणो ।।८८।।

इय वम्मह बाण-वसीकयम्मि सयलम्मि जीव-लोयम्मि ।
महु-सिरि-समागमत्थाण-मडव उवगओ राया ।।८९।।

सेवागय-सय-सामत-मउड-माणिक्क-किरण-विच्छुरिए ।
सीहासणम्मि बदिण-जय-सद्द-सम समासीणो ।।९०।।

परियरिओ वार-विलासिणीहि सुर-सु दरीहि व सुरेसो ।
कणयायलो व्व आसा-वहूहि सइ वियसियासाहि ।।९१।।

अह सो एक्काए सम णर-णाहो चदेलहणामाए ।
सप्परिहास सुमणोहर च सुहय समुल्लवइ ।।९२।।

वासभवण

अइ चदलेहे ण णियसि मलयाणिल-कुसुम-रेणु-पडहत्थ ।
कामेण भुयण-वास व विरइय दस-दिसा-यवक ।।९३।।

ता कीस तुम केणावि मयण-सर-वधुणा मयक-मुहि ।
चिचिल्लया सि सव्वायरेण सव्वगिय अज्ज ।।९४।।

णव-चपय-णिवेसियाणणो केण तुह णिडाल-यले ।
सज्जीवो विव लिहिओ महु-पाण-परव्वसो महुओ ।।९५।।

केण वि महग्घ-मयणाहि-पक-जोएण तुह कवोलेसु ।
लिहियाओ पत्तलेहाओ मयण-सर वत्तणीओ व्व ।।९६।।

केण व कइया सहयार-मजरी तुह कवोल-पेरते ।
कर-फस-विहाविय-कुसुम-सचया सुयणु णिम्मविया ।।९७।।

केणज्ज तुज्झ तवणिज्ज-पु ज-पीए पओहरुच्छगे ।
पत्तत्त पत्त पत्त-लच्छि पत्त लिहतेण ।।९८।।

एक्कक्कम-वयण-मुणाल-दाण-वलियद्ध-कधरा-बध ।
चलण-कमलेसु लिहिय केणेय हस-मिहुण-जुय ।।९९।।

इय केण णियय-विण्णाण-पयडणुप्पण्ण-हियय-भावेण ।
अविहाविय-गुण-दोसेण पाइया सप्पिणो छीर ।।१००।।

□ □ □

गज्जसंगहो

१. भारियासीलपरिक्खा

अत्थि अवंति नाम जणवओ। तत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धित्थिमियसमिद्धा। तत्थ राया जितसत्तू नाम। तस्स रण्णो धारिणी नाम देवी।

तत्थ य उज्जेणीए नयरीए दसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम। भज्जा य से चंदसिरी। तस्स पुत्तो चंदसिरीए अत्तओ समुद्ददत्तो नाम गुरूवो।

सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासंपत्तो भगवयगीयासु सुत्तओ अत्थओ य विदितपरमत्थो। सो य तं समुद्दत्तं दारगं गिहे परिव्वायगस्स कलागहणत्थे ठवइ "अन्नसालासु सिक्खंतो अण्णपासंडियदिट्ठी हवेज्जा"।

तओ सो समुद्ददत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहणं करेमाणो अण्णया कयाइ 'फलगं ठवेमि' त्ति गिहं अणुपविट्ठो। नवरिं च पासइ नियग-जणणी तेण परिव्वायगेण सद्धिं असब्भं आयरमाणी। ततो सो निग्गओ इत्थीसु विरागसमावण्णो, 'न एयाओ कुलं सीलं वा रक्खति' त्ति चिंतिऊण हियएण निब्बंधं करेइ, जहा न मे वीवाहेयव्वं ति। तओ से समत्तकलस्स जोवणत्थस्स पिया सरिसकुल-रूव-विहवाओ दारियाओ वरेइ। सो य ता पाडिसेहेइ। एवं तस्स कालो वच्चइ।

अण्णया तस्स सम्मएण पिया सुरट्ठं आगओ ववहारेण। गिरिनयरे धणसत्थवाहस्स धूयं धणसिरिं पडिरूवेण सुंकेण समुद्ददत्तस्स वरेइ। तस्स य अन्नायं एवं तिहिंगहणं काऊण नियनयरं आगओ। तओ तेण भणिओ समुद्ददत्तो— "पुत्त! मम गिरिनयरे भंडं अच्छइ, तत्थ तुमं सवयसो वच्च। तओ तस्स भंडस्स विणिओगं काहामो" त्ति वोत्तूण वयसाण य से दारियासंबंधं सविदितं कयं।

तओ ते सविभवाणुरूवेण निग्गया, कहाविसेसेण य पत्ता गिरिनयरं। बाहिरओ य ठाइऊण धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा ते आगओ वरो' त्ति।

तओ तेण सविभवाणुरूवा आवासा कया, तत्थ य आवासिया। रत्तीए आगया भोयणववएसेण धणसत्थवाहगिहे, धणसिरीए पाणिग्गहण कारिओ।

तओ सो धणसिरीए वासगिह पविट्ठो। तओ णेण पइरिक्क जाणिऊण तीसे धणसिरीए चम्मर्हि दाऊण निग्गओ, वयसाण च मज्झे सुत्तो। ततो पभायाए रयणीए सरीरावस्सकहेउ सवयसो चेव निग्गओ बहिया गिरिनयरस्स। तेसि वयसाण अदिट्ठओ चेव नट्ठो।

तओ से वयसेहि आगतूण [सागरचदस्स] धणसत्थवाहस्स य परिकहिय 'गओ सो'। तेहि समततो मगिओ, न दिट्ठो। तओ ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाह आपुच्छिऊण गया नियगनयर।

इयरो वि समुद्ददत्तो देसतराणि हिडिऊण केणइ कालेण आगओ गिरिनयर कप्पडियवेसच्छण्णो परुढनह-केसु-मसु-रोमो। दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आरामगओ। तओ तेण पणमिऊण भणिओ—"अह तुब्भ आरामकम्मकरो होमि।"

तेण य भणिओ—"भणसु,, का ते भत्ती दिज्जउ" त्ति? तओ तेण भणिय—"न मे भईए कज्ज। अह तुज्झ पसादाभिकक्खी। मम तुट्ठिदाण देज्जह" त्ति।

एव पडिस्सुए आरामे कम्म आरद्धो काउ। तओ सो रुक्खाउव्वेयकुसलो त आराम कइवएहि दिवसेहि सव्वोउयपुप्फ-फलसमिद्ध करेइ।

तओ सो धणसत्थवाहो त आरामसिरि पासिऊण पर हरिसमुवगओ चितिय च णेण—"किमेएण गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छतेण? वर मे आवारीए अच्छउ" त्ति।

तओ ण्हविय—पसाहिओ दिण्णवत्थजुयलो ठविओ आवणे।

तओ तेण आय-वयकुसलेण गधजुत्तिणिउणत्तणेण पुरजणो उम्मत्ति गाहिओ। तओ पुच्छिओ जणेण—"कि ते नामधेय?"

पभणइ य—"विणीयओ त्ति मे नामधेय।"

एव सो विणियओ विणयसपन्नो सव्वनयरस्स वीससणिज्जो जाओ।

तओ तेण सत्थवाहेण चितिय—"न खेम मे एस आवणे य अच्छतो। मा एस रायसविदितो हवेज्ज, ततो राएण हीरइ त्ति। वरमेस गिहे भडारसालाए अच्छतो।"

तओ तेण सगिह नेऊण परियण च सद्दावेऊण भणिय—"एस वो विणीयओ ज देइ त मे पडिच्छियव्व, न य से आणा कोवेयव्व त्ति।"

तम्रो सो विणीयम्रो घरे अच्छइ, विसेसम्रो य धणसिरीए ज चेडीकम्म तं सयमेव करेइ। तम्रो धणसिरीए विणीयम्रो सव्ववीसभट्ठाणिम्रो जाम्रो।

तत्थ य नयरे रायसेवी एक्को डिडी परिवसइ। इम्रो व सा धणसिरी पुव्वावरण्हसमए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेण तबोल सभाणयती अच्छइ।

सो य डिडी ण्हाय—समालद्धो तस्स भवणस्स आसण्णेण गच्छइ। धणसिरीए तबोल निच्छूढ पडिय डिडिस्सुवरि। डिडिणा निज्झाइया य, दिट्ठा य णेण देवयभूया। तम्रो सो अणगवाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुम्रो सवुत्तो। चिंतिय च णेण—"एस विणीयम्रो एएसि सव्वप्पवेसी, एय उवतप्पामि। एयस्स पसाएण एईए सह समागमो भविस्सइ" त्ति।

तम्रो अण्णाया तेण विणीयम्रो नियगभवण नीम्रो। पूयासक्कार च काउ पायपडिएण विण्णविम्रो—"तहा चेट्ठसु, जेण मे धणसिरीए सह सजोग करेसि" त्ति।

तम्रो सो "एव होउ" त्ति वोतूण धणसिरीए सगास गम्रो। पत्थाव च जाणिऊण भणिया णेण धणसिरी डिडिवयण। तम्रो तीए रोसवसगाए भणिम्रो—

"केवल तुमे चेव एव सलत्त, अण्णो मम ण जीवतो" त्ति। तम्रो सो विइयदिवसे निग्गम्रो, दिट्ठो य डिडिणा भणियो णेण "कि भो वयस! कय कज्ज?" त्ति।

तम्रो तेण तव्वयण गूहमाणेण भणिय—"घत्तीह" ति। तम्रो पुणरवि तेण दाणमाणेण सगहिय करेत्ता विसज्जिम्रो।

तम्रो सो आगन्तूण धणसिरीए पुरम्रो विमणो तुण्हिक्को ठिम्रो अच्छइ। तम्रो तीए धणसिरीए तस्स मणोगय जाणिऊण भणिम्रो—

"किं ते पुणो डिडी किंचि भणइ?"

तेण भणिय—"आम" ति। तीए निवारिम्रो 'न ते पुणो तस्स दरिसण दायव्व।'

पुणो य पुच्छिज्जज्जमाणो तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। तम्रो तीए तस्स चित्तरक्ख करेतीए भणिम्रो—"बच्च, देहि से सदेस, जहा—'असोगवणियाए तुमे अज्ज पम्रोसे आगतव्व' ति।"

तेण तहा कय । तओ सा असोगवणियाए सेज्ज पत्थरेऊण जोगमज्ज च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ सो आगओ । तओ तीए सोवयार मज्ज से दिण्ण । सो य त पाऊण अचेयणसरीरो जाओ । ताए तस्सेव य सतिय असि कड्ढिऊण सीस छिण्ण । पच्छा विणीयओ भणिओ—"तुमे अणत्थ कारिया, तुज्झ वि सीस छिदामि" त्ति ।

तेण पायवडिएण मरिसाविया । विणियगेण धणसिरिसदिट्ठेण कूव खणित्ता निहिओ ।

तओ अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छिआ—"सु दरि ! तुम कस्स दिन्ना ?"

तीए भणिय—"उज्जेणिगस्स समुद्दत्तस्स दिण्णा"

तेण भणिय—"वच्चामि, अह त गवेसित्ता आणेमि" त्ति भणिउ निग्गओ । सपत्तो य नियगभवण पविट्ठो, दिट्ठो य अम्मापिऊहिं, तेहिं य कयसुपाएहि उवगूहिओ । तओ तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिओ 'आगओ से जामाउओ' त्ति ।

तओ सो वयसपरिगहिओ मातापिईहि य सद्धि ससुरकुल गओ । तत्थ य पुणरवि वीवाहो कओ ।

तओ सो अप्पाण गूहेतो धणसिरीए विणीयगवेसेण अप्पाण दरिसेइ । रयणीए य वासघर गओ दीव विज्झवेऊण तीए सह भोगे भु जइ । तओ तीए तस्स रूवदसणनिमित्त पच्छण्णदीव ठवेऊण तस्स रूवोवलद्धी कया । दिट्ठो य णाए विणीयओ । तओ तेण सव्व सवादित ।"

• •

२. गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लओ गहवती परिवसइ। सो य अण्णया कयाइ सगड धण्णभरिय काऊण, सगडे य तित्तिरिं पजरगय ववेत्ता पट्ठिओ नयर। नयरगतो य गधियपुत्तेहि दीसइ। सो य तेहि पुच्छिओ—"कि एय ते पजरए" त्ति।

तेण लविय—"तित्तिरि" त्ति।

तओ तेहि लविय—"किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ ?" तेण लविय—"आम, विक्कायइ"। तेहिं भणिओ—"किं लब्भइ ?" सागडिएण भणिय—'काहावणेण' ति।

तओ तेहिं कहावणो दिण्णो, सगड तित्तिर च घेतु पयत्ता। तओ तेण सागडिएण भण्णइ—"कीस एय सगड नेहि ?" ति।

तेहिं भणिय—"मोल्लेण लइयय" ति।

तओ ताण ववहारो जाओ, जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरिए सम।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग-खेम-निमित्त आणिएल्लिय बइल्ल घेत्तूण विक्कोसमाणो गतु पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएण दीसइ, पुच्छिओ य—"कीस विक्कोससि ?"

तेण लविय—"सामि! एव च एव च अइसंधिओ ह।"

तओ तेण साणुकपेण भणिय—"वच्च ताण चेव गेह एव च एव च भणाहि" त्ति।

तओ सो त वयण सोऊण गओ, गतूण य तेण भणिआ—"सामि! तुब्भेहि मम भडभरिओ सगडो हिओ ता इम पि बइल्ल गेण्हह। मम पुण सत्तुयादुपालिय देह, ज घेत्तूण वच्चामि त्ति। न य अह जस्स व तस्स व हत्थेण गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सव्वालकारभूसिया तीए दायव्वा, तओ मे परा तुट्ठी भविस्सइ। जीवलोगब्भतर व अप्पाण मन्निस्सामि।"

ततो तेहि सक्खो आहूया, भणिय च—"एव होउ" त्ति ।

ततो ताण पुत्तमाया सत्तुयादुपालिय घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया,, घेत्तूण य त पट्ठिओ ।

तेहि वि भणिओ—"किमेय करेसि ?"

तेण भणिय—"सत्तुदोपालिय नेमि ।"

ततो ताण सद्देण महाजणो सगहिओ । पुच्छिया—"किमेय ?" ति । ततो तेहि जहावत्त सव्व परिकहिय । समागयजणेण य मज्झत्थेण होऊण ववहार-निच्छओ सुओ, पराजिया य ते गवियपुत्ता । सो य किलेसेण त महिलिय मोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो ।

• •

३. नडपुत्तो रोहो

उज्जेणि नामेण वित्थिण्णसुरभवणा समुद्धुरधणोहा मालवमंडलमंडण-भूश्रा नयरी समत्थि। तत्थ जियसत्तू नामा रिउपक्खविक्खोहकारश्रो नयगुण-सणाहो सइ-गुणी सुदढपणश्रो नरनाहो श्रासी।

श्रह उज्जेणिसमीवे सिलागामो गामो। तत्थ य भरहो नडो। सो य तग्गामे पहू, नाडयविज्जाए लद्धपससो य। तस्स णामेण रोहश्रो, गामस्स य सोहश्रो सुश्रो।

श्रन्नया कयाइ वि मया रोहयमाया। तश्रो भरहो घरकज्जकरणकए श्रण्ण तज्जणणिं सठवेइ।

रोहश्रो य बालो। सा य तस्स हीलापरायणा हवइ। तो तेण सा भणिया—"श्रम्मो ज मम सम्म न वट्टसि, न त सु दर होही। एत्तो श्रह तह काह जह त मे पाएसु पडसि।"

एव कालो वच्चइ। श्रह श्रण्णया कयाइ वि ससिपयासधवलाए रयणीइ सो एगसज्जाए जणगसहिश्रो पासुत्तो। तो रयणिमज्झभागे उट्ठित्ता उब्भएण होऊण उच्चसरेण जणश्रो उट्ठाविय भासिश्रो जहा—"ताय! पेक्खसु एस कोइ परपुरिसो जाइ!"

स सहसुट्ठिश्रो जाव निद्दामोक्ख काऊण लोयणेहि जोएइ ताव तेण न दिट्ठो कोइ पुरिसो।

तत्तो रोहश्रो पुट्ठो—"वच्छा! सो कत्थ परपुरिसो?"

तेण जणश्रो भणिश्रो—"इमेण दिसाविभागेण सो तुरियतुरिय गच्छतो मे दिट्ठो।"

तश्रो सो महिल नट्ठसील परिकलिय तीए सिढिलायरो जाश्रो। सा पच्छायावपरिगया भासइ—

"वच्छ! मा एव कुणसु।"

रोहश्रो भणइ—"कह मम लट्ठ न वट्टसि?"

सा बेइ—"ग्रह लट्ठ वट्टिस्स। तग्रो तुम तहा कुणसु जहा एसो तुह जणग्रो मज्झ ग्रायर कुणइ।"

इम रोहेण पडिवन्न। सा वि तह वट्टिउ लग्गा।

ग्रण्णया कया वि रयणिमज्झे सुत्तुट्ठिग्रो सो जणग भणइ—"ताय! सो एस पुरिसो! पुरिसो!"

पिउणा पुट्ठ—"सो कहि" त्ति।

तग्रो नियय चेव छाय दसित्ता भणइ—"इम पेच्छह" त्ति।

स विलक्खमणो जाग्रो, पुच्छइ—"कि सो वि एरिसो ग्रासी?"

वालेण 'ग्राम' ति भणिय।

जणग्रो चितेइ—"ग्रव्वो! वालाण केरिसुल्लावा!" इय चितिऊण भरहो तीइ घणराग्रो सजाग्रो।

□□

४. अविचारिआएसे नरिंदस्स कहा

कत्थ वि नयरे एगेण नरिंदेण नियनयरे आएसो दिण्णो—"गाममज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयर-वासिणो जे लोगा संति तेहिं देवालए पविसिअ देवं वंदित्ता गंतव्वं, अन्नहा तस्स वहो भविस्सइ"।

एगो कुंभयारो तमाएसं अजाणिऊण गद्दहमारुहिय हत्थे लगुडं गिण्हित्ता महारायव्व गच्छइ। तेण देवालए सो देवो न वंदिओ। तओ रुट्ठा सुहडा तं गिण्हिऊण नरिंदग्गओ नएइरे। नरिंदेण सो वहाइ आइट्ठो।

वहथमे सो नीओ। मरणकाले तत्थ मरणं विणा पत्थणातियं किज्जइ पत्थणातिगं पूरिऊण वहिज्जइ, एवं नियमो निवेण कओ अत्थि। तदा सो कुंभारो वि पुच्छिज्जइ तए पत्थणातिगे किं जाइज्जइ, तेण उत्तं—"अहं नरिंदस्स समीवे मग्गिस्सामि। सो तत्थ नीओ।

नरिंदेण पत्थणातिगं मग्गं त्ति कहिअ। सो कहेइ—"एगं तु मज्झ गेहे अहुणा कुडुंवभोयणत्थं पन्नरलक्खरुप्पगाइं पेसेह। वीअं तु जे जणा वंदीकया ते सव्वे मोएह। निवेण सव्वं कयं। तइअपत्थणावसरे तेण—'सहामज्झत्थि-अनरिंदपमुहसव्वजणाण एएण लगुडेण पहारतिगकरणाय आएसो मग्गिओ'।

रण्णा चिंतिअ—अहं किं करोमि ?, एसो थूलो, दंडोवि थूलो, एगेण पहारेण अहं मरिस्सामि तओ 'अजुत्तो एसो आएसो' इअ चिंतित्ता वदणाएसो निक्कासिओ, उवरिं दाणमहिअं तस्स अप्पित्ता तस्स बुद्धीए संतुट्ठेण निवेण समाणं गिहे मोइओ। एवं अविआरिओ आएसो कयावि अप्पवहाय होइ।

□□

सा वेइ—"ग्रह लट्ठ वट्टिस्स। तम्रो तुम तहा कुणसु जहा एसो तुह जणग्रो मज्झ ग्रायर कुणइ।"

इम रोहेण पडिवन्न। सा वि तह वट्टिउ लग्गा।

ग्रण्णया कया वि रयणिमज्झे सुत्तुट्ठिग्रो सो जणग भणइ– "ताय! सो एस पुरिसो! पुरिसो!"

पिउणा पुट्ठ—"सो कहि" ति।

तम्रो नियय चेव छाय दसित्ता भणइ—"इम पेच्छह" त्ति।

स विलक्खमणो जाग्रो, पुच्छइ—"कि सो वि एरिसो ग्रासी?"

वालेण 'ग्राम' ति भणिय।

जणग्रो चितेइ—"ग्रव्वो! वालाण केरिसुल्लावा!" इय चिंतिऊण भरहो तीइ घणराग्रो सजाग्रो।

□□

४ अवियारिआएसे नरिदस्स कहा

कत्थ वि नयरे एगेण नरिदेण नियनयरे आएसो दिण्णो—"गाममज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयरवासिणो जे लोगा सति तेहि देवालए पविसिअ देव वदित्ता गतव्व, अन्नहा तस्स वहो भविस्सइ"।

एगो कुभयारो तमाएस अजाणिऊण गद्दहमारुहिय हत्थे लगुड गिण्हित्ता महारायव्व गच्छइ। तेण देवालए सो देवो न वदिओ। तओ रुट्ठा सुहडा त गिण्हिऊण नरिदग्गओ नएइरे। नरिदेण सो वहाइ आइट्ठो।

वहथमे सो नीओ। मरणकाले तत्थ मरण विणा पत्थणातिय किज्जइ पत्थणातिग पूरिऊण वहिज्जइ, एव नियमो निवेण कओ अत्थि। तदा सो कुभारो वि पुच्छिज्जइ तए पत्थणातिगे कि जाइज्जइ, तेण उत्त—"अह नरिदस्स समीवे मग्गिस्सामि। सो तत्थ नीओ।

नरिदेण पत्थणातिग मग्ग त्ति कहिअ। सो कहेइ—"एग तु मज्झ गेहे अहुणा कुडुबभोयणत्थ पन्नरलक्खरुप्पगाइ पेसेह। वीअ तु जे जणा वदीकया ते सव्वे मोएह। निवेण सव्व कय। तइअपत्थणावसरे तेण—'सहामज्झत्थिअनरिदपमुहसव्वजणाण एएण लगुडेण पहारतिगकरणाय आएसो मग्गिओ'।

रण्णा चितिअ—अह कि करोमि ?, एसो थूलो, दडोवि थूलो, एगेण पहारेण अह मरिस्सामि तओ 'अजुत्तो एसो आएसो' इअ चितित्ता वदणाएसो निक्कासिओ, उवरि दाणमहिअ तस्स अप्पित्ता तस्स बुद्धीए सतुट्ठेण निवेण समाण गिहे मोइओ। एव अविआरिओ आएसो कयावि अप्पवहाय होइ।

□□

५. सीलवईए कहा

कम्मि वि नयरे लच्छीदासो नाम सेट्ठी वरीवट्टइ। सो वहुधणसपत्तीए गव्विट्ठो आसि। भोगविलासेसु एव लग्गो कयावि धम्म न कुणेइ। तस्स पुत्तो वि एयारिसो अत्थि। जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदासस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिगहण पुत्तस्स काराविय। सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तया तीए पिउपेरणाए साहुणीसगासाओ जिणीसरधम्मसवणेण सम्मत्त अणुव्वयाइं च गहियाइ, जिणधम्मे अईव निउणा सजाया।

जया सा ससुरगेहे आगया, तया ससुराइ धम्माओ विमुह दट्ठूण तीए वहुदुह सजाय। कह मम नियवयस्स निव्वाहो होज्जा ?, कह वा देवगुरुविमुहाण ससुराईण धम्मोवएसो भवेज्जा, एव सा वियारेइ। एगया 'ससारो असारो, लच्छी वि असारा, देहोवि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगपवन्नाण जीवाणमाहारु'त्ति उवएसदाणेण नियभत्ता जिणिदधम्मेण वासिओ कओ। एव सासूमवि कालतरे वोहेइ। ससुर पडिवोहिउ सा समय मग्गेइ।

एगया तीए घरे समणगुणगणालकिओ महव्वई नाणी जोव्वणत्थो एगो साहू भिक्खत्थ समागओ। जोव्वणे वि गहीयवय सत दत साहु घरमि आगय दट्ठूण आहारे विज्जमाणे वि तीए वियारिय—, जोव्वणे महव्वय महादुल्लह, कह एएण एयमि जोव्वणे गहीय ? त्ति' परिक्खत्थ समस्साए पुट्ठ—'अहुणा समओ न सजाओ, कि पुव्व निग्गया?' तीए हिययगयभाव नाऊण साहुणा उत्त — समयनाण—कया मच्चू होस्सइ त्ति' नत्थि, तेण समय विणा निग्गओ।

सा उत्तर नाऊण तुट्ठा। मुणिणा वि सा पुट्ठा—'कइ वरिसा तुम्ह सजाया' ? मुणिस्स पुच्छाभाव नाऊण वीसवासेसु जाएसु वि तीए 'वारसवासत्ति उत्त' पुणरवि 'त सामिस्स कइ वासा जाय' त्ति ? पुट्ठ। तीए पियस्स पणवीस-वासेसु जाएसु वि 'पच वासा' उत्ता एव सासूए 'छम्मासा कहिया'। ससुरस्स पुच्छाए सो 'अहुणा न उप्पन्नो अत्थि' त्ति। एव बहू-साहूण वट्टा अतट्ठिएण ससुरेण सुआ। लद्धभिक्खे साहुमि गए सो अईव कोहाउलो सजाओ, जओ पुत्तवहू म उद्दिस्स 'न जाउ' त्ति कहेइ। रुट्ठो सो पुत्तस्स कहणत्थ हट्ट गच्छइ। 'गच्छन्त ससुर सा वएइ—भोत्तूण हे ससुर ! तुम गच्छसु।' ससुरो कहेइ—'जइ हं न जाओ म्हि, तया कह भोयण चव्वेमि—भक्खेमि' इअ कहिऊण हट्टे गओ।

पुत्तस्स सव्व वुत्त त कहेइ—'तव पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि, अओ त गिहाओ निक्कासय'। सो पिउणा सह गेहे आगओ। वहु पुच्छइ—'कि

माउपिउण अवमाण कय ? साहुणा सह वट्टाए कि असच्चमुत्तर दिण्ण ? । तीए उत्त —'तुम्हे मुणि पुच्छह । सो सव्व कहिहिइ' ।

ससुरो उवस्सए गतूण सावमाण मुणि पुच्छइ—'हे मुणे ! अज्ज मम गेहे भिक्खत्थ तुम्हे कि आगया ?' । मुणी कहेइ—'तुम्हाण घर न जाणामि, तुम कुत्थ वससि !, सेट्ठी वियारेइ 'मुणी असच्च कहेइ' । पुणरवि पुट्ठ-कस्स वि गेहे बालाए सह वट्टा कया कि ? । मुणी कहेइ—'सा बाला जिणमयकुसला, तीए मम वि परिक्खा कया' । तीए ह वुत्तो 'समय विणा कह निग्गओ सि' । मए उत्तर दिण्ण-समयस्स 'मरणसमयस्स' नाण नत्थि, तेण पुव्ववयमि निग्गओ म्हि । मए वि परिक्खत्थ सव्वेसि ससुराईण वासाइ पुट्ठाइ । तीऐ सम्म कहियाइ ।

सेट्ठी पुच्छइ—'ससुरो न जाओ इअ तीऐ कह कहिय ? ।' मुणिणा उत्त —सा चिय पुच्छिज्जउ, जओ विउसीए तीए जहत्थो भावो नज्जइ' । ससुरो गेह गच्चा पुत्तवहु पुच्छइ—'तीए मुणिस्स पुरओ किमेव वुत्त —'मे ससुरो जाओ वि न' । तीए उत्त —"हे ससुर ! धम्महीणमणुसस्स माणवभवो पत्तो वि अपत्तो एव, जओ सद्धम्मकिच्चेहि सहलो भवो न कओ सो मणूसभवो निप्फलो चिय । तओ तुम्ह जीवण पि धम्महीण सव्व गय" तेण मए कहिअ—'मम ससुरस्स उप्पत्ती एव न । एव सच्चत्थनाणे तुट्ठो सो सेट्ठी धम्माभिमुहो जाओ ।

पुणरवि पुट्ठ—'तुमए सासूए छम्मासा कह कहिआ ?' । तीए उत्त —'सासु पुच्छह' । सेट्ठिणा सा पुट्ठा । ताए वि कहिअ—"पुत्तवहूए वयण सच्च, जओ मम जिणधम्मपत्तीए छम्मासा एव जाया । जओ इओ छम्मासाओ पुव्व कत्थ वि मरणपसगे अह गया । तत्थ थीण विविहगुणदोसवट्टा जाया । एगाए वुड्ढाए उत्त —'नारीण मज्झे इमीए पुत्तबहू सेट्ठा, जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जमि सएव अपमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला नन्ना एरिसा । इमीए सासू निब्भग्गा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तबहूए वि धम्मकज्जे पेरिज्जमाणावि धम्म न कुणेइ । इम सोऊण व गुणरजिआ ह तीए मुहाओ धम्म पावित्था । धम्मपत्तीए छम्मासा जाया, तओ पुत्तबहूए छम्मासा कहिया, त जुत्त" ।

पुत्तो वि पुट्ठो, तेण वि उत्त —"रत्तीए सययधम्मोवएसपराए भज्जाए 'ससारासारदसणेण भोगविलासाण च परिणामदुहदाइत्तणेण, वासानईपूरतुल्लजुव्वणेण य देहस्स खणभगुरत्तणेण जयमि धम्मो एव सारुत्ति' उवदिट्ठो ह जिणधम्माराहगो जाओ, अज्ज पच वासा जाया । तओ बहूए म उद्दिस्स पचवासा कहिया, त सच्च" एव कुडुबस्स धम्मपत्तीए वट्टाए विउसीए'पुत्तवहूए जहत्थवयण सोऊण लच्छीदासो वि पडिबुद्धो वुड्ढत्तणे वि धम्म आराहिअ सग्गइ पत्तो सपरिवारो ।

□□

६. चउजामायराणं कहा

कत्थ वि गामे नरिंदस्स रज्जसति- कारगो पुरोहिम्रो ग्रासि। तस्स एगो पुत्तो पच य कन्नागाम्रो सति। तेण चउरो कन्नगाम्रो विउसमाहणपुत्ताण परिणावि-म्राम्रो। कयाई पचमीकन्नगाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहे चउरो जामाउणो समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे सबधिणो नियनियघरेसु गया। जामायरा भोयणलुद्धा गेहे गतु न इच्छति। पुरोहिम्रो विम्रारेइ—'सासूए म्रईव पिया जामायरा, तेण म्रहुणा पच छ दिणाइ एए चिट्ठतु, पच्छा गच्छेज्जा'।

ते जामायरा खज्जरसलुद्धा तम्रो गच्छिउ न इच्छेज्जा। परुप्पर ते चितेइरे—"**ससुरगिहनिवासो सग्गतुल्लो नराण**" किल एसा सुत्ती सच्चा, एव चितिऊण एगाए भितीए एसा सुत्ती लिहिम्रा। एगया एय सुत्ति वाइऊण ससुरेण चितिम्र—"एए जामायरा खज्जरसलुद्धा कयावि न गच्छेज्जा, तम्रो एए बोहियव्वा' एव चिंतिऊण तस्स सिलोगपायस्स हिट्ठमि पायत्तिग लिहिम्र —

"जइ वसइ विवेगी पच छव्वा दिणाइ,
दहिघयगुडलुद्धो मासमेग वसेज्जा ।
स हवइ खरतुल्लो माणवो माणहीणो।"॥१॥

ते जामायरा पायत्तिग वाइऊण पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तम्रो गतु नेच्छति। ससुरो वि चितेइ-'कह एए नीसारियव्वा?, साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा, तेण जुत्तीए निक्ससाणिज्जा'। पुरोहिम्रो निय भज्ज पुच्छइ—'एएसि जामाऊण भोयणाय कि देसि'?। सा कहेइ 'म्रइप्पियजामा-यराण तिकाल दहिघय-गुडमीसिम्रमन्न पक्कन्न च सएव देमि'। पुरोहिम्रो भज्ज कहेइ—'म्रज्जदिणाम्रो म्रारब्भ तुमए जामायराण वज्जकुडो विव थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।

पियस्स म्राणा म्रणइक्कमणीम्र त्ति चिंतिऊण,
सो भोयणकाले ताण थूल' रोट्टग घयजुत्त देइ।

त दट्ठूण पढमो मणीरामो जामाया मित्ताण कहेइ—'म्रहुणा एत्थ वसण न जुत्त, नियघरमि म्रम्रो वि साउभोयण म्रत्थि, तम्रो इम्रो गमण चिय सेय, ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण ह गमिस्सामि'। ते कहिंति—"भो मित्त! विणा मुल्ल भोयण कत्थ सिया, एसो वज्जकुडरोट्टगो साउत्ति गणिऊण भोत्तव्वो, जम्रो—'परन्न दुल्लह लोगे' इम्र सुई तए कि न सुम्रा?, तव इच्छा सिया तया गच्छसु, म्रम्हे उ जया ससुरो कहिही तया गमिस्सामो" एव मित्ताण वयण सोच्चा

पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छित्ता सिक्ख आगा च मग्गेइ। ससुरो वि न सिक्ख दाऊण पुणावि आगच्छेज्जा, एव कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्णा देइ। एव पढमो जामायरो 'वज्जकुडेण मणीरामो' निस्सारिओ।

पुणरवि भज्ज कहेइ—अज्जपभिइ जामायराण तिलतेल्लेण जुत्त रोट्टग दिज्जा। सा भोयणसमए जमाऊण तेल्लजुत्त रोट्टग देइ। त दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चितेइ—घरमि वि एय लब्भइ, तओ इओ गमण सुह। मित्ताण पि कहेइ—ह कल्ले गमिस्स, जओ भोयणे तेल्ल समागय। तया ते मित्ता कहिति—'अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, जेण सीयाले तिलतेल्ल चिअ उयरग्गि-दीवणेण सोहण, न घय, तेण तेल्ल देइ, अम्हे उ एत्थ ठास्सामो'। तया माहवो नाम जामायारो ससुरपासे गच्चा सिक्ख अणुण्ण च मग्गेइ। तया ससुरो 'गच्छ गच्छ' त्ति अणुण्ण देइ, न सिक्ख। एव। 'तिलतेल्लेण माहवो' वीओ वि जामायरो गओ।

तइअचउत्थजामायरा न गच्छति। 'कह एए निक्कासणिज्जा' इअ चिंतित्ता लद्धुवाओ ससुरो भज्ज पुच्छेइ—'एए जामाउणो रत्तीए सयणाय कया आगच्छति ?'। तया पिया कहेइ—'कयाइ रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतिपहरे गए आगच्छति'। पुरोहिओ कहेइ—'अज्ज रत्तीए तुमए दार न उग्घाडियव्व, अह जागरिस्स'। ते दोण्णि जामायरा सभाए गामे विलसिउ गया, विविहकीलाओ कुणता नट्टाइ च पासता, मज्झरत्तीए गिहद्दारे समागया। पिहिअ दार दट्ठूण दारुग्घाडणाए उच्चयरेण रविति—'दार उग्घाडेसु,' त्ति। तया दारसमीवे सयणत्थो पुरोहिओ जागरतो कहेइ—'मज्झरत्ति जाव कत्थ तुम्हे थिआ ?, अहुणा न उग्घाडिस्स जत्थ उग्घाडिअद्दार अत्थि, तत्थ गच्छेह' एव कहिऊण मोणेण थिओ।

तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरगसालाए गया। तत्थ अत्थरणाभावे अईवसीयबाहिया तुरगमपिट्ठच्छाइअवत्थ गहिउण भूमीए सुत्ता। तया विजय-रामेण चितिअ—'एत्थ सावमाण ठाउ न उइअ। तओ सो मित्त कहेइ—'हे मित्त ! कत्थ अम्ह सुहसेज्जा ? कत्थ य इम भूलोट्टण ?, अओ इओ गमण चिअ वर'। स मित्तो बोल्लेइ—'एआरिसदुहे वि परन्न कत्थ, ? अह तु एत्थ ठास्स। तुम गतुमिच्छसि जइ, तया गच्छसु'। तओ सो पच्चूसे पुरोहिय समीवे गच्चा सिक्ख अणुण्ण च मग्गीअ। तया पुरोहिओ सुट्ठु त्ति कहेइ। एव सो तइओ जामाया 'भूसज्जाए विजयरामो' वि निग्गओ।

अहुणा केवल केसवो जामायरो तत्थ थिओ सतो गतु नेच्छइ। पुरोहिओ वि केसवजामाउणो निक्कासणत्थ जुत्ति विआरिऊण नियपुतस्स कण्णे किंचि वि कहिऊणगओ। जया केसवजामायरो भोयणत्थ उवविट्ठो, पुरोहिअस्स य पुत्तो समीवे वट्टइ, तया सो समागओ समाणो पुत्त पुच्छइ—'वच्छ ! एत्थ मए

रूवगो मुक्को सो य केण गहिम्रो ?'। सो कहेइ—'अह न जाणामि'। पुरोहिम्रो वोल्लेइ—'तुमए च्चिय गहिम्रो, हे असच्चवाइ! पाव! धिट्ठ! देहि मम त, अन्नह त मारइस्स' ति कहिऊण सो उवाणह गहिऊण मारिउ धाविम्रो। पुत्तो वि मुट्ठि वधिऊण पिउस्स सम्मुह गम्रो। दोण्णि ते जुज्झमाणे दट्ठूण केसवो ताण मज्झे गतूण मा जुज्झह मा जुज्झह त्ति कहिऊण ठिम्रो। तया सो पुरोहिम्रो हे जामायर! अवसरसु अवसरसु त्ति कहिऊण त उवाणहाए पहरेइ। पुत्तो वि केसव! दूरीभव दूरीभव त्ति कहिउआण मुट्ठीए त केसव पहरेइ। एव पिअरपुत्ता केसव ताडिति। तओ सो तेहि धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घ भग्गो। एव 'धक्का मुक्केण केसवो' सो चउत्थो जामायरो अकहिऊण गम्रो।

तद्दिणे पुरोहिम्रो निवसहाए विलवेण गम्रो। नरिदो त पुच्छइ—"किं विलबेण तुम आगम्रो सि। सो कहेइ—विवाहमहूसवे जामायरा समागया। ते उ भोयणरसलुद्धा चिर ठिम्रावि गतु न इच्छति। तम्रो जुत्तीए सव्वे निक्कासिम्रा। ते एव—

"वज्जकुडा मणोरामो, तिलतेल्लेण माहवो।
भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो ।।

तेण सव्वो वुत्त तो नरिदस्स अग्गे कहिम्रो। नरिदो वि तस्स बुद्धीए अईव तुट्ठो। एव जे भविम्रा कामभोगविसयवामूढा सय चिय कामभोगाइ न चएज्जा, ते एवविहदुहाण भायण हुति।

□ □

७. पुत्तेहि पराभविअस्स पिउस्स कहा

कम्मिवि नयरे एगवुड्ढस्स चउरो पुत्ता सति। सो थविरो सव्वे पुत्ते परिणाविऊण नियवित्तस्स चउब्भाग किच्चा पुत्ताण अप्पेइ। सो धम्माराहणतप्परो निच्चिन्तो काल नएइ। कालतरे ते पुत्ता इत्थीण वेमणस्सभावेण भिन्नघरा सजाया। वुड्ढस्स पइदिण पइघर भोयणाय वारगो निबद्धो। पढमदिणमि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ। बीयदिणे बीयपुत्तस्स घरे जाव चउत्थदिणे कणिट्ठस्स पुत्तस्स घरे गओ। एव तस्स सुहेण कालो गच्छइ।

कालतरे थेराओ धणस्स अपत्तीए पुत्तवहूहि सो थेरो अवमाणिज्जइ। पुत्तवहूओ कहिंति—'हे ससुर! अहिल दिण घरमि कि चिट्ठसि?, अम्हाण मुहाइ पासिउ कि ठिओ सि?, थीण समीवे वसण पुरिसाण न जुत्त, तव लज्जावि न आगच्छेज्जा, पुत्ताण हट्टे गच्छिज्जसु" एव पुत्तवहूहि अवमाणिओ सो पुत्ताण हट्टे गच्छइ। तया पुत्तावि कहिंति—"हे वुड्ढ! किमत्थ एत्थ आगओ?, वुड्ढत्तणे घरे वसणमेव सेय, तुम्ह दता वि पडिआ, अक्खितेय पि गय, सरीर पि कपिरमत्थि, अत्थ ते किपि पओयण नत्थि, तम्हा घरे गच्छाहि" एव पुत्तेहि तिरक्करिओ सो घर गच्छेइ तत्थ पुत्तवहूओ वि त तिरक्करति।

पुत्तपुत्ता वि तस्स थेरस्स कच्छुट्टिय निक्कासेइरे, कयाई मसु दाढिय च करिसिन्ति। एव सव्वे विविहप्पगारेहि त वुड्ढ उवहसिति। पुत्तवहूओ भोयणे वि रुक्ख अपक्क च रोट्टग दिति। एव पराभविज्जमाणो वुड्ढो चिंतेइ—कि करोमि, कह जीवण निव्वहिस्स?' एव दुहमणुभवतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे गओ। अप्पणो पराभवदुह तस्स कहेइ, नित्थरणुवाय च पुच्छइ।

सुवण्णगारो बोल्लेइ—"भो मित्त! पुत्ताण वीसास करिऊण सव्व धणमप्पिअ, तेण दुहिओ जाओ, तत्थ किं चोज्ज?। सहत्थेण कम्म कय, त अप्पणा भोत्तव्व चिअ"। तह वि मित्तत्तेण ह एव उवाय दसेमि—तुमए पुत्ताण एव कहिअव्व—"मम मित्तसुवण्णगारस्स गेहे रूवग-दीणार—भूसणेहि भरिआ एगा मजूसा मए मुक्का अत्थि, अज्ज जाव तुम्हाणं न कहिअ अहुणा जराजिण्णो ह, तेण सद्धम्म-कम्मणा सत्तक्खेत्ताईसु लच्छीए विणिओग काऊण परलोगपाहेय गिण्हिस्स" एव कहिऊण पुत्तेहिं एसा मजूसा गेहे आणावियव्वा। मजूसाए मज्झे ह रूवगसय मोइस्स, त तु मज्झरत्तीए पुणो पुणो तुमए सय च रणरणायारपुव्व

रूवगो मुक्को सो य केरण गहिश्रो ?' । सो कहेइ—'अह न जाणामि' । पुरोहिश्रो वोल्लेइ—'तुमए च्चिय गहिश्रो, हे असच्चवाइ ! पाव ! धिट्ठ ! देहि मम त, अन्नह त मारइस्स' ति कहिऊण सो उवाणह गहिऊण मारिउ धाविश्रो। पुत्तो वि मुट्ठि वधिऊण पिउस्स सम्मुह गश्रो। दोण्णि ते जुज्झमाणे दट्ठूण केसवो ताण मज्झे गतूण मा जुज्झह मा जुज्झह त्ति कहिऊण ठिश्रो। तया सो पुरोहिश्रो हे जामायर ! अवसरसु अवसरसु त्ति कहिऊण त उवाणहाए पहरेइ। पुत्तो वि केसव ! दूरीभव दूरीभव त्ति कहिउआण मुट्ठीए त केसव पहरेइ। एव पिअरपुत्ता केसव ताडिति। तओ सो तेहि धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घ भग्गो। एव 'धक्का मुक्केण केसवो' सो चउत्थो जामायरो अकहिऊण गश्रो।

तद्दिणे पुरोहिश्रो निवसहाए विलवेण गश्रो। नरिदो त पुच्छइ—"कि विलबेण तुम आगश्रो सि। सो कहेइ—विवाहमहूसवे जामायरा समागया। ते उ भोयणरसलुद्धा चिर ठिश्रावि गतु न इच्छति। तश्रो जुत्तीए सव्वे निक्कासिश्रा। ते एव—

"वज्जकुडा मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो।
भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो ।।

तेण सव्वो वुत्त तो नरिदस्स अग्गे कहिश्रो। नरिदो वि तस्स बुद्धीए अईव तुट्ठो। एव जे भविश्रा कामभोगविसयवामूढा सय चिय कामभोगाइ न चएज्जा, ते एवविहदुहाण भायण हुति।

□ □

७. पुत्तेहि पराभविअस्स पिउस्स कहा

कम्मिवि नयरे एगवुड्ढस्स चउरो पुत्ता संति। सो थविरो सव्वे पुत्ते परिणाविऊण नियवित्तस्स चउब्भागं किच्चा पुत्ताण अप्पेइ। सो धम्माराहणपरो निच्चिंतो कालं नएइ। कालंतरे ते पुत्ता इत्थीण वेमणस्सभावेण भिन्नघरा संजाया। वुड्ढस्स पइदिणं पइघरं भोयणाय वारगो निबद्धो। पढमदिणम्मि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ। बीयदिणे बीयपुत्तस्स घरे जाव चउत्थदिणे कणिट्ठस्स पुत्तस्स घरे गओ। एवं तस्स सुहेण कालो गच्छइ।

कालंतरे थेराओ धणस्स अप्पत्तीए पुत्तवहूहिं सो थेरो अवमाणिज्जइ। पुत्तवहूओ कहिंति—'हे ससुर! अहिलं दिणं घरंमि किं चिट्ठसि?, अम्हाणं मुहाइं पासिउं किं ठिओ सि?, थीणं समीवे वसणं पुरिसाणं न जुत्तं, तव लज्जा वि न आगच्छेज्जा, पुत्ताणं हट्टे गच्छिज्जसु" एवं पुत्तवहूहिं अवमाणिओ सो पुत्ताणं हट्टे गच्छइ। तया पुत्तावि कहिंति—"हे वुड्ढ! किमत्थं एत्थ आगओ?, वुड्ढत्तणे घरे वसणमेव सेयं, तुम्ह दंता वि पडिआ, अक्खितेयं पि गयं, सरीरं पि कंपिरमत्थि, अत्थ ते किंपि पओयणं नत्थि, तम्हा घरे गच्छाहि" एवं पुत्तेहिं तिरक्करिओ सो घरं गच्छेइ तत्थ पुत्तवहूओ वि तं तिरक्करंति।

पुत्तपुत्ता वि तस्स थेरस्स कच्छुट्टियं निक्कासेइरे, कयाई मंसु दाढियं च करिसिन्ति। एवं सव्वे विविहप्पगारेहिं तं वुड्ढं उवहसिंति। पुत्तवहूओ भोयणे वि रुक्खं अपक्कं च रोट्टगं दिंति। एवं पराभविज्जमाणो वुड्ढो चिंतेइ—किं करोमि, कहं जीवणं निव्वहिस्सं?' एवं दुहमणुभवंतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे गओ। अप्पणो पराभवदुहं तस्स कहेइ, नित्थरणुवायं च पुच्छइ।

सुवण्णगारो बोल्लेइ—"भो मित्त! पुत्ताणं वीसासं करिऊण सव्वं धणमप्पिअं, तेण दुहिओ जाओ, तत्थ किं चोज्जं?। सहत्थेण कम्मं कयं, तं अप्पणा भोत्तव्वं चिअ"। तह वि मित्तत्तेण हं एवं उवायं दंसेमि—तुमए पुत्ताण एवं कहिअव्वं—"मम मित्तसुवण्णगारस्स गेहे रूवग-दीणार—भूसणेहिं भरिआ एगा मंजूसा मए मुक्का अत्थि, अज्ज जाव तुम्हाणं न कहिअं अहुणा जराजिण्णो हं, तेण सद्धम्म-कम्मणा सत्तक्खेत्ताईसु लच्छीए विणिओगं काऊण परलोगपाहेयं गिण्हिस्सं" एवं कहिऊण पुत्तेहिं एसा मंजूसा गेहे आणावियव्वा। मंजूसाए मज्झे हं रूवगसयं मोइस्सं, तं तु मज्झरत्तीए पुणो पुणो तुमए सयं च रणरणयारपुव्वं

गरोयव्व, जेरा पुत्ता मन्निस्सति—'ग्रज्जावि बहुधरा पिउरो समीवे ग्रत्थि,' तग्रो धरगासाए ते पुव्वमिव भत्ति करिस्सते। पुत्तवहूग्रो वि तहेव सक्कार काहिन्ति। तुमए सव्वेसि कहियव्व—'इमीए मजूसाए बहुधगामत्थि। पुत्तपुत्तवहूरा नामाइ लिहिऊरा ठवियमत्थि। त तु मम मरराते तुम्हेहि नियनियनामेरा गहिग्रव्व'। धम्मकररात्थ पुत्ते हितो धण-गिण्हिऊरा सद्धम्मकररो वावरियव्व। मम रूवगसय पि तुमऐ न विस्सारियव्व, एय ग्रवसरे दायव्व।

सो थेरो मित्तस्स बुद्धीऐ तुट्ठो गेह गच्चा पुत्ते हि मजूस ग्रारगाविऊरा रत्तीए त रूवगसय सय-सहस्स-दससहस्साइगुरागेरा पुरगो पुरगो गरोइ। पुत्ता वि विग्रारिति—पिउस्स पासे बहुधरामत्थि त्ति, तग्रो ते बहूरा पि किहिति। सव्वे ते थेर बहु सक्कारिति सम्मारिाति य। ग्रईवनिव्वधेरा त पुत्तवहूग्रा वि ग्रहमहमिगयाए भोयरााय निति, साउ सरस भोयरा दिति तस्स वत्थाइ पि सएव पक्खालिति, परिहारााय धुविग्राइ वत्थाइ ग्रप्पिति, ऐव बुड्ढस्स सुहेरा कालो गच्छइ।

एगया ग्रासन्नमररगो सो पुत्तारा कहेइ—"मज्झ धम्मकररोच्छा वट्टइ, तेरा सत्तखेत्ते सु किचि वि धरा दाउमिच्छामि"। पुत्तावि मजूसागयधरगासाए ग्रप्पिति। सो बुड्ढो जिण्रामदिरुवस्सयसुपत्ताईसु जहसत्ति दव्व देइ। ग्रप्परगो परममित्तसुवण्रागारस्स वि नियहत्थेरा रूवगसय पच्चप्पइ, ऐव सद्धम्मकम्मम्मि धराव्वय किच्चा, मरराकालम्मि पुत्तारा पुत्तवहूरा च बोल्लाविऊरा कहेइ—"इमीए मजूसाए सव्वेसि नामग्गहरापुव्वय मए धरा मुत्तमत्थि। त तु मम मरराकिच्च काऊरा पच्छा जहनाम तुम्हेहि गहिग्रव्व" ति कहिऊरा समाहिरगा सो वड्ढो काल पत्तो।

पुत्तावि तस्स मच्चुकिच्च किच्चा नाइजरा पि जेमाविऊरा बहुधरासाइ जया सव्वे मिलिऊरा मजूस उग्घाडिति, तया तम्मज्झम्मि नियनियनामजुत्तपत्ते हि वेढिऐ पाहाराखडे त च रूवगसय पासित्ता ग्रहो बुड्ढेरा ग्रम्हे वचिग्रा वचिग्र त्ति जपति किल ग्रम्हारा पिउभत्तिपरमुहारा ग्रविरायस्स फल सपत्त। एव सव्वे ते दुहिरगो जाया।

□ □

८. अमंगलियपुरिसस्स कहा

एगमि नयरे एगो अमगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायमि तस्स मुह पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुह न पिक्खति। नरवइणावि अमगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ। परिक्खत्थ नरिदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुह दिट्ठ ।

जया राया भोयणत्थमुवविसइ, कवल च मुहे पक्खिवइ, तया अहिलमि नयरे अकम्हा परचक्कभएण हलबोलो जाओ। तया नरवई वि भोयण चिच्चा सहसा उत्थाय ससेण्णो नयराओ बाहि निग्गओ। भयकारणमदट्ठूण पुणो पच्छा आगओ समाणो नरिदो चितेइ—"अस्स अमगलिअस्स सरूव मए पच्चक्ख दिट्ठ, तओ एसो हतव्वो" एव चितिऊण अमगलिय बोल्लाविऊण वहत्थ चडालस्स अप्पेइ।

जया एसो रुयतो, सकम्म निंदंतो चंडालेण सह गच्छेइ। तया एगो कारुणिओ बुद्धिनिहाणो वहाइ नेइज्जमाण त दट्ठूण कारण णच्चा तस्स रक्खणाय कण्णे किंपि कहिऊण उवाय दसेइ। हरिसतो जया वहत्थभे ठविओ, तया चडालेण सो पुच्छिओ—'जीवण विणा तव कावि इच्छा सिया, तया मग्गसु त्ति'।

सो कहेइ—"मज्झ नरिदमुहदसणेच्छा अत्थि'। जया सो नरिंदसमीवमाणीओ तया नरिदो त पुच्छइ—"किमेत्थ आगमणपओयण ?"। सो कहेइ—"हे नरिद ! पच्चूसे मम मुहस्स दसणेण भोयण न लब्भइ, परतु तुम्हाण मुहपेक्खणेण मम वहो भविस्सइ, तया पउरा कि कहिस्सति ?। मम मुहाओ सिरिमताण मुहदसण केरिसफलय सजाय, नायरा वि पभाए तुम्हाण मुह कह पासिहिरे"। एव तस्स वयणजुत्तीए सतुट्टो नरिदो वहाएस निसेहिऊण पारितोसिअं च दच्चा त अमगलिअ सतोसीअ।

□ □

९. सिप्पिपुत्तस्स कहा-

अवंतीए पुरीए इददत्तो नाम सिप्पिवरो अहेसि । सो सिप्पकलाहि सव्वमि जयमि पसिद्धो होत्था । इमस्स सरिच्छो अन्नो को वि नत्थि । एयस्स पुत्तो सोमदत्तो नाम । सो पिउस्स सगासमि सिप्पकल सिक्खतो कमेण पिअराओ वि अईव सिप्पकलाकुसलो जाओ ।

सोमदत्तो जाओ पडिमाओ निम्मवेइ, तासु तासु पिआ कपि कपि भुल्ल दसेइ, कया वि सिलाह न कुणेइ । तओ सो मुहमदिट्ठीए सुहुम सुहुम सिप्पकिरिय कुणेऊण पियर दसेइ, पिया तत्थ वि कपि खलण दरिसेइ, 'तुमए सोहणयर सिप्प कय' ति न कयाई त पससेइ ।

अपससमाणे पिउम्मि सो चिंतेइ—'मम पिआ मज्झ कल कह न पससेज्जा ?, तओ तारिस उवाय करेमि, जओ पियरो मे कल पससेज्ज । एगया तस्स पिआ कज्जप्पसगेण गामतरे गओ, तया सो सोमदत्तो सिरिगणेसस्स सुदरयम पडिम काऊण, तीए हिट्ठमि गूढ नियनामकियचिन्ह करिऊण, त मुत्ति नियमित्तद्दारेण भूमीए अतो ठवेइ । कालतरे गामतराओ पिआ समागओ । एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एव कहेइ—'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए पहावसालिणी गणेसस्स पडिमा अत्थि' ।

तया लोगेहि सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए सुदरयमा अणुवमा गणेसस्स मुत्ती निग्गया । तद्दसणत्थ बहवो लोगा समागया, तीए सिप्पकल अईव पससिरे ।

तया सो इददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ । सो गणेसपडिम दट्ठूण पुत्त कहेइ—"हे पुत्त ! एसच्चिअ सिप्पकला कहिज्जइ । केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मवगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि । पासेसु, कत्थ वि भुल्ल खुण्ण च अत्थि ? । जइ तुम एआरिसिं पडिम निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकल पससेमि, नन्नहा" ।

पुत्तो वि कहेइ—"हे पियर ! एसा गणेसपडिमा मए चिय कया । इमाए हिट्ठमि गुत्ता मए नामपि लिहिअमत्थि" । पिआवि लिहिअनाम वाइऊण खिन्नहियओ पुत्ता कहेइ—"हे पुत्त ! अज्जदिणाओ तु एरिस सिप्पकलाजुत्ता सुंदरयम पडिम काउ कया वि न तरिस्ससि । जया हं तव सिप्पकलासु भुल्ल दसतो, तया तुम पि सोहणयरकज्जकरणतल्लिच्छो सण्हं सण्हं सिप्प कुणतो आसि, तेण तव सिप्पकलावि वड्ढती हुवीअ । अहुणा 'मम सरिच्छो नन्नो' इह मदूसाहेण तुम्हम्मि एआरिसी सिप्पकला न सभविहिइ" ।

एव सो सरहस्स पिउवयण सोच्चा पाएसु पडिऊण पिउत्तो पससाकरावण-सरूवनिआवराह खामेइ, परतु सो सोमदत्तो तओ आरब्भ तारिसिं सिप्पकल काउ असमत्थो जाओ ।

□ □

१० उज्जमस्स फलं

एगया भोयनरिदस्स सहाए दुण्णि विउसा समागया । तेसु एगो नियइवाई—'ज भावी त नन्नहा होइ' अग्रो सो उज्जम विरणा भावि चिय मन्नेइ । अन्नो पडिग्रो—'उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ,' जग्रो अलसा क पि फल न लहति, जग्रो वुत्त —

"उज्जमेरण हि सिज्झति, कज्जाइ, न पमाइणो
न हि सुत्तस्स सिघस्स, पविसति मिगा मुहे ।।"

एव वीग्रो उज्जमेरण फलवाई अत्थि । भोयनरिदेरण ते दोवि आगमरणपग्रोयरण पुट्ठा, ते कहिति—'विवायनिण्णयत्थ तुम्हाणमतिए अम्हे आगया' । रण्णा वुत्त —'तुम्हाण जो विवाग्रो अत्थि त कहेह' । तया ते दुण्णि वि निय मयं जुत्तिपुरस्सर निवइरणो पुरग्रो ठवेइरे । राया विग्रारेइ—'एत्थ कि परमत्थग्रो सच्च ?, त च कह जाणिज्जइ' तया निण्णेउमसमत्थो कालीदासपडिग्र पुच्छइ—'एएसि नाग्रो कह किज्जइ ? कि व उत्तर दिज्जइ ?'

कालीदासो कहेइ—"हे नरिंद ! जह दक्खाए रसो चक्खिज्जमाणो महुरो खट्टो वा नज्जइ, तह य एयाण विवाग्रो कसिज्जइ, तेरण सच्चो असच्चो वा जाणिज्जइ" । राया कहेइ—'कसणकिरियाए अत्थि को वि उवाग्रो ?, जइ सिया, तया कसिज्जउ'

कालीदासो तया ते दुण्णि विउसे बोल्लाविऊरण तेसि नेत्ताइ पडेरण बधित्ता, दुवे य हत्थे पिट्ठस्स पच्छा बधिग्र, पाए गाढयर निग्रतिग्र अधयारमए अववरगे ठवेइ, कहेइ य "जो दइव्ववाई सो दइव्वेरण छुट्टउ, जो उज्जमवाई सो उज्जमेरण छुट्टेज्जा" एव कहिऊरण सो पच्छा नियत्तो । तग्रो जो नियइवाई सो 'ज भावि त होहिइ' त्ति मन्नमारणो निच्चितो समाणो सुहेरण तत्थ सुत्तो । उज्जमवाई जो, सो छुट्टरणाय बहु उज्जमं कुणेइ । हत्थे पाए अ भूमीए उवरिं इग्रो तग्रो घसेइ, परतु गाढयरबधणत्तरणेरण जया सो न छुट्टिग्रो, तया त नियइवाई विउसो कहेइ—"कि मुहा उज्जमकररणेरण, एसो निविडो बधो कया वि न छुट्टिहिइ ? निप्फलेण

बलहाणिकारणायासेण कि ?, खुहापिवासापीलिआणं पि अम्हाणं नियईए सरणं चिअ वर"।

एव सोच्चा वि उज्जमवाइपडिओ छुट्टणपयासं न चएइ। छुट्टणाय अईव पयासं कुणेइ। एवं तेसि दुवे दिणा अइक्कता। भोयणाभावेण सरीरं पि तणमईव भीण संजायं, कज्जकरणे वि असमत्थ जाय, तह वि उज्जमवाई पयासहीणावबरगे इओ तओ भममाणो बंधणाओ मोअणाय जत्त न मुंचेइ। नियइवाई त वएइ—'अहुणा परमेसरस्स नाम गिण्हसु, किमायासकरणेण फलरहिएण ?'। तया सो उज्जमवाई कहेइ—"समावन्ने वि मरणे उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो, सया वि उज्जमसीलेण जणेण होयव्व"। नियइवाई बोल्लेइ—'जइ एवं ता अंधारिए एयंमि अववरगे पाए हत्थे अ घसमाणा भमता चिट्ठेह, उज्जमो फलं दाही ?'

तह वि सो उज्जमवाई पंडिओ खीणसरीरबलो तइअदिणंमि भित्तिनिस्साए भमंतो हत्थे पाए य घसमाणो पडंतो पुणरवि घसंतो भमंतो दइववसाओ अववरगस्स कोणगे तत्थ पडिओ, जत्थ उंदुरस्स विलं वट्टइ। तस्स हत्था बिलोवरि समागया। तओ रंधमज्झट्ठिओ मूसओ बाहिरं निग्गंतुमचयंतो दंतेहिं तस्स हत्थबंधणं छिंदेइ, तया सो छुट्टिओ समाणो नेत्तपडं पायबंधणं च अवसारेइ। सो तया अववरगे गाढयरतमेण किमवि न पासेइ। अस्स अववरगस्स दारं कत्थ अत्थि त्ति भित्तिफासणेण निरिक्खतेण तेण कमेण दार लद्धं। बाहिरओ पिणद्धं तं पासिऊण कट्ठेण त दारं मूलाओ उत्तारिअ बाहिरं सो निग्गओ। पच्छा देव्ववाइं पडिअं पि बंधणाओ मोएइ।

पच्छण्णठाणे ठिओ कालीदासो सव्वं निरुवेइ। जया ते दुवे बाहिरनिग्गए पासेइ, पासित्ता ते घेत्तूण नियघरंमि गओ। सम्म अन्नपाणेहिं सक्कारित्ता सम्माणत्ता य निवसहाए ते विउसे गहिऊण समागओ। भोयनरिद—कहेइ—'उज्जमेण जिअ, नियईए पराइअ 'ति, जओ उज्जमवाई पडिओ उज्जमेण छुट्टिओ अवरो उज्जमाभावाओ न छुट्टिओ। 'जो नियइमेव पहाण मन्नेइ सो पमाई कहिज्जइ' जत्थ पमाओ तत्थ खुहा पिवासा दुक्ख मरण च अवस्स संभवेइ। जो उज्जमं कुणइ सो कयाइ दुक्खाओ मुञ्चइ, किं पि य फल पावेइ। नियइवाई उज्जमेण विणा फल न लहेज्जा। तओ उज्जमो पहाणो णायव्वो। तओ भोयनरिंदो उज्जमवाइपंडिअ दव्ववत्थाहूसणेहिं सम्माणेइ। नीइसत्थे वि—'उज्जमे नत्थि दालिद्द'। अओ उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो।

□□

शब्दार्थ

पद्य-संकलन

पाठ १ : अंजना-पवनंजय कथा

(गाथा १–३०)

प्राकृत शब्द	अर्थ	प्राकृत शब्द	अर्थ
विद्दाणलोयणा	— निस्तेज नेत्रवाली	पलवइ	= प्रलाप करती थी
नवर	= बाद मे	आसासिज्जइ	= सान्त्वना प्राप्त करती थी
वायाए	= वाणी से	अइतणुओ	= अतिसूक्ष्म
सवडहुत्तो	= सामने	अब्भिट्टा	= भिड गये
जोह	= योद्धा	ओसरियं	= भागती हुई
समय	= साथ	सिग्घं	= शीघ्र
पडियागओ	= वापिस आया हुआ	वीसज्जिओ	= भेजा गया हूँ
वीसत्थो	= विश्वस्त	साहीण	= समर्थ

(३१-६०)

प्राकृत शब्द	अर्थ	प्राकृत शब्द	अर्थ
उल्लोल्लो	= शोर	थम्मल्लीणा	= खभे से टिकी हुई
तिप्पइ	= तृप्त होती है	उव्वियणिज्जा	= उद्वेगयुक्त
उवट्ठिया	= उपस्थित हुई है	अलणपणामं	= चरण-प्रणाम
आयत्त	= अधीन	सरेज्जासु	= याद किये जाओगे
वियम्भन्ती	= जभाई लेती हुई	उड्डाई	= ऊँचे जाती है
उप्पयइ	= उड जाती है	सरिया	= याद की गयी
अकण्णसुह	= सुनने मे अप्रिय	पसयच्छी	= विशाल नेत्रवाली

(६१-९०)

प्राकृत शब्द	अर्थ	प्राकृत शब्द	अर्थ
अग्गीवए	= बरामदे मे	ओणमिय	= प्रणाम कर
उब्भिन्नंगी	= रोमाचित अगवाली	सासिया	= दडित की गयी
वहेज्जासु	= प्रदान करें	पम्हुससु	= भूल जाओ

आवडिय	= सम्बद्ध हुए	निव्वविय	= व्यतीत किया
पवन्नाइ	= प्राप्त की	रयणीमुह	= प्रभात
निसामेहि	= सुनो	उदुसमओ	= ऋतु-समय
वयणिज्जअरो	= निन्दनीय	समुज्जमह	= उद्यमशील बनो

पाठ २ : श्री श्रीपाल कथा

गाथा (१-४०)

तिजय	= तीन जगत	समोसरिओ	= उपस्थित हुए
अभिगमण	= नमस्कार	तिपयाहिणाउ	= तीन प्रदक्षिणा
परोवयारिक्क-तल्लिच्छो	= परोपकार मे लीन	सव्वनु	= सर्वज्ञ
निरुत्त	= वर्णित	चाओ	= त्याग
नवर	= तदन्तर	अकसायताव	= बुरे विचारो से रहित
आउत्तो	= यत्नपूर्वक	चुज्जकर	= आश्चर्यजनक
सव्वढ्ढि	= सभी ऋद्धिया	सुगुत्तिगुत्ता	= अच्छे रक्षको से रक्षित (सयमित)
अगजणीया	= पार करने मे कठिन	रसाउलाओ	= जल (प्रेम) से परिपूर्ण
सवाणियाणि	= पानी (बनियो) से युक्त	सगोरसाणि	= दूध-दही (वाणी) से परिपूर्ण

(४१-५०)

दुकालडमरेहिं	= अकालरूपी लुटेरे के	अकयपवेसे	= प्रवेश से रहित
पयापईओ	= ब्रह्मा, जनक	नरोत्तम	= कृष्ण, श्रेष्ठ पुरुष
महेसर	= शिव, धनाढ्य	सचीवरा	= इन्द्राणी, वस्त्र-युक्त स्त्रिया
गोरी	= पार्वती, किशोरी	सिरिओ	= लक्ष्मी, सम्पत्ति
रंभा	= अप्सरा, कदली	रई-पीई	= रति एव प्रीति (कामदेव-पत्निया)
लडहदेहा	= सुन्दर शरीर वाली	रइतुल्ला	= रति के समान
मिच्छादिट्ठि	= अध-विश्वासी	सम्मदिट्ठि	= तत्त्वदर्शी
सावत्ते वि	= सोत होने पर भी	पायं	= प्राय

(५१-६१)

थोवंतरमि	= थोडे समय मे	सगब्भाउ	= गर्भयुक्त
विऊरा	= विद्वानो को	अज्झावयारा	= अध्यापको को
समिईओ	= स्मृति शास्त्र	तिगिच्छ	= चिकित्साशास्त्र
हर-मेहल	= चित्रकला के भेद	कुडलविटलाइ	= जादू इन्द्रजाल
करलाघवाइ	= हस्तकला आदि	चमुक्कार	= चमत्कार
पन्नाअभिओग	= प्रज्ञा के सयोग से	वियड्ढा	= चतुर
उक्किट्ठदप्पा	= अधिक घमडी	लीलमित्तेरा	= सरलता से

(६२-१०४)

जीसे	= जैसा	तस्सीला	= वैसे आचरण वाली
अरगाविआओ	= बुलवाया	विणओरगयाउ	= विनम्र से नम्र
गव्वगहिलाए	= घमड से पूर्ण	मेलावडउ	= मिलाप
परिसा	= परिपद्	आइट्ठा	= आदेश प्राप्त
परमप्पह	= परम-पथ (मोक्ष)	दमिआरी	= शत्रु को दमन करने वाला
पूरणपवणो	= पूर्ण करने मे तत्पर	नाय	= जानकर
अहिवल्ली	= पान की बेल	पूगतरुण	= सुपारी के वृक्ष
ईसि	= थोडा	उवज्जिय	= उपार्जित
जुज्जए	= उचित है	पुन्नवलिओ	= पुण्यशाली
दुम्मिओ	= नाराज	इतो	= आये हुए
खलिज्जइ	= हटाया जा सकता है	मुहप्पिय	= मुख पर प्रिय बोलना

(१०५-१२५)

रइवाडिया	= क्रीडा उद्यान	धमधमन्तो	= जलते हुए
पिच्छइ	= देखता है	साडबरमियंत	= आडबरपूर्वक आते हुए
ससोडीरा	= पराक्रमपूर्ण	तयदोसी	= दूपित चमडी वाला
मडलवइ	= मडल कोढ से पीडित	दद्दुल	= दर्दुर कोढी
थइआइत्तो	= पानदान धारण करने वाला	पसूइयवाया	= वातरोग से पीडित
कच्छादब्बेहि	= खुजली रोग से पीडित	विउचिअपामा	= पामा नामक खुजली से
समन्निया	= समन्वित	पेडएण	= समूह से
महीवीढे	= पृथ्वी के छोर मे	पजिअदाण	= भेंटदान
वलिओ	= घूमा	विअप्पुत्ति	= विकल्प (इच्छा)

(१२६-१६७)

इत्तियमित्तेण	= इतने मात्र से	अरिभुय	= शत्रु बनी हुई
वोलेमि	= नष्ट करूँ	रुयइ	= रोता है
वलेइ	= लौटता है	जति	= जाती हुई
वावाहणत्थ	= विवाह के लिए	पहिट्ठेहि	= आनन्दित
ऊसिअतोरण	= तोरण सजाये गये	पयडपडाय	= ध्वजा लगायी गयी
घट्ट	= समूह	ओलिज्जमालं	= मडप सजाया गया
मद्दलवाय	= मृदग बजा	चउप्फललोय	= लोक को चौगुना कर दिया
हथलेवइ	= पाणि-ग्रहण	दूहवेइ	= दुख देता है

(१६८-१९५)

कजिअ	= व्यर्थ (माड की तरह)	कुहिअ	= विनष्ट
तसि	= तुम ही हो	थोउ	= स्तुति
मोहावहील	= मोह को त्याग दिया	भावलय	= प्रभा का घेरा
नाहत्तणु	= प्रभुता	फिट्टिस्सइ	= नष्ट हो जायेगा
ससति	= प्रशसा करते है	कप्पए	= कहते है
सावज्ज	= पाप-युक्त	पयनवगं	= नौ पद

पाठ ३. लीलावती कथा

(१-१०)

हिरणक्कस	= हिरण्याक्ष	वियड-उरत्थल-अट्ठिदल	= विकट वक्षस्थल की हड्डियो का समूह
सच्चविय	= देखे गये	तइय-वयं	= तीन पैर
तइया	= उस समय	अणायारे	= निराकार मे (आकाश मे)
सायारं	= स्वय	अपहुत्त	= असमर्थ
णिहुयं	= नि शब्द	सठिय	= रखे गए
अद्धवह	= आधा मार्ग	करणी	= समान
उप्पाय	= उत्पत्ति के समय	महोवहि	= समुद्र
सिहणोत्थय	= स्तनो पर आच्छादित	वलन	= मर्दन करना
जमलज्जुण	= दो अर्जुन नामक वृक्ष	कयावेसो	= लपेटने वाले
कोप्पर	= मध्य	ओसावणि	= कुल्ला करना

गव्भिय	= सज्जित	मसिणिय	= घिसे गये
सीसट्ठिठ	= सिर पर स्थित	कुसुंभुप्पीलो	= केशर का रस
सलिलुल्लो	= जल से गीला	वो	= आपकी

(११–२०)

जलुप्पीला	= जल से भरी हुई	फुरंत	= चमकीले
वियारणो	= विचारक (आकाशगामी)	सुवण्ण	= अच्छे अक्षर (पत्ते)
अइट्ठ	= रहित (रात्रि)	परिहाव	= गुणोत्कर्ष
भसण-सहावा	= प्रलाप करने वाले	परम्मुहा	= न देखने वाले
सवइ	= झरता है	महग्गि	= मख यज्ञ की अग्नि

(२१–३०)

असार-मइणा	= तुच्छ बुद्धि वाले	रिक्ख	= आकाश
चदुज्जए	= कुमुद मे	वेवंतओ	= झूमता हुआ
छप्पओ	= भ्रमर	तिगिच्छि	= मकरन्द
पाणासव	= पीने की मद्य	सहइ	= शोभित होता है
णिव्वविओ	= शीतल	दर-दलिय	= थोडी खिली हुई
मालई	= चमेली	उद्धुरो	= उत्कृष्ट
विसेसावलि	= तिलक-पक्ति	विम्वल	= निर्मल
घडति	= मिलते है	उय	= देखो
विलोहविज्जत	= आकर्षित	अविहाविय	= अज्ञात

(३१–४०)

पवियभिय	= उल्लसित	तारालोय	= तारो से भरा आकाश (स्नेह से भरी आखे)
साहीणो	= स्वाधीन (प्राप्य)	साहेह	= कहो
णे	= उसके द्वारा	एत्थ	= यहा
सव्वति	= सुनी जाती है	विविहाउ	= विविध
जाउ	= जो	ताउ	= वे
मयच्छि	= मृगाक्षि	असुएण	= विना पढे हुए
अल्लविउ	= कहने के लिए	तीरइ	= सभव है
वियडो	= विस्तृत, श्रेष्ठ	भग्गो	= प्रारम्भ हो
अकयत्थिएण	= सरलता से	परो	= श्रेष्ठ

(४१–५०)

उव्विब	= डरे हुए	पविरल	= श्रेष्ठ
सुव्बउ	= सुनो	वियडोवरोह	= विस्तृत नितम्ब
पामरजणोहो	= किसान-समूह	सुव्वसिय	= बसे हुए
अविउत्तो	= सहित	सइ	= सदा
वरवल्लई	= श्रेष्ठ वीणा	दुरुण्णय	= ऊचे उठे हुए (दूर तक फैले हुए)
पओहराओ	= स्तन (पानी से भरी हुई)	वाहीओ	= वाह वाली (बहाने वाली)
वाणियाओ	= वाणी वाली (पानी वाली)	णिण्णाउव्व	= नदियो की तरह

(५१–६०)

अच्छउ	= है	सेसाइ	= शेप लोगो के (खेत)
विहाइ	= वीत जाती है	वोच्छामि	= कहता हूँ
पडिराविज्जइ	= प्रतिध्वनि की जाती है	जण्णग्गि	= यज्ञ की अग्नि
साणूर	= देवघर	थूहिया	= स्तूप
तरणि	= सूर्य	णिरतरतरिय	= हमेशा छाये हुए
परिसेसिय	= छोडकर	आयवत्त	= छाते को
विलयाहि	= वनिताओ द्वारा	कलयठि-उल	= कोकिल-समूह
दोच्चं	= दूत-कर्म	सरसावराह	= ताजे अपराध
लंपिक्क	= दूर करने वाला	लुवप्फुसणा	= बूदो को सोखने वाला
णासंजलीहि	= नथनो के द्वारा	सद्धालुएहि	= रसिको के द्वारा

(६१–७०)

धुव्वन्ति	= घुल जाते हैं	तद्दियसिय	= उस दिन के
भोत्तु ं	= अनुभव करने हेतु	मइलिज्जति	= मैले हो जाते हैं
अविग्गहो	= शरीर रहित (युद्ध-रहित) विष्णु की तरह शरीर वाला	सव्वग	= समस्त अग (राज्य के सात अगो से युक्त)
दुद्दंसणो	= दुष्ट दर्शन वाला (दुर्लभ दर्शन वाला)	कुवई	= कुपति (पृथ्वीपति)
णयवरो	= नम्र, शत्रुओ को झुकाने वाला, परायेपन से रहित	साहसिओ	= साहसी, दान, धर्म करने वाला

सत्तासो	= सात अश्व वाला (निर्भय)	सोमो	= चन्द्रमा, सौम्य
भोई	= सर्प, भोग करने वाला	दोजीहो	= दो जीभवाला (दुर्जन)
तु गो	= ऊँचा, स्वाभिमानी	समीव	= पास से (सेवकों को)
बहुलतदिणेसु	= अमावस्या के दिनो मे	वोच्छिण्ण	= रहित
मडल	= राज्य (घेरा)	तणुयत्तण	= दुर्बल (क्षीण)
पट्ठी	= पीठ (पीछे का भाग)	जए	= जग मे
परेहि	= दूसरो (शत्रुओ) के द्वारा	सच्चविया	= देखी गयी है
पिसगाण	= पीले रग वाले (भय से पीले)	वोलिया	= व्यतीत होती है

(७१-८०)

वम्मह-णिभेण	= कामदेव के बहाने	लडह-विलयाहिं	= प्रवान नायिकाओ द्वारा
विरायति	= विलीन हो जाते है	पहुत्त	= प्राप्त
मल्लियामोओ	= चमेली का खिलना	विसति	= प्रवेश करते हैं
गु दि	= मजरी	णूमिय	= झुकी हुई
मायद-गहणाइ	= आम्र-वन	पहियाण	= पथिको के लिए

(८१-९०)

फलुप्पक	= फल-समूह	थोऊससत	= थोडो सास लेती हुई
पणच्चिराहि	= नृत्य करती हुई	वाहिप्पइ	= बुला रही है
णेवच्छो	= नैपथ्य	णववरइत्तोव्व	= नये वर की तरह
ककेलि	= अशोक वृक्ष	लुलइ	= लोटता है
छिप्पती	= छुये जाने पर	विवसिज्जइ	= वश मे किया जाता है
विच्छुरिए	= प्रकाशमान	सम	= साथ

(९१-१००)

कणयायलो	= सुमेरु पर्वत	णियसि	= देखती हो
पडिहत्थ	= परिपूर्ण	चिंचल्लिया	= रचना विशेष (सुशोभित)
णिडाल	= ललाट	वत्तणीओ	= मार्ग
पत्तत्त	= पात्रता	पत्त	= पत्रलेखा (प्राप्त)
अविहाविय	= अज्ञात	पाइया	= पिला दिया है

पाठ १ : भार्या की शील-परीक्षा

इब्भो	= सेठ	अण्णपासडियदिट्ठी	= अन्य पाखडी मत को मानने वाला
असब्भ	= अश्लील	ववहारेण	= व्यापार के कारण
सुंकेण	= मूल्य द्वारा	भंडं	= माल
विणिओग	= लेन-देन	वोत्तूण	= कहकर
वासगिह	= शयनकक्ष	पइरिक्कं	= एकान्त
चम्मर्हि	= भुलावा (?)	मग्गिओ	= खोजा गया
अच्छिऊण	= रहकर	कप्पडिय	= कपट
वेसच्छण्णो	= वेष धारण किए हुए	भईए	= मजदूरी से
तुट्ठीदाण	= इनाम, कृपा	पडिस्सुए	= स्वीकार कर
रुक्खाउव्वेय कुसलो	= बागवानी मे कुशल	सव्वोउय	= सब ऋतुओ के
आवारीए	= दुकान मे	उम्मत्ति	= प्रशसा (उन्माद)
वीससणिज्जो	= विश्वसनीय	हीरइ	= छुडा लिया जायेगा
पडिच्छियव्व	= स्वीकार किया जाना चाहिए	डिडी	= राज्याधिकारी
निच्छूड	= पान की पीक (थूक)	निज्झाइया	= देखी गयी
उवतप्पामि	= सतुष्ट करता हूँ	पत्थावं	= प्रस्ताव
घत्तीहं	= तलाश करूगा	जोगमज्जं	= मिलावट वाली शराब
मरसाविया	= क्षमा कर दी गयी	कयंसुपाएहिं	= आसू गिराने के साथ

पाठ २ : ग्रामीण गाड़ीवान

लविय	= कहा	विक्कायइ	= विकाऊ है
कहावणो	= मुद्रा (रुपया)	घत्तुं पयत्ता	= ले जाने लगे
कीस	= कैसे	ववहारो	= झगडा
आणिएल्लिय	= लाये हुए	विक्कोसमाणो	= चिल्लाते (रोते) हुए

अइसंधिओ	= ठगाया गया	जीवलोगब्भतरं	= जीव लोक से भरा हुआ
मन्निस्सामि	= मानूँगा	सक्खी	= गवाह
किलेसेण	= कठिनाई से	महिलियं	= महिला को

पाठ ३ : नटपुत्र रोह

हीलापरायणा	= तिरस्कार करने वाली	काह	= करूंगा
उब्भएण	= खडे होकर	परिकलिय	= जानकर
सिढिलायरो	= कम आदर करने वाला	लट्ठ	= प्रेम (प्रियवचन)
पडिवन्नं	= स्वीकार कर लिया	सुत्तुट्ठिओ	= सोकर उठा हुआ
दसित्ता	= दिखाकर	विलक्खमणो	= लज्जित मन वाला

पाठ ४ : विचारहीन राजा की कथा

माहणा	= ब्राह्मण	वइस्सा	= वैश्य
लगुड	= लट्ठ (डंडा)	नएइरे	= ले गये
वहाइ	= बध के लिए	पत्थणातिय	= तीन इच्छाएं
जाइज्जइ	= मागता है	मोएह	= छोड दिये जाय
निक्कासिओ	= खारिज कर दिया	अप्पित्ता	= अर्पित कर

पाठ ५ : शीलवती की कथा

वरीवट्टइ	= रहता था	सगासाओ	= पास से
अणुव्वयाइ	= अणुव्रत	विणस्सरो	= नाशवान
पवन्नाण	= प्राप्त कराने वाला	जीवाणमाहारु	= जीवो का आधार
वासिओ	= वश मे	मग्गेइ	= खोजने लगी
महव्वई	= महाव्रती	समयनाण	= आत्मा को जानकर
अतट्ठिएण	= भीतर छुपे हुए	चव्वेमि	= चबाता हूँ

उवस्सए	= उपासरे मे	पुव्ववयम्मि	= यथार्थ
विउसीए	= विदुषी के	जहत्थो	= यौवन मे
नज्जइ	= जाना जा सकता है	सच्चत्थनाणे	= सच्चे अर्थ को जानकर
थीण	= स्त्रियो की	नन्ना	= ऐसी दूसरी नही है
निब्भग्गा	= अभागन	वासानईपूरतुल्ल	= पौष की नदी से भरे हुए के समान
सारुत्ति	= सार है	पडिबुद्धो	= प्रतिबोधित हुआ
उद्दिस्स	= उद्देश्य करके	वट्टाए	= वार्ता द्वारा
वुड्ढत्तणे	= बुढापे मे	सग्गइ	= सदगति को

पाठ ६ : चार दामादो की कथा

पारद्धो	= प्रारम्भ हुआ	जामाउणो	= दामाद
खज्जरसलुद्धा	= भोजन रस के लोभी	बोहियव्वा	= समझाना चाहिए
हिट्ठम्मि	= नीचे	पायतिग	= तीन पाद
नीसारियव्वा	= निकालना चाहिए	साऊ	= स्वाद-युक्त
भज्ज	= भार्या	अइप्पिय	= अत्यन्त प्रिय
मिसिअमन्न	= मिश्रित अन्न	पक्कन्न	= पकवान
थूलो	= मोटी	रोट्टगो	= रोटी
आणा	= आज्ञा	अओ	= यहा से
सेय	= अच्छा	सिक्ख	= सीख (अशीष)
अणुण्णा	= अनुमति	अम्हकेरा	= हमारी
सीयाले	= शीतकाल मे	लद्धुवाओ	= उपाय प्राप्त कर
जागरिस्स	= जागूँगा	विलसिउ	= मनोरजन के लिए
पिहिअ	= बन्द	उच्चसरेण	= ऊँचे स्वर से
रविंति	= चिल्लाते हैं	थिआ	= ठहरे
मोणेण	= मौन रूप से	अत्थरणाभावे	= बिस्तर के अभाव मे
तुरगमपिट्ठ	= घोडे की पीठ	च्छाइअवत्थ	= बिछाने वाला वस्त्र
सावमाण	= अपमानपूर्वक	उइअ	= उचित
मारइस्स	= मारूँगा	मा जुज्झह	= मत लडो
धक्कामुक्केण	= धक्का-मुक्के से	ताडिज्जमाणो	= पीटा जाने पर
चएज्जा	= त्यागते है	हुंति	= होते हैं।

अट्टसंधिओ	= ठगाया गया	जीवलोगब्भतर	= जीव लोक से भरा हुआ
मन्निस्सामि	= मानूंगा	सक्खी	= गवाह
किलेसेण	= कठिनाई से	महिलियं	= महिला को

पाठ ३ : नटपुत्र रोह

हीलापरायणा	= तिरस्कार करने वाली	काह	= करूंगा
उब्भएण	= खड़े होकर	परिकलिय	= जानकर
सिढिलायरो	= कम आदर करने वाला	लट्ठ	= प्रेम (प्रियवचन)
पडिवन्नं	= स्वीकार कर लिया	सुत्तुट्ठिओ	= सोकर उठा हुआ
दसित्ता	= दिखाकर	विलक्खमणो	= लज्जित मन वाला

पाठ ४ : विचारहीन राजा की कथा

माहणा	= ब्राह्मण	वइस्सा	= वैश्य
लगुड	= लट्ठ (डंडा)	नएइरे	= ले गये
वहाइ	= वध के लिए	पत्थणातिय	= तीन इच्छाएं
जाइज्जइ	= मांगता है	मोएह	= छोड दिये जाय
निक्कासिओ	= खारिज कर दिया	अप्पित्ता	= अर्पित कर

पाठ ५ : शीलवती की कथा

वरीवट्टइ	= रहता था	सगासाओ	= पास से
अणुव्वयाइ	= अणुव्रत	विणस्सरो	= नाशवान
पवन्नाण	= प्राप्त कराने वाला	जीवाणमाहारु	= जीवो का आधार
वासिओ	= वश मे	मग्गेइ	= खोजने लगी
महव्वई	= महाव्रती	समयनाण	= आत्मा को जानकर
अतट्ठिएण	= भीतर छुपे हुए	चव्वेमि	= चबाता हूँ

उवस्सए	= उपासरे मे	पुव्ववयंमि	= ययाव
विउसीए	= विदुषी के	जहत्थो	= यौवन मे
नज्जइ	= जाना जा सकता है	सच्चत्थनाणो	= सच्चे अर्थ को जानकर
थीण	= स्त्रियो की	नन्ना	= ऐसी दूसरी नही है
निब्भग्गा	= अभागन	वासानईपूरतुल्ल	= पीव की नदी से भरे हुए के समान
सारुत्ति	= सार है	पडिवुद्धो	= प्रतिबोधित हुआ
उद्दिस्स	= उद्देश्य करके	वट्टाए	= वार्ता द्वारा
वुड्ढत्तणे	= बुढापे मे	सग्गइ	= सद्गति को

पाठ ६ : चार दामादों की कथा

पारद्धो	= प्रारम्भ हुआ	जामाउणो	= दामाद
खज्जरसलुद्धा	= भोजन रस के लोभी	वोहियव्वा	= समझाना चाहिए
हिट्ठमि	= नीचे	पायतिग	= तीन पाद
नीसारियव्वा	= निकालना चाहिए	साऊ	= स्वाद-युक्त
भज्ज	= भार्या	अइप्पिय	= अत्यन्त प्रिय
मिसिअमन्न	= मिश्रित अन्न	पक्कन्न	= पकवान
थूलो	= मोटी	रोट्टगो	= रोटी
आणा	= आज्ञा	अओ	= यहा से
सेय	= अच्छा	सिक्ख	= सीख (अशीष)
अणुण्णा	= अनुमति	अम्हकेरा	= हमारी
सीयाले	= शीतकाल मे	लद्ध्वाओ	= उपाय प्राप्त कर
जागरिस्स	= जागूंगा	विलसिउ	= मनोरजन के लिए
पिहिअ	= बन्द	उच्चसरेण	= ऊँचे स्वर से
रविंति	= चिल्लाते हैं	थिआ	= ठहरे
मोणेण	= मौन रूप से	अत्थरणाभावे	= बिस्तर के अभाव मे
तुरगमपिट्ठ	= घोडे की पीठ	च्छाइअवत्थ	= बिछाने वाला वस्त्र
सावमाण	= अपमानपूर्वक	उइअ	= उचित
मारइस्सं	= मारूंगा	मा जुज्झह	= मत लडो
धक्कामुक्केण	= धक्का-मुक्के से	ताडिज्जमाणो	= पीटा जाने पर
चएज्जा	= त्यागते हैं	हुंति	= होते हैं।

पाठ ७ : पुत्रों से अपमानित पिता की कथा

थविरो = बूढा
वेमणस्सभावेण = वैमनस्य भाव के कारण
वारगो = वारी
अपत्तीए = प्राप्ति न होने से
तव = तुम्हे
अक्खितेयं = आखो की रोशनी
तिरक्करिओ = तिरस्कृत होकर
निक्कासेइरे = निकाल देते
उवहसन्ति = मजाक बनाते
नित्थरणुवाय = छुटकारे का उपाय
जराजिण्णो = बुढापे से कमजोर
पाहेय = पाथेय
मोइस्स = रख दूँगा
काहिन्ति = करेंगी
विस्सारियव्व = भूलना
निति = ले जाती है
धुविआइ = धुले हुए
पच्चप्पइ = लौटा देता है
नाइजण = रिश्तेदारो को
वेढिए = लिपटे हुए

परिणाविऊण = विवाह करके
भिन्नघरा = अलग-अलग घरवाले (न्यारे)
निवद्धो = बाध दी गयी
अहिले = अखिल (पूरे)
हट्टे = दुकान मे
कपिरं = कापता है
कच्छुट्टिय = लगोटा
करिसिन्ति = खीचते है
निव्वहिस्सं = व्यतीत करूँ
चोज्ज = आश्चर्य
सत्तक्खेत्ताइसु = सात क्षेत्र आदि मे
आणावियव्वा = मगवा लेना चाहिए
रणरणायारपुव्व = झनकार पूर्वक
वावरियव्व = खर्च कर देना चाहिए
अईवनिव्वधेण = अत्यन्त प्रेम के साथ
परिहाणाय = पहिनने के लिए
जहसत्ति = यथाशक्ति
मच्चुकिच्च = मृत्यु के कार्य को
जेमाविऊण = भोजन खिलाकर
पाहाणखडे = पत्थर के टुकडे

पाठ ८ : अमागलिक आदमी की कथा

मुद्धो = भोला
पउरा = नागरिक
अकम्हा = अकस्मात्
समाणो = भोजन करता हुआ
चिच्चा = छोडकर
पासिहिरे = देखेंगे

लहेज्जा = प्राप्त होता था
वट्टा = वार्ता
परचक्कभएण = आक्रमण के भय से
नेइज्जमाण = ले जाते हुए
दच्चा = देकर
वयणजुत्तीए = वचन के उपाय से

पाठ ९ : शिल्पीपुत्र की कथा

अहेसि	= था	सरिच्छो	= समान
सगासंमि	= पास मे	निम्मवेइ	= निर्माण करना
भुल्लं	= भूल	सिलाहं	= प्रशसा
सुहुम	= सूक्ष्म	खलणं	= त्रुटि
अमुगाए	= अमुक	निम्मवगो	= निर्माता
सलाहणिज्जो	= प्रशसनीय	खुण्णं	= खडित
नग्रहा	= अन्यथा नही	गुत्तं	= गुप्त रूप से
वाइऊण	= वाचकर	तरिस्ससि	= समर्थ नही होगे
सोहणयर	= अच्छे से अच्छे	कज्जकरण-तल्लिच्छो	= कार्य करने मे तल्लीन होकर
सण्हं	= बारीक	हुवीअ	= गयी (हुई)
मंदूसाहेण	= उत्साह कम हो जाने से	खामेइ	= क्षमा मागता है

पाठ १० : उद्यम का फल

विउसा	= विद्वान्	अलसा	= आलस से
नाओ	= न्याय	नज्जइ	= जाना जाता है
कसिज्जइ	= परखना होगा	निअतिअ	= जकडकर
अववरगे	= जेल मे	छुट्टउ	= छूट जाओ
नियत्तो	= लौट गया	घंसेइ	= घिसता है
मुहा	= व्यर्थ	पीलिआणं	= पीडितो के लिए
जत्तं	= यत्न	आयास	= प्रयास
कोणगे	= कौने मे	रंध	= छिद्र
अचयंतो	= न त्यागता हुआ	कट्ठेण	= कष्ट-पूर्वक
पमाई	= प्रमादी	पहाणो	= प्रधान

सन्दर्भ-ग्रन्थ

१ सिद्ध हेमशब्दानुशासन—आचार्य हेमचन्द्र
२ प्राकृत भाषाओ का व्याकरण—डॉ पिशेल
३ प्राकृतमार्गोपदेशिका —प बेचरदास दोसी
४ प्राकृत-प्रबोध—डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री
५ पउमचरिय—स हर्मन जैकोबी
६ सिरिसिरिवालकहा—स वादीलाल जीवाभाई चौकसी
७ लीलावईकहा—स डॉ ए. एन उपाध्ये
८ पाइअविन्नाणकहा—श्री विजयकस्तूरसूरि
९ जिनागमकथासग्रह—प बेचरदास दोशी
१० पाइय-गज्ज-सगहो—स डॉ राजाराम जैन

□□

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
५	४	जाते	जानते
९	२३	दाण	दाणि
१२	१९	झति	झत्ति
१२	२८	पासन्ति	पासमो
१२	३१	रूप	एक रूप
१४	११	तुम्हे	तुम्हे
१४	२५	कद	कद
१५	७	गीता	गीत
१८	४	अम्ह	अम्हे
२१	२१	जिणहिमि	जिणिहिमि
२४	२९	चिच्छिऊण	पुच्छिऊण
३०	३०	विनय	विणय
३२	२३	वुह	वुह
३७	४	फलाणि	फलाणि
३८	२५	चमअक्कीअ	चमक्कीअ
४०	२४	वुहा	बुहा
४३	४	तोआ	ताओ
४४	१६	पुरिसोत	पुरिसो त
४९	९	कुलवइहिं	कुलवईहिं
५०	२१	हत्थी	इत्थी
५५	१४	पुप्फ	पुप्फ
६१	७	खेत्ताणि सन्ति	खेत्ताण अत्थि
६२	२८	धेणए	धेणूए
६२	३०	धेण	धेणु
६३	१३	फल	फल
६४	१४	पुरिसतो	पुरिसत्तो
६९	२२	विल	विल

पृष्ठ संख्या	पंक्ति सख्या	अशुद्ध	शुद्ध
७६	२४	ववहारो	वावार
८१	६	कुलपईमु	कुलवईमु
८१	१६	वभयारि	वभयारि
८६	२७	घेगाए	घेगूए
८६	१६	भक्ति	भत्ति
९१	नीचे से ३	सन्ति	म्हो
९३	१३	जुवईश्रो	जुवईश्रो
९३	नीचे से २	साहुमु	साहूमु
९४	२०	वीहइ	वीहइ
९६	३	घावरण	धावरण
९६	१०	धामरण	नमरण
९९	१३	विशेपरण	विशेष्य
१००	१२	खन्ति, खन्ति	खती
१००	नीचे से ३	सरी रे	सरीरे
१००	नीचे से २	बाणरेण	वाणरेण
१०१	नीचे से ३	जेट्ठयमो	जेट्ठयरो
१०२	५	इम	इद
१०५	नीचे से १०	तिथ्ययरो	तित्थयरो
१०५	नीचे से ८	पचम	पचम
१०६	९	लज्जणो	लज्जमाणो
१०८	६	विश्रसश्र	विश्रसिश्र
१०८	नीचे से ११	देन्ति	देन्ति
१०९	४	देह	देइ
११०	७	पूज्यनीय	पूजनीय
११०	नीचे से ५	पूज्यनीय	पूजनीय
११९	नीचे से ४	हसिज्इ	हसिज्जइ
१२२	१	वाच्च	वाच्य
१३०	२०	पोथ्थश्र	पोत्थश्र
१३१	नीचे से ३	पढ + श्रा +	पढ + श्राव +
१७५	१	भारिया सोल	भारियासील
१४५–२०७ तक		खण्ड २	खण्ड १

□□